

॥ ॐ ॥

॥ णमो समणम्म भगवआ मग्गीस्स ॥

भगवत् सुधर्मस्वामोप्रणीता

श्रीमदुत्तराध्ययनसूत्रम्, श्रीदशवैकालिकसूत्रम्, नदीसूत्रम्

सुखविपारुसूत्रम्, उपवाहसूत्रम् (गाथा २२)

सूत्रहृत्नागसूत्रे पष्ठाध्ययनम् ण्कादशाध्ययनम् च ॥

अतर्मूलसूत्रेस्सयुक्ता

॥ सिद्धान्त-स्वाध्यायमाला ॥



—: प्रकाशक :—

जामनगर वान्तव्य पडित हीरालाल हसराज



—: मुद्रक :—

श्री जैनभास्करोदय मुद्रणालय-जामनगर

सन्ने १९२८

मूल्य १-४-०

सम्बद् १९९५

॥ स्वाध्यायमाला-विषयानुक्रम ॥



	पाना
उवराष्ययनसूत्रम्	१ थी ७४
दग्नेकालिकसूत्रम्	७५ थी १००
तदीक्षत्रम्	१०१ थी ११९
उववाहसूत्र गाथा-२०	१२० थी १२०
सुरविषाकसूत्रम्	१०१ थी १२५
साकृगण ६-११ अभ्ययन	१२५ थी १२८
प्रास्ताविक गाथाओ शुद्धिपत्रक	१२९ थी १३२

॥ णमोऽन्यु णं तस्स समेणेंस भगवओ मंहानीरस्स ॥

श्री जैन

॥ सिद्धान्त-स्वाध्यायमाला ॥

॥ सिरि-उत्तरज्जयण-सुत्त ॥

विणयसुय पढम अज्झयण

सजोगा विप्पसुक्कस्म, अणगारस्स भिक्खुणो। विणय पाउकरिम्मामि, आणुपुच्चि सुणेह मे ॥ १ ॥
आणानिहेमकरे, गुरूणसुववायकारे। इगियागारसपत्ते, से विणीए चि बुच्चई ॥ २ ॥
आणाऽनिहेमकरे, गुरूणमणुववायकारे। पडिणीए असनुद्धे, अविणीए चि बुच्चई ॥ ३ ॥
जहा सुणी पूइकणी, निकसिज्जई सव्वमो। एव दुरस्सीलपडिणीए, सुहरी निकसिज्जई ॥ ४ ॥
कणकण्डग चडत्ताण, चिट्ठ भुज्ज सुयरे। ष्व सील चडत्ताण, दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥
सुणिया भाव माणस्स, सुयस्स नरस्स य। विणए ठपेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥
तम्हा विणयमेसिज्जा, सील पडिलमेज्जाए। बुद्धपुत्त नियागट्ठी, न निकसिज्जइ कण्हूई ॥ ७ ॥
निसन्ते सियाऽसुहरी, बुद्धाण अन्तिए सया। अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठुणि उ वज्जाए ॥ ८ ॥
अणुसासिओ न कुप्पिज्जा, रतिं सेविज्ज पण्टिए। सुद्धेहिं सह ससग्गि, हास कीड च ज्जाए ॥ ९ ॥
मा यत्चण्डालियःकासी, बहुय मा य आलवे। कालेण य अट्ठिज्जिच्चा, तओ ज्ञाइज्ज एगगो ॥ १० ॥
आहच्च स्वण्डालिय कट्ठ, न निण्हविज्ज रुयाइ वि। कड कडे चि भासेज्जा, अरुड नो रुडे चि य ॥ ११ ॥
मा गलियस्सेए कस, वयणमिच्छे पुणो पुणो। स्स च दट्ठुमाइण्णे, पावग परिवज्जाए ॥ १२ ॥

अणासवा धूलया कुसीला, मिउपि चण्ड परुरिन्ति सीसा।

चित्ताणुया लट्ठ दक्खोउरेया, पमायए ते हु दुरासयपि ॥ १३ ॥

नापुट्ठो वागरे किंचि, पुट्ठो णानालिय एए। कीड अमच्च बुपेज्जा, धारज्जा पियमपिय ॥ १४ ॥

अप्पा चेए दमेय यो, अप्पा हु खल्लुद्धमो। अप्पा दन्तो सुही होइ, अस्सिंम लोए परत्थ य ॥ १५ ॥

वर मे अप्पा दन्तो, सजमेण तवेण य। माह परेहिं दम्मतो, वधणेहिं वहेहि य ॥ १६ ॥

पटिणीय च बुद्धाण, वाया अदुव म्मुणा। आमी वा जड ना रहस्से, नेए कुज्जा रुयाइ पि ॥ १७ ॥

न पक्खओ न पुरओ, नेव किच्चाण पिट्ठओ। न जुजे उरुणा उरु, सयणे नो पडिस्सुणे ॥ १८ ॥

नेव पण्हत्थिय बुज्जा, पम्भवपिण्ड च सज्जाए। पाए पसारिए वावि, न चिट्ठ गुरूणन्तिए ॥ १९ ॥

आयरिएहिं वाहिचो, तुसिणीओ न कयाइवि। पमायपेही नियागट्ठी, उवचिट्ठे गुरू सया ॥ २० ॥

आलपन्ते लवन्ते वा, न निसीएज्ज कयाइ वि । चइऊणमामण धीरो, जओ जत्त पडिस्सुणे ॥ २१ ॥
 आमणगओ न पुच्छेज्जा, नेन सेज्जागओ कया । आगम्भुक्कुडुओ सन्तो, पुत्तिउज्जा पजलीउटो ॥ २२ ॥
 एव विणयजुत्तस्म, सुत्त अथ च तदुभय । पुच्छमाणस्म सीसस्म, वागरिज्ज जहासुय ॥ २३ ॥
 सुस परिहरे मिस्सु न य ओहारिण वए । भासादोस परिहरे, माय च वज्जए सया ॥ २४ ॥
 न लवेज्ज पुट्ठो सापज्ज, न निरुट्ठ न मम्मय । अप्पणट्ठा परट्ठा वा, उभयस्स तरेण वा ॥ २५ ॥
 ममरेसु अगारेसु सन्धीसु य महापहे । एगो एगत्तियए सद्धि, नेन चिट्ठे न सलवे ॥ २६ ॥
 ज मे बुद्धाणुत्तासन्ति, सीग्ण फरुसेण वा । मम लहो ति पेहाए, पयओ त पडिस्सुणे ॥ २७ ॥
 जणुमामणमोराय, दुक्कडम्म य चोयण । हिय त मण्णई पण्णो, वेस होइ अमाहुणो ॥ २८ ॥
 हिय विगयभया जुद्धा, फरुमपि अणुमासण । वेस त होइ मूढाण, सुत्तित्तमोहिकर पय ॥ २९ ॥
 आमणे उवत्तिहेज्जा, जणुन्चे जहुए थिरे । अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई, निसीएज्जप्पुट्ठुए ॥ ३० ॥
 मालेण निररुमे मिस्सु, कालेण य पडिक्खे । अकाल च विगिज्जिच्चा, काळे काल ममापरे ॥ ३१ ॥
 परिमाडीण न चिट्ठेज्जा, मिक्कम् दत्तेमण चरे । पडिक्खेण पत्तिच्चा, मिय काण्णेण भक्खए ॥ ३२ ॥
 नाइदूरमणामन्ने, नाण्णेमि चक्खुफामओ । एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा, लघिच्चा त नाउट्ठक्खे ॥ ३३ ॥
 नाउउत्ते न नाए वा, नामन्ने नाइदूरओ । फामुय पररुड पिण्ड, पडिगाहज्ज सजए ॥ ३४ ॥
 अप्पपाणे अप्पनीयम्मि, पडिउत्तम्मि सणुडे । समय सजए भुज्जे, जय अपरिमाडिय ॥ ३५ ॥
 सुमडित्ति सुपक्कित्ति, सुच्छिन्ने सुहड मडे । सुगिट्ठिण सुलद्धित्ति, सावज्ज वज्जए सुणी ॥ ३६ ॥
 रमए पण्डिण सास, हय भद्द व वाहए । बाल सम्मइ सासतो, गालियस्स व वाहए ॥ ३७ ॥
 सुट्ठया मे चरडा मे, अकोमा य उहा य मे । कट्ठाणमथुसामतो, पावदिट्ठित्ति मन्नेई ॥ ३८ ॥
 पुत्तो मे माय नाइ ति, माहू कट्ठाण मन्नेई । पावदिट्ठि उ अप्पाण, साम दासु ति मन्नेई ॥ ३९ ॥
 न कोरए जायरिय, अप्पाणपि न कोरए । उद्धोवघाई न सिया, न सिया तोत्तगवेमए ॥ ४० ॥
 जायरिय इत्थिय नच्चा, पत्तिपण पमायए । विज्जनेज्ज पजलीउटो, एएज्ज न पुणोत्ति य ॥ ४१ ॥
 धम्मज्जिय च उरुहार, उद्धेहायरिय सया । तमायन्तो ववहार, गरह नाभिगच्छई ॥ ४२ ॥
 मणोगय ववगय, जाणिचायरियस्म उ । त परिगिज्ज वायाए, कम्मणुणा उवरायए ॥ ४३ ॥
 निचे जचोए निच, विप्य हउड सुचोडण । जहोवइत्त सुम्भय, विच्चाइ बुच्चई सया ॥ ४४ ॥
 नच्चा नमइ मेहाणी, लोए त्तिसे जायए । हवई त्तिच्चाण मग्ग, भूयाण जगई जहा ॥ ४५ ॥
 पुज्जा नम्म पमीयन्ति, मणुद्धा पुच्चमणुया । पमन्ना लाभइस्सति, विउल अट्ठिय सुय ॥ ४६ ॥
 म पुज्जमरे सुविणीयससण, मणोरुई चिट्ठ कम्मसपया ।
 ततोममायारिममाहिसणुडे, महज्जुई पच वयाइ पालिया ॥ ४७ ॥
 म दवगघाणमणुस्समणुण, चइत्तु देह मलयपुत्तय ।
 मिद्धे वा हउड मामण देवे वा अप्पए महिद्धीए ॥ ४८ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ त्रिणयसुय नाम पढम अज्जयण समत्त ॥

॥ अह दुइअ परिसहज्जयण ॥

सुय मे जाउम-तेण भगवया एउमकवाय । इह गल्ल चागीस परीमहा ममणेण भगवया महा वीरेण कामवेण पवेइया । जे भिकवू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्षुपारियाए परिव्ययन्ती पुट्टो नो निण्हवेज्जा ॥ जयरे ते खल्ल चागीस परीमहा ममणेण भगवया महावीरेण कामवेण पवेइया, जे भिकवू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्षुपारियाए परिव्ययन्ती पुट्टो नो निण्हवेज्जा ? ॥ इमे ते गल्ल चागीस परीसहा ममणेण भगवया महावीरेण कामवेण पवेइया, जे भिकवू सोचा नचा जिचा अभिभूय भिक्षुपारियाए परिव्ययन्ती पुट्टो नो निण्हवेज्जा, तजहा-दिगिंठापरीमहे १ पिना मापरीमहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीमहे ४ दमममयपरीमहे ५ अचेलपरीमहे ६ अरइपरीमहे ७ इत्थीपरीमहे ८ चरियापरीमहे ९ निमीहिियापरीमहे १० सेज्जापरीमहे ११ अकोसपरीमहे १२ वहपरीसहे १३ जायणापरीमहे १४ अलाभपरीमहे १५ रोगपरीमहे १६ तणफामपरीमहे १७ जल्लपरीसहे १८ मकारपुरकारपरीमहे १९ पत्तापरीमहे २० अन्नाणपरीमहे २१ दमणपरीसहे २२ ॥

परीसहाण परिभत्ती, कामवेण पवेइया । त मे उदाहरिम्मामि, आणपुंरि सुणेह मे ॥ १ ॥
 दिगिंठापरिणए वेह, तउस्सी भिकवू यामव । न उंठे न उंठामए, न पए न पयानए ॥ २ ॥
 कालीपच्चगमफससे, तिससे धमणिस्तए । मायन्ने अमणपाणस्स, अदीणमणसो चरे ॥ ३ ॥
 तओ पुट्टो पिनामाए, दोयुञ्जी लज्जमनण । सीओदग न सेविज्जा, विपडम्ममण चर ॥ ४ ॥
 छिन्नाणएसु पवेसु, जाउरे सुपिनामिणए । परिमुक्खमुहाइदीणे, त तित्तिउसे परीसहे ॥ ५ ॥
 चरत विगय ख्ख, सीय फुमड एगया । नाइवेल सुणी गन्ठे, मौचाण जिणसामण ॥ ६ ॥
 न मे निनाण अत्थि, उचित्ताण न पिज्जट्ठे । अह तु अग्गि सेनामि, इत्थ भिक्षू न चितए ॥ ७ ॥
 उसिण परियावेण, परिदाहण तज्जिण । विंसु ना परियावेण, माय नो परिदणए ॥ ८ ॥
 उण्हाहितत्ते मेहायी, सिणाण नो वि पथण । गाय नो परिमिचेज्जा, न वीएज्जा य अप्पय ॥ ९ ॥
 पुट्टो य दमममपहिं, ममरे व महासुणी । नागो सगाममीसे ना, खरो अभिहणे पर ॥ १० ॥
 न मतसे न तारज्जा, मण पि न पओमण । उवेहे न हणे पाणे, श्रुजते मससोणिय ॥ ११ ॥
 परिजुण्णेहि उत्थेहिं, होत्तामि त्ति अचेलए । अहुना मचेलेहोत्तामि इत्थ भिक्षू न चितए ॥ १२ ॥
 एगयाउचेलए होइ, सचेले आवि एगया । एय धम्म हिय नन्ना, नाणी नो परिदणए ॥ १३ ॥
 गामाणुगाम रीपंत, अणगार अकिंचण । अरई उणुप्पेसेज्जा, त तित्तिक्खे परीसहे ॥ १४ ॥
 अरइ पिट्ठओ त्तिचा, तिरण आयरक्खिए । धम्मारामे निरारम्मे, उउसन्ते सुणी चरे ॥ १५ ॥
 मद्धो एम मणूमाण, जाओ लोगम्मि इत्थिओ । जस्म णया परिन्नाया, सुकूढ तस्स सामण्य ॥ १६ ॥
 एपमादाय मेहावी, पड्डभूया उ इत्थिओ । नो ताहिं विणिहम्मोज्जा, चरेज्जत्तगमेए ॥ १७ ॥
 एग एउ चरे लाडे, अभिभूय परीमहे । गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥ १८ ॥
 अममाणे चरे भिक्षू, नेव बुज्जा परिगइ । असमत्ते गिहत्थेहिं, अणिपओ परिव्वए ॥ १९ ॥
 सुमाणे सुन्नगारे वा, रक्खसुले व एगओ । अकुक्कुओ निसीएज्जा, न य विचासए पर ॥ २० ॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्त, उरसग्गाभिधारए । सकाभीओ न गच्छेज्जा, वट्ठित्ता अन्नमासण ॥ २१ ॥
 उच्चावयाहिं सेज्जाहिं, तरस्सी भिक्खू थामन । नाइवेल विहम्मैज्जा, पावदिट्ठी विहम्मई ॥ २२ ॥
 प्रइरिक्कवस्सय लधु, कल्लणमदुवा पावय । किमेगराड करिस्सइ, एव तत्थऽहियासए ॥ २३ ॥
 अक्कोसेज्जा परे भिक्खु, न तेसि पडिसज्जले । सरिसो होइ चालाण, तम्हा भिक्खू न सजले ॥ २४ ॥
 सोचाणं फरुसा भासा, दारुणा गामरूण्टगा । तुसिणीओ उमेहेज्जा, न ताओ मणसीरुरे ॥ २५ ॥
 हओ न सजले भिक्खू, मणपि न पओसए । तितिक्ख पग्ग नच्चा, भिक्खू धम्म समायरे ॥ २६ ॥
 समण सजय दत्त, हणिज्जा कोइ कथई । नत्थि जीवस्स नासुत्ति, एव पेहेज्ज सजए ॥ २७ ॥
 दुक्ख सल्ल भो निच्च, अणगारस्स भिक्खुणो । सव्व से जाइय होइ, नत्थि किचि अजाइय ॥ २८ ॥
 गीयरग्गपविट्ठस्स, पाणी नो सुप्पसारए । सुओ अगारवासुत्ति, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ २९ ॥
 परेसु घासमेसेज्जा, भोयणे परिणिट्ठिए । छट्ठे पिण्डे अलट्ठे वा, नाणुतप्पेज्ज पडिए ॥ ३० ॥
 अज्जेवाह न लब्भामि, जनिळाभो सुए सिया । जो एव पडिसच्चिन्खे, अलाभो तन तज्जए ॥ ३१ ॥
 नच्चा उप्पइय दुक्ख, वेयणाए दुइट्ठिए । अदीणो यानए पन्न, पुट्ठो तत्थऽहियासए ॥ ३२ ॥
 तेइच्छ नाभिनदेज्जा सच्चिक्खत्तगवेसए । एव गु तस्स सामण्ण, ज न इज्जा न कारवे ॥ ३३ ॥
 अवैलगस्स लूइस्स, सजयस्स तपस्सिणो । तणेसु सयमाणस्स, हूज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥
 आयनस्स निराएण, थउला इणइ वेयणा । एव नच्चा न सेवति, तत्तुज तणनज्जिया ॥ ३५ ॥
 किलिन्नगाए मेहावी, पक्केण उ रएण वा । विसु वा परियावेण, साय नो परिदेवए ॥ ३६ ॥
 वेएज्ज निज्जरापही, आरिय धम्मणुत्तर । जाय सरीरमेउत्ति, जल्ल कारण धारए ॥ ३७ ॥
 अभिजायणमन्धुट्ठाण, सामी कुज्जा निमतण । जे ताइ पडिसेवन्ति, न तेसिं पीहए म्मुणी ॥ ३८ ॥
 अणुक्कसाई अप्पिन्डे, अनाएसी अलोलुण । रसेसु नाणुगिज्जेज्जा, नाणुतप्पेज्ज पन्नव ॥ ३९ ॥
 से नूण मए पुव्व, कम्माऽण्णाणफला कडा । जेणाह नाभिजाणामि, पुट्ठो केणड कण्हुई ॥ ४० ॥
 अह पन्ठा उइज्जन्ति, कम्माऽण्णाणफला कडा । एमस्सासि अप्पाण, नच्चा कम्मविवागय ॥ ४१ ॥
 निरट्ठगाम्मि तिरओ, मेहुणाओ सुमपुटो । जो सक्ख नाभिजाणामि, धम्म कल्लणपावग ॥ ४२ ॥
 तवोवहाणमादाय, पडिम पडिवज्जओ । ण्व पि विहरओ मे, छउम न नियट्ठई ॥ ४३ ॥
 नत्थि नूण परे लोए, इइदी वात्रि तपस्सिणो । अदुवा वच्चिओमिचि, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ४४ ॥
 अभू जिणा अत्थि जिणा, अदुवावि भविस्सई । सुस ते एममाहसु, इइ भिक्खू न चिंतए ॥ ४५ ॥
 एण परीसहा सव्वे, कासवेण निवडया । जे भिक्खू न विहम्मैज्जा, पुट्ठो केणड कण्हुई ॥ ४६ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ दुइअ परिसहज्जयण समत्त ॥ २ ॥

॥ अह तद्वअ चाउरगिज्ज अज्झयण ॥

चत्तारि परमगाणि दुल्लहणीह जत्तुणो । माणुमत्त मुई मद्दा, मजमम्मि य नीरिय ॥ १ ॥
 समावन्ना ण ससारे, नाणागोत्तामु जाडमु । कम्मा नाणाविहा रुद्धु, पुडो विम्मभिया पया ॥ २ ॥
 एगया देणलोएमु, नरएमु वि एगया । एगया जामुर काय, अहाकम्मोहिं गन्डई ॥ ३ ॥
 प्पया रत्तिओ होट, तओ चण्टालमोयमा । तओकीटपयगो य, तओ हुन्धुपिनालिया ॥ ४ ॥
 प्पमानड्डोणीमु, पाणिणो कम्मज्जिस्सा । न निनिज्जन्ति समारे, सन्धेमु व रत्तिया ॥ ५ ॥
 कम्मसगेहि मम्मूढा, दुक्खिया उट्टेयणा । अमाणुमासु जोणीयु, विणिदम्मन्ति पाणिणो ॥ ६ ॥
 कम्माण तु पहाणाण, आणुपुत्ती म्याड उ । जीवा मोहिमणुपत्ता, आययति मणुम्मय ॥ ७ ॥
 माणुस्म निग्गह लद्धु, मुई धम्मस्म दुल्लहा । ज मोच्चा पडिग्गत्ति, तत्र रत्तिमहिंमय ॥ ८ ॥
 आह्व चरण लद्धु, सद्धा परमदुल्लहा । मोच्चा नेआउय मग्ग, उहवे परिमम्पई ॥ ९ ॥
 मुह च लद्धु मद्ध च, नीरिय पुण दुल्लह । वद्वे गेयमाणानि, नो य ण पटिग्गज्जण ॥ १० ॥
 माणुमत्तमि आयाओ, जो वम्म मुच मद्दहे । तत्रस्मी वीरिय लद्धु, सत्तुडे निग्घुणे रय ॥ ११ ॥
 सोही उज्ज्व भूयम्म, धम्मो मुद्धस्म चिद्धई । निग्गण परम जाह, धयसित्तिव्य पाणए ॥ १२ ॥
 विगिच कम्मणो हेउ, जस सचिणु रत्तिण । मरीर पाटन हिच्चा, उट्टु पक्कमण दिस ॥ १३ ॥
 विसालसेहि सीलेहि, जमसा उत्तरउत्तग । महासुक्का व दिप्पता, मन्नता जणुणचय ॥ १४ ॥
 अप्पिया देणकामाण, ममरूपविउट्ठिणो । उट्टु रूपेसु चिद्धति, पुत्तात्राममया वट्टु ॥ १५ ॥
 त व टिच्चा जहाठाण, जमया आक्कय चुया । उप्पेति माणुस जोणि, मे दसगेभिजायए ॥ १६ ॥
 खित्त उट्ठ हिरण्ण च, पमो दासपोरुस । चत्तारि ममरुग्गाणि । तत्र से उवज्जड ॥ १७ ॥
 मित्त नाडव होट, उच्चागोए य उण्णव । अप्पायके महापत्ते, अभिजाए जमो उले ॥ १८ ॥
 मुच्चा माणुस्मए भोण, अप्पाडिक्खे अहाउय । पुत्त विमुद्धमद्दम्मे, नेाल बोद्धिमुट्ठिया ॥ १९ ॥
 चरण दुल्लह नच्चा, सनम पडिग्गज्जिया । तत्रया युयम्म से सिद्धे उवड सामए ॥ २० ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ तृतीय परिज्जयण ममत्त ॥

॥ अह चतुर्थ अमरय अज्झयण ॥

असय जीविय मा पमायण, जरोरणीयम्म वृ नत्थि ताण ।
 एव वियाणाहि जणे पक्के रु नु विहिंमा अनिया गिहिति ॥ १ ॥
 जे पाक्कम्महिं धण मणूसा, ममाययती अमट गहाय ।
 पहाय ते पामपयट्टिण नरे, वेराणुवट्टा नरय उप्पित्ति ॥ २ ॥
 तेणे जहा सधिमुह गहीए, मक्कमुणा किच्च पावमारी ।
 एव पया पच इह च लोए, कडाण कम्माण न मुक्खु अत्थि ॥ ३ ॥

ससारमात्र परस्त अद्वा, साहारण ज च करेड कम्म ।
 कम्मस्स ते तस्स उवेयफाले, न वधना वधवय उविति ॥ ४ ॥
 विचेण ताण न लमे पमत्ते, इममि लोए अदुवा परत्व ।
 दीवप्पणट्टेन अणतमोहे, नेयाउय दट्टुमदट्टुमेव ॥ ५ ॥
 सुत्तेसुआवी पडिबुद्धजीवो, न वीससे पडिय आसुपण्णे ।
 घोरा महत्ता अरल सरीर, भारतपक्खीर चरऽप्यमत्तो ॥ ६ ॥
 चरे पपाइ परिसकमाणो, ज किंचि पास इह मन्नमाणो ।
 लाभतरे जीवियवूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥ ७ ॥
 छदनिरोहेण उवेइ मोक्ख, आसे जहा सिक्खियम्मधारी ।
 पुच्चाइ वासाड चरप्पमत्तो, तम्हा मुणी सिप्पमुत्तेइ मुत्त ॥ ८ ॥
 स पुच्चमेव न लभेज्ज पच्छा, णसोरमा मामयवाइयाण ।
 विमीदड सिद्धिले आउयम्मि, कालोउणीए मरीरस्म भेण ॥ ९ ॥
 सिप्प न मक्केड विवेगभेउ, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
 समिच्च लोय समया महमी, आयाणुरक्खी चरमप्पमत्ते ॥ १० ॥
 मुट्टु मुट्टु मोहगुणे जयत्त, अणेरूणा समण चरन्तं ।
 फामा पृमन्ती अममजस च, न तेसि मिकखु मणमा पउस्से ॥ ११ ॥
 मन्दा य फावाअहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेसु मण न बुज्जा ।
 रक्खिज्ज कोह विणएज्ज माण, माय न सेपेज्ज पयहेज्ज लोह ॥ १२ ॥
 जेउसखया तुच्छपरप्पपार्ट, ते पिज्जदोभाणुगया परब्भा ।
 एए अहम्मे त्ति दुगुलमाणो, क्खे गुणे जाअ सरीरभेउ ॥ १३ ॥
 त्ति वेमि ॥ टअ असग्गय चउत्थ अज्झयण समत्त ॥

॥ अह अकाममरणज्ज पञ्चम अज्झयण ॥

जण्णसि महोहमि, एगे तिण्णे दुरुत्तर । तत्थ एगे महापत्ते, इम पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥
 सन्तिमे य दुवे टाणा, अक्खाया मरणन्तिया । अकाममरण चेअ, सकाममरण तहा ॥ २ ॥
 चालाण तु अकाम तु, मरण असइ भवे । पण्डियाण सकाम तु, उक्कोसेण मइ भवे ॥ ३ ॥
 तत्थिम पढम टाण, महारीएण दत्थिय । कामग्गिद्धे जहा वाले, मिस कूसाइ कुच्चई ॥ ४ ॥
 जे गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूढाय गच्छई । न मे दिद्धे परे लोए, चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥
 हत्थागया इमे कामा, कालियाचे अणागया । को जाणउ परे लोए, अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥
 जणेण मद्धि होअमि इह वाले पगच्छट । कामभोगाणुगएण, केस सपडिबज्जई ॥ ७ ॥
 तओ से दण्ड समारभई, तसेसु वारसेसु य । अट्ठाए य अणट्ठाए, भूयगाम विद्दिंसई ॥ ८ ॥
 हिंसे वाले मुसाअर, माइल्ले पिमुणे सडे । सुजमाणे सुअ मस, सेयमेय ति मन्नई ॥ ९ ॥

कायसा वयमा मत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु। दुडओ मल सचिण्ड, सिंमुणागु व्व मट्टिय ॥ १० ॥
 तओ पुट्टो आयकेण, गिलाणो परितप्पई। पमीओ परगेगम्म, रुम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥
 मुया मे नरए ठाणा, अमीलाण च जा गई। जालाण कुररुम्माण, पगाढा जन्व पेयणा ॥ १२ ॥
 तत्थोवराडय ठाण, जहा मेयमणुस्सुय। आहारुम्मेहि गउन्तो, सो पन्ठा परितप्पई ॥ १३ ॥
 जहा मागडिओ जाण, सम हिच्चा महापह। विमम मगओडण्णो अक्खे भग्गम्मि मोयई ॥ १४ ॥
 एव धम्म विउक्कम्म, अहम्म पडिउज्जिया। वाले मन्चुमुह पत्ते, अक्खे भग्गे व मोयई ॥ १५ ॥
 तओ म मरणउम्मि, वाले सतमई भया। अक्काममरण मरई, पुत्ते व कलिणा जिण ॥ १६ ॥
 ण्य अक्काममरण, जालाण तु पवेत्थ। एत्तो मक्काममरण, पण्डियाण सुणेह मे ॥ १७ ॥
 मरण पि मपुण्णाण, जहा मेयमणुस्सुय। विप्पमण्णमणाचाय, सजयाण वुसीमओ ॥ १८ ॥
 नइम गच्चेसु भिक्खूसु, नइम सच्चेसु गाणिसु। नाणासीला अगारत्वा, विममसीला य भिक्खुणो ॥ १९ ॥
 सन्ति एगेहि भिक्खुहिं, गारत्था सजमुत्तरा। गारत्थेहि य मच्चेहिं, माहयो सजमुत्तरा ॥ २० ॥
 चीराजिण नग्गिणिण, जटी सत्ताडिमुण्डिण। एयाणि वि न तायन्ति, दुम्सील परियाणय ॥ २१ ॥
 पिडोल ण्व दुस्सीले, नरगाओ न मुच्चई। भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुच्चए रुम्मई दिव ॥ २२ ॥
 अगारिसामाडयगाणि, मट्ठी काएण फासए। पोमह दुडओ पत्तम, एगगय न हाए ॥ २३ ॥
 एउ सिरत्ताममान्ने, गिहियासे वि सुत्तए। मुच्चई उविपच्चाओ, गच्छे जत्तमलोगय ॥ २४ ॥
 अह जे मनुडे भिक्खु, दोण्ह अनयरे सिया। मउ दुक्खपहीणे वा, देवे वावि महिद्धीण ॥ २५ ॥
 उत्तराड विमोहाइ, जुईमन्ताणुपुच्चसो। ममाडण्णाड जक्खेहिं, आगामाड अमसिणो ॥ २६ ॥
 दीहाउया इड्डीमन्ता, समिद्धा क्कामण्डिणो। अणुणोउत्तमक्कामा, सुज्जो अचिमलियाभा ॥ २७ ॥
 ताणि ठाणाणि गच्छन्ति, सिक्खित्ता सजम तउ।
 भिक्खागे वा गिहत्थे वा, जे सन्ति पडिनिवुटा ॥ २८ ॥
 तेसिं मोच्चा सपुज्जाण, सजयाण वुमीमओ। न सतमति मग्गते, सीउत्तन्ता वट्ठस्सुया ॥ २९ ॥
 तुलिया वित्तेयमादाय, दयावम्मम्म सन्तिण। विप्पमीएज्ज मेहावी, तहाभूण्ण अप्पणा ॥ ३० ॥
 तओ काले अभिप्पेए, सट्ठीतालिममन्तिण। विणएज्ज लोमहरिम, मेय देहम्म कवए ॥ ३१ ॥
 अह कालम्मि सपत्ते, जाषायाय समुस्सम। सकाममरण मरई, तिण्हमन्नयर मुणी ॥ ३२ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ अक्काममरणज्ज पच्चम अज्जयण ममत्त ॥ ५ ॥

॥ अह खुड्ढागनियट्टिज्ज छट्ट अज्जयण ॥

जाउन्तविज्जापूरिमा, मवे ते दुक्खममवा। लुप्पन्ति उट्ठसो मूटा, समारम्मि अणन्तए ॥ १ ॥
 समिन्मय पण्डए तम्हा, पामजाई पहे वट्ठ। अप्पणा मच्चमेसेज्जा, मेत्ति भूएनु कप्पए ॥ २ ॥
 माया पियान्हुया माया, भज्जा पुत्ता य ओरमा। नाल ते मम ताणाण, लुप्पतस्स सरुम्मुणा ॥ ३ ॥
 एयमट्ठ मपेहाए, पासे मभियदमणे। छिन्द गेड्ढिं सिणेह च, न क्खे पुच्चमयुय ॥ ४ ॥
 गगाम मणिउण्डल, पमरो दासपोरुत्त। सव्वमेय चत्ताण क्कामच्छी भविम्मसि ॥ ५ ॥

अज्ज्ञत्थ सव्यओ सव्य, दिस्म पाणे पियायण । न हणे पाणिणो पाणे, भयवेराओ उतरए ॥ ६ ॥
 आदाण नरय दिस्म, नायणज्ज तणामवि । दोगुञ्छी अप्पणो पाए, दिन्न भुजज्ज भोयण ॥ ७ ॥
 इहमेगे उ मच्चन्ति, अपचक्कत्ताय पायग । आयरिय विदित्ताण, मव्वदुक्खण मुच्चण ॥ ८ ॥
 भणता जरुन्ता य, वन्धमोक्खपडण्णिणो । वायापिरियमेत्तेण, समामासेन्ति अप्पय ॥ ९ ॥
 न चित्तातायए भामा, वुओ विज्जाणुसामण । विसन्ता पायग्ग्मेहिं, बाला पडियमाणिणो ॥ १० ॥
 जे केड मरीर सत्ता, चणणे रुवे य सग्ग्मो । मणमा राययवेण, सव्वे ते दुक्खमम्भना ॥ ११ ॥
 आरता दीहमद्दाण, सत्तारम्मि जणन्तए । तम्हा सव्वदिम पस्स, अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १२ ॥
 बहिया उद्धमादाय, नायग्ग्गे क्याड वि । पुव्वक्खम्मक्खयट्ठाण, इम देह समुद्धरे ॥ १३ ॥
 विविच मम्मणो हउ, कालरुपी परिव्वण । माय पिंडस्स पाणम्म, कड लद्धण भक्खए ॥ १४ ॥
 सन्निहि च न दुव्वेज्जा, ज्ञेयमायण सज्ज । पक्खीपत्त समादाय, निरेक्खो परिव्वण ॥ १५ ॥
 एमणासमिओ लज्ज, गामे अणिरओ चरे । अप्पमत्तो पमत्तेहिं, पिण्टवाय गवेत्तण ॥ १६ ॥
 एव से उटाहु अणुत्तम्नाणी अणुत्तम्दसी अणुत्तरनाणदमणधर अग्गा नायपुत्ते भगव वेमालिए विपालिए

इअ रतुद्दागनियठिज्ज उट्ट अज्जयण समत्त ॥ ६ ॥

॥ अह एलय सत्तम अज्जयण ॥

जहाएस समुद्दिस्स, कोइ पोसेज्ज एलय । जोयण जस देज्जा, पोमेज्जावि मयङ्गणे ॥ १ ॥
 तजो से पुट्ठे परिव्वडे, जायमेण महोदरे । पीणिए विउले देहे, आणम परिक्रएण ॥ २ ॥
 जान न एइ जाएसे, ताव जीउइ सो दुही । अह पतम्मि आएसे, मीम छेत्तुण भुज्जई ॥ ३ ॥
 जहा से खलु उरग्ग्मे, धाएसाए समीहिए । एउ वाले अहम्मिट्ठे, ईहई नरयाउय ॥ ४ ॥
 हिंसे वाले मुत्तानाई, अद्दाणसि विलीरुए । अन्नदत्तहरे तणे, माई क तु हर सदे ॥ ५ ॥
 इन्वीविसयगिडे य, महारभपरिग्गहे । भुजमाणे सुर मस, परिव्वडे परदमे ॥ ६ ॥
 अयक्खरभोई य, तुडिछे चियलोहिए । आण्य नरए करे, जहाए व एलण ॥ ७ ॥
 आसण सयण जाण, वित्त कामे य भुजिया । दूम्माहड जण हिच्चा, बहु सच्चिणिया रथ ॥ ८ ॥
 तओ कम्मगुरु जतू, पच्चुप्पत्तरायाणे । अए व्ज आगयाएसे, मरणतम्मि सोयई ॥ ९ ॥
 तजो आउपरिकलीणे, चुया देहा विहिंसगा । आसुरीय दिस बाला, मच्छन्ति अयमा तम ॥ १० ॥
 जहा कामिणिए हउ, सहस्स हारण नरो । अपच्छ अम्बग भोच्चा, राया रज्ज तु हारए ॥ ११ ॥
 एउ माणुस्सगा कामा, टयकामाण अन्तिए । सहस्सगुणिया भुज्जो, आउ कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥
 अणमनासानउवा, जा सा पन्नजो ठिई । जाणि जीयन्ति दूम्मेहा, ऊणयात्तमयाउए ॥ १३ ॥
 जहा य तिन्नि राणिया, मूल धेत्तूण निग्गया । एगोउत्थ लहई लाभ एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥
 एगो मूल पि हारित्ता, आगओ तत्थ वाणिओ । ववगरे उरमाएमा, पच धम्मे विषाणह ॥ १५ ॥
 माणुसत्त भवे मूल, लाभो देउगई भवे । मूलच्छेएण जीयाण नरगतिरिक्खत्तण धुव ॥ १६ ॥
 दुहओ गई बालम्म, आगई वहमूलिया । देवत्त माणुसत्त च, ज निए लीलयासडे ॥ १७ ॥

तत्रो निय सइ होइ, दुविह दोग्गइ गण । दुह्महा तम्म उम्मग्गा, अदाण सुहरादवि ॥ १८ ॥
 एउ निय सपेदाए, तुह्मिया बाल च पण्डिय । मूलिय ते पवेसन्ति, माणुमि जोणियेन्ति जे ॥ १९ ॥
 वेमायाहिं सिक्खाहिं, जे नरा गिहिसुब्बया । उयेन्ति माणुम जोणिं, कम्ममचा हु पाणिणो ॥ २० ॥
 जेमिं तु पिउला सिम्मा, मूलिय ते अइच्छिया । सीलउन्ता मरीसेमा, अदीणा जन्ति देउय ॥ २१ ॥
 एवमदीणय भिक्खु, आगारिं च त्रियाणिया । ऋण्णु विचमेलिक्व, जिचमाणे न मदिदे ॥ २२ ॥
 जहा सुसग्गे उदग, समुदेण मम मिणे । एउ माणुम्मगा कामा, देउकामाण अतिए ॥ २३ ॥
 सुसग्गमेचा इमे कामा, मच्चिरुद्धम्मि आउए । कम्म हेउ पुगहाउ, जोगस्सेम न सदिदे ॥ २४ ॥
 इह कामाणियद्धम्म, अत्तट्टे अउरज्जट्टे । मोचा नेयाउय मग्ग, ज भुज्जो परिमस्सई ॥ २५ ॥
 इह कामाणियद्धम्म, अत्तट्टे नाउरज्जट्टे । पूढदेहनिरीहेण, भवे देवि त्ति मे सुय ॥ २६ ॥
 इहदी जुई जस्सो वण्णो, आउ सुहमणुचर । भुज्जो जय मणुस्सेसु, तन्थ से उउवज्जई ॥ २७ ॥
 बालस्म पस्म बालच, अहम्म पडिउज्जिया । चिचा धम्म अहम्मिद्वे, नए उउवज्जई ॥ २८ ॥
 धीरस्म पस्म धीरत्त मच्चधमाणुत्तिणो । चिचा अधम्म धम्मिद्वे, देसेसु उउवज्जई ॥ २९ ॥
 वलियाण बालमाउ, अनाल चेउ पडिण । चउउण बालमाउ, अनाल सेउई सुणि ॥ ३० ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ एलय-उज्जयण ममत्त ॥ ७ ॥

॥ अह काविलिय अट्टम अज्जयण ॥

अधुवे अमामयम्मि, ससारम्मि दृक्कपउराण ।
 कि नाम होज्जत कम्मय, जेणाह दोग्गइ न गउजेज्जा ॥ १ ॥
 विजहित्तु पुव्वयमज्जोय, न सिणेह र्हिचि कुब्बेज्जा ।
 असिणेहसिणेहकरेहिं, दोमपओमेहि सुचए भिम्भु ॥ २ ॥
 तो नाणदमणममग्गो, हियनिस्सेसाय मव्वजीयाण ।
 तेसिं तिमोत्तणत्राए, भामई सुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥
 सउ गथ फलह च, पिप्पजहे तहाविह भिम्भु ।
 मच्चेसु कामजाएसु, पाममाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥
 भोगामियदोमविमन्ने, हियनिस्सेयमउद्धिउोचत्थे ।
 बाळे य मन्दिए मूटे, वज्जई मच्छिया व सेलम्मि ॥ ५ ॥
 दुप्परिचया इमे कामा, नो सुज्जहा अरीरपुरीमेहिं ।
 अह मन्ति सुव्वया माह, जे तरन्ति अतर त्रियाया वा ॥ ६ ॥
 समणासु एगे वयमाणा, पाणउह मिया अयाणन्ता ।
 मन्दा निरय गच्छन्ति, बाला पाणियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥
 न हु पाणउह अणुजाणे, सुच्चेज्ज कयाह सव्वदुक्खाण ।
 एवारिपहिं अक्खाय, जेहिं इमो माधुधम्मो पत्ततो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा, से समीइ त्ति बुच्चई ताई ।
 तओ से पावय कम्म, निज्जाइ उदग व थलाओ ॥ ९ ॥
 जगनिस्सिएहि भूएहि, तसनामेहि धाररेहि च ।
 नो तेसिमारमे दइ, मणमा वायसा कायसा चेप ॥ १० ॥
 सुद्धेसणाओ नच्चाण, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ।
 जायाए घासमेसेज्जा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥
 पत्ताणि चेव सेवेज्जा, सीयपिंड पुराणकुम्मास ।
 अद्दु ववस पुलाग मा, जणणट्टाए निवेसए मणु ॥ १२ ॥
 जे लक्खण च सुविण, अद्दुविज्ज च जे पठज्जन्ति ।
 न हु ते समणा वूचन्ति, एव आयरिएहिं अक्खाय ॥ १३ ॥
 इहजीविय अणियमेत्ता, पभट्टा समाहिजोएहिं ।
 ते कामभोगरसगिद्धा, उववज्जन्ति आसुर काए ॥ १४ ॥
 तत्तो वि य उव्वट्टित्ता, ससार ण्ह अणुपरियडन्ति ।
 बहुकम्मलेगलित्ताण, बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं ॥ १५ ॥
 कसिणपि जो इम लोय, पडिपुण्ण दलेज्ज इक्कम्म ।
 तेणावि से न सत्तुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥ १६ ॥
 जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवइइई ।
 दोमासरूय कज्ज, कोडीण वि न निट्ठिय ॥ १७ ॥
 नो रक्कपसीसु गिज्जेज्जा, गडवच्छासु ऽणोचिच्चासु ।
 जाओ पुरिस पलोभित्ता, सेच्छन्ति जहा व दासेहिं ॥ १९ ॥
 नारीसु नोपगिज्जेज्जा, इत्थी विप्पजहे अणागारे ।
 धम्म च पेमल नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ॥ १९ ॥
 इअ एम धम्मे अक्खाए कविलेण च विमुद्धपन्नेण ।
 तरिहिन्निड जे उ काह्तिन्ति, तेहिं आराहिया दुवे लोस ॥ २० ॥
 त्ति चेमि ॥ इअ काविलीय अट्टम अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

॥ अह नवम नमिपलवज्जा अज्झयण ॥

चइज्जण देवलोगाओ, उरउरओ माणुसम्मि लोसम्मि । उरमन्तमोहणिज्जो, सरई पोरणिणिय जाइ ॥ १ ॥
 जाइ मरिच्चु भयव, महससुद्धो अणुत्तरे धम्मे । पुत्त ठवेत्तु रज्जे, अभिणिकखमई नमी राया ॥ २ ॥
 से देवलोगमरिसे, अन्तेउरवरगओ वरे भोए । भुज्जित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिचयई ॥ ३ ॥
 मिहिल सपुरजणउय, उलमारोह च परिणण मव्वा । चिच्चा अभिनिउन्तो, एग तमहिइट्टीओ भयव ॥ ४ ॥
 कोलाइलगसभूय, आमी मिहिलाए पच्चयन्ताम्मि । तइया रायरिसिम्मि, नमिम्मि अभिणिकखमतम्मि ॥ ५ ॥

अन्मुद्रिय रायरिमि, पव्वज्जाठाणमुत्तम । सको माहणव्वेण, इम वयणमच्चवी ॥ ६ ॥
 क्रिण्णु भो अज्ज मिहिला, कोलाहलणसकुला । सुव्वन्ति दारुणा महा, पासाण्णु गिहेसु य ॥ ७ ॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ ८ ॥
 मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाण मणोरमे । पत्तपुप्फफोवेए, घट्टण बहुगुणे मया ॥ ९ ॥
 वाएण हीग्माणम्मि, चेइयम्मि मणोरमे । दुहिया असरणा अत्ता, एण कन्दन्ति भो खगा ॥ १० ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमच्चवी ॥ ११ ॥
 एम अग्गी य वाऊ य, एण डङ्गइ मन्दिर । भयव अन्तेउर तेण, कीम ण नापेक्कवह ॥ १२ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ १३ ॥
 सुह वसामो जीणामो, जेसि मो नत्थि किचण । मिहिलाए डङ्गइमाणीण, न मे डङ्गइ किचण ॥ १४ ॥
 चत्तपुत्तकलत्तम्म, नि वागारम्म भिक्खूणो । पिय न त्रिज्जई किचि, अप्पिय पि न त्रिज्जई ॥ १५ ॥
 घट्टु सु मुणिणो भद्द, अणमारम्म भिक्खूणो । मच्चओ विप्पमुत्तम्म, एगन्तमणुपमजो ॥ १६ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ १७ ॥
 पागार कारइत्ताण, गोपुरदालगाणि च । उस्सूलगमयग्धीओ तओ गच्छसि रत्तिया ॥ १८ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ १९ ॥
 सद्ध नगर क्रिच्चा, तवसवरमग्गल । खन्ति निउणपागार, तीगृत्त दुप्पधमय ॥ २० ॥
 घणु परथम क्रिच्चा, जीन च इरिय सया । धिइ च केयण क्रिच्चा, सच्चेण पल्लिमथए ॥ २१ ॥
 तनारायजुत्तेण, मित्तूण कम्मकच्चुय । म्मणी त्रिजयसगामो, भावाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिमि, देविन्दो इणमच्चवी ॥ २३ ॥
 पागाए कारइत्ताण, वट्टमाणगिहाणि य । बालग्गपोइयाओ य, तओ गच्छसि रत्तिया ॥ २४ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ २५ ॥
 समय खल्लु मो कुणई, जो मग्गे कुणई घर । जत्थेण गन्तुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्वेज्ज सासय ॥ २६ ॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिसि, देविन्दो इणमच्चवी ॥ २७ ॥
 आमोसे लोमहारे य, गट्टिमेए य तक्करे । नगरम्म खेम काऊण, तओ गच्छसि रत्तिया ॥ २८ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ २९ ॥
 अमह तु मणुम्मोहिं, मिच्छा दडो पञ्जुई । अकारिणोऽत्थ वज्जन्ति, मुच्चई कारओ जणो ॥ ३० ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिमि, देविन्दो इणमच्चवी ॥ ३१ ॥
 जे केइ पत्थिया तुज्ज, नानमन्ति नराहिना । वसे ते ठावइत्ताण, तओ गच्छसि रत्तिया ॥ ३२ ॥
 एयमट्ट निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमच्चवी ॥ ३३ ॥
 जो महस्स महस्माण, सगामे द्दुज्जए जिणे । एग जिणेज्ज अप्पाण, एस से परमो जओ ॥ ३४ ॥
 अप्पणामेव जुज्जाहि, कि ते जुज्जेण वज्जओ । अप्पणामेवमप्पाण, जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥
 पत्थिन्दियाणि धोह, माण माय तहेव लोह च । दुज्जय चैव अप्पाण, सच्च अप्पे जिण जिय ॥ ३६ ॥
 एयमट्ट निसामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिमि, देविन्दो इणमच्चवी ॥ ३७ ॥
 जइत्ता विउले जन्ने, भोइत्ता समणमाहणे । दत्ता भोच्चा य जिट्ठा य, तओ गच्छसि रत्तिया ॥ ३८ ॥

एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमन्चयी ॥ ३९ ॥
 जो सहस्स सहस्साण, मासे मासे गय दए । तस्स वि सजमो सेओ, अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥
 एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमि रायरिमिं, देविन्दो इणमन्चयी ॥ ४१ ॥
 घोरासम चइत्ताण, अन्न पत्थेसि आमम । इहेव पोसहरओ, भयाहिना मणुपाहिना ॥ ४२ ॥
 एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिमिं, देविन्दो इणमन्चयी ॥ ४३ ॥
 मासे मासे तु जो वालो, पुमगेण तु भुवण । न सो मग्गायधम्मस्स, ण्ण अग्घट मोत्तमिं ॥ ४४ ॥
 एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ, तओ नमिं रायरिमिं, देविं दो इणमन्चयी ॥ ४५ ॥
 हिरण्ण सुवण्ण मणिमुत्त, कस दूस च वाहण । घोस वट्टाउइत्ताण, तओ गच्छसि गत्तिया ॥ ४६ ॥
 एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिमिं, देविन्दो इणमन्चयी ॥ ४७ ॥
 सुवण्णरूपस्स उ पत्तया भवे, सिंया ह्णु केलामममा असस्सया ।

नरस्स लुद्धम्म न ताई किंचि, इच्छा उ आगामममा अणन्तिया ॥ ४८ ॥

पुढवी साली जना चैन, हिरण्ण पशुभिससह । पडिपुण्ण नालमेगस्स, इइ निज्जा तत्र चर ॥ ४९ ॥
 एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमिं रायरिसिं, देविन्दो इणमन्चयी ॥ ५० ॥
 अच्छेरयमं सुए, भोए चयसि पत्तिया । अमन्ते कामे पत्थेसि, मक्कपेण निहम्ममि ॥ ५१ ॥
 एयमद्व निमामित्ता, हेऊकारणचोइओ । तओ नमी रायरिसी, देविन्दो इणमन्चयी ॥ ५२ ॥
 सल्ल कामा विस कामा, कामा आमोविसोत्तमा । कामे पत्थेमाणा, अकामा जन्ति दोग्गइ ॥ ५३ ॥
 अहे वयन्ति कोहेण, माणेण अहमा गई । माया गई पडिग्घाओ, लोभाओ दुदओ मय ॥ ५४ ॥
 अउउज्झिऊण माहरूपव, निउउच्चिऊण इन्दत्ता चन्दइ अभिप्युणतो, इमाहि महराहिं वग्गहिं ॥ ५५ ॥
 अहो ते निज्जिओ कोहो, अहो गाणो परानिओ । अहो निरकिया माया, अहो लोमो वसीओ ॥ ५६ ॥
 अहो ते अज्जव साहु, अहो ते साहु मइव । अहो ते उचमा गन्ती, अहो ते मुत्ति उचमा ॥ ५७ ॥
 इइ सि उचमो भन्ते, पच्छा होहिसि उचमो । लोमुत्तमुत्तम ठाण, सिद्धिं गात्तसि नीरओ ॥ ५८ ॥
 एव अभिप्युणतो, रायरिमिं उचमाए सद्दाण । पयाहिण करेत्तो, पुणो पुणो चन्दई मको ॥ ५९ ॥
 तो वन्दिऊण पाए, चक्काइसलस्सणे मुणिरस्स । आगासेणुपइओ, रलियचलकुडलतिरीडी ॥ ६० ॥
 नमी नमेइ अप्पाण, सकल सजेण चोइओ । चइऊण गेह च वेदही, मामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥
 एव करेन्ति सपुट्ठा, पडिया पत्तियक्खणा । निणियट्ठन्ति भोगेसु, जहा से नमी रायरिसि ॥ ६२ ॥

त्ति बेमि ॥ इअ नमिपन्थज्जा ममत्ता ॥

॥ अह दुमपत्तय दसम अज्झयण ॥

- दुमपत्तए पडुयए जहा, निउडइ राडगणाण अचए ।
 एव मणुयाण जीविय, समय गोयम मा पमायण ॥ १ ॥
 कुसग्गे जह ओपचिन्दुए, थोउ चिड्डइ लम्बमाणण ।
 एउ मणुयाण जीविय, समय गोयम मा पमायण ॥ २ ॥
 इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए ।
 निहुणादि रय पुरे कड, समय गोयम मा पमायण ॥ ३ ॥
 दुडहे खल माणुसे भणे, चिरकाले नि सच्चपाणिण ।
 गादा य पिनाग कम्मणो, समय गोयम मा पमायण ॥ ४ ॥
 पुढनिक्कायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 काल सराईय, समय गोयम मा पमायण ॥ ५ ॥
 आउक्कायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 काल सराईय, समय गोयम मा पमायण ॥ ६ ॥
 तेउक्कायमडगओ, उक्कोस जीरो य सउसे ।
 काल सखाईय समय गोयम मा पमायण ॥ ७ ॥
 पाउक्कायमडगओ, उक्कोस जीरो य सउसे ।
 काल सराईय, समय गोयम मा पमायण ॥ ८ ॥
 वणस्सट्ठायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 कालमणन्तदुउन्तय समय गोयम मा पमायण ॥ ९ ॥
 वडन्टियवायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 काल सरिउज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायण ॥ १० ॥
 तेइन्दिक्कायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 काल मखिज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायण ॥ ११ ॥
 चउनिन्टियवायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 काल सरिउज्जसन्निय, समय गोयम मा पमायण ॥ १२ ॥
 पंचिन्दिक्कायमडगओ, उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 सत्तट्ठभउगहणे, समय गोयम मा पमायण ॥ १३ ॥
 देणे नेरडण यमडगओ उक्कोस जीरो उ सउसे ।
 इक्केभउगहणे समय गोयम मा पमायण ॥ १४ ॥
 एउ भउसमारे, संमरट सुहासुहेहि रुम्मेदि ।
 जीरो पमायवहुलो, समय गोयम मा पमायण ॥ १५ ॥

लक्ष्मण वि माणुमत्तण, आरिअत्त पुणरावि दुल्लह ।
 विगलिन्दियया ह् दु दीसई, समय गोयम मा पमायए ॥ १६ ॥
 लक्ष्मण वि आयरित्तण, अहीणपचेन्दियया ह् दुल्लहा ।
 निगलिन्दियया ह् दु दीसई, समय गोयम मा पमायए ॥ १७ ॥
 अहीणपचेन्दियत्त पि से लहे, उत्तमधम्मसुई ह् दुल्लहा ।
 इतिथिनिवेसए जणे, समय गोयम मा पमायए ॥ १८ ॥
 लक्ष्मण वि उत्तम सुह, संहणा पुणरावि दुल्लहा ।
 मिच्छत्तनिवेसए जणे, समय गोयम मा पमायए ॥ १९ ॥
 धम्म पि ह् दु सद्दहन्तया, दुल्लहया काएण फासया ।
 इह कामगुणेहि मुच्छिया, समय गोयम मा पमायए ॥ २० ॥
 परिजूरइ ते सरीरय, केमा पण्डुरया ह्वन्ति ते ।
 से सोयवले य हायई, समय गोयम मा पमायए ॥ २१ ॥
 परिजूरइ ते सरीरय, केसा पण्डुरया ह्वन्ति ते ।
 से चवसुण्ठे य हायई, समय गोयम मा पमायए ॥ २२ ॥
 परिजूरइ ते सरीरय, केसा पण्डुरया ह्वन्ति ते ।
 से घाणवले य हायई, समय गोयम मा पमायए ॥ २३ ॥
 परिजूरइ ते सरीरय, केमा पण्डुरया ह्वन्ति ते ।
 से जिच्चमवले य हायई, समय गोयम मा पमायए ॥ २४ ॥
 परिजूरइ ते सरीरय, केमा पण्डुरया ह्वन्ति ते ।
 से फासवले य हायई, समय गोयम मा पमायए ॥ २५ ॥
 परिजूरइ ते सरीरय, केमा पण्डुरया ह्वन्ति ते ।
 से सच्चैवे ये य हायई, समय गोयम मा पमायए ॥ २६ ॥
 अरइ गण्ड विद्यइया आयका विविहा फूमन्ति ते ।
 विहडइ विद्धमइ ते सरीरय, समय गोयम मा पमायए ॥ २७ ॥
 चोन्दिन्द सिणेहमप्पणो, कुमुय सारइय व पाणिय ।
 से मच्चसिणेहमज्जिए, समय गोयम मा पमायए ॥ २८ ॥
 चिच्चाण धण च भारिय, पच्चइओ हि सि अणगारिय ।
 मा वन्त पुणो वि आइए, समय गोयम मा पमायए ॥ २९ ॥
 अबउज्झिय मिच्चवन्धन, विचल चेत धणोहसत्तय ।
 मा त विउय गवेसए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३० ॥
 न ह् जिणे अज्ज दिस्मई बहुमए दिस्तइ मग्गदेसिण ।
 सपइ नेयउए पइ, समय गोयम मा पमायए ॥ ३१ ॥
 अनमोहिय कण्टगा पइ, ओइण्णो सि पइ महालय ।

गच्छसि मग्ग रिमोहिया, समय गोयमे मा पमायए ॥ ३२ ॥
 अपले जह भारत्राहए, मा मग्गे विममे वगाहिया ।
 पन्ठा पच्छाणुतावए, ममय गोयम मा पमायए ॥ ३३ ॥
 तिण्णो हु सि अण्णम मड, किं पुण चिद्धसि तीरमागजो ।
 अमितुर पार गमित्तए, समय गोयम मा पमायए ॥ ३४ ॥
 अरुलेवरसेणि उस्सिया, सिद्धिं गोयम लोय गच्छसि ।
 खेम च सिम अणुत्तर, ममयं गोयम मा पमायए ॥ ३५ ॥
 बुद्धे परिनिबुद्धे चरे, गामगए नगरे व सजए ।
 सन्तीमग्ग च वूहए, ममय गोयम मा पमायए ॥ ३६ ॥
 बुद्धस्म निमम्म भासिय, सुकहियमट्टपजोममोहिय ।
 राग दोस च उिन्दिया, सिद्धिगड गण गोयमे ॥ ३७ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ हुमपत्तय समत्त ॥ १० ॥

॥ अह वहुस्सुयपुज्ज एगारस अज्झयण ॥

सजोगा विष्णुसुक्कस्म, अणमारस्स भिक्खुणो । आयार पाउरुरिस्सामि, आणुपुच्चि मुणेह मे ॥ १ ॥
 जे यावि होइ नि वज्जे, यद्धे लुद्धे अणिग्गहे अभिक्खण उल्लयई, अविणीए अनहुस्सुए ॥ २ ॥
 अह पचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लम्भई । धम्मा कोहा पमाणण, रोगेणालम्भण य ॥ ३ ॥
 अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलि त्ति बुच्चई । अहस्सितरे सया दन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥
 नासीले न विसीले, न सिया अडलोत्तए । अक्कोहणे सचरए, सिक्खासीलि त्ति बुच्चई ॥ ५ ॥
 अह चोइसहिं ठाणेहिं, वट्टमाणे उ सजए । अविणीए बुच्चई सो उ, निच्चाण च न गच्छइ ॥ ६ ॥
 अभिक्खण कोही हनइ, पवघ च पक्कवई । मेत्तिज्जमाणो वमड, सुयं लद्धूणमज्जई ॥ ७ ॥
 अवि पावपरिक्खेयी, अवि मित्तेसु कुप्पई । सुप्पियस्सावि मित्तस्म, र्हं भामड पायंय ॥ ८ ॥
 पहण्णराई दुहिले, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । असविभागी अवियत्ते, अविणीए त्ति बुच्चई ॥ ९ ॥
 अह पन्नरमाई ठाणेहिं, सुविणीए त्ति बुच्चट । नीयावत्ती अचपले, अमाई अकुत्तहरे ॥ १० ॥
 अप्य च अहिक्खिस्सवई, पवघ च न कुच्चई । मेत्तिज्जमाणो भयई, सुयं लद्धु न मज्जई ॥ ११ ॥
 न य पावपरिक्खेयी, न य मित्तेसु कुप्पई । अप्पियस्सावि मित्तस्म, र्हं कल्लण भासई ॥ १२ ॥
 कलहहमरगज्जिए वृद्धे अभिजाइए । हिरिम पटिसंलीणे, सुविणीए त्ति बुच्चई ॥ १३ ॥
 वसे गुरुकुले निच, जोगम उरहाणम । पियक पियंराई, से सिक्खे लद्धूमरिहई ॥ १४ ॥
 जहा सराम्मि पय, निहिय दुहओ वि विरायड । एव बहुस्सुए भिक्खु, धम्मो किती तहा सुय ॥ १५ ॥
 जहा से कम्मोयाण, आडण्ण कन्थए सिंया । आसे जवेण पवर, एव हणइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥
 जहाइण्णममारूढे, मूर द्ढपरकमे । उमओ नन्दिघोसेण, एणं हवड बहुस्सुए ॥ १७ ॥
 जहा करेणुपरिक्खिणे, बुजरे मट्ठिहायणे । वल्लन्ते अप्पडिहए, एव हणइ बहुस्सुए ॥ १८ ॥

जहा से तिकरसिगे, जायगन्धे विरापई । वमई जूहाहिवई, एव हवड बहुस्सुए ॥ १९ ॥
जहा से तिकरदाढे, उदग्गे दुप्पहसण । सीई मियाण परे, एव हवड बहुस्सुए ॥ २० ॥
जहा से वासुदवे, सरुचकगयाधर । अप्पडिहयपळे जीह, एव हवड बहुस्सुए ॥ २१ ॥
जहा से चाउरन्ते, चकपट्टीमहिट्टिए । चोदमरयणाहिरई, एव हवड बहुस्सुए ॥ २२ ॥
जहा से सहासकखे, वज्जपाणी पुरन्दरे । सके दवाहिरई, एव हवड बहुस्सुए ॥ २३ ॥
जहा से तिमिरविद्धसे, उचिट्टन्ते टियायरे । जळन्त इव तेण्ण, एव हवड बहुस्सुए ॥ २४ ॥
जहा से उड्डई चन्दे, नकखत्तपरिवारिण । पडिपुण्णे पुण्णमासीए, एव हवड बहुस्सुए ॥ २५ ॥
जहा से समाइयाण, कोट्टागार सुरक्खिण । नाणाभन्नपडिपुण्णे एव हवड बहुस्सुए ॥ २६ ॥
जहा सा दुमाण परा, जम्बू नाम सुदमणा । अणाट्टियस्स देवस्स, एव हवड बहुस्सुए ॥ २७ ॥
जहा सा नईण परा, मलिला सागरगमा । मीया नीलन्तपरहा, एव हवड बहुस्सुए ॥ २८ ॥
जहा से नगाण परे, सुमह मन्दर गिरी । नाणोमहिपज्जलिण, एव हवड बहुस्सुए ॥ २९ ॥
जहा से सयभुग्गणे, उदही अन्नजोदए । नाणारयणपडिपुण्णे, एव हवड बहुस्सुए ॥ ३० ॥

समुद्दगम्भोरसमा दुरासया, अचक्खिया केणइ दुप्पहमया ।

सुयस्सपुण्णा विउलस्स ताइणो, रावित्तु रुम्म गडमुत्तम गया ॥ ३१ ॥

तम्हा सुयमहिट्टिज्जा, उत्तमट्टगवेसए । जेण्णपाण पर चव, सिद्धि सपाउणेज्जासि ॥ ३२ ॥

त्ति येमि ॥ इअ बहुस्सुयपुज्ज समत्त ॥ ११ ॥

॥ अह हरिएसिज्ज चारह अज्जयण ॥

सोनागकुलसभूओ, गुणुचरधरो मुणी, हरिएसवलो नाम, आसि भिम्मू जिइन्दिओ ॥ १ ॥

इरिएमणभासाए, उच्चारसमिईसु य । जओ आयाणनिम्मेवे, सजओ सुममाहिओ ॥ २ ॥

मणगुचो वयगुचो, कायगुचो जिइन्दिओ । भिक्खट्टा वम्भइज्जम्मि, जन्नवाडे उवट्टिओ ॥ ३ ॥

त पासिऊण एज्जन्त, तवेण परिसोसिपं । पत्तोइहउत्तरण, उअहसन्ति अणारिया ॥ ४ ॥

जाईमयपडियद्धा, हिंसगा अजिइन्दिया । अन्नम्भचारिणो वाला, इम वयणमच्चवी ॥ ५ ॥

कथरे जागळड दिचरूने, काले विगराले फोकनासे ।

ओमचेलए पयुपिमायभूए, सरुद्रूम परिवरिय कण्ठे ॥ ६ ॥

को रे तुम इय अदसणिज्जे, काण व आमाइहमागओमि ।

ओमचेलया पयुपिसायभूया, गच्छकखलाहिं मिमिहिं ठिओ सि ॥ ७ ॥

जक्खे तहिं तिन्दुयत्तस्सवासी, अणुकम्पओ तस्स महासुणिसम ।

पच्छायइत्ता नियग सरीर, इमाइ वयणाडमुदाहरित्था ॥ ८ ॥

समणो अह सजओ, वम्भयारी, निरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।

परप्पविचस्म उ भिक्खकाले, अन्नस्स अट्टा इहमागओमि ॥ ९ ॥

नियरिज्जइ खज्जइ सुज्जइ, अन्न पभूय भययाणमेय ।

जाणेह मे जायणजीविणु चि, सेमात्रसस लभञ्ज एवस्ती ॥ १० ॥
उत्रवसुड भोयण माहणाण, अत्तट्टिय सिद्धमिहेगपक्ख ।
न ऊ वय एरिममन्नपाण, दाहामु तुज्झ किमिह ठिओ सि ॥ ११ ॥
बलेसु वीयाड ववाति नामगा, तहेन निशे सु य आममाए ।
एयाए सदाए दलाह मज्झ, आराहाण पुण्णमिण सु चित्त ॥ १२ ॥
खेत्ताणि अम्ह विडयाणि लोण, जहिं पन्निणा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा ज्ञाडविज्जीववेया, ताड तु खेत्ताड सुपेसलाड ॥ १३ ॥
कोहो य माणो य उहो य जेसिं, मोस अदत्त च परिग्गह च ।
ते माहणा जाडविज्जाबिहृणा, ताड तु खेत्ताड सुपात्रयाड ॥ १४ ॥
तुम्भेत्य भो माग्घरा गिराण, अट्ट न जापेह अहिज्ज पेए ।
उच्चारयाड धृणिणो चरत्ति, ताड तु खेत्ताड सुपेसलाड ॥ १५ ॥
अब्जात्रयाण पट्टिकूलमासी, पभाससे किं तु मगासि अम्ह ।
अवि एय निणम्सट्ट अन्नपाण, न यण दाहामु तुम नियण्ठा ॥ १६ ॥
समिद्धि मज्झ, मुममाहियस्म, गुत्तीहि गुत्तम्स जिडन्दियस्म ।
जइ मे न दाहित्य अहेमणिज्ज, किमज्ज जन्नाण लहि-थ लाह ॥ १७ ॥
के एत्थ रत्ता उत्रजोडया मा, अ-ज्ञायया मा मह रण्णिडण्हिं ।
एय ण्ण्डेण फलण्ण हन्ता, कण्ठम्मि घेत्तूण ग्वलेज्ज जोण ॥ १८ ॥
अज्जात्रयाण वयण सुणेत्ता, उद्धाडया तत्थ बट्टक्कमारा ।
दण्डेहि विचेहि न्सेहि चेन, ममागया त इसि तालयन्ति ॥ १९ ॥
रन्नो तहिं कोमलियस्स धूया, भद्दत्ति नामेण अणिन्दियगी ।
तं पासिया सजय हम्ममाण, बुद्धे कुमार परिनिव्ववेइ ॥ २० ॥
देवामिओगेण निओडण्ण, दिन्ना मु रन्ना मणमा न भाया ।
नरिन्देवि-टमिअन्दिण्ण, लेणम्हि वता इसिणा स एनो ॥ २१ ॥
एसो ह्नु सो उग्गततो महप्पा, जितिन्दिओ सजओ वम्मयारी ।
जो मे तथा ने-उड्ड डिज्जमाणिं, पिउणा मय कोसलिण्ण रन्ना ॥ २२ ॥
महाजसो एम महाशुभागो, घोग्ग्वओ घोग्पर-इमो य ।
मा एय हीलेह अहीलणिज्ज, मा मव्वे नेएण मे निद्धेज्जा ॥ २३ ॥
एयाड तीसे वयणाड मोचा, पत्तीड भद्दाड सुहासियाड ।
इसिस्म वेयावडियट्टयाण, जक्कता कुमारे विणिराग्यन्ति ॥ २४ ॥
ते घोररूना ठिय अ-तलिक्खे-सुरा तहिं व जण तालयन्ति ।
ते भिन्नदहे रुहिर वमन्ते, पासित्तु मया इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥
गिरिं नहेहिं राणह, अय मन्तेहिं खायह ।
जायतेय पाएहि इणह, जे भिक्खु अवमन्नह ॥ २६ ॥

आसीविसो उग्गतनो महेसी, घोरञ्जओ परक्कमो य ।
 अगणिवक्कय द पयगसेणा, जे भिक्खुय भत्तकाले वदेह ॥ २७ ॥
 सीसेण एय सरण उवेढ, समागया सव्वजणेण तुम्मे ।
 जइ इच्छह जीविय मा धण मा, लोमपि एसो कुवियो डहेज्जा ॥ २८ ॥
 अवहेडिय विट्ठिसत्तमगे, पमारिया चाहु अकमचेट्टे ।
 निज्जेरियण्छे र्हिर वमन्ते, उद्धमुह निग्गयजीहनेत्त ॥ २९ ॥
 ते पासिया खण्डियकड्ढभूए, विमणो विसण्णो अह माहणो सो ।
 इत्थि पमाएइ सभारियाओ, हील च निन्द च खमाह भन्ते ॥ ३० ॥
 बालेहि मूढेहि अयाणएहि, ज हीलिया तस्म खमाह भन्ते ।
 महप्पमाया इत्थिणो ह्रन्ति, न हु मुणी कोरपरा ह्रन्ति ॥ ३१ ॥
 पुट्ठि च इण्हि च अणागय च, मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
 जक्कमा हु वेयाण्डिय करेन्ति, तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥
 अत्थ च धम्म च विथाणमाणा, तुम्भन वि कुप्पह भूइपत्ता ।
 तुम्भ तु पाण मरण उवेमो, ममागया भव्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥
 अचेसु ते महाभाग, न ते किञ्चि न अत्थिमो ।
 भुजाहि मालिम वर, नाणावजणसजुय ॥ ३४ ॥
 इम च मे अत्थि पभूयमन्न, त भुजय अम्ह अणुगहट्टा ।
 वाढ ति पडिच्छइ भत्तपाण, मामस्म ऊ पारणप महप्पा ॥ ३५ ॥
 तहिय गन्धोदयपुप्फत्तास, दिव्वा तहि वसुहारा य बुट्टा ।
 पहयाओ दन्दहीओ सुरेहि, आगासे जहो दाण च पुट्ट ॥ ३६ ॥
 सक्क सु दीसइ तपोविसेसो न दीमइ जाइविसेस कोई ।
 सोवागपुत्त, एरिएमत्ताहु, जस्तेरिमा इत्थि महाणुभागा ॥ ३७ ॥
 कि माहणा जोइसमारभन्ता, उदएण सोहि बहिया विमग्गह ।
 ज मग्गहा चाहिरिय विमोहि न त सुइट्ट कुसला वयन्ति ॥ ३८ ॥
 वृस च जव तणऱ्ठुर्मग्ग, माय च पाय उदग फुमन्ता ।
 पाणाड भूयाड विहडयन्ता, भुज्जो वि मन्दा पगरेह पाव ॥ ३९ ॥
 कह च र भिक्खुय जयामी, पावाइ कम्माड पुणोळयामो ।
 अक्कमाहि णे सजय जक्कपूडया, कह सुजट्ट कुसला ययन्ति ॥ ४० ॥
 छज्जीमत्ताए अममारभन्ता, मोस अत्त च असरमाणा ।
 परिग्गह इत्थिओ साणमाय, णय परिन्नाय चरन्ति दन्ता ॥ ४१ ॥
 सुसत्तुडा पचहि सगरहि, इह जीविय अणऱ्ठवमाणा ।
 वामट्टाड सुत्तदेहा, महाजय जयड जन्नसिट्ठ ॥ ४२ ॥
 के ते नोइ के ते जोइटाणे, या ते मृया किं र ते मारिसग । -

एहा य ते ऋयग मन्ति मिम्भू, ऋयरण होमेण हुणासि जोड ॥ ४३ ॥
 तनो जोई जीनो जोड्ठाण, जोगा सुया सरीर ऋरिसग ।
 कम्महा सजमजोगमन्ती होम हुणामि इमिण पसत्थ ॥ ४४ ॥
 के ते हरए के य त सन्तित्तिये, ऋडि सिणाओ र रप जहासि ।
 आइक्ख णे सजय जक्खपड्ढा, इन्डाओ नाउ मरओ मगासे ॥ ४५ ॥
 धम्मे हरए वम्मे सन्तित्तिये, अणात्रिले अत्तपमन्नखेसे ।
 जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पत्तहामि दोस ॥ ४६ ॥
 एय सिणाण तुमत्तेहि दिट्ठ, महासिणाण इसिण पमन्थ ।
 जहि सिणाया विमला विसुद्धा, महात्तिसी उत्तम टाण पत्त ॥ ४७ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ ऋरिणसिज्ज ममत्त ॥ १० ॥

॥ अह चित्तसम्भूडज्ज तेरहम अड्झयणं ॥

जाईपराज्जओ गल्ल, ऋमि नियाण तु द्वितियणपुरम्मि। घुलणीण उम्भट्तो, उररत्तो पडग्गुमाओ ॥ १ ॥
 कम्पिह्हे सम्भूओ, चित्तो पुण जाओ पुरमतालम्मि। सेट्ठिवुलम्मि विसाले, धम्म मोऊण पच्चइओ ॥ २ ॥
 कम्पिह्धम्मि य नयने, ममागया दो वि चित्तमम्भूया। सुट्ठकमरफलवित्राण, ऋहेन्ति ते णमकेस्स ॥ ३ ॥
 चक्खवट्ठी महिद्वीओ, उम्भट्तो महापमो । नायम बहुमाणेण, इम ययणमववी ॥ ४ ॥
 आसीसु मायगे दोत्रि, अन्नमन्नवमाणुगा । अन्नमन्नमणुरत्ता, अन्नमन्नट्ठिणसिणो ॥ ५ ॥
 दासा दसण्णे आसीसु, मिया ऋाल्लजर नगे । हमा मयगततीरे, मोरागा ऋसिभूमिए ॥ ६ ॥
 देया य देयलोगम्मि, आमि अम्हे महिद्वीया। इमा नो छट्ठिया जाई, अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥
 कम्मा नियाणपयडा, तुमे राय विचिन्ठिनया । तेसिं फलवित्राणेण, त्रिप्पओगमुआगया ॥ ८ ॥
 सच्चमोयप्पगहा, उम्मा मए पुरा ऋडा । ते अज्ज परिमुआमो, किं तु चित्तेवि से तहा ॥ ९ ॥

मच्च सुचिण्ण सफल नराण, ऋडाण उम्माण न मोक्ख अरिय ।
 अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि, आया मम पुण्णफलोउवेण ॥ १० ॥
 जाणाहि मभूय महाणुभाग, महिद्वीय पुण्णफलोउवेय ।
 चित्त पि जाणाहि तरेण राय, इद्वी खुई तम्म त्रियप्भूया ॥ ११ ॥
 महत्थरूया वयणप्पभूया, गाहाणुमीया नरमच्चमज्जे ।
 ज भिक्खुणो सीलगुणोउवेया, इह जयन्ते सुमणो मि जाओ ॥ १२ ॥
 उच्चोयण महू ऋषे य उम्मे, पण्डया आउमहा य उम्मा ।
 म गिह चित्त उणप्भूय, पमाहि पचाउगुणोउवेय ॥ १३ ॥
 नट्ठेहि भीणहि य वाटणहिं, नारीउणाहि परिपारुणन्तो ।
 सुजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू, मम रोयई पत्तन्न ट्ठ दुर ॥ १४ ॥

त पुञ्चनेहेण क्याणुराण, नगाहिन कामगुणेषु गिद्ध ।
 धम्मास्मिओ तस्म हियाणुपेही, चित्तो इम उयणमुदाहरित्वा ॥ १५ ॥
 सच्च विलविय गीय, सच्च नद्ध विडम्बिय ।
 सच्चे आमरणा भारा, सच्चे कामा दुद्धान्हा ॥ १६ ॥
 मालामिरामेसु दुद्धानहेसु, न त सुह कामगुणेषु राय ।
 विरचक्रामाण तरोहणाण, ज भिक्खुण सीलगुणे रयाण ॥ १७ ॥
 नरिंद जाई अहमा नराण, सोवागजाइ दुद्धओ गयाण ।
 जहिं वय सच्चजणस्स, वेस्सा, वस्सी य सोवागनिवेशेणेषु ॥ १८ ॥
 तीसे य जाईइ उ पाविषाण, पुच्छुःसु सोवागनिवेशेणेषु ।
 मच्चस्म लोगस्म दुग्गणिज्जा, इह तु कम्माइ पुरे कडाइ ॥ १९ ॥
 सो दाणि सिं राय महाणुभाणो, महिद्धी पुण्णफलोउवेओ ।
 चइत्तु भोगाइ असासयाइ, आदाणहेउ अभिणिकखमाहि ॥ २० ॥
 इह जीविण राय अमासयम्मि, धणिय तु पुण्णाइ अशुच्चमाणो ।
 से सोयइ मच्चुमुहोवणीण, धम्म अक्काऊण परसि लोए ॥ २१ ॥
 जइह सीहो व मिय गहाय, मच्चू नर नेइ हु अन्तकाले ।
 न तस्म माया व पिथा व भाया, कालम्मि तम्ममहरा भवन्ति ॥ २२ ॥
 न तस्स दुक्ख विभयन्ति, नाइओ, न मिच्चग्गा न सुया न चधवा ।
 एको सय पच्चणुहोइ दुक्ख, कत्तारमेय अणुजाइ कम्म ॥ २३ ॥
 येचा दुपय च चउपपय च, येत्त गिह पणधन्न च सच्चं ।
 सकम्मवीओ असो पयाइ, पर भय सुदर पावग वा ॥ २४ ॥
 त एक तुच्छमरीरस से, चिईगय दहिय उ पावणेण ।
 मज्जा य पुत्तावि य नायओ य, दायरमन्न अणुसकमन्ति ॥ २५ ॥
 उरणिज्जई जीवियमप्पमाय, वण्ण जरा हरइ नरस्म राय ।
 पंचालराया वयण सुणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाइ ॥ २६ ॥
 अह पि जाणामि जइह साहू ज मे तुम साहसि वक्कमेय ।
 भोगा इमे सगकरा हवन्ति, जे दुज्जया भज्जो अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥
 इत्थियपुरम्मि चित्ता, दद्धण नररइ महिद्धीय ।
 कामभोगेषु गिद्धेण, नियाणमसुह कड ॥ २८ ॥
 तस्स मे अपडिक्कन्तस्म, इमं एयारिस फल ।
 जाणमाणो वि ज धम्म, कामभोगेषु मुच्छिओ ॥ २९ ॥
 नासो जहा परुजलारसत्तो, दद्धु थल नाभिसमेइ तीर ।
 एव चय कामगुणेषु गिद्धा, न भिक्खुणो मग्गमणुच्चरयाणो ॥ ३० ॥
 अचेइ कालो तरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।

उविच भोगापुत्रिण चयन्ति, दुम जहा रीणफल व पक्खी ॥ ३१ ॥
जड व मि भोगे चट्ट अमत्तो, अजाड कम्माड करेहि राय ।
धम्मे ठिओ मवपयाणुकम्पी, तो होहिसि देओ इओ त्रिउवी ॥ ३२ ॥
न तुज्ज भोगे च्छळण बुद्धी, गिद्धो सि आग्ग्भपरिग्गहेसु ।
मोह कओ एत्तिउ निप्पलाउ, गच्छामि गय आनन्तिओ मि ॥ ३३ ॥
पचालराया नि य उम्भट्ठो, साहुम्म तस्म उयण अफाउं ।
अणुत्तरे भुजिय कामभोम, अणुत्तर सो नए पण्डो ॥ ३४ ॥
चित्तो नि कामेहि निरत्तकामो, जदग्गचारित्तवओ महेसी ।
अणुत्तर मजम पालडत्ता, अणुत्तर मिद्धिगड गओ ॥ ३५ ॥
त्ति वेमि ॥ इअ चित्तसम्भूज्ज समत्तं ॥

॥ अह उसुयारिज्ज चोद्धम अज्जयण ॥

ढेवा भविच्चाण पुणे भउम्मी, केई चुवा एगविमाणगात्ती ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे, खाए समिद्धे सुग्गोमरम्मे ॥ १ ॥
मरुम्मसेसेण पुराकरण, बुल्लेमुग्गोसु य ते पक्षया ।
निच्चिण्णससारभया जहाय, जिण्णिदमग्ग मरण पन्ना ॥ २ ॥
पुमत्तमाग्गम्म कुमार दो वी, पुग्गेहिओ तस्म जमा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो, रायत्थ देवी कमलाउई य ॥ ३ ॥
जाईज्जरापच्चुभयाभिभूया, गहिंविहागभिनिविट्ठचित्ता ।
समारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा, ददुठण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥
पियपुत्तगा दोत्ति वि माहणम्म, मरुम्मसीलस्म पुरोहियस्म ।
सरित्तु पोरणिणिय तत्थ जाइ, तहा भुचिण्ण तउसजम च ॥ ५ ॥
ते कामभोगेसु असज्जमाणा, जाणुस्सएमु जे यावि दिव्वा ।
मोग्ग्वाभिकरुत्ती अभिजायसट्ठा, ताप उवाग्गम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥
थमामयं ददुठु इए निहार, बहुअन्तराय न य हीयमाउ ।
तम्हा गिहिसि न रई लहामो, आमन्तयामो चरिम्माणु भोण ॥ ७ ॥
अह तायगो तत्थ सुणीण तेसि, तवस्म नाघायरु वयासी ।
इम वय वेयत्रिओ वयन्ति, जहा न होई जसुयाण लीगो ॥ ८ ॥
अहिज्ज वेए परिविस्म विप्पे, पुत्ते परिट्ठप्प गिहिसि जाया ।
भोच्चाण भोए मह इत्थियाहि, आग्गणा होह सुणो पसत्था ॥ ९ ॥
सोयग्गिणा आयसुणिन्धणेण, मोहाणिला पज्जलणाहिण्ण ।
सतत्तमाउ परित्ठप्पमाणं, लाल्लप्पमाणं वदइ वदइ ॥ १० ॥

पुरोहित्य त कमसोऽणुणित्त, निमतयन्त च सुण धणेण ।
 जहकम कामगुणेहि चैन, कुमारगा ते पसमित्त ३क ॥ ११ ॥
 वेया अहीयान भवन्ति ताण, भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेण ।
 जाया य पुत्ता न ह्वन्ति ताण, को णाम ते अणुमन्नेज्ज एय ॥ १२ ॥
 खणमेत्तसोक्खा बहु कालदुक्खा, पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
 ससारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥
 परिव्वयन्ते अणियत्तमामे, अहो य राओ परितप्पमाणे ।
 अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे, पप्पोति मच्चु पुरिसे जर च ॥ १४ ॥
 इम च मे अत्थि इम च नत्थि, इम च मे त्थि इम अक्खि ।
 त एवमेय लालप्पमाण, हरा हरति त्ति कह पमाण ॥ १५ ॥
 धण पभूयं सह इत्थियाहिं, सयणा तहा कायगुणा पगामा ।
 तव कए तप्पड जस्म लोगो, त सब माहीणमिमेव तुब्भ ॥ १६ ॥
 धणेण कि धम्मघुराहिगारे, सयणेण वा कामगुणेहि चैन ।
 समणा भविस्सामु गुणोहधारी, वहिंनिहारा अभिगम्म भिक्ख ॥ १७ ॥
 जहा य अग्गी अरणी अमन्तो, सीरे घय तेह्महा तिलेसु ।
 एमेव ताया मरीरमि सत्ता, समुच्छड नासइ नावच्चिट्ठे ॥ १८ ॥
 नो इन्दियग्गेञ्चत्तमुत्तभावा, अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
 अज्जत्थहेउ निययम्स बन्धो, समारहेउ च वयन्ति बन्ध ॥ १९ ॥
 जहा वय धम्म अजाणमाणा, पाव पुरा कम्ममकासि मोहा ।
 ओलभमाणा परिव्वत्तयन्ता, त नेव भुञ्जो वि समायरामो ॥ २० ॥
 अग्गाहपम्मि लोगम्मि, सव्वओ परिवारिए ।
 अमोहाहिं पडन्तीहिं, गिहसि न रह लमे ॥ २१ ॥
 केण अग्गाहओ लोगो केण वा परिवारिओ ।
 का वा अमोहा बुत्ता, जाया चित्तारो हुमे ॥ २२ ॥
 मच्चुणाऽग्गाहओ लोगो, जराण परिवारिओ ।
 अमोहा रयणी बुत्ता, एव ताय विजाणह ॥ २३ ॥
 जा जा वचइ रयणी, न मा पडिनियत्तई ।
 अहम्म कुणमाणस्स, अफला जन्ति राइओ ॥ २४ ॥
 जा जा वचइ रयणी, न सा पडिनियत्तई ।
 धम्म च कुणमाणस्स, सफला जन्ति राइओ ॥ २५ ॥
 एगओ मयमित्ताण, दुहओ मम्मत्तसज्जुया ।
 पच्छा जाया मग्गिम्मामो, भिक्खमाणा कुले कुले ॥ २६ ॥
 जस्मत्थि मच्चुगा मक्ख, जस्म चत्थि पलायण ।

षो ज्ञाणे न भरिस्वामि, सो हृ क्ते सुए सिया ॥ २७ ॥
 अज्ञेय धम्म पडिवज्जयापो, जहिं पनत्ता न पूणम्मत्तामो ।
 अणागय नेव य अत्थि किच्ची, मद्दारसमणे विणइत्तु राग ॥ २८ ॥
 पहीणपुत्तम्म हृनरिय तामो, नासिट्ठि भिक्खापरियाड कालो ।
 माहाहि रस्सो व्हई ममाहि, छिन्नाहि माहाहि तमेव ठायु ॥ २९ ॥
 पराविहणो च्च जहेन पस्सी, भिच्चविहूणो च्च रणे नरिन्दो ।
 विचन्नमारो वणिओ च्च पोए, पहीणपुत्तो मि त्ही अत्थि ॥ ३० ॥
 सुसमिया कामगुणे इमे ते, सपिण्डिया अग्गरसप्पभूषा ।
 सुजामु ता कामगुणे पराम, पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्ग ॥ ३१ ॥
 सुत्ता रसा भोइ जहाइ षे त्तओ न जीविषट्ठा पजहामि भोए ।
 काम अलाम च सुह च दुक्ख, मच्चिकरमाणो चरिम्मामि मोण ॥ ३२ ॥
 मा हृ त्तम मौपरियाण मम्मरे, जुणो व ह मो पडिसोत्तगामी ।
 सुजाहि भोगाइ मए ममाण, दुक्ख खु भिक्खापरियाविहारो ॥ ३३ ॥
 जहा य भोइं तणुय सुयगो, निम्मोयणिं हिच्च पलेइ सुत्तो ।
 एमेए जाया पपइन्ति मोए, ते ह कइ नाणुगमिस्समेक्को ॥ ३४ ॥
 डिन्दित्तु जाल अणल व रोहिया, मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
 धोरेयसीला तत्तमा उटारा, वीग हु भिक्खाचरिय चरन्ति ॥ ३५ ॥
 नदेव कुत्ता सयइक्कमन्ता, तयाणि जालाणि टलित्तु हसा ।
 पलेन्ति पुत्ता य परं य मज्ज, ते ह कइ नाणुगमिस्समेक्का ॥ ३६ ॥
 पुरोहिय व समुयं सदार, सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
 वृद्धम्बसाग विउत्तम च, रायं, अभिक्ख नमुदाय देवी ॥ ३७ ॥
 वन्तासी पुरिमो राय, न सो होट पमसिओ ।
 माहणेण परिच्चत्त, धण आडाउमिच्छमि ॥ ३८ ॥
 सव्व जग जइ तुह, सव्व वावि धण भवे ।
 मव्व पि ते अपच्चत्त, नेव ताणाय व त्त ॥ ३९ ॥
 मरिहिसि राय जया तया वा, मणोरमे कामगुणे विहाय ।
 ण्को हु धम्मो नरदेव ताण, न विच्चई अन्नमिदेह किंचि ॥ ४० ॥
 नाह रमे पक्खिणि पत्ते वा, सताणत्तिन्ना चरिस्सामि मोण ।
 अक्कि यगा उज्जुक्का निराभिमि, परिग्गहारम्भनियत्तदोमा ॥ ४१ ॥

दग्गिणा जहा ग्णो, उज्जमाणुमु जन्तुमु । अन्ने मत्ता पमोयन्ति, रागदोमवस गया ॥ ४२ ॥
 एत्तमेव वय मूढा, कामभोगेसु मुत्तिंथा । उज्जमाण न जुज्जामो, रागदोमग्गिणा जग ॥ ४३ ॥
 भोगे भोचा ममिच्चा य, लुद्धुभूयविहारिणो । आमोयमाणा गच्छन्ति, टिया कामरुमा इव ॥ ४४ ॥
 इमे य वद्धा फन्दन्ति, मप हत्थज्जमागया । मत्ता कामेसु, भविम्मामो जहा इमे ॥ ४५ ॥

मामिस कुलल दिस्म, चञ्जमाण नि(ामिस । आमिस मव्यमुज्झिना, विहरिम्माभि निरामिमा ॥ ४६ ॥
 गिद्धोयमा उ नचाण, कामे समारउठुणे । उरगो सुवण्णपासे व, मरुमाणो तणु चर ॥ ४७ ॥
 नागो व व धण छित्ता, अप्पणो उमहिं उए । ण्य पउ म्हागयं, उम्सुयारि त्ति मे सुय ॥ ४८ ॥
 चइत्ता पिउल रज्ज, कामभोगे य दुच्चण । निच्चिमय निरामिमा, निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥ ४९ ॥
 धम्मं धम्म वियाणित्ता, चेच्चा कामगुणे वरे । तउ पगिज्झहकराय, घोर घोग्परवमा ॥ ५० ॥
 एव त कपसो बुद्धा, मव्वे धम्मपरायणा । जम्ममच्चुमउग्गिगा, दुक्खम्मत्तगवेत्तिणो ॥ ५१ ॥
 सासणे विगयमोहाण, पुग्गि भावणभारिया । अचिरेणेउ कालेण, दुक्खस्मन्तुग्गामया ॥ ५२ ॥
 राया सह दवीए, माहणो य पुरोहिओ । माहणी दारमा चेर, मव्वे ते परिनिव्वुड ॥ ५३ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ उम्सुयारिज्ज समत्त ॥ १४ ॥

॥ अह सभिनखू पचदह अज्जयण ॥

भोग चरिस्तामि समिच्च धम्म, सहिए उज्जुऊडे नियाणउत्तरे ।
 सथउ अहिज्ज उरुमरुमे, अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥ १ ॥
 राओउरय चरेज्ज लाढे, विरए वेयत्रियापरन्निएण ।
 पन्ने अभिभूय सव्वदसी जे, ऋग्गिचि न मुग्गिण स भिक्खू ॥ २ ॥
 अक्कोसउह विइत्तु घीरे, मुणी चरे लाढे निधमायभुत्ते ।
 अक्कम्मणे असपहिडे, जे कसिण अहियामए स भिक्खू ॥ ३ ॥
 पन्त सयगासण भइत्ता, सीउण्ह विविह च दमममग ।
 अक्कम्मणे असपहिडे, जे कसिणं अहियामए स भिक्खू ॥ ४ ॥
 नो सउइमिच्छई न पूय, नो वि य वदणग कुओ पमस ।
 से सनए सुवए तउस्सी, सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥
 जेण पुण जहाड जीविय, मोह वा कसिण नियच्छई ।
 नरनारि पजहे सया तउस्सी, न य कीउहल उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥
 छिन्न सर भोमन्तलिकर, सुमिण लक्खणउण्डउत्तुविज्ज ।
 अगवियार सरस्स विजय, जे विजाहिं न जीउइ स भिक्खू ॥ ७ ॥
 मन्त मूल विविह वेअचिन्त, वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाण ।
 आउरे सरण तिगिच्छिय च, त परिन्नाय परिषए स भिक्खू ॥ ८ ॥
 राचियगणउग्गरायपुत्ता, माहणभोइय विविहा य तिग्गिणो ।
 नो तेसिं वयइ सिलोगपूय, त परिन्नाय परि वए स भिक्खू ॥ ९ ॥
 गिहिणो जे पवइएण दिट्ठा, अप्पवइएण व सुगुया हविजा ।
 तेसिं इयलोइयफलट्ठा, जो सथव न करेइ स भिक्खू ॥ १० ॥
 सपणासणपाणभोयण, विविह राइमसाइम परेसिं ।

अदए पडिसेहिए नियण्टे, जे तत्य न पउस्सई स भिक्खु ॥ ११ ॥
 ज किं वि आहारपाणजाप, विविह खाइममाइम परेमिं लण्णु ।
 जो त तिविहेण नाणुकम्पे, मणवयफापसुमयुडे स भिक्खु ॥ १२ ॥
 आयामम चेव जणेदण च, सीय सोरीरजवोदम च ।
 न हीए पिण्ड नीरस तु, पन्तवुलाइ परिच्वए स भिक्खु ॥ १३ ॥
 मदा विविहा भवन्ति लोए, दिवा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
 भीमा भयमेरवा उराला, सोचा न विहिज्जई स भिक्खु ॥ १४ ॥
 वाद विविहं ममिचलोए, सहिए खेयाणुएण य कोवियप्पा ।
 पत्ते अमिभूय मव्वदसी, उव्वसन्ते अविहेडिए स भिक्खु ॥ १५ ॥
 अविस्सप्यजीवी अगिडे अमिचे, जिह्न्दिए मव्वओ विप्पमुक्के ।
 अणुकसाई लहुअप्पभक्खी, चेवा गिह एगचरे स भिक्खु ॥ १६ ॥
 त्ति बेमि ॥ इअ मभिनखुय समत्त ॥ १५ ॥

॥ अह वम्मचेरसमाहिठाणाणाम सोलसम अज्झयण ॥

सुय मे आउस-तेण भगवया एमक्खाय । इह खलु धेरेहिं भगवन्तेहिं दम वम्मचेरसमाहिठाणा
 पन्नत्ता, जे भिक्खु सोचा निमम्म मजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तवम्म-
 चारी मया अप्पमत्ते विहरेजा । कयरे खलु ते धेरेहिं भगवन्तेहिं दम वम्मचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता,
 जे भिक्खु सोचा निसम्म मजमबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तवम्मचारी मया अप्पमत्ते
 विहरेजा ॥ इमे खलु ते धेरेहिं भगवन्तेहिं दम वम्मचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खु सोचा निसम्म
 मजमबहुले सवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तवम्मचारी मया अप्पमत्ते विहरेजा तजहा
 विवित्ताइ सयणासणाइ सेविता इव्वसे निग्गन्थे । नो इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेविता
 इव्वसे निग्गन्थे । त इहमिति चे । आयरियाइ । निग्गन्थस्म खलु इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सय-
 णासणाइ सेवमाणस्स वम्मचारिस्स वम्मचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेद
 वा लमेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायक हवेजा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ
 मसेजा । तम्हा नो इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेविता इव्वसे निग्गन्थे ॥ १ ॥ नो
 इत्थीण इह कहित्ता इव्वसे निग्गन्थे । त इहमिति चे आयरियाइ । निग्गन्थस्म खलु इत्थीण
 कह कहमाणस्स वम्मचारिस्स वम्मचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेद वा
 लमेजा, उम्माय वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायक हवेजा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ म-
 सेजा । तम्हा नो इत्थीण कह कहेजा ॥ २ ॥ नो इत्थीण सत्तिं मन्निसेजाणए विहरित्ता इव्व
 से निग्गन्थे । त इहमिति चे । आयरियाइ । निग्गन्थस्म खलु इत्थीहिं सत्तिं सन्निसेजाणयस्स
 वम्मचारिस्स वम्मचेरे सका वा कखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिजा, भेद वा लमेजा उम्माय
 वा पाउणिजा, दीहकालिय वा रोगायक हवेजा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ मसेजा । तम्हा खलु

नो निग्गन्धे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जाणए विहरेज्जा ॥ ३ ॥ नो इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणो-
 रमाइ आलोइत्ता निज्जाइत्ता हवइ से निग्गन्धे । त कहमिति चे आयरियाह । निग्गन्धस्स खलु
 इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएमाणस्स निज्जायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे
 सका वा कत्ता वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीह-
 कालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्धे इत्थीण
 इन्दियाइ मणोहराइ मणोरमाइ आलोएज्ज निज्जाएज्जा ॥ ४ ॥ नो इत्थीण कुडुन्तरमि वा दूम-
 न्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयमइ वा रुइयसइ वा गीयमइ वा इलियसइ वा थणियमइ वा
 कन्दियसइ वा विलवियसइ वा सुणेत्ता हवइ से निग्गन्धे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्ग-
 न्धस्स खलु इत्थीण इडुन्तरसि व दून्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसइ वा रुइयसइ वा गीयसइ
 वा हसियसइ वा थणियमइ वा कन्दियसइ वा विलवियसइ वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे
 सका वा कत्ता वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहका-
 लिय वा रोगायक हवेज्जा केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्धे इत्थीण
 कुडु तरसि वा दून्तरसि वा भित्तन्तरसि वा कूइयसइ वा रुइयमइ वा गीयसइ वा हसियसइ वा
 थणियमइ वा कन्दियसइ वा विलवियसइ वा मुलेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥ नो निग्गन्धे पुवरय
 पुवकीलिय अणुमरिच्चा हवइ से निग्गन्धे त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्धस्स खलु पुवरय
 पुवकीलिय अणुमरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कत्ता वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा,
 भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्मा
 ओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्धे पुवरय पुवकीलिय अणुसरेज्जा ॥ ६ ॥ नो पणीय आहार
 जाहरिच्चा हवइ से निग्गन्धे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्धस्स खलु पणीय आहार
 जाहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कत्ता वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा
 लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ
 भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्धे पणीय आहार जाहारेज्जा ॥ ७ ॥ नो अइमायाए पाणभोयणं
 आहारत्ता हवइ से निग्गन्धे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्गन्धस्स खलु अइमायाए पाण
 भोयण आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कत्ता वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा,
 भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवल्लिपन्नत्ताओ
 धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्धे अइमायाए पाणभोयण आहारेज्जा ॥ ८ ॥ नो विभू-
 साणुवादी हवइ से निग्गन्धे । त कहमिति चे आयरियाह । विभूसावत्तिए विभूसियसरीए इत्थि-
 जणस्स अभिलसणिजे हवइ तओ ण इत्थिजणेण अभिलसिज्जमाणस्स बम्भचेरे सका वा कत्ता वा
 विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक
 हवेज्जा, केवल्लिपन्नत्ताओ धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्धे विभूसाणुवादी इविज्जा
 ॥ ९ ॥ नो सहस्वरगन्धफामाणुवादी हवइ से निग्गन्धे । त कहमिति चे । आयरियाह । निग्ग-
 न्धस्स खलु सहस्वरगन्धफामाणुवादिस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कत्ता वा विइगिच्छा वा
 समुप्पज्जिज्जा, भेद वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केव

लिपश्चाओ धम्माओ भमेज्जा । तम्हा गल्लु नो मदरूपसगन्धकामाणुवादी भवेज्जा मे निग्गन्धे ।
दससे बम्मचेरममाहिठाणे हउइ ॥ १० ॥ भवन्ति इव सिलोगा उपहा—

ज विविचमणाइण, रहिय इत्थि जणेण य बम्मचेरम रक्खइहा, आलय तु निरेसए ॥ १ ॥
मणपत्थायजणणी, कामरागविउट्टणी । उम्मचेरओ भिक्खु, वीरुह तु पिउज्जए ॥ २ ॥
सम च सथवं थीहि, सरुह च अभिक्खरण । बम्मचेरओ भिक्खु, निचमो परिवज्जए ॥ ३ ॥
अगपच्चगमठाण, चारल्लवियपहिय । उम्मचेरओ थीण, चक्खुगिज्झ विउज्जए ॥ ४ ॥
कूइय कूइय गीय, इमिय थणियकन्दिय । बम्मचेरओ थीण, सोयमेज्ज पिउज्जए ॥ ५ ॥
हास किइ रड टप्प, सहमाविचासियाणि य । बम्मचेरओ थीण, नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥
पणीय भत्तपाण तु, सिप्प मयविउट्टण । बम्मचेरओ भिक्खु, निचमो परिवज्जए ॥ ७ ॥
धम्मलद्ध मिय काले, जत्तथ पणिहाणव । नाइमच तु सुजेज्जा, बम्मचेरओ मया ॥ ८ ॥
विभूम परिवज्जेज्जा, मरीरपरिमण्डण । बम्मचेरओ भिक्खु, सिंगारत्थ न धारए ॥ ९ ॥
सदे रुवे य गन्धे य, रसे फासे तहवय । पचविहे कामगुणे, निचमो परिवज्जए ॥ १० ॥
आलओ थीजणाइणो, थीकहा य मणोरमा । सथओ चेव नारीण, तामि इन्दियदरिमण ॥ ११ ॥
कूइय रट्टय गीय, हाससुत्तामियाणि य । पणीय भत्तपाण च, अइमाय पाणमोयण ॥ १२ ॥
गचभूमणमिट्ट च, कामभोगा य दुज्जया । नरस्मत्तगवेसिस्स, बिस तालउड जहा ॥ १३ ॥
दुज्जए कामभोगे य, निचमो परिवज्जए । संकाथाणाणि सक्काणि, उज्जेज्जा पणिहाणव ॥ १४ ॥
धम्मारावते चरे भिक्खु, धिइम धम्मसारही । धम्मारावते दत्ते, बम्मचेरसमाहिए ॥ १५ ॥
देवदानवगन्धवा, जक्खरक्खसक्किधवा । बम्मपारि नममन्ति, दुक्खर जे करन्ति त ॥ १६ ॥
यस धम्मे धुवे निचे, मामण निणदेमिण । मिट्ठा सिज्जन्ति चाणेण, सिज्जिस्सन्ति तहावरे ॥ १७ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ उम्मचेरममाहिठाणा ममत्ता ॥ १६ ॥

॥ अह पावसमणिज्ज सत्तदह अज्झयण ॥

जे केइ उ पइएण नियण्ठे, धम्म सुणिता विणओउरन्ने ।

सुद्धइह लहिउ बोहिलाभ, विहरेज्ज पण्ठा य जहासुह तु ॥ १ ॥

मेज्जा दट्टा पाउग्गम्मि अयि, उप्पज्जई मोत्तु तहेव पाउ ।

जाणामि ज पट्टई आउसु त्ति, किं नाम वहामि सुएण भन्ने ॥ २ ॥

जे केई पइएण, निहामीले पयाममो । मोच्चा पेच्चा सुह सुवट्ट, पाउममणि त्ति चुर्चई ॥ ३ ॥

आपरियउवज्जएदि, सुय विणय च गाहिए । ते चेव रिमई बाले, पाउममणि त्ति चुर्चई ॥ ४ ॥

आपरियउवज्जायाण, सम्म न पट्टितप्पइ । अप्पट्टिपूगण यट्टे पाउममणि त्ति चुर्चई ॥ ५ ॥

सम्महमाणो पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य । अमजए सजयमन्नमार्णां, पाउममणि त्ति चुर्चई ॥ ६ ॥

सथार, फलग पीठं, निसेज्ज पायकम्बल । अप्पमझियमारुहइ, पाउममणि त्ति चुर्चई ॥ ७ ॥

दवदवस्स चरई, पमचे य अभिक्खवण । उल्लुणे य चण्ठे य, पाउममणि त्ति चुर्चई ॥ ८ ॥

पडिलहइ पमचे, पडज्जइ पायकम्बल । पडिलेहा अणाउत्ते, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १ ॥
 पडिलेहेइ पमचे, से किंचि दु निसामिया । गुरुपारिभावए निच्च, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ २० ॥
 बहुमाई पमुहरे, थद्वे लुद्वे अणिग्गहे । असविभागी अविपचे, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ ११ ॥
 विवाद च डदीरेइ, अहम्मे अत्तपन्नहा । बुग्गहे कलहे रत्ते, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १२ ॥
 अधिरासणे बुडुइए, जत्थ तथ निसीयई । आसणम्मि अणाउत्ते, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १३ ॥
 ससक्खपाए सुवई, सेज्ज न पडिलेहइ । सथारए अणाउत्ते, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १४ ॥
 दुद्धदहीविगईओ, आहारेइ अभिक्खण । अरए य तवोकम्मे, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १५ ॥
 अत्यन्तम्मि य सुअम्मि आहारेइ अभिक्खण । चोइओ षडिचोएइ, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १६ ॥
 थायरियपरिघाई, परपासण्डसेवए । गाणगणिए दुब्भूए, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १७ ॥
 सय गेह परिचज्ज, परगहसि वावरे । निमित्तेण य ववहरइ, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १८ ॥
 सन्नाइ पिण्ड जेमेइ, नेच्छई सामुदाणिय । मिहिनिसेज्ज च वाहेइ, पावममणि त्ति बुच्चई ॥ १९ ॥

एयारिसे पचकुसीलसुवुडे, रूपधरे सुणियवराण हेट्ठिमे ।

अयसि लोए विसमेन गरहिए, न से इह नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुवए होइ सुणीण मज्जे ।

अयसि लोए अमय व पूहए, आराहए लोमिणं तहा पर ॥ २१ ॥

॥ ति वेमि ॥ इअ पावसमणिज्ज समत्त ॥ १७ ॥

॥ अह सज्जइज्ज अटारहम अज्जयण ॥

कम्पिह्हे नयरे राया, उदिण्णवल्लगाहणे । नामेण सज्जए नाम, मिगव उवणिग्गए ॥ १ ॥

इयाणीए शयाणीए, रयाणीए तदेव य । पापताणीए महपा, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥

मिए लुहिता इयगओ, कम्पिल्लुज्जाण केसरे । मीए सन्ते मिए तत्थ, वहेइ रममुच्छिए ॥ ३ ॥

यह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे । सज्जायज्जाणसज्जुत्ते, धम्मज्जाण क्षियापइ ॥ ४ ॥

अप्पोवमण्डवम्मि, भायइ कएवियाववे । तस्तागए मिग पास, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥

अह आसगओ राया, खिप्पभागम्म सो तहिं । हए मिए उ पासिता, अणगार तत्थ पासई ॥ ६ ॥

अह राया तत्थ सम्भन्तो, अणगारो मणा हओ । मए उ पण्डपुण्णेण, रसमिद्वेण घन्नुणा ॥ ७ ॥

आस विसज्जइत्ताण, अणगारस्म सो निवो । विणएण वन्दए पाए भगव एत्थ मे रउमे ॥ ८ ॥

अह मोणेण सो भग्गव, अणगारे ज्ञाणमस्सिए । रायाण न पडिमत्तेइ, तओ राया भवइदुओ ॥ ९ ॥

संनओ आहमम्भीति, भगव वाहराहि मे । कुद्वे तेएण अणगारे, उहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

अन्मओ पत्थिवा तुब्भ, अमयदाया मवाहि य । अणिवे जीवलोगम्मि, किं हिमाए पसज्जसी ॥ ११ ॥

अया सव्व परिचज्ज, गन्तवमग्गस्समे ते । अणिवे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसी ॥ १२ ॥

बीविय चेव रूव च, विज्जुत्तपाय चचल । जत्थ त सुज्जसी राय पेच्चत्थ नापुवुज्जसे ॥ १३ ॥

आराणि य सुया चेव, मित्ता य तह वन्धवा । जीवन्तमणुजीवन्ति, मय नाणुवपन्ति य ॥ १४ ॥

नीहन्ति मय पुना, पितर परमदुक्खिया । पितरो वि तथा पुचे, वन्धू रायं तव चरे ॥ १५ ॥
 तत्रो तेणज्जिए दवे, दारे य परिरक्खिए । कीलन्तिउत्ते नरा राय, हट्टतुट्टमलकिया ॥ १६ ॥
 तेणावि ज कय कम्म, सुह वा जइ वा दूह । कम्मणा तेण सजुत्तो, गच्छई उ पर मय ॥ १७ ॥
 सोज्जण तस्म मो धम्म, अणगारस्म अन्तिए । महया सवैगनिवेद, समाधत्तो नराहिो ॥ १८ ॥
 सजओ चइउ रज्ज, निक्खवन्तो जिणसासणे । गद्दभालिस्म भगवओ, अणगारस्म अन्तिए ॥ १९ ॥
 विच्चा रट्ट पव्वण, राचिए परिभासइ । जहा ते दीसई रूप, पसन्न ते महा मणो । २० ॥
 किं नामे किं गोत्त, कम्मट्ठाए व माहणे । रुह पडियरसी बुद्ध, कह विणीए त्ति बुच्चसी ॥ २१ ॥
 सजओ नाम नामेण, तथा गोत्तेण गोयमो । गद्दभाली ममापरिया, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥
 किरिय अकिरिय विणय, णत्तान च महामुणी । एएहिं चउहि ठाणेहिं, मेयन्ने किं पभासई ॥ २३ ॥
 इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिवृण । विज्जाचरणसपत्ते, मच्चे मच्चपरव्वये ॥ २४ ॥
 पडन्ति नरए धोरे, जे नरा पावकारियो । दिव्व च गइ गन्उन्ति, चरित्ता धम्ममारिय ॥ २५ ॥
 मायावुडयमेय तु, म्माभासा निरत्थिया । सजममाणो वि अह, वमामि इरियामि य ॥ २६ ॥
 सव्वेए विडय मज्ज, मिच्छादिट्ठी अणारिया । विज्जमाणे परे लोण, मम्म जाणामि अप्पग ॥ २७ ॥
 अहसासि महापाणे, जुइम उरिससओयमे । जा मा पालिमहापाली, दिव्वा वरिमसओयमा ॥ २८ ॥
 से धुए वम्मलोगओ, माणुस्स भयमागए । अप्पणो य परेमिं च, आउ जाणे जहा तथा ॥ २९ ॥
 नाणाहउ च उन्द च, परिवज्जेज्ज मजए । अणट्ठा जे य सव्वथा, इयविज्जाणणुसचरे ॥ ३० ॥
 पडिक्कमामि पसिणाण, परमंतेहिं वा पुणो । अहो वट्टिए अहोराय, इइ विज्जा तव चरे ॥ ३१ ॥
 ज च मे पुच्छसी काले, मम मुद्वेण चेषसा । ताइ पाउकरे बुद्धे त नाण जिणसासणे ॥ ३२ ॥
 किरियं च रोपई धीरे, अकिरिय परिवज्जए । दिट्ठीए दिट्ठीसम्पत्ते, धम्म चरसु दृच्चर ॥ ३३ ॥
 पय पुण्णपय सोच्चा, अत्थधम्मोवमोहिय । भरहो वि भारह वास, चेच्चा कामाइ पव्वए ॥ ३४ ॥
 सगरो वि सागगन्त, भरहवास नराहिवो । इस्मरिय वजल हिच्चा, दयाइ परिनिवुद्धे ॥ ३५ ॥
 चइत्ता भारह वाम, चक्कवट्ठी महिड्डिओ । पव्वज्जमन्धुयगओ, मघय नाम महाजसो ॥ ३६ ॥
 मणुमारो मणुस्सिन्दो, चक्कवट्ठी महिड्डिओ । पुत्त रज्जे ठवेज्जण, सो वि राया तव चरे ॥ ३७ ॥
 चइत्ता भारह वाम, चक्कवट्ठी महिड्डिओ । मन्ती सन्तिकर लोए, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ३८ ॥
 इक्कत्तागरायवत्तभो, इन्धू नाम नरिसरो । विक्खायकित्ती भयय पत्तो गइमणुत्तर ॥ ३९ ॥
 मागरन्त चइत्ताणं, भरह नरनरीमरो । अरो य अरय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४० ॥
 चइत्ता भारह वाम, चइत्ता बलराहण । चइत्ता उत्तमे भोण महापव्वमे तव चरे ॥ ४१ ॥
 एगच्छत्त पमाहिता, महिं माणनिव्वरणो । इरिसेणो मसुस्मिन्दो, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४२ ॥
 अत्तिओ रायमहस्सेहिं सुपरिच्चाई दम चरे । जयनामो जिणक्खाय, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४३ ॥
 दमण्णरज्ज मुदिय, चइत्ताण मुणी चरे । दमण्णभदो निग्गन्तो, मरुत्त सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥
 नमी नमेइ अप्पण, मक्खस मक्केण चोइओ । चइत्तण गेह उददेही, मामण्णे पज्जुपट्टिओ ॥ ४५ ॥
 करकण्ठ कलिंसेसु, पचालेसु य दुम्भुहो । नमी राया वीदेहेसु, गन्धारसु य नगई ॥ ४६ ॥
 एए नरिन्दवत्तभा, निक्खयन्ता निणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेज्जण, सामण्णे पज्जुपट्टिया ॥ ४७ ॥

सोवीरगायवमभो, चडत्ताण मुणी चर । उदायणो पवइओ, पत्तो गइमणुत्तर ॥ ४८ ॥
 तहेव कासीराया, सेओसचपरकमे । कामभोगे परिचज्ज, पवणे कम्ममहापण ॥ ४९ ॥
 तहेव विज्जओ राया, अणद्धाकित्ति पवण । रज्ज तु गुणममिद्व, पयडित्तु महाजसो ॥ ५० ॥
 तद्वुग्ग तव किंवा, अबक्खित्तेण चेषसा । मइच्चलो रापरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥
 कह धीरो अहेऊहिं, उम्मचो व महिं चरे । एए विसेममादाय, सुरा ददपरवमा ॥ ५२ ॥
 अचन्तनियाणसमा, सचा मे भासिया वई । अतरिंस्तु तरन्तेगे, तरिस्मान्ति अणागया ॥ ५३ ॥
 कहिं धीर अहेऊहिं अत्त ण परियावसे । मवमगविनिम्ममुके, सिद्धे भवइ नीए ॥ ५४ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ सजइज्ज ममत्त ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीय एगूणवीसइम अज्झयणं ॥

मुग्गीवे नयरे रम्मे, मणणुज्जाणसोहिण । राया उलभत्ति त्ति, मिया तस्मग्गमाहिंसी ॥ १ ॥
 तेमि पुत्ते चन्मिरी, मियापुत्ते त्ति विस्सुए । अम्मापिऊण दइए, जुजराया दमीमर ॥ २ ॥
 नन्दणे मो उ पासाण, कीलए सह इत्थिहिं । देवोदोएण्णन्दगे चैव, निच्च मुइयमाणमो ॥ ३ ॥
 मणिरयणकोटिमत्तये, पामायालोपणट्ठिओ । आलोण्ड नगरस्म, चउक्क त्तियचचरे ॥ ४ ॥
 जह तत्थ अहच्छन्त, पासई ममणसजय । तवनियमसजमवर, सीलङ्ग गुणआगर ॥ ५ ॥
 त इहइ मियापुत्ते, दिट्ठीण जणिमिमाए उ । कहिं मन्ने निस रूच, दिट्ठपुव मए पुरा ॥ ६ ॥
 माहुम्म दरिसणे तम्म, अज्जप्रमाणम्मि मोहणे । मोह गयस्स सत्तम्म, जाईमग्ग ममुप्पन्न ॥ ७ ॥
 जाईसण्णे ममुप्पन्ने, मियापुत्त महिड्डिण । सगई पौराणिय जाई, सामण्ण च पुरा कय ॥ ८ ॥
 चिमएहि अरज्जन्तो, रज्जन्तो सत्तम्मि य । अम्मापियरमुजागम्म, इम त्रयणमच्चवी ॥ ९ ॥
 सुयाणि मे पच्च महव्वयाणि, नएएमु दुवर च तिरिक्खजोणिमु ।

निव्विण्णकामो मि महण्णवाउ, अणुजाणइ पवइस्सामि अम्मो ॥ १० ॥

अम्म ताप मए भोगा, भुत्ता विसफलोपमा । पच्छा कहवविवागा, अणुपच्चदुहानहा ॥ ११ ॥
 इम मरीर अणिच्च, असुइ असुइसभव । अमासयावासमिण, दुक्खरुक्केमाण भायण ॥ १२ ॥
 असासण मरीरम्मि, रइ नोनलभामह । पच्छा पुरा य चइयच्चे, फेणु-जुयमन्निमे ॥ १३ ॥
 माणुमत्ते अमारम्मि, पाहीरोगाण आरण । जरामरणत्थम्मि, राणपि न रमामह ॥ १४ ॥
 जम्म दुक्खजरा दुक्ख, रोगाणि मग्गाणिय । अहो दुक्खो हुसमारो, जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥ १५ ॥
 सेत्त वट्टु हिरण्ण च पुत्तदार च चन्धना । चडत्ताण हम देइ, गन्तवमवसस्स मे ॥ १६ ॥
 जह किम्पायफलाण, परिणामो न सुन्दरो । एव भुत्ताण भोगाण, परिणामो न सुन्दरो ॥ १७ ॥
 अद्दाण जो महत्त तु, अप्पाहेओ पवजई । गन्तन्तो मो दुही होइ, छुहात्तण्णाण पीडिओ ॥ १८ ॥
 एव धम्म अवाउण, जो गच्छइ पर भव । गच्छन्तो मो सुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ १९ ॥
 अद्दाण जो महत्त तु, सपाहेओ पवजई । गच्छन्तो मो सुही होइ, छुहात्तण्णाणिविचज्जिओ ॥ २० ॥

एव धम्म पि काऊण, जो गच्छ पर भव । गच्छन्तो सो मुही होइ, अप्पकम्पे अपेयणे ॥ २१ ॥
 जहा मेहे पलित्तम्मि, तस्म मेहस्म जो प्हु । सारमण्डाणि नीण्ड, असार अवउच्चइ ॥ २२ ॥
 एव लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य । अप्पाण तारडस्सामि, तु मेहि अणुमन्निओ ॥ २३ ॥
 त विन्तस्मापियरो, मामण्ण पुत्त दुक्कर । गुणाण तु सहस्साइ, धारेयवाइ भिन्नुणा ॥ २४ ॥
 ॥ समया भवभूएसु, सत्तुमित्तसु वा जणे । पाणाइचापविरई, जायज्जीवाए दुक्कर ॥ २५ ॥
 निचकालप्पमचेण, मुग्गायापविवज्जण । भासियच्च हिय मच्च, निचाउत्तेण दुक्कर ॥ २६ ॥
 दन्तसोदणमाइस्स, अदत्तस्म विवज्जण । अणउज्जेमणिज्जस्म, गिहण्णा अपि दुक्कर ॥ २७ ॥
 विरई अउम्भचेरस्म, काममोगरन्नुणा । उग महव्वय धम्म, धारेयव्व सुदुक्कर ॥ २८ ॥
 धणधव्वपेसवग्गेसु परिग्गहविज्जण । मवारम्भपरिचाओ, निम्ममच्च सुदुक्कर ॥ २९ ॥
 चउच्चिवहे वि आहारे, राड्ढीयणउज्जणा । सन्निहोमचओ चैन, वज्जेयत्तो सुदुक्कर ॥ ३० ॥
 छुहा तण्हा य सीउण्ह दसमसगवेयणा । अक्कोमा दुक्कउत्सेज्जा य, तणफासा जलमेय य ॥ ३१ ॥
 तालणा तज्जणा चैव, वडव धपरीसहा । दुक्कउ भिन्नुपायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३२ ॥
 कायोया जा उमा विच्ची, केसलोओ य दारुणो । दुक्कउ धम्मभव्वयं धोर, धारउ य महप्पणो ॥ ३३ ॥
 सुहोइओ तुम पुत्ता, मुकुमालो मुमाज्जिओ । न हु सी पभू तुम पुत्ता, मामण्णमणुपालिया ॥ ३४ ॥
 जावज्जीयमविस्सामो गुणाण तु मदम्भरो । गुरु उ लोहमारुव, जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥ ३५ ॥
 आगासे गममोउ व्व, पड्डियोउ व्व दुत्तरो । पाहाहिं सागरो चैन, तरियव्वहा गुणोदही ॥ ३६ ॥
 ॥ गउया उलो चैव, निरस्साए उ मज्जे । असिधारागमण चैव, दुक्कर चरिउ तवो ॥ ३७ ॥
 अही वेगन्तदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त दुक्कर । जवा लोहमया चैव, चावेयवा सुदुक्कर ॥ ३८ ॥
 जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउ होइ सुदुक्करा । एहा दुक्कर करेउ जे, तान्णणे समणत्तण ॥ ३९ ॥
 जहा दुक्कर भरेउ जे, होइ तायस्म कोरुधलो । तहा दुक्कर करेउ जे, कीवेण समणत्तण ॥ ४० ॥
 जहा तुलाए तोलेउ, इक्करो मन्दरो गिरी । तहा निह्यनीसक, दुक्कर ममणत्तण ॥ ४१ ॥
 जहा भुयाहिं तरिउ, दुक्कर ग्यणायगे । तहा अणुपमन्तेण, दुक्कर दमसागरो ॥ ४२ ॥
 भुज माणुस्सए मोगे, पचलक्करणए तुम । भुत्तमोगी तओजाया, पच्छा धम्म चरिस्समि ॥ ४३ ॥
 सो उड अम्मापियरो, एयमेय जहा फुड । इह लोए निप्पियवामस्स, नरिथि किच्चिवि दुक्कर ॥ ४४ ॥
 सारीरमाणमा चैन, वेयणाओ द्ढनन्तसो । मए भोढाओ भीमाओ, असइ दुक्कउभयाणी य ॥ ४५ ॥
 जरासरणरन्तार, चाउरन्ते भयाधरे । मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥ ४६ ॥
 जहा इह अगणीउण्हो, एत्तोउणन्तगुणे तहिं । नरएभु वेयणा उण्हा, अस्माया वेइया मए ॥ ४७ ॥
 इम इह सीय, एत्तोउणन्तगुणे तहिं । नरएसु वेयणा सीया, अस्मया वेइया मए ॥ ४८ ॥
 वन्दन्तो उदुकुम्मीसु, उट्ठुपाओ अहोसिरे । ह्ययासणे जन्तम्मि, पक्कयुव्वो अण तसो ॥ ४९ ॥
 महादवग्गिसकासे, मरुम्मि उरवालुण । कदम्बवालुयाए य, दड्डुपुव्वो अणन्तमो ॥ ५० ॥
 रसन्तो कन्दुकुम्मीसु, उट्ठु वडो अबन्वो । करवत्तकरकराईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥ ५१ ॥
 अइतिकररुण्टगाइण्णे, तुगे सिम्बलिपायवे । खेविप पासवट्ठेण, कट्ठोकट्ठाहिं दुक्कर ॥ ५२ ॥
 ॥ महाजन्तेसु उच्छ्र वा, आरसन्तो सुमेर । पीडिओ मि मरुम्मेहिं, पाउरुम्मेओउणत्तसो ॥ ५३ ॥

कृन्तो कोलमृणहं, सामेहिं सनलेहि य । फाडिओ फालिओ छिन्नो, विफुरन्तो अणेगसो ॥ ५४ ॥
 असीहि अवसिपण्णाहि, भछेहिं पट्टिसेहि य । छिन्नो भिन्नो विमिन्नो य, ओइण्णो पावकम्मण्णा ॥ ५५ ॥
 अनसे लोहरहे जुचो, जलन्ते समिलाजुए । चोइओ तोचजुत्तेहिं, रोज्जो वा जह पाडिओ ॥ ५६ ॥
 हुयासणे जल तम्मि, चियासु महिमो विव । दड्डो पथो य अवसो, पात्रकम्महिं पाविओ ॥ ५७ ॥
 वला सडामतुण्डेहि, लोहतुण्डेहिं पक्खिहिं । विदुत्तो त्रिलन्तो ह, ढक्किद्वेहिं षण्णन्तसो ॥ ५८ ॥
 तण्हाकिण्णन्तो धावन्तो, पत्तो वेयराणिं नदिं । जल पाहिं ति चिन्त तो, सुरधाराहिं वित्राइओ ॥ ५९ ॥
 उण्हामितत्तो सपत्तो, असिपत्त मधायण । असिपत्तेहिं पडन्तेहिं, छिन्नपुच्चो अणेगसो ॥ ६० ॥
 मुग्गरेहिं मुसदीहिं, सुलेहिं मुमलेहिं य । गया मभग्गमत्तेहिं, पत्त दुक्ख अणन्तसो ॥ ६१ ॥
 सुरेहिं तिक्खधारहिं, छुरियारिहिं कप्पणीहिं य । कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्किचो य अणेगसो ॥ ६२ ॥
 पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा असो अह । वाहिओ पद्धद्वो वा, पट्ट चेर वित्राइओ ॥ ६३ ॥
 गळेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अह । उच्छिओ फालिओ गहिओ, मारिणो य अणन्तसो ॥ ६४ ॥
 वीदमणहिं जालेहिं लेप्पाहिं सउणो विव । गहिओ लग्गो पद्धो य, मारिओ य अणन्तसो ॥ ६५ ॥
 कुहाडफरसुमाईहिं, वट्टुईहिं दुमो विव । कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ य अणन्तसो ॥ ६६ ॥
 चवेडमुट्टिमाईहिं, कुमागहिं जय पिय । ताडिओ कुट्टिओ भि नो, चुण्णिओ य अणन्तसो ॥ ६७ ॥
 तत्ताइ तम्बलोहाइ, तउयाइ सीसयाणिं य । पाइओ कलकलन्ताइ, आरमन्तो सुमेरय ॥ ६८ ॥
 तुह पियाइ ममाइ, सएडाइ सोलगाणिं य । राविओ भिममसाइ, अग्गिण्णाइ षणेगसो ॥ ६९ ॥
 तुह पिया सुग सीहू, मेरओ य महणिं य । पाइओ भि जलन्तीओ, रसाओ रहरिणिं य ॥ ७० ॥
 निच भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य । परमा दुहमयडा, वेपणा वेदिता मए ॥ ७१ ॥
 तिक्खचण्डप्पगाढाओ, घोराओ अदुस्सटा । महम्मयाओ भीमाओ, नरएसु वेदिता मए ॥ ७२ ॥
 जारिसा माणुसे लोए, ताया दीसन्ति वेयणा । एत्तो अणन्तगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥
 सबभवेसु अस्साया, वेयणा वेदिता मए । निमेमन्तरमित्त पि, ज साता नत्थि वेयणा ॥ ७४ ॥
 त विन्तम्मापियरो, छन्देण पुत्त पव्वा । नवर पुण सामण्णे, दुक्ख निप्पडिक्कम्मया ॥ ७५ ॥
 सो वेइ अम्मापियरो, एवमेय जहा फुड । पडिक्कम्म को कुणई, अरण्णे मियपक्खियण ॥ ७६ ॥
 एगच्चूए अरण्णे व, जहा उ चरई मिगे । एउ धम्म चरिस्सामि, सजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥
 जया मिगस्म आयको, महारण्णम्मि जायई । अच्च त रुक्खमूलम्मि, को ण ताहे तिगिच्छई ॥ ७८ ॥
 को वा से ओपड देइ, को वा से पुच्छई सुह । को से मत्त च पाण वा, आहरित्तु पणामए ॥ ७९ ॥
 जया से सुही होइ, तय गच्छइ गोयर । भत्तपाणस्म अट्टए, वल्लगामि मराणिं य ॥ ८० ॥
 साइत्ता दाणिय पाउ, वट्टरेहिं मरेहिं य । मिगचारिय चरित्ताण गच्छई मिगचारिय ॥ ८१ ॥
 एव समुट्टिओ भिक्खु, एवमेव अणेगण । मिगचारिय चरित्ताण, उट्ट पक्कमई दिस ॥ ८२ ॥
 जहा मिमे एगे अणेगचारी, अणेगवासे धुनगोयर य ।
 एव मृणी गोयरिय पविट्ठे, नो हीलए नो वि य ट्ठिमएजा ॥ ८३ ॥
 मिगचारिय चरिस्सामि, एउ पुत्ता जहासुह । अम्मापिईहिं षण्णन्ताओ, जहाइ उवाहिं तथा ॥ ८४ ॥
 मियचारिय चरिस्सामि, सबक्खनिमोक्खणिं । तुम्भेहिं अब्भणुजाओ, गच्छ पुत्त जहासुह ॥ ८५ ॥

एव सो जम्मापियरो, अणुमाणिताण बहुविद् । ममत्त छिन्दई ताहे, महानागो व कजुय ॥ ८६ ॥
 इद्दी वि च मित्ते य, पुत्तदार च नायओ । रेणुय व पढे लग्ग, निधुत्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥
 पचमहव्वजुत्तो, पचहि समिओ तिगुत्तिगुत्तोय । सग्गिन्तग्गाहिरओ, तवोरुम्ममि वज्जुओ ॥ ८८ ॥
 निम्ममो निरहकारो, निम्मसगो चचणारवो । समो य सव्वभूएयु, तसेसु थावरेसु य ॥ ८९ ॥
 लाभालामे सुहे दुक्खे, जीविण मरणे तहा । समो निन्द्रापमसासु, तहा माणाग्गमाणओ ॥ ९० ॥
 गारवेसु कमाएसु, दण्डसह्मएसु य । नियत्तो हामसोगाओ, अनियाणो अवन्धणो ॥ ९१ ॥
 अणिस्मिओ इह लोए, परलोए अणिस्सिओ । वामीचन्दणरूप्यो य, असणे अणमणे तहा ॥ ९२ ॥
 अप्पमत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहियासवे । अज्झप्पज्जाणजोगेहिं, पसत्थदममासणे ॥ ९३ ॥
 एव नाणेण चरणेण, दसणेण तवेण य । भाग्गाहि य सुद्धाहिं, सम्म भाग्गेसु अप्पय ॥ ९४ ॥
 बहुयाणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिया । मासिएण उ मत्तेण, सिद्धि पत्तो अणुत्तर ॥ ९५ ॥
 एवं करन्ति मज्जुद्दा, पण्डिया पणियक्खणा । विणिअहन्ति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥ ९६ ॥
 महापभावस्स महाजमस्स, मियापुत्तस्स निसम्म भासिय ।
 तपप्पहाण चरिय च उत्तम, गहप्पहाण च तिलोगविस्सुत्त ॥ ९७ ॥
 वियाणिया दुक्खविद्वण धण, ममत्तवन्ध च मयामयावह ।
 सुहावह धम्मधुर अणुत्तर, धारेज्ज निव्वानगुणावह मह ॥ ९८ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ मियापुत्तीय ममत्त ॥ ९९ ॥

॥ अह महानियण्ठिज्जं वीसइमं अज्जयणं ॥

सिद्धाण नमो क्खिचा, सजयाण च भावओ । अचधम्मगइ तच्च अणुमहिं सुणेह मे ॥ १ ॥
 पभूयरायणो राया, सेणिओ मगहाहियो । विहारजत्त निजाओ, मण्डिकुल्लिसि वेहए ॥ २ ॥
 नाणादुमलयाडण्ण, नाणापक्खिनिसंविद्य । नाणाकुसुमसह्मन्न, उज्जाण नन्दणोरम ॥ ३ ॥
 तथ सो पासई माहु, सजयं सुसमाहिय । निसन्न रुत्तमूलम्मि, सुवुमाल सुहोदय ॥ ४ ॥
 तस्म रून् तु पासिचा, राइणो तम्मि सजए । अचन्तदरमो आमी, अउलो रूग्गिन्धओ ॥ ५ ॥
 अहोवण्णो अहो रून्, अहो अज्जम्म सोमया । अहो सन्ती अहो मुत्ती, अहो भोगे असजया ॥ ६ ॥
 तम्म पाए उ वन्दिच्चा, काज्जण य पयाहिण । नाइदूरमणामन्ने, पजली पट्टिपुच्छई ॥ ७ ॥
 तरुणो सि अजो पवइओ, भोगकालम्मि सजया । उरट्ठिओ सि सामण्णे, एयमट्ट सुणेमि ता ॥ ८ ॥
 अणाहोमि महाराय, नाहो मज्ज न विज्जई । अणुकम्पग धुहिं वापि, कचि नाभिममेमह ॥ ९ ॥
 तओ मो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहियो । एव ते इट्ठिमन्तस्स, कह नाहो न विज्जई ॥ १० ॥
 होमि नाहो भयत्ताण, भोगे भुजाहि सजया । मिचनार्इपरियुडो माणुस्स ख सुदुल्लई ॥ ११ ॥
 अप्पणा विअ.।हो सि, सेणिया मगहाहिया । अप्पणा अणाहो सन्तो, कस नाहो भग्गिम्मसि । ॥ १२ ॥
 एव पुत्तो नरिन्दो सो, सुमभन्तो सुविम्हिओ । वयण अस्सुयपुच्च, साहुणा गिम्हगन्निओ ॥ १३ ॥
 अस्सा इत्थी मणुस्सा मे, पुर माणुस्सो भोगे, आणा इत्तरिय चम् ॥ १४ ॥

एरिसे मम्पयग्गम्मि, सव्वकामसमपिण्ण । कूढ अणाहो भवइ, मा ह्नु भन्ते सुत वए ॥ १५ ॥
 न तुम जाणे अणाहम्म, अत्थ पोत्थ च पत्तिवया । जहा अणाहो भवई, मणाहो वा नराहिवा ॥ १६ ॥
 सुणेह मे महाराय, अवक्किमत्तेण चेषसा । जहा अणाहो भवई, जहा मेय पवत्तिय ॥ १७ ॥
 कोम्मन्धी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी । तत्थ आसी पिपा मज्झ, पभूयधणमच्चओ ॥ १८ ॥
 पढमे वए महाराय, अउलाम अच्छिवेयणा । अहो धा विउलो टाहो, सव्वगत्तेसु परियया ॥ १९ ॥
 सत्थ जहा परमतिक्रम, सरीरविजग्गन्तरे । आरीलिज्ज अरी कुट्ठो, एव मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥
 तिय मे अन्तरिच्छ च, उत्तमग च पीडइ । इन्डामणिममा घोरा, येयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥
 उरट्ठिया मे आपरिया, विजामन्ततिगिउया । अधीया मत्थदुमला, मन्तमूलविमारया ॥ २२ ॥
 तेमे तिगिच्छ कुञ्चन्ति, चाउप्पाय जहाडिय । नय दुक्खा विमोयन्ति, एमा मज्झ अणाहया ॥ २३ ॥
 पिपा मे सव्वमारपि, दिज्जाहि मम कारणा । न य दुक्खा विमोण्ड, एसा मज्झ अणाहया ॥ २४ ॥
 माया य मे महाराय, पुत्तमोगदुइट्ठिया । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ २५ ॥
 भायरो मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोयन्ति, एमा मज्झ अणाहया ॥ २६ ॥
 मङ्गीओ मे महाराय, सगा जेट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोयन्ति, एमा मज्झ अणाहया ॥ २७ ॥
 भारिया मे महाराय, अणुरत्ता अणुवया । असुपुण्णेहि नयणेहि, उर मे परिंसिचई ॥ २८ ॥
 अन्न च पाण ण्हाण च, गन्वमल्लविलेज्जण । मण नापमणाय धा, सा बाला नेव भुजई ॥ २९ ॥
 राण पि मे महाराय, पासाओ मे न किट्ठई । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥ ३० ॥
 तओ ह एवमाहसु, दुक्खमा ह्नु पुणो पुणो । वेयणा अणुभविउ जे, सत्तारम्मि अणन्तए ॥ ३१ ॥
 सइ च जइ मुचेजा, वेयणा विउला इओ । खन्तो दन्तो निरारम्मो, पव्वए अणगारिय ॥ ३२ ॥
 एव च चिन्तत्ताण, पसुत्तो मि नराहिवा । परियत्तन्तीए राईए, वेयणा मे खय गया ॥ ३३ ॥
 तओ कळेपमायम्मि, आपुच्छित्ताण चन्धवे । ख तो दन्तो निरारम्मो, पव्वइओज्जगारिय ॥ ३४ ॥
 तो इ नाहो जाओ, अप्पणो य परस्म य । मव्वे सिं चेव भूयाण, तमाण यावराण य ॥ ३५ ॥
 अप्पा नइ वयरणी, अप्पा मे कूढमामली । अप्पा कामदुहा गेणू, अप्पा मे नदण वण ॥ ३६ ॥
 अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुक्खराण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्त च, दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

इमा ह्नु अन्ना पि अणाहया निरा, तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
 नियण्ठधम्म लहीयाण वी जहा, सीयन्ति एगे चट्टकायरा नरा ॥ ३८ ॥
 जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ, मम्म च नो फासयई पमाया ।
 अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्वे, न मूलओ छिन्नइ चन्धण से ॥ ३९ ॥
 आउत्तया जस्स न अत्थि कूढ, इरियाण भासाए तहेसणाए ।
 आपाणनिकसेउदुगच्छणाए, न धीरजाय अणुजाइ मग्ग ॥ ४० ॥
 चिर पि से मुण्डम्भ भवित्ता, अधिरव्वए तवनियमेहि भट्टे ।
 चिर पि अप्पाण किटेसइत्ता, न पारए होइ ह्नु सपराए ॥ ४१ ॥
 पोत्ते व मुट्ठी जह से जसारे, अयन्तिए कूढकहावणे वा ।
 गढामणी वरुलियप्पगासे, अमहव्वए होइ ह्नु जाणएसु ॥ ४२ ॥

कुसीललिङ्ग इह धारुणा, इतिज्ज्ञय जीविय दृहइत्ता ।
 असजए सजयलप्यमाणे, निणिग्घायमाण्डड से चिरवि ॥ ४३ ॥
 विस तु पीय जह कालकूड, इणाड सत्य जह वग्गहीयं ।
 णमो वि धम्मो विमओरओ, इणाड नेपाल इराचिओ ॥ ४४ ॥
 जे लम्पण सुणिण पउंजमाणे, निमित्तओउहलसपगाटे ।
 बुहडविज्जाभवशरजीमी, न गच्छड सण तम्मि काले ॥ ४५ ॥
 तम तमेणेउ उ से असीले, सया दृही विप्परियामुवड ।
 सधावई नरगतिरिक्खजोणि, मोण विगहेसु असादुरुव ॥ ४६ ॥
 उद्देसिय कीयगट नियाग, न मुच्चइ कि च अणेमणिज्ज ।
 अग्गीविवा मवमक्खी भविता, इत्तोनुण गच्छड रुट्ट पाप ॥ ४७ ॥
 न त अरी कठडेचा रुह, ज से कर अप्पणिया दृग्गया ।
 से नाहइ मच्छुमुह त पत्तं, पच्छामितावेण दयाविट्ठो ॥ ४८ ॥
 निरट्ठिथा नग्गत्त उ तम्म, जे उच्चमट्ट विज्जासमेह ।
 इमे वि से नत्थि पत्तं वि लोण, दृहओ विसं भिज्जइ तत्तं लोण ॥ ४९ ॥
 एमेव हा छन्दकुसीलम्भे, मग्ग विराहेसु जिणुत्तमाण ।
 वुरी विवा भोगरमाणुगिद्धा, निरट्टमोया परियाममेह ॥ ५० ॥
 सोच्चाण मेदापि सुभासिय इम, अणुमासण नाणगणोत्तय ।
 मग्ग कुसीलाण जहाय मव, महानियण्ठान वए पत्तेण ॥ ५१ ॥
 चरित्तमायारणुणधिण तओ, अणुत्तर मज्जम पालियाण ।
 निरामवे मत्तवियाण धम्म, उवेइ ठाण विउत्तम धुत्त ॥ ५२ ॥
 ण्वुग्गदन्ते ि महातत्रोधणे, महामुणी मग्गपट्ठे महायसे ।
 महानियण्ठिज्जमिण महासुय, से रुहइ महया निन्ध्यण ॥ ५३ ॥
 तट्टो य सेणिओ राया, इणमुत्तादु रयजली ।
 अणाहत्त जहाभूय, सुत्त मे उउदसिय ॥ ५४ ॥
 तुज्जसुत्तं तु मणुस्स जम्म, लाभा सुलद्धा य तुमे महमी ।
 तुम्मे सणाहा य मवन्धवाय, ज मे टिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥
 त सि नाहो अणाहाण, मवभूयाण मज्जया ।
 गामेमि त महामाग, इत्तामि अणुमासिउ ॥ ५६ ॥
 पुच्छिऊण मण तुम्म, आणविग्घाओ जो रओ ।
 निमन्थिया य भोगेहि, त मव मरिसुहि मे । ५७ ॥
 एव धुणित्ताण म रायसीहो, अणगारग्गीह परमाइ भत्तीण ।
 सओरोहो मपरियणो मरन्धरो, धम्माणरत्तो विमलेण चेषसा ॥ ५८ ॥
 ऊत्तसियरोमहो, कालुण य पयाहिण ।

अमिन्द्रिऊण सिरसा, जडयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥
 इयगे वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डरिरओ य ।
 निहग इव विप्पमुक्को, रिइरइ वसुह विगयमोहो ॥ ६० ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ महानियण्ठिज्ज समत्त ॥

॥ अह समुद्दपालीय एगवीसइमे अज्जयण ॥

चम्पाण पालिण नाम, सावण आसि वाणिए । महावीरस्म भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो । १ ॥
 निग्गन्धे पावयणे, मावण से वि कोविए । पोण्ण ववहरन्ते, पिहुण्ड नगरमानए ॥ २ ॥
 पिहुण्डे ववहन्तस्स, वाणिओ देइ धूयर । त समच पइगिज्ज, सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥
 अह पालियस्स घरिणी, समुद्दम्म पसवई । अह चालण तहि जाए, समुद्दपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥
 खेमेण आगण चम्प, सावण वाणिए घर । संवड्डई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥
 धावत्तरी कलाओ य, मिकखई नीइकोविए । जोवणेण य सपत्ते, मुरुवे पियदसणे ॥ ६ ॥
 तस्स रुवड भज्ज, पिया जाणेइ रत्तिणि । पाभाए कीलए रम्मे, देवो दोगुन्दओ जहा ॥ ७ ॥
 अह अन्नया कयाई, पासापालोयणे ठिओ । वज्जमण्डणसोभाग, उज्ज पासइ वज्जग ॥ ८ ॥
 त पासिऊण सवेग, समुद्दपाली इणमउवी । अहोऽसुमाण कम्माण, निज्जाण पावग इम ॥ ९ ॥
 सउद्धो सो तहि भगव, परमसवेमत्ताओ । आपुच्छमापियरो, पवए अणगारियं ॥ १० ॥

जहिउ ऽम्मगन्धमहाकिलेस, महन्तमोह कसिण भयावह ।
 परिवायधम्म चमिरोयएज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥
 अहिंससच्च च अतेणग च, तत्तो य उम्भ अपरिग्गह च ।
 पटिवज्जियापच महवयाणि, चरिज्ज धम्म जिणदेसिय विद् ॥ १२ ॥
 सवेहिं भूएहि दयानुकम्पी, सन्तिकपुमे सजमवम्भवारी ।
 सावज्जजोग परिउजयन्तो, चरिज्ज भिक्खू सुममाहिइन्दिए ॥ १३ ॥
 काटेण काल विहरेज्ज रट्टे, प्रलावल जाणिय अप्पणो य ।
 सीहो व महेण न सन्तमेज्जा, वयचोग सुच्चा न अमच्चमाहु ॥ १४ ॥
 उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पियं सव तितिक्खएज्जा ।
 न सव सव्वथ ऽमिरोयएज्जा, न यावि पूय गरह च सजए ॥ १५ ॥
 अणेगच्छन्दाभिह माणवेहि, जे भावओ सपगरेइ भिक्खू ।
 भयमेरवा तथ उहन्ति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥
 परीमहा दुच्चिसहा अणेगे, सीयन्ति जत्था बहुक्कायरा नरा ।
 से तत्थ पत्ते न थहिज्ज भिक्खू, सगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥
 रीओसिणा दसममा य फासा, आयका विविहा फुसन्ति देह ।
 अदुक्कओ तत्थउदियासहेजा, रयाइ तेवेज्ज पुरे कयाइ ॥ १८ ॥

पहाय राग च तदेव दोस, मोह च मिक्खु सतत विपक्खणो ।
 मेरु व्व वाएण अरुम्पमाणो, परीसहे आयशुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥
 अणुञ्जए नावणए महेसी, न यावि पुय गरह च सजण ।
 स उज्जभाव पडिवज्ज, सजण, निच्चाणमग्ग विरण उवेइ ॥ २० ॥
 अरइइसहे पहीणसथवे, निरण आयहिए पहाणम ।
 परमदुपपरिं चिट्ठई, छिन्नमोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥
 त्रिवित्तलयणाइ भएज्ज ताई, निरोपलेवाइ असथडाइ ।
 इसीहि चिण्णाइ महायसेहि, काएण फासेज्ज परीसहाइ ॥ २२ ॥
 सन्नाणनाणोगए महेसी, अणुत्तर चरिउ धम्मसथय ।
 अणुत्तरे नाणधरे जससी, ओमासई छरिए वन्तलिक्वे ॥ २३ ॥
 दुविह खवेऊण य पुण्णपाव, निरणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
 तरित्ता समुद्द व महाभगोघ, समुद्दपाले अपुणाग्ग गए ॥ २४ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ समुद्दपालीय समत्त ॥

॥ अह रइनेमिज्ज वावीसइम अज्जयण ॥

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिद्धिए । वसुदेवु त्ति नामेण, रायलक्खणसजुए ॥ १ ॥
 तस्स भज्जा दुवे आसी, रोहिणी देवई तथा । तासिं दोण्ह दुवे पुत्ता, इट्ठा रामकेमना ॥ २ ॥
 सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिद्धिए । समुद्दविजए नाम, रायलक्खणसजुए ॥ ३ ॥
 तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्तो महायसो । भगव अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाह दमीसरे ॥ ४ ॥
 सो ऽरिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसजुओ । अट्ठमहस्सलक्खणधरो, गोयमो कालगच्छरी ॥ ५ ॥
 वज्जरिसहसघपणो, समचउरमो असोयरो । तस्म रायमईकन्नं, भज्ज जायइ केसवो ॥ ६ ॥
 जह सा रायपरकन्ना, सुसीला चारुपेहणी । सबलक्खणसपन्ना, विज्जुमोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥
 अहाह जणओ तीसे, त्तासुदेव महिद्धिय । इहागच्छउकुमारो, जा से कन्न ददामि ह ॥ ८ ॥
 सबोसहीहिं ण्विओ, कयकोउयमगली । दिव्वजुयलपरिदिओ, आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥
 मत्त च गधहरिंथ, वासुदेवस्स जेह्म । आरुटो तोहए अहिय, सिरे चूडामणि जहा ॥ १० ॥
 अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि य सोहिण । दमारचकेण य सो, मव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥
 चउरगिणीए सेणाए, रइयाए जहकम । तुरियाण सन्निनाणण, दिव्वेण गगण फुमे ॥ १२ ॥
 प्यारिसाए इद्धीए, जुत्तीए उच्चमाइ य । नियगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुगवो ॥ १३ ॥
 अह सो तस्य निज्जन्तो, दिग्गस पाणे भयदुदुए । वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥
 जीवियन्त तु सम्पत्ते, मसट्ठा भक्खिखयव्वए । पासेत्ता से महापत्ते, सारहिं इणमव्ववी ॥ १५ ॥
 कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सबे सुहेसिणो । वाडेहिं पजरेहिं च, सन्निरुद्धा य अच्छहिं ॥ १६ ॥
 अह सारही तओ भणइ, एए भदा - तुज्ज विवाहकज्जम्मि, भोयावेउ ॥

सोऽङ्गण तस्स वयण, बहुपाणिविणासण । चिन्तेइ से महापन्नो, साणुकोसे जिए द्विज ॥ १८ ॥
 जइ मज्झ कारणा एए, इम्मन्ति सुबहू जिया । न मे एय तु निस्सेस, परलोगे भविस्सई ॥ १९ ॥
 सो कुण्डलाण जुयल, सुचग च महायसो । आभरणाणि य सवाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥
 मणपरिणामे य कए, देवा य जहोइय ममोइण्णा । सबहुई सपरिमा, निक्खमण तस्स काउ जे ॥ २१ ॥
 देवमणुस्सपरिखुडो सीधारयण तओ समारूढो, निक्खिमय वारगाओ, रेवपम्मि द्विओ भगव ॥ २२ ॥
 उज्जाण सपत्तो, ओइण्णो उत्तमाउ सीयाओ । माइस्सी परिखुडो, मह निम्पमई उ शिचार्हि ॥ २३ ॥
 अइ से सुगन्धगन्धीए, तुरिय मउकुचिए । सयमेव भुचई केसे, पच्चसुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥
 वासुदेवो य ण भणइ लुत्तकेम जिइन्दिय । इच्छिरियमणोरह तुरिय, पावसू त दमीमरा ॥ २५ ॥
 नाणेण टसणेण च, चरित्तेण तहेव य । खत्तीए सुचीए, बहुमाणो भवाहि य ॥ २६ ॥
 एव ते रामकेमगा, दमारा य बहू जणा । अरिट्ठणेमि वन्दिता, अभिमया दारगापुरिं ॥ २७ ॥
 मोऽङ्गण रायरून्ता, पव्वज्ज सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणन्दा, सोणेण उ समुत्थिया ॥ २८ ॥
 राईमई विनिन्तेइ, धिरत्थु मम जीविय । जा ह तेण परिचत्ता, सेय पच्चइउ मम ॥ २९ ॥
 अह मा भमगसन्निभे, कुच्चफणगमाहिए । सयमेव लुचई केसे, धिइम ता ववस्मिया ॥ ३० ॥
 वासुदेवो य ण भणइ, लुत्तकेम जिइन्दिय । समारमागर घोर, तर कंठे लहू लहू ॥ ३१ ॥
 सा पच्चइया सन्ती, पव्वगवेसी तहिं बहु मयण परियण चेव, मीलवन्ता बहुस्सुया ॥ ३२ ॥
 गिरिं रेवतय जन्ती, तासेणुट्ठा उ अतरा । तासन्ते अन्धयारम्मि, अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥ ३३ ॥
 चीवराइ विसारती, जहा नाय त्ति पासिया । रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥ ३४ ॥
 मीया य सा तहिं ददट्ठ, एगन्ते सजय तय । वाहाहिं काउ सगोष्फ, वेवमाणी निमीयई ॥ ३५ ॥
 अह मो पि रायपुत्तो, ममुद्धविजयगओ । भीय पवेविय ददट्ठ, इम वक्क उदाहरे ॥ ३६ ॥
 रहनेमी अह भंटे, सुरूवे चारुभासिणी । मम भयाहि सुयणु, न ते पीला भविस्सई ॥ ३७ ॥
 एहि ता भुजिमो भोण, माणुस्स सुसुद्धह । भुत्तभोगी पुणो पच्छा, जिणमग्ग चरिस्समो ॥ ३८ ॥
 ददट्ठण रहनेमि त, भग्गुजोयपराजिय । राईमई असम्भन्ता, अप्पाण सवरे तहिं ॥ ३९ ॥
 अह मा रायवररूत्ता, सुट्ठिया नियमवए । जाई कुल च सील च, रक्खमाणी तय वए ॥ ४० ॥
 जइ सि रूणेण वेसमणो, ललिएण नलकुडरो । तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्ख पुरदरो ॥ ४१ ॥
 धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो त जीवियकारणा । वन्न इच्छसि आवाउ, सेय ते मरण भवे ॥ ४२ ॥
 अह च भोगरायस्स, त च सि अन्धगमण्हणो । मा कुटे गन्धणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ४३ ॥
 जइ त काहिसि भाव, जा जा दन्ठसि नारिओ । वायाट्ठो व इट्ठो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४४ ॥
 गोमालो भण्डवालो वा, जहा तद्वणिम्मरो । एव जणिम्मरो त पि, सामणस्स भविस्ससि ॥ ४५ ॥
 तीस सो उयण सोच्चा, मययाण सुभासिय । अकुसेण जहा नागो, म्मे सपडिवाइओ ॥ ४६ ॥
 मणगुत्तो वायगुत्तो, कायगुत्तो जिइन्दिए । सामण्ण निच्चल फासे, जागजीव दद्वओ ॥ ४७ ॥
 उग्ग तव चरित्ताण, जाया दोण्णि वि केरली । सब क्रम्म रावित्ताण, सिद्धिं पत्ता अणुत्तर ॥ ४८ ॥
 एव करन्ति ममुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा । विणियट्ठन्ति भोगेसु, जहा मो पुरिमोत्तमो ॥ ४९ ॥
 त्ति चेमि ॥ रहनेमिज समत्त ॥

॥ अह केसिगोयमिज्ज तैवोसडम अज्जयण ॥

जिणे पासि चि नामेण, अरहा लोगपुडओ । सबुद्धप्पा य सव्वन्नु, वम्मतिथयर जिणे ॥ १ ॥
 तस्म लोगपदीवस्म, आसि सीसे महायसे । केमी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारणे ॥ २ ॥
 ओहिनाणसुण बुद्धे, सीससधममाउले । गामाणुगाम रीयन्ते, मात्थिय पुरमागण ॥ ३ ॥
 ति दुय नाम उज्जाण, तस्मि नगरमण्डले । फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागण ॥ ४ ॥
 अह तैपेय कालेण वम्मतिथयर जिणे । भगव वद्धमाणि चि, सव्वलीगम्मि विम्मुए ॥ ५ ॥
 तस्म लोगपदीवस्म आसि सीसे महायसे । भगव गोयमे नाम, विज्जाचरणपारण ॥ ६ ॥
 वारसगविज्ज उड्ड, सीससधममाउले । गामाणुगाम रीयन्ते, से पि सात्थियमागण ॥ ७ ॥
 कोट्टग नाम उज्जाण, तस्मी नगरमण्डले । फासुए सिज्जसथारे, तत्थ वासमुवागण ॥ ८ ॥
 केमी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ पि तत्थ विहरिसु, अछीणा मुममाहिया ॥ ९ ॥
 उभओ सीससघाण, सज्जवाण तस्मिण, । तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना, गुणवन्ताण तादण ॥ १० ॥
 केरिसी वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केम्मि । आयारधम्म पणिही, उमा वा सा व केरिसी ॥ ११ ॥
 चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासिण य महापुणी ॥ १२ ॥
 अचेलओ य जो धम्मो, जो इमो सत्तुरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाण, विसेमे किं नु कारण ॥ १३ ॥
 अह ते तत्थ सीसाण, विन्नाय पत्रितक्खिय । ममागमे कयमई, उभओ केसिगोयमा ॥ १४ ॥
 गोयमे पडिरुप नू, सीससधममाउले । जेट्ट कुलमवेक्कपन्तो, तिन्दुय उणमागओ ॥ १५ ॥
 केसी कुमारसमणे, गोयम दिस्समागय । पडिरुपं पडिपत्ति मम्म सपडिपज्जई ॥ १६ ॥
 पलाल फासुय तत्थ, पचम वुसतवाणि य । गोयमस्स निसेज्जाए, सिप्प समणापण ॥ १७ ॥
 केमी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभओ निमण्णा सोहन्ति, चन्देसम्ममप्पमा ॥ १८ ॥
 ममागया घट्ट तत्थ, पासण्डाकोउगामिया । गिहत्थाण चणेगाओ, माहस्सीओ ममागया ॥ १९ ॥
 देवदाणपगन्धवा, जक्खरकरसक्खिरा । अदिस्साण च भूयाण, आमी तत्थ ममागयो ॥ २० ॥
 पुच्छामि ते महाभाग, केमी गोयममन्वयी । तओ केसिं तुवण्त तु, गोयमो इणमन्वयी ॥ २१ ॥
 पुच्छ भन्ते अहिच्छ ते, केसिं गोयममन्वयी । तओ केमी अणुजाए, गोयम इणमन्वयी ॥ २२ ॥
 चाउज्जामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेण, पासिण य महापुणी ॥ २३ ॥
 एगकज्जपवन्नाण, विसेमे किं नु कारण । धम्मे दुविहे मेहारी, कह विप्पचओ न ते ॥ २४ ॥
 तओ केसिं तु व तु, गोयमो इ मन्वयी । पन्ना ममिस्सए धम्मतच तनणिणिठ ॥ २५ ॥
 पुरिमा उज्जुजडा उ, वरुनडाय पच्छिमा । पज्झमा उज्जुपन्ना उ, तेण धम्मे दुहाकए ॥ २६ ॥
 पुरिमाण दुविसीज्जोउ, चरिमाण दुरणुपालओ । अप्पो मज्झिमगाणतु, मुविमोज्जो सुपालओ ॥ २७ ॥
 साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । जन्नो वि संमओ मज्झ, त मे रुहसु गोयमा ॥ २८ ॥
 अचेलमो य जो धम्मो, जो इमो मन्तरुत्तरो । देमिओ वद्धमाणेण, पासिण य महाजमा ॥ २९ ॥
 एगकज्जपवन्नाण, विसेमे किं नु कारण । लिगे दुविहे मेहारी, एह विप्पचओ न ते ॥ ३० ॥

केसिमेव युवाण तु, गोयमो इणमन्ववी । विन्नाणेण समागम्भ, घम्मसाहणमिच्छिय ॥ ३१ ॥
 पच्चयत्थ च लोगस्स, नाणाविहविगप्पण । जत्तत्थ गणदर्थं च, लोणे लिंगपओयण ॥ ३२ ॥
 अह भवे पडन्ना उ, मोक्खसन्भूयसाहणा । नाण च दसण चेन, चरिच चेन निच्छए ॥ ३३ ॥
 साहु गोयमपन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥
 अणेगाण सहस्माण, मज्झे चिट्ठसि गोयमा । ते य ते अहिगच्छन्ति, कह ते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥
 एणे जिण जिया पच, पच जिए जिया दम । इसदा उ जिणित्ताण, सबभत्तु जिणामह ॥ ३६ ॥
 सत्त य इह के बुत्ते, केसी गोयममन्ववी । तओ केसिं युवत तु गोयमो इणमन्ववी ॥ ३७ ॥
 एगप्पा अजिए सत्तु, कमाया इन्दिपाणि य । ते जिणित्तु जहानाय, विहरामि अह मुणी ॥ ३८ ॥
 साहु गोयमपन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो, अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ३९ ॥
 दीसन्ति यहवे लोए, पासवद्धा सरिरीणो । मुक्कपामो लहुब्भुओ, कह विहरिसी मुणी ॥ ४० ॥
 ते पासे सबसो चित्ता, निदन्तुण उवायओ । मुक्कपासो लहुब्भुओ, रुहं विहगमि अह मुणी ॥ ४१ ॥
 यामा य इह के बुत्ता, केसी गोयममन्ववी । केसिमेव युवत तु, गोयमो इणमन्ववी ॥ ४२ ॥
 रागदोमादओ तिवा, नेहपामा भयरूरा । ते छिन्दिता जहानाय, विहगमि जहक्कम ॥ ४३ ॥
 साहु गोयमपन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ४४ ॥
 अतोहियसभूया, लया चिट्ठइ गोयमा । फलेउ विमभक्खीणि, सा उ उद्धरिया कह ॥ ४५ ॥
 त लय सबसो छित्ता, उद्धरित्ता समूलिय । विहरामि जहानाय, मुक्को मि विसभक्खण ॥ ४६ ॥
 लया य इह का बुत्ता, केसी गोयममन्ववी । केसिमेव युवत तु, गोयमो इणमन्ववी ॥ ४७ ॥
 भवतण्हा लया बुत्ता, भीमा भीमफलोदया । तमुद्धिचा जहानाय, विहरामि जहासुह ॥ ४८ ॥
 साहु गोयमपन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ४९ ॥
 सपज्जलिया घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोयमा । जे डहनित्ति सरिरत्थे, कह विज्जाविया तुमे ॥ ५० ॥
 महामेहप्पद्धयाओ, गिज्ज वारि जल्लत्तम । सिंचामि समय देह सित्ता नो व डहनित्ति मे ॥ ५१ ॥
 अग्गी य इह के बुत्ता, केसी गोयममन्ववी । केसिमेव युवत तु, गोयमो इणमन्ववी ॥ ५२ ॥
 कसाया अग्गिणो बुत्ता, सुयसीलत्ता जल । सुयधारामिहया सन्ता, भिन्ना हु न डहनित्ति मे ॥ ५३ ॥
 साहु गोयमपन्ना ते, छिन्नो मे ससओ । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ५४ ॥
 अय साहसिओ भीमो, दुद्धस्सो परिधावई । जसि गोयममारूढो, कह तेण न हीरसि ॥ ५५ ॥
 पघान्त निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहिय । न मे गच्छइ उम्मग्ग, भग्ग च पडिवज्जई ॥ ५६ ॥
 आसे य इह के बुत्ते, केसी गोयममन्ववी । केसिमेव युवत तु, गोयमो इणमन्ववी ॥ ५७ ॥
 मणो साहसिओ भीमो, दुद्धस्सो परिधावई । त सम्म तु निगिण्हामि, घम्मसिक्ख इकन्थग ॥ ५८ ॥
 साहु गोयमपन्ना ते, छिन्नो मे ससओ इमो । अन्नो वि ससओ मज्झ, त मे कहसु गोयमा ॥ ५९ ॥
 बुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासन्ति जत्तुणो । अद्धाणे कह वट्टन्ते, त न नाससि गोयमा ॥ ६० ॥
 जे य मग्गेण गच्छन्ति, जे य उम्मग्गपट्ठिया । ते सबे वेइयामज्झ, तो न नस्सामह मुणी ॥ ६१ ॥
 मग्गे य इह के बुत्ते, केसी गोयममन्ववी । केसिमेव युवत तु, गोयमो इणमन्ववी ॥ ६२ ॥
 कुप्परयणपामण्डी, सबे उम्मग्गपट्ठिया । सम्मग्ग तु जिणक्खाय, एस मग्गे हि उचमे ॥ ६३ ॥

साहू गोयम पक्षा ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ससओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा ॥ ६४ ॥
महाउदगवेगेण, बुद्धमाणाण पाणिण। मरण गई पइहा य, दीन क मच्चसी भुणी ॥ ६५ ॥
अत्थ एगो महादीरो, वारिमज्जे महालओ। मदाउदगवेगस्म, गई तत्थ न विज्जदं ॥ ६६ ॥
दीव य इह के बुत्ते, केसी गोयममच्चरी। केसिमेव बुत्त तु, गोयमो इणमच्चरी ॥ ६७ ॥
जराकरणवेगेण, बुद्धमाणाण पाणिण। भम्मो दीरो पइहा य, गई मरणसुत्तम ॥ ६८ ॥
साहू गोयम पक्षा ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि समओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा ॥ ६९ ॥
अण्यसि महोहसि, नावा विपरिधानट। जसि गोयममारुद्धो, कह पार गमिस्ससि ॥ ७० ॥
जा उ सस्माणिणी नावा, न मा पारस गामिणी। जा निरस्माणिणी नावा, मा उ पारस्म गामिणी ॥ ७१ ॥
नावा य इह का बुत्ता, केसी गोयममच्चरी। केसिमेव बुत्त तु, गोयमो इणमच्चरी ॥ ७२ ॥
मरीरमाहु नाव चि, जीने बुच्चद नाविओ। ममारो अण्णरो बुत्तो, ज तरति महसिणो ॥ ७३ ॥
साहू गोयम पक्षा ते, छिन्नो मे ससओ इमो। अन्नो वि ममओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा ॥ ७४ ॥
अन्धयारे तमे घोर, चिद्धन्ति पाणिणो व्ह। को करिस्मइ उज्जीय, सबलोयम्मि पाणिण ॥ ७५ ॥
उग्गओ विमलो माणू, सबलोयपभक्को। सो करिस्मइ उज्जीय, सबलोयम्मि पाणिण ॥ ७६ ॥
माणू य इह के बुत्ते, केसी गोयममच्चरी। केसिमेव बुत्त तु, गोयमो इणमच्चरी ॥ ७७ ॥
उग्गओ खीणसमारो, सबन्नु जिणमक्खरो। सो करिस्मइ उज्जीय, सबलोयम्मि पाणिण ॥ ७८ ॥
साहू गोयम पक्षा ते, छिन्नो मे समओ इमो। अन्नो वि ममओ मज्ज, त मे कहसु गोयमा ॥ ७९ ॥
सारीरमाणसे दुक्खे, बुद्धमाणाण पाणिण। रोम सिउमणावाह, ठाण किं मच्चमी भुणी ॥ ८० ॥
अत्थ एग घृव ठाण, लोगगम्मि दुरारुह। जत्थ नत्थि जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा चहा ॥ ८१ ॥
ठाणे य इह के बुत्ते, केसी गोयममच्चरी। केसिमेव बुत्त तु, गोयमो इणमच्चरी ॥ ८२ ॥
निब्बाण ति अवाह ति, मिद्धी लोगगमेव य। रोम सिउ अणापाह, ज चरति महेमिणो ॥ ८३ ॥
त ठाण सामय नास, लोयगम्मि दुरारुह। ज सपथा न मोयन्ति, भवोहन्त्तरा भुणी ॥ ८४ ॥
साहू गोयम पक्षा ते, छिन्नो मे ससओ इमो। नमो ते समगतीत, सब्बमुत्तमहोयही ॥ ८५ ॥
एव तु ससए छिन्ने, केसी घोरपरक्खे। अभिरन्दिच्चा सिरमा, गोमय तु महायस ॥ ८६ ॥
पच्चमहध्वययम्म, पडिवज्जइ भावओ। पुरिमस्म पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥
केसीगोयमओ निच्च, तम्मि आदि समागमं। छयमीलमसुक्खमी, महत्थयविणिच्चओ ॥ ८८ ॥
तोमिया परित्ता मवा, सम्मग्ग समुत्तिया। सगुपा ते पसीयन्तु भयव केमिगोयमे ॥ ८९ ॥

त्ति वेमि ॥ केसिगोयमिज्ज समत्त ॥ २३ ॥

॥ अह समिर्दओ चउवीसइम अज्झयण ॥

अट्ट पवयणमायाओ, समिर्दओ गुत्ती तहव य । पचेय य समिर्दओ, तओ गुत्तीउ आहीया ॥ १ ॥
 इरियाभासेमणादाणे, उचार ममिर्द इय । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य अट्टमा ॥ २ ॥
 एयाओ अट्ट समिर्दओ, ममासेण वियाहिया । दुगालसम जिणक्कवाय, माय जत्थ उ पवयण ॥ ३ ॥
 आलम्बणेण कालेण, मग्गण जयणाय य । चउकारणपरिसुद्ध, सजए इरिय रिण ॥ ४ ॥
 उत्थ आलम्बण नण दसण चरण तहा । काले य दिवसे युत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥
 दवओ सेत्तओ चेय, कालओ भायओ तहा । जायणा चउव्विहा युत्ता, त मे क्कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥
 दव्वओ चवत्तुमा पेहे, जुगमित्त च सेत्तओ । कालओ जान रीडज्जा, उवउत्ते य भायओ ॥ ७ ॥
 इन्दियत्थे विवज्जित्ता, मज्झायं चेव पञ्चहा । तम्मुत्ती तप्पुव्वारे, उवउत्ते रिय रिण ॥ ८ ॥
 कोइ माणे य मायाण, लोभे य उउत्तया । हासे भए मोहरिए, विरुहासु तहव य ॥ ९ ॥
 एयाड अट्ट ठाणाड, परिधज्जित्तु सजए । असायज्ज मिय काले, भास भामित्त पन्नय ॥ १० ॥
 गणेमणाए गडेणे य, परिभोगेमणाय य । आहारोपहिसेजाण, एण तिन्नि विसोहण ॥ ११ ॥
 गग्गमुप्पायण पट्टमे, नीए सोहज्ज एसण । परिभोगम्मि चउव्व, विसोहज्ज जय जई ॥ १२ ॥
 ओहोउहोउग्गहिय, मण्डग दूविह मुणी । गिण्हन्तो निकित्तयन्तो वा, पउजेज्ज इम विहिं ॥ १३ ॥
 चम्पुमा पडिठेहित्त, पमज्जज्ज जय जई । अए निकित्तवेज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥ १४ ॥
 उचार पामरण, सेल सिघाणजल्लिय । आहार उउहिं देह, अब्ब वावि तहाविह ॥ १५ ॥
 अणावायमसलोए, अणोवाण चेव होड सलोण । आनायमसलोण, आवाए चेय सलोए ॥ १६ ॥
 जणावायमसलोए, परस्मणुव्वघाडण । ममे अज्जुत्तिरे यावि, अचिरकालकयम्मि य ॥ १७ ॥
 वित्थिण्णे दूरमोगाडे, नासन्ने विलवज्जिए । तसपाणवीयरहिण, उच्चारदंणि वोत्तिरे ॥ १८ ॥
 एयाओ पञ्च समिर्दओ, ममासेण वियाहिया । एत्तो य तओ गुत्तीओ, वोच्छामि अणुपुव्वमो ॥ १९ ॥
 सरम्भममारम्मे, आरम्मे य तहय य । चउत्थी असच्चमोमा य, मणगुत्तीओ चउव्विहा ॥ २० ॥
 सरम्भममारम्मे, आरम्मे य तहय य । मण पत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २१ ॥
 मच्चा तहय मोमा य, सच्चमोमा तहेय य । चउत्थी असच्चमोमा य, वइगुत्ती चउव्विहा ॥ २२ ॥
 सरम्भममारम्मे, आरम्मे य तहय य । यय पत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २३ ॥
 ठाणे निसीयणे चेय, तहेव य तुपट्टणे । उल्लघणपट्टघणे, इन्दियाण य जुजणे ॥ २४ ॥
 सरम्भममारम्मे, आरम्भम्मि तहेय य । काय पत्तमाण तु, नियत्तेज्ज जय जई ॥ २५ ॥
 एयाओ पञ्च समिर्दओ, चरणम्स य पत्तणे । गुत्ती नियत्तगे युत्ता, असुमत्थेसु सव्वमा ॥ २६ ॥
 एया पवयणमाया, जे मम्म आयरे मुणी । रिप्प सव्वमारा, विप्पमुच्चड पण्डिए ॥ २७ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ ममिर्दओ समत्ताओ

॥ अह जन्नइज्ज पञ्चवीमडम अज्जयण ॥

माहणकुलमभूओ, आसि विप्पो महायमो । जायाई जमजन्नम्मि, जयत्रोसि ति नामओ ॥ १ ॥
 इन्द्रियग्गामनिग्गहाही, मग्गामी मद्दामुणी । गामाणुग्गाम रीयते, पत्ते त्ताणारमि पुरिं ॥ २ ॥
 चाणारसीए चहिया, उज्जाणम्मि मणोग्गे । फामुए सेज्जसथारे, तत्थ वाममुत्ताए ॥ ३ ॥
 अह तेणेन कालेण, पुरीए तत्थ माहणे । विजयचोसि ति नामेण, जन्न जयइ पेययी ॥ ४ ॥
 अह से तत्थ अणगारे, मासकउत्तमणवारणे । विजयचोसस्म जन्नम्मि, भिक्खुमट्ठा उअट्ठिए ॥ ५ ॥
 समुवट्ठिय तर्हि सत्त, नायगो पडिशेहिए । न हू दाहामि ने भिक्खु, भिक्खु जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥
 जे य वेयविउ विप्पा, जन्नट्ठा य जे दिया । जो मग्गविउ जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥
 जे समत्था समुदत्त, परमप्पाणमेव य । तेसि अन्नमणिदेय, भो भिक्खु सब्भामिय ॥ ८ ॥
 सो त य एव पडिसिट्ठो, जायगेण महामुणी । न पि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तिमट्ठगणेशओ ॥ ९ ॥
 नन्नट्ठ पाणहेउ था, नवि निव्वाहणाय वा । तेमिं विमोक्खणट्ठाए, ङण त्रयणमन्वी ॥ १० ॥
 नपि जाणसि वेयमुह, नपि ज्ञाण ज मुह । नक्खत्ताण मुह ज च, ज च धम्माण वा मुह ॥ ११ ॥
 जे समत्था समुदत्त, परमप्पाणमेव य । न ते तुम वियाणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥
 तस्सक्खेयपमोसत्त तु, अनयन्तो तर्हि दिओ । मपरिसो पजली होउ, पुच्छई त महामुणिं ॥ १३ ॥
 वेयाण च मुह वृद्धि, वृद्धि ज्ञाण ज मुह । नक्खत्ताण मुह वृद्धि, वृद्धि धम्माण वा मुह ॥ १४ ॥
 जे समत्था समुदत्त, परमप्पाणमेव य । एय मे ससय मध, साहू रुहसु अच्छिओ ॥ १५ ॥
 अग्गिहत्तमुहा वेया, अन्नट्ठी रेयभा मुह । नग्गत्ताण मुह चन्दो, धम्माण कामवो मुह ॥ १६ ॥
 जहा चन्द गहाईया, चिट्ठीती पजलीउडा । चन्दमाणा नममन्ता, उत्तम मत्तहारिणो ॥ १७ ॥
 अजाणभा जन्नवर्डि, विज्जामाहणमपया । गूढा सज्जायतपमा, भामच्छन्ना इयग्गिणो ॥ १८ ॥
 नो लोए बम्मणो पुत्तो, अग्गीव महिओ जहा । सया कुमलमदिट्ठ, त यय त्म माहण ॥ १९ ॥
 जो न सज्ज आगन्तु, पवपन्तो न मोयड । रमड अज्जवयणम्मि, त वयं त्म माहण ॥ २० ॥
 जायरुत्त जहामट्ठ, निद्वन्तमलपायग । रागदोसभयाईय, त यय त्म माहण ॥ २१ ॥
 तत्रम्मिय क्खि दन्त अत्रयियमससोणिय । सुवय पत्तनिव्वाण, त वय त्म माहण ॥ २२ ॥
 तयपाणे वियाणेत्ता, मग्गण य थावर । जो न त्मिह तिविहेण, त यय त्म माहण ॥ २३ ॥
 कोहा वा जड वा हासा, लोहा वा जड वा भया । सुम न वयई जो उ, त यय त्म माहण ॥ २४ ॥
 चित्तमन्तमचित्त मा, अप्प वा जड वा चहु । न गिण्हाड अदत्त जे, त वय त्म माहण ॥ २५ ॥
 विद्विमाणुमतेरिच्छ, जो न सेवड मेहुण । मग्गमा कायपक्केण, त यय त्म माहण ॥ २६ ॥
 जहा पोम जले जाय, नोरलिप्पड तारिणा । एय अलित्त कामेहिं, त यय त्म माहण ॥ २७ ॥
 अलोत्तुप मुहाजीदिं, अणगार अक्किचण । असमत्त गिह पेसु त वय त्म माहण ॥ २८ ॥
 जट्ठिता पुवसजोगं नाटमगे य मन्धवे । जो न मज्जड भोगेसु, त यय त्म माहण ॥ २९ ॥
 पसुव था मव्वेया य, जड च ॥ न त तायन्ति दुम्मील, रुम्माण ॥ ३० ॥

न वि मुण्डिण्य समणो, न ओकरेण वम्मणो । १ मुणी रण्णामेण, इमचीरेण तावमो ॥ ३१ ॥
 समणए समणो होइ वम्मचरेण वम्मणो । नाणेण उ मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ॥ ३२ ॥
 कम्मणा वम्मणो होइ, कम्मणा होइ सत्तिओ । वडमो कम्मणा होइ, सुद्धो इवड कम्मणा ॥ ३३ ॥
 एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ । सबकम्मविणिम्भुव, त वय धूम माहण ॥ ३४ ॥
 एव गुणममाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धत्तु, परमप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥
 एव तु ससए छिन्न, विजयघोसे य माहणे । समुत्थाय तए त तु, जयघोम महामुणि ॥ ३६ ॥
 तुद्धे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयजली । माहणत्त जहाभूय, सुद्ध मे उअदसिय ॥ ३७ ॥
 तुम्मे जइया जन्नाण, तुम्मे वेपयिऊ विऊ । जोइसगयिऊ तुम्मे, तुम्मे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥
 तुम्मे समत्था उद्धत्तु, परमप्पाणमेव य । तमणुग्गह करेहम्म भिक्खेण भिक्खु उत्तमा ॥ ३९ ॥
 न कज्ज मज्झ भिक्खेण, सिप्प निकएमए दिया । मा भमिहिस्सि भयाउद्धे घोरे ससारसागर ॥ ४० ॥
 एवढेवो होइ भोगेसु अमोगी नोअलिप्पई । भोगी भमड सवार, अमोगी सिप्पमुचई ॥ ४१ ॥
 उल्लोसुअसोय दो छुदा, गोलया मट्टियामया । दो वि आअडिया बुद्धे, जो उल्लो सोअथ लगई ॥ ४२ ॥
 एए लग्गन्ति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा । विरत्ता उ न लग्गन्ति, जहा से सुक्खगोलए ॥ ४३ ॥
 एव से विजयघोसे, जयघोसस अन्निण । अणगारस्स निकएन्तो, धम्म सोचा अणुत्तर ॥ ४४ ॥
 सवित्ता पुव्वकम्महाइ, सजमेण तथेण य । जयघोसविजयघोपा, सिद्ध पत्ता अणुत्तर ॥ ४५ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ जइइज्ज ममत्त ॥ २५ ॥

॥ अह सामायारी छद्दीसइम अज्जयण ॥

सामायारिं परकणामि, सबदुवखविमोक्खणि । ज चरिचाण निग्गन्था, तिण्णा ससारसागर ॥ १ ॥
 पढमा आअस्सिया नाम, विइया य निमीहिया । आपुच्छणा य तइया, चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥
 पचमी छदणा नाम, इच्छाकारो य छट्ठओ । सत्तमो मिच्छाकारो य, तहकारो य अट्ठमो ॥ ३ ॥
 अन्धुद्दाण च नरम, दसमी उपसपदा । एसा दसगा साहण, सामायारी पवेइया ॥ ४ ॥
 गमणे आवस्सिय कज्जा, ठाणे कुज्ज निमीहिय । आपुच्छण सयकरणे, परकरणे पडिपुच्छण ॥ ५ ॥
 छन्दणा दवजाएण, इच्छाकारो य सारणे । मिच्छाकारो य निन्दाए, तहकारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥
 अन्धुद्दाण गुरुपूया, अच्छणे उवसपदा । एव दुपचमजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥
 पुबिच्छम्मि चउभाए, आइच्छम्मि समुट्टिए । भण्डय पडिलेहित्ता, वन्दिता य तओ गुरु ॥ ८ ॥
 पुच्छिऊ पजलीउडो, कि कायव मए इह । इच्छ निओइउ भन्ते, वेयावच्चे व सज्जाए ॥ ९ ॥
 वेयावच्चे निउत्तेण, कायव अगिलापओ । सज्जाए वा निउत्तेण, सबदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥
 दिवमस्स चउरो भागे, भिक्खु कज्जा विपक्खणो । तओ उत्तरगुणे कज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥ ११ ॥
 पढम पोरिसि सज्जाय, नीय ज्ञाण क्षियायई । तइयाए भिक्खायारिय, पुणो चउत्थीइ सज्जाय ॥ १२ ॥
 आमाट्टे मासे दुवया, पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु, तिप्पया हवइ पोरिमी ॥ १३ ॥
 अगुल सचरत्तेण, पस्खेण च इरगल । वट्टए हायए वावि, मासेण चउरगुल ॥ १४ ॥

आमाद्वयहृलपक्त्वे, भद्रवए कचिए य पोसे य । फग्गुणवाइसाइधु य, भोद्ववा ओमरत्ताओ ॥ १५ ॥
 जेद्दामूले आमादसावणे, छहिं अणुलेहिं पडिलेहा । अट्टहिं वीयत्तम्मि, तइए दस अट्टहिं चउत्थे ॥ १६ ॥
 रत्तिं पि चउरो भागे, मिक्खु कुआ वियक्खणो । तओ उत्तरगुणे कुआ, राड्ढाएसु चउसु वि ॥ १७ ॥
 पढम पोरिसि सज्झाय, वीय ज्ञाण क्षियायई । तइयाए निदमोक्खतु चउत्थी सुजो वि मज्झाय ॥ १८ ॥
 ज नेइ जयारत्तिं, नक्खत्त तम्मि नहचउम्भाए । सपत्ते विरमेजा, सज्झाय पओमकालम्मि ॥ १९ ॥
 तम्मेय य नक्खत्ते, गयणचउम्भागमावसेम्मि । वेरत्तिपि काल, पडिलेहिंत्ता सुणी कुआ ॥ २० ॥
 सुविद्धम्मि चउम्भाए, पडिलेहिंत्ताण भण्डय । गुरु उन्दिरु सज्झा, यकुआ दुक्खविमोक्खण ॥ २१ ॥
 पोरिसीए चउम्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरु । अपडिक्कमित्ता कालस्म, भायण पडिलेहए ॥ २२ ॥
 सुहयोनिं पडिलेहिंत्ता, पडिलेज्ज गोच्छम । गोच्छमलइयगुलियो, वत्थाइ पडिलेहए ॥ २३ ॥
 वड्डु यिर अतुरिय, पुब ता मत्थमेव पडिलेहे । तो विइय पफोठे, तइय च पुणो पपज्जिज्ज ॥ २४ ॥
 अण्णाविय अगलिय, अण्णपुबन्धिममोसलिं चेत्त । छप्पुरिमा नव सोडा, पाणीपाणिविसोहण ॥ २५ ॥
 आरभडा मम्म हा, वज्जेयवा य मोसलो तइया । पफोठणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥ २६ ॥
 पसिदिलपलम्बलोला, एगा मोमा अणेगुरूवधुणा । कुणइ पमाणिपमाय, सक्कियगणणोउभ कुआ ॥ २७ ॥
 अण्णाइरितपडिडेहा, अविवच्चासा तइव य । पढम पय पसत्थ, सेसाणि य अप्पमत्थाइ ॥ २८ ॥
 पडिलेहण कुणन्तो, मिहो कइ कुणइ जणवय नइवा । देइ व पच क्खण, वाएइ सय पडिच्छइवा ॥ २९ ॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ वउ वणस्सइ-त्तमाण । पडिलेहणापमत्तो, छण्ह पि विराइओ होइ ॥ ३० ॥
 पुढवी आउक्काए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तमाण । पडिलेहणाआउत्तो, छण्ह सक्खत्तो होइ ॥ ३१ ॥
 तइयाए पोरिसीए, मत्त पण मवेसण । छण्ह अन्नयराए, कारणम्मि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥
 वेयण वेयाउत्ते, इरियट्ठाण य सजमट्ठाए । तह पाणवत्तिपाण, छट्ठ पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३३ ॥
 निग्गन्थो धिइमन्तो, निग्गन्धी चि न करेज्ज छहिं चेव । थाणेहि उ इमेहिं, अण्णमणाइ से होइ ॥ ३४ ॥
 आयके उवमग्गे, तितिकलया धम्मवेरगुत्तीसु । पाणिदया तवहउ, मरीरत्तोच्चे यणट्ठाए ॥ ३५ ॥
 अउसेस भपडग गिज्ज, चक्खुसा पडिलेहए । परमद्वजोपणाओ, विहार विहरण सुणो ॥ ३६ ॥
 चउत्थीए पोरिसीए, निक्खित्तिताण भायण । सज्झाय तओ बुज्जा, मवभायविभायण ॥ ३७ ॥
 पोरिसीए चउम्भाए, वन्दित्ताण तओ गुरु । पडिक्कमित्ता कालस्म, सेज्ज तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥
 पासणुचारभूमिं च, पडिलेहिंज्ज जय जई । काउस्सग तओ बुज्जा, सवदुक्खविमोक्खण ॥ ३९ ॥
 देवसिय च अईयार, चिन्तित्ता अणुपुबसो । नाणे य दसणे चेत्त, चरित्तम्मि तहर य ॥ ४० ॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दित्ताण तओ गुरु । देसिय तु अइयार, आलोणज्ज जहक्कम्म ॥ ४१ ॥
 पडिक्कमित्तु निस्सट्ठो, वन्दित्ताण तओ गुरु । काउस्सग्ग तओ कुआ, सवदुक्खविमोक्खण ॥ ४२ ॥
 पारियकाउस्सग्गो, उन्दित्ताण तओ गुरु । युइमगल च काऊण, काल सपडिलेहए ॥ ४३ ॥
 पढम पोरिसि सज्झाय, वित्ति य ज्ञाण क्षियायई । तइयाए निदमोक्खतु, मज्झाय तु चउत्थीए ॥ ४४ ॥
 पोरिसीए चउत्थीए, काल तु पडिलेहिंत्ता । मज्झाय तु तओ बुज्जा, अणोदेन्तो असजण ॥ ४५ ॥
 पोरिसीए चउम्भाए, वन्दिरुण तओ गुरु । पडिक्कमित्तु कालस्म, काल तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥
 आगण कायवोस्सग्गो, सवदुक्खविमोक्खणो । काउस्सग्ग तओ बुज्जा सवदुक्खविमोक्खण ॥ ४७ ॥

राश्य च अईयर, चिन्तिज्ज अणुपुषमो । नाणमि दमणमि य, चरिचमि तयमि य ॥ ४८ ॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दिताण तओ गुरु । राश्य तु अईयार, आलोण्ज्ज जह्वम्म ॥ ४९ ॥
 पडिकमिच्चु निस्सम्लो, वन्दिताण तओ गुरु । काउस्सग्ग तओ वुज्जा, सधदुक्खण ॥ ५० ॥
 किं तय पडिवज्जामि, एव तत्थ विचिन्ताण । राउस्सग्गं तु पारिचा, वन्दई य तओ गुरुं ॥ ५१ ॥
 पारियकाउस्सग्गो, वन्दिताण तओ गुरु । तव तु पडिवज्जजा, कुज्जा सिद्धाण सयव ॥ ५२ ॥
 एमा सामायारी, ममासेण वियाहिया । ज चरिचा बहू जीया, तिण्णा समारमागरं ॥ ५३ ॥

ति चेमि ॥ इअ सामायारी ममत्ता ॥ २६ ॥

॥ अह खलुकिज्ज सत्तवोसइम अज्झयण ॥

धेरे गणहरे गग्गे, मुणी आमि विसारए । आण्णे गणिभारम्मि, समारिं पडिसघण ॥ १ ॥
 वहणे वहमाणम्म ऊत्तर अइयचई । जोगे वहमाणम्म, समारो अइयचई ॥ २ ॥
 खलुके जो उ जोएइ, विहम्मणी किलिम्मई । अममारिं ज वेणइ, तोत्तओ से य भज्जई ॥ ३ ॥
 एग डसड पुच्छम्मि, एग विभइ ऽभिकरण । एगो भजड ममिल, गगो उप्पइदद्धिओ ॥ ४ ॥
 गगो यवड पासेण, निवेसड निरजइ । उअइइ उप्पिडइ, मटे धालगवी यए ॥ ५ ॥
 माई मुद्रेण पडइ, कुद्व गच्छे पडिप्पह । मयलन्सेण चिद्वई, वेणेण य पडामई ॥ ६ ॥
 छिन्नाले छिदई सेरि, दुइतो भजण जुग । सेरि य सुस्सुपाइत्ता, उज्जहिता पलायए ॥ ७ ॥
 खलुमाजारिसा जोज्जा, दुम्सीसा वि हु तारिमा । जोइया धम्मजाणम्मि, भजन्ती धिइदुन्वला ॥ ८ ॥
 इट्ठीगारविण ग्गे, ग्गेज्जथ रमगाव । सायागारविण ग्गे, एगे मुचिरकोहणे ॥ ९ ॥
 भिम्पालसिए ग्गे, ग्गे ओमाणमीरए । थद्वे ग्गे आणुमागम्मी, हेऊहिं कारणेहि य ॥ १० ॥
 मो वि जन्तरभासिल्लो, दोसमेर पउवई । आयरियण तु वयण, पडिरुलेइअभिकरण ॥ ११ ॥
 न मा मम त्रियाणाइ, न य सा मज्ज दाहिंटे । निग्गया होहिं मधे, महु अत्रोत्थ वच्च ॥ १२ ॥
 पसिया पलिउचन्ति, त परियन्ति, ममन्तओ । रायवेहिं च मन-ता, करेन्ति मिउईं सुहे ॥ १३ ॥
 वाइया सगदिया चेव, भत्तपाणेण पोसिया । जायपक्खा जहा हमा, पवमन्ति दिमो दिमिं ॥ १४ ॥
 अह सारही विचिन्तेइ, खलुकेहिं ममाग-ओ । किं मज्जा दुद्वसीमेहिं, जप्पा मे अवसीयई ॥ १५ ॥
 जारिमा मम सीमाओ, तारिमा गलिगग्गहा । गलिगइइ जहिचाण, दड पणिण्णई तय ॥ १६ ॥
 मिउमहवसपन्नो, गम्मीगे सुममादिओ । विहरइ महिं महप्पा, सीलभूण्ण अप्पण ॥ १७ ॥

त्ति चेमि ॥ खलुकिज्ज ममत्ता ॥ २७ ॥

॥ अह मोक्षमार्गार्थं अष्टाविंशोऽध्यायः ॥

मोक्षमार्गार्थं तद्य, सुषेह जिणभासिय । चउत्तराणससुत्त, नाणदसणलक्खण ॥ १ ॥
 नाण च दसण चैव, चरित्त च ततो तथा । एम मग्गु त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥ २ ॥
 नाण च दमण चैव, चरित्त च ततो तथा । एममग्गमणुप्पत्ता, जीना गच्छन्ति मोग्गड ॥ ३ ॥
 तत्थ पचविह नाण, सुय आभिनिघोहिय । औहिनाण तु तइय, मणनाण च केवल ॥ ४ ॥
 एय पचविह नाण, दवाण य गुणाण य । पज्जराण य सवेमिं, नाण नाणीहि दसिय ॥ ५ ॥
 गुणाणमामओ दव, एयदवस्मिया गुणा । लक्खण पज्जराण तु अमओ अस्मिया मवे ॥ ६ ॥
 धम्मो अहम्मो आगास, फालो पुग्गत्त जत्तो । एम लोको त्ति पन्नत्तो, जिणेहिं वरदसिहिं ॥ ७ ॥
 धम्मो अहम्मो आगाम, दव इक्किक्कमाहिय । अणन्ताणिय दव्वाणि, फालो, पुग्गलजन्तो ॥ ८ ॥
 गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायण मच्चदथाण, नह ओगाहलक्खण ॥ ९ ॥
 वत्तणालक्खणो फालो, जीतो उयओगलक्खणो । नाणेण दमणेण च, सुषेण य दूहेण य ॥ १० ॥
 नाण च दमण चैव, चरित्त च ततो तथा । वीरिय अयओगो च, एय जीउस्म लक्खण ॥ ११ ॥
 मदन्यवार उज्जोओ, पहा छाया तवे इ वा । उण्णरमगन्वफामा, पुग्गलाण तु लक्खण ॥ १२ ॥
 एगत च पुहत्त च, मत्ता सठाणमेव य । सजोगा य विभागा य, पज्जवाण तु लक्खण ॥ १३ ॥
 जीवाजीना य च-तो य, पुण्ण पावामया तथा । मररो निज्जरा मोस्सो, मन्तेण तट्टिया नव ॥ १४ ॥
 तट्टियाण तु भावाण, सभावे उवणमण । भावेण मच्चन्तस्म, मम्मत्त त वियाहिय ॥ १५ ॥
 निमग्गुत्तमहं, आणहं मुत्त वीयरहमेव । अभिगम वित्थारहं, किरिया सरेण वम्महं ॥ १६ ॥
 भूयत्थणाहिग्गा, जीनार्त्तीना य पुण्णपाय च । महम्मग्गुत्तयाममररो य रोएह उ निम्मग्गो ॥ १७ ॥
 जो जिणदिट्ठे भावे, चउविहे सद्धा मयमेव । एमेण नज्जह त्ति य, स निमग्गरुत्त चि नायवो ॥ १८ ॥
 ए चैव उ भावे, उउहंते जो परेण महहं । उउमत्थेण जिणेण च, उउमरुत्त चि नायवो ॥ १९ ॥
 गगो टोमो मोहो, अन्नाण जस्म अवगय होइ । आणाए रोएतो, मो खलु थाणाहं नाम ॥ २० ॥
 जो सुत्तमहिज्जन्तो, सुण्ण श्रीगाहं उ सम्मत्त । अणेण उहिणेण च, सो सुत्तरुत्त चि नायवो ॥ २१ ॥
 एणेण अणेगाट, पयाइ जो पमरुत्त उ सम्मत्त । उउण च नेट्टविद्दु, सो गीयरुत्त चि नायवो ॥ २२ ॥
 सो होइ अभिगमरुत्त, सुयनाण जण अ थओ िट्ठ । एवारस जगइ, पण्णगा टिट्ठिआओ य ॥ २३ ॥
 दवाण सवभावा, मवपभाणेहि जस्म उउलद्धा । मवाहि नयविहीहिं, वित्थाररुत्त चि नायवो ॥ २४ ॥
 दमणनाणचरित्ते, तपणिण मवमभिइग्गुचीसु । जो किरियामारुत्त, मो खलु किरियारुत्त नाम ॥ २५ ॥
 अणभिग्गहियवुदिट्ठी सरेणरुत्त चि होइ नायवो । अणिसाओ पयणे, अणभिग्गहियो य मग्गु ॥ २६ ॥
 जो अरियकायधम्म, सुधम्म खलु चरित्तमम्म च । महत्त निणामिहिय, मो उम्मरुत्त चि नायवो ॥ २७ ॥
 परमत्थमययो वा, सुत्तिपरमयसरेण या वि । वाउत्तवुत्तमणवज्जणा, य मम्मत्तमहत्तणा ॥ २८ ॥
 नत्थि चरित्त सम्मत्तविहण, दमणे उ महयय । सम्मत्तचरित्ताइ, जुगउ पुव च समत्त ॥ २९ ॥

नादमणिस्म नाण, नाणेण विणा न ण्णन्ति चरणगुणा ।

उत्तमिस्म नत्थि मोस्सो, नत्थि अमोस्सस्म निवाण

निस्तकिय निकखिय निवितिच्छा अमूढदिट्ठी य । उव्वह थिरीकरणे, वच्छल पभाणणे अट्ट ॥ ३१ ॥
 सामाइट्य पढम, छेओवट्ठाणण भये वीयं । परिहारविसुड्डीय, सुहुम तह संपराय च ॥ ३२ ॥
 अकसायमहक्खाय, छउमथत्सम जिणत्सम वा । एव चयरित्तकर, चारित्त होइ आहिये ॥ ३३ ॥
 तवो य दुविहो बुत्तो, वाहिरब्भन्तरो तटा । वाहिरो छव्विहो बुत्तो, एमेवब्भन्तरो तवो ॥ ३४ ॥
 नाणेण जाणई भावे, दसणेण य सइहे । चरित्तेण निगिण्डाइ, तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥
 खवेत्ता पुव्वकमाइ, सजमेण तवेण य । सब्बदुवरत्तपहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ ३६ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ मोग्गवग्गगई समत्ता ॥ २८ ॥

॥ अह सम्मत्तपरकम एगूणतीसइम अज्झयण ॥

सुय मे आउस-त्तेण भगवया एवमग्गवाय । इह खलु मम्मत्तपरकमे नाम अज्झयणे समणेण
 भगवया महावीरेण कासवेण पवेइए, ज सम्म सइहिच्चा पतियाइत्ता रोपइत्त फासित्ता पालइत्ता ती-
 रिच्चा किच्चइत्ता सोहइत्ता आराहिच्चा आणाए अणुपालइत्त बहवे जीना सिज्झन्ति जुज्झन्ति घृचन्ति
 परिनिवायन्ति सब्बदुक्खाणमन्त करेन्ति । तस्स ण अयमट्ठे एवमाहिज्झइ, तजहा-सवेगे १ निवेए २
 धम्मसद्धा ३ गुरुमाहम्मियसुरससणया ४ आलोपणया ५ नि दणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८
 चउद्धीसत्थवे, ९ वन्दणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्मग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवधुईमगले १४
 कालपडिलेइणया १५ पायच्छिच्चकरणे १६ रत्तावयणया १७ सज्जाए १८ वायणया १९ पडिपु-
 च्छणया २० पडियट्ठणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमण-
 सनिवेमणया २५ सजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुइसाए २९ अपडिबट्ठया ३० विवित्तमयणा
 सणसेणया ३१ विणियट्ठणया ३२ सम्भोगपच्चक्खाणे ३३ उरहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे
 ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरोरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तप-
 च्चक्खाणे ४० सम्भायपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३ सब्बगुणसपुण्णया ४४ वीय-
 राणया ४५ मन्ती ४६ मूत्ती ४७ मइवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगमच्चे
 मणगुत्तया ५२ वयगुत्तया ५३ कायगुत्तया ५४ मणसमाधारणया ५५ वयसमाधारणया ५६ का-
 यसमाधारणया ५७ नाणसपन्नया ५८ दसणसपन्नया ६० चरित्तसपन्नया ६१ सोइन्द्रियनिग्गह ६२
 चक्खिन्द्रियनिग्गहे ६३ घाणिन्द्रियनिग्गहे ६४ जिह्विन्द्रियनिग्गहे ६५ फासिन्द्रियनिग्गहे ६६
 कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादसणविजए ७१
 सेलेसी ७२ अकम्मया ॥ ७३ ॥

सवेगेण भते जीवे कि जणयइ । सवेगेण अणुत्तर धम्मसद्ध जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए
 सवेगे हवमागच्छइ अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोमे खवेइ । कम्म न चन्धइ । तप्पच्चय च ण
 मिच्छचविसोहिं काऊण दसणाराहए भवइ । दमणविसोहीए य ण विसुद्धाए अत्तेगइए तेणेन
 भवग्गहणेण सिज्झई । सोहीए ष ण विसुद्धाए तच्च पुणो भवग्गहण नाइकमइ ॥ १ ॥ निव्वेदेण

भन्ते जीवे किं जणयइ । निवेदेण दिवमाणुमतेरिच्छएसु कामभोगेसु निवेय हवमाणच्छेड मवविसणसु
 विरज्जइ । मवविसणसु विरज्जमाणे आरम्मपरिचाय करेइ । आरम्मपरिचाय करेमाणे ससारमग्ग
 वोच्छिदइ, सिद्धिमग्ग पडिउत्ते य भवइ ॥२॥ धम्मसद्दाण ण भन्ते जीवे किं जणयइ । धम्ममद्दाए
 ण मायासोप्पेसु रज्जमाणे विरज्जइ । जागरधम्म च ण चयइ । अणगारिण ण जीवे मारीरमाणमाण
 दूकराण छेयणमेयणमजोगार्हण षोत्थेय करेइ अच्चायाह च सुह निव्वत्तेइ ॥ ३ ॥ गरुमाहम्मिय-
 सुस्सुमणाए ण विणयपडिउत्तिं जणयइ । विणयपडिउत्त य ण जीवे अणाचामायणमीले नेरउयतिरि-
 क्कजोणियमणुम्मदेउदुग्गईओ निरुम्मइ । वण्णमज्जणभत्तिउत्तमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निरुग्घइ,
 सिद्धिं सोग्गइ च विमोहेइ । पमत्थाट च ण विणयामूलाइ सव्वइज्जाइ साहेइ अन्ने य बहवे जीवे
 विणिउत्ता भवइ ॥४॥ आलोयणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छा
 दमणमत्ताण मोत्तरमग्गजिग्गण अणतममाग्घण्णणाण उट्ठण करेइ । उज्जुभाउ च जणयइ । उज्जु
 भाउपटिउत्ते य ण जीवे अमाई इत्थीवेयनपुमगवेय च न वग्घइ । पुव्वदइ च णं निज्जरेइ ॥ ५ ॥
 निन्दणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ । पच्छाणुतावेण विर-
 ज्जमाणे करुणगुणसेट्ठिं पटिउत्तइ । करुणगुणसेटीपडिउत्ते य ण अणगार मोहणिज्ज कम्म उग्गाएइ ॥६॥
 गरहणयाए ण भत्त जीवे किं जणयइ । गरहणयाए अपुरेकार जणयइ । अपुरेकारण ण जीवे अप्प-
 मत्थेहिंते जोगेहिंते नियत्तेइ, पमत्थे य पडिउत्तइ । पसत्थजोगपडिउत्ते य ण अणगार अणन्तवाइपत्तवे
 रवेइ ७ ॥ मामाहण भन्ते जीवे किं जणयइ । मामाहण सारज्जजोगविग्ग जणयइ ॥८॥ चउव्वीम-
 त्थएण भन्ते जीवे किं जणयइ । च० दमणविमोहिं जणयइ ॥९॥ उन्दणएण भन्ते जीवे किं जणयइ ।
 उ०नीयागोय कम्मरुवेइ । उच्चागोय कम्म निवग्घइ सोहग्ग च ण अपडिहिय आणाफल निव्वत्तेइ ।
 दाहिणभाउ च ण जणयइ ॥१०॥ पडिक्कमणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । प० उयच्छिदाणि पिहेइ ।
 पिहियउयच्छिदे पुण जीवे निरुद्धामने अमच्चलचरित्ते अट्ठसु पव्वयणमायासु उउत्ते अपुहत्त सुप्पणि-
 हिइदिए निहरइ ॥ ११ ॥ काउसग्गेण भन्ते जीवे किं जणयइ । का० तीयपइप्पन्न पायच्छित्त
 तिसोहेइ । तिसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निरुयहियए ओहरिमरुग्ग भारवेइ पमत्थज्जाणोउगए सुह
 सुहेण निहरइ ॥ १२ ॥ पच्चस्त्राणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । प० आमउदाराइ निरुम्मइ । पच्च-
 क्ख्वाणेण इच्छानिरोह जणयइ । इच्छानिरोह गए य ण जीवे मच्चदव्वेसु त्रिणीयत्तणे सीडभूए वि-
 हरइ ॥ १३ ॥ थउधुग्गएण भन्ते जीवे किं जणयइ । य० नाणदमणचरित्तमोहिलाभ जणयइ ।
 नाणदमणचरित्तवोहिलाभसपन्ने य ण जीवे अत्तरिणिय कप्पनिमाणोउत्तम आराहण आराहेइ ॥
 १४ ॥ कालपडिउत्तेणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । का० नाणाउरणिज्ज कम्म रुवेइ ॥ १५ ॥
 पायच्छित्तकरणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । पा० पाउतिसोहिं जणयइ, निरहयारे वावि भवइ । मम्म
 च ण पायच्छित्त पटिउत्तमाणे मग्ग च मग्गफल च विमोहेइ, आयाउ च आयाउफल च आराहेइ
 ॥ १६ ॥ स्वमाउणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । स्व० पल्हायणभाउ जणयइ । पल्हायणभाउमु-
 वगए य मच्चवाणभूयजीउत्तसु-मेत्तीभाउमुप्पाएइ । मेत्तीभाउमुउगए यावि जीवे भाउविमोहिं
 काऊण निव्वभए भवइ ॥१७॥ सज्जाएण भन्ते जीवे किं जणयइ । स० नाणाउरणिज्ज कम्म रुवेइ
 ॥ १८ ॥ वायणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । वा० निज्जए जणयइ सुयस्स य अणामायणाए

वट्टण । सुयमअणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्म अलम्बइ । तित्थधम्म अलम्बमाणे महानिज्जे
 महापञ्चवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ पडिपुच्छणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । प० मुत्तरथतदुभयाइ
 विमोहेइ । कराओहणिज्ज कम्म वोच्छिन्दइ ॥ २० ॥ परियट्टणाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । प०
 वजणाइ जणयइ, वजणलद्धिं च उप्पाणइ ॥ २१ ॥ अणुप्पेहाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० जाउ-
 यवज्जाओ मच्चकम्मपगडीओ घणियवन्धणघट्ठाओ सिद्धिलन-धणलद्धाओ पक्खइ । दीहणालद्धिइयाओ
 हस्सकाल्ठिई आसी पक्खेइ । तिवाणुभायाओ म दाणुभायाओ पक्खेइ । (रहुपणमग्गाओ जप्पणए-
 म्गाओ पक्खेइ) आउय च ण कम्म सिया वन्धइ, सिया नो चन्धइ । अमायेयणिज्ज च ण कम्म नो
 भुज्जो भुज्जो उपचिणाइ । अणाइय च ण अणउदग्ग दीहमट्ट चाउर त ममारकन्तार पिप्पामेउ नीट-
 वमइ ॥ २२ ॥ वम्मकहाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । ध० निज्ज जणयइ । धम्मकहाए ण पवयण
 पभावेइ । पवयणपभावेण जीवे आगमेसस्म भइत्ताए कम्म निचन्धइ । २३ ॥ सुयस्स आराहणयाए
 ण भन्ते जीवे किं जणयइ । सु० अन्नाण ग्गंइ न य सक्किलिस्मइ ॥ २४ ॥ एगगमणसनिमण
 याए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । प० चित्तनिरोह करइ ॥ २५ ॥ सजमएण भन्ते जीवे किं जण-
 यइ । म० अणुह्यत्त जणयइ ॥ २६ ॥ तणेण भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ तवेण वोदाण जणयइ
 ॥ २७ ॥ पोत्ताणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । पो० अन्निरिय जणयइ । अन्निरियाए भविता तओ
 पन्ना सिज्जइ, बुज्जइ मुच्चइ परिनिवायइ सब्बकुराणमन्त करइ ॥ २८ ॥ सुहमाएण भन्त जीवे
 किं जणयइ । सु० जणुस्सुयत्त जणयइ । अणुस्सुयाए ण जीव अणुक्खए अणुक्खे विगयमोगे
 चरिधमोदणिज्ज कम्म खवेइ ॥ २९ ॥ अप्पटिषट्ठयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । अ० निस्सगत्त
 जणयइ । निस्सगत्तेण जीवे एगे एगगचित्ते दिया य राओ य अगज्जमाणे अप्पडिन्दे थापि
 विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्तमयणाएण ण भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ ।
 चरित्तगुत्ते य ण जीवे विवित्ताहार दट्ठचरित्ते एगन्तरण मोक्खमारपडिन्दे अट्ठविहकम्मगाठिं नि-
 ज्जइ ॥ ३१ ॥ वेनियट्टयाए ण भन्ते जीवे किं जणयइ । वि० पायकम्माण अकरणयाए अन्भुट्ठेइ ।
 पुष्वमद्दाण य निज्जणयाए त नियत्तेइ । तओ पच्छा चाउरन्त ममारकन्तार वीइयइ ॥ ३२ ॥ म
 भोगपच्चखाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । म० जालम्बणाइ खवेइ । निरालम्बणस्स य आयाट्ठिया
 योगा भवन्ति । मएण लाभेण समुत्सट्ठ, परलाभ नो आमादइ, परलाभ नो तवेइ, नो पीहइ, नो
 पत्थेइ, नो अभिलमइ । परलाभ अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थमाणे अणभिलममाणे
 दुघ सुहसेज्ज उररमपञ्जिता ण विहरइ ॥ ३३ ॥ उाडिपच्चकुराणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । उ०
 अपलिनन्ध जणयइ । निरुउहिए ण जीवे निष्करी उवहिमन्तरेण य न सक्किलिस्सइ ॥ ३४ ॥ आहा-
 रपच्चखाणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । आ० जीवियामपपजोग वोच्छिन्दइ । जीवियाससपपजोग
 वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरण न सक्किलिस्सइ ॥ ३५ ॥ कसायपच्चकुराणेण भन्ते जीवे किं
 जणयइ । क० वीपरागभाउ जणयइ । वीपरागभावपडियत्थे वि य ण जीवे समसुहदुक्खे भवइ
 ॥ ३६ ॥ जोगपच्चखाणेण भन्त जीवे किं जणयइ । जो० अजोगत्त जणयइ अजोगे ण जीवे नव
 कम्म न वन्धइ, पुष्वद निज्जेइ ॥ ३७ ॥ सरीरपच्चकुराणेण भन्ते जीवे किं जणयइ । म० सिद्धा-
 डमयगुणचित्तण निवत्तेइ सिद्धाडमयगुणमपत्थे य ण जीवे लोगगमुत्तण पग्गमुही भवइ ॥ ३८ ॥

सहायपचक्राणोण भन्ते जीवे किं जणयड । स० एगीभाज जणयड । एगीभाजभूए वि य ण जीवे
 एगत्त भावेमाणे अप्पझ्जे अप्पम्ह अप्पम्हाए अप्पत्तुमत्तुमे सत्तपग्गुले मत्तपग्गुते ममाहिए यावि
 भग्ग ॥ ३९ ॥ भत्तपचक्राणोण भन्ते जीवे किं जणयड । भ० अणोगाड भजमयाड निरुम्मड ॥ ४० ॥
 सन्नापचक्राणोण भन्ते जीवे किं जणयड म० अनियट्ठिं जणयड । अनियट्ठिपडिअये य अणगारे
 चत्तारि केअलिकम्मसे एवेइ तजहा-वेयणिअ आउय नाम गोय । तओ पन्ठा सिअड्ड पुअड्ड मुअइ
 सब्बुक्कयाणम त करेइ ॥ ४१ ॥ पडिरूपणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड । प० लाययिज जण-
 यड । लघुभूए ण जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पमत्तलिंगे विसुद्धमम्मत्ते सत्तमत्तिममत्ते मवपाणभू
 यभीरसत्तमु वीममणिअरूपे अप्पडिलेहे जिअन्दिए विउलत्तममिअमवनाए यावि भग्ग ॥ ४२ ॥
 वेयाअचेण भन्ते जीवे किं जणयड । वे० तित्थयरत्तामगोत्त क्रम्म निअ ण ॥ ४३ ॥ सब्बणत्तप-
 न्नायाए ण भन्ते जीवे किं जणयड । स० अणुणाराविं पत्तए य ण जीवे मारीग्गमाणण दुक्कयाण
 ने भागी भवइ ॥ ४४ ॥ पीयग्गयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड । धी० नेहाणुअणयाणि तण्हा-
 णुअणयाणि य रोअिल्लड्ड, मणुअामणुअेसु मद्दफरिमरूपग्गमवन्धमु चेव विग्गड्ड ॥ ४५ ॥ रा० तीए
 ण भन्ते जीवे किं जणयड ० रा० परीमहे जिणइ ॥ ४६ ॥ सुत्तीए ण भन्ते जीवे किं जणयड ।
 सु० अकिचण जणयड । अकिचणे य जीवे जत्थलोलाण अपत्थणिअो भग्ग ॥ ४७ ॥ अज्जयाए
 ण भन्ते जीवे किं जणयड । अ० काउज्जुयय भाउज्जुयय भासुज्जुयय अत्तिअयाए जणयड । अ
 विसायाणमपन्नायाए ण जीवे पम्मम्म आराहए भग्ग ॥ ४८ ॥ मट्ठयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड ।
 म० अणुम्मियत्त जणयड । अणुम्मियत्तेण जीवे मिउमद्दमपत्ते अट्ठ मयट्ठणाइ निट्ठयाइ ॥ ४९ ॥
 भावसत्तण भन्ते जीवे किं जणयड । भा० भाअग्गिहिं जणयड । भाअग्गिहिण वट्ठमाणे जीवे अ
 रहन्तपत्तत्तस्म वम्मस्म आराहयाए अप्पुट्ठेइ । अरहन्तपत्तत्तस्म पम्मम्म आराहयाए अब्भुट्ठित्ता
 यरलोअधम्मस्म आराहए भग्ग ॥ ५० ॥ अणमत्तेण भन्ते जीवे किं जणयड । क० कणमत्ति
 जणयड । कणमत्ते उट्ठमाणे जीवे जहा वाई तहा क्कारी यावि भग्ग ॥ ५१ ॥ जोग मत्तेण भन्ते
 जीवे किं जणयड । जो० जोग विमोहेइ ॥ ५२ ॥ मणग्गयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड म० नीवे
 एग्गया जणयड । एग्गयाचित्ते ण जीवे मणग्गुते सजमागहए भग्ग ॥ ५३ ॥ वयग्गुत्तयाए ण भन्ते
 जीवे किं जणयड । व० निवियार जणयड । निवियारे ण जीवे उट्ठगुत्ते अज्जप्पजोगमाहणुत्ते यावि
 रिअइ ॥ ५४ ॥ काशुत्तयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड । का० मत्त जणयड । मत्तवण कायग्गुत्त
 पुणो पाअसग्गिगेहं करेइ ॥ ५५ ॥ मणसमाहारणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड । म० एग्गया
 जणयड । एग्गया जणइत्ता नाणपज्जे जणयड । नाणपज्जे जणइत्ता मम्मत्त विमोहेइ मिअत्त च
 निअरेइ ॥ ५६ ॥ उयममाहारणयाए भन्ते जीवे किं जणयड । उ० उयममाहारणमणपज्जे विमो
 हेइ । वयसाहारणमणपज्जे विमोहिता सुल्लवोअियत्त निवत्तेइ, दूअइवोअियत्त निअरेइ ॥ ५७ ॥
 कायसमाहारणयाए ण भन्ते जीवे किं जणयड । का० चरित्तपज्जे विमोहेइ । चरित्तपज्जे विमोहिता
 अहक्कयापचरित्त विमोहेइ । अहक्कयापचरित्त विमोहेत्ता चत्तारि केअलिकम्मसे एवेइ । तओ पन्ठा
 सिअड्ड पुअड्ड मुअइ परिनिवाड सब्बुक्कयाणमत्त करेइ ॥ ५८ ॥ नाणमपन्नायाए ण भन्ते जीवे किं
 जणयड । ना० जीवे मद्दमाअहिम जणयड । नाणमपत्ते जीव चाअर ते ममात्तन्तारे न विणमत्तड ।

जहा सुई ससुत्ता न विणस्मइ तदा जीवे मसुत्ते समार न विणस्मइ, नाणविणयत्तचरित्तजोगे सपा
 उणइ, ससमयपरसमयविभारए य असघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ दसणमपन्नयाए ण भते जीवे किं
 जणयइ । ६० भग्मिच्छत्तेयण करेइ न विज्झायइ । पर अधिज्झाएमाणे अणुत्तरण नाणदंसणेण
 अप्पाण सजोएमाण मम्म भायेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ चरित्तमपन्नयाए ण भते जीवे किं जणयइ ।
 च० सेलेसीभाज जणयइ । सेलेसि पडिबन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे रवेइ । तओ पच्छा
 सिज्झइ बुज्झइ सुच्चइ परिनिवायइ सबदुक्खराणम त करइ ॥ ६१ ॥ सोइन्दियनिग्गहेण भते जीवे
 किं जणयइ । सो० मणुत्तामणुत्तेसु संदेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय कम्म न बन्धइ, पुब-
 बद्ध च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ चवित्तान्दियनिग्गहेण भते जीवे किं जणयइ । च० मणुत्तामणुत्तेसु
 स्तेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ घाणि
 न्दियनिग्गहेण भन्ते जीवे किं जणयइ । घा० मणुत्तामणुत्तेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गह जणयइ,
 तप्पच्चइय कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध च निज्जरेइ ॥ ६४ ॥ जिम्बिनन्दियनिग्गहेण भन्ते जीवे किं
 जणयइ । जि० मणुत्तामणुत्तेसु रसेसु रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध
 च निज्जरेइ ॥ ६५ ॥ फासिन्दियनिग्गहेण भन्ते जीवे किं जणयइ । फा० यणुत्तामणुत्तेसु फासेसु
 रागदोसनिग्गह जणयइ, तप्पच्चइय कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध च निज्जरेइ ॥ ६६ ॥ कोहविजएण भन्ते
 जीवे किं जणयइ । को० सुत्ति जणयइ कोहवेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥
 माणविजएण भन्ते जीवे किं जणयइ । मा० मद्दव जणयइ, मायावेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध
 च निज्जरेइ ॥ ६८ ॥ मायाविजएण भन्ते जीवे किं जणयइ । मा० अज्जव जणयइ, मायावेयणिज्ज
 कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध च निज्जरेइ ॥ ६९ ॥ लोभविजएण भन्ते जीवे किं जणयइ । लो० सतोस
 जणयइ, लोभवेयणिज्ज कम्म न बन्धइ, पुबबद्ध च निज्जरेइ ॥ ७० ॥ पिज्जदोसमिच्छादसणविजएण
 भन्ते जीवे किं जणयइ । पि० नाणदसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ । अट्टविहस्स कम्मस्स कम्म
 गण्ठिविमोयणयाए तप्पट्टमयाए जहाणुपुवीए अट्टट्टवीसदविह मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ, पञ्चविह
 नाणावरणिज्ज, नवविह दसणावरणिज्ज, पचविह अन्तराइय, एण तित्ति पि कम्मसे खवेइ । तओ
 पच्छा अणुत्तर कसिण पडिपुत्तण निरावरण दित्तिमर तिसुद्ध लोगालोगप्पभाज केवलवरनाणदमण
 समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भणइ, ताव ईरियावहिंय कम्म निवन्धइ सुद्धकरिस दुक्खमयट्ठिय । त
 पढमसमए बद्ध, विइयसमए वेइय, तइयसमए निज्जिण्ण, त बद्ध पुट्ट उदीरिय वेइय निज्जिण्ण
 सेयाले य अकम्मयाव भवइ ॥ ७१ ॥ अह आउय पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्वाउसेसाए जोगनिरोह करेमाणे
 सुद्धमकिरिय अप्पट्टियाइ सुक्खज्झाणज्ञापमाणे तप्पट्टमयाए मणजोग निरुमइ नयजोग निरुमइ, कायजोग
 निरुमइ, आणपाणुनिरोह करेइ, ईसि पचरहस्मक्खरचारणट्टाए य ण अणगारे समुत्थिक्खकिरिय अ
 नियट्टिसुक्खज्झाण क्षियायमाणे वेयणिज्ज आउय नाम गोत्त च एए चत्तारि कम्मसे जुगव खवेइ ॥ ७२ ॥
 तओ ओरालियतेयकम्माह सब्बाहिं विप्पज्जाहिं विप्पज्जहिंत्ता उज्जुसेट्ठिपत्ते अफुसमाणगई उट्ठ एण
 समएण अविग्गहेण तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अत करेइ ॥ ७३ ॥ एस सल्ल
 सम्मत्तपरकम्मस्स अज्जयणस्स अट्टे समणेण भगवया वहावीरेण आघणिए पन्नविए परुविए दसिए
 उदमिए ॥ ७४ ॥ त्ति वेन्नि ॥ इअ सम्मत्तपरकम्मे स्सम्भत्ते ॥ २९ ॥

॥ अह तवमग तीसद्म अज्जयण ॥

जहा उ पात्रम कम्म, रागदोमसमज्जिय । खवेऽ तवसा भिवम्, तमेगगमणो सुण ॥ १ ॥
पाणिपद्ममुगानाया अट्ठमेहुणपरिगगहा विरओ । राईभोयणदिरओ, जीनो भवट अणासओ ॥ २ ॥
पचममिओ तिहुओ, अत्रमाओ जि ण्ठिओ । अगारओ य निम्महो, जीनो हो अणासओ ॥ ३ ॥
एएमि तु विवच्चामे, रागदोमममज्जिय । खवेऽ उ जहा मिग्गु, तमेगगमणो सुण ॥ ४ ॥
जहा महातलायस्म, सन्निरट्ठे जलागमे । उस्सिचणाए तत्रणाए, कमेण सोसणा भजे ॥ ५ ॥
ए त सनयस्मावि, पावकम्मनिरामवे । भन्नोटीसच्चिय कम्म, तत्रसा निज्जिरिज्ज ॥ ६ ॥
सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिग्गम्भन्तरो तथा । बाहिगे उविहो वुत्तो, एवमट्ठमन्तरो तरो ॥ ७ ॥
अणमणमणोरिया, मिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । कायक्खिलेसोसलीणया य वज्जो तरो होइ ॥ ८ ॥
इत्तरिय मरणकाला य, अणमणा दुविहा भजे । इत्तरिय मानकखा, निरवकंखा उ विट्ठज्जिया ॥ ९ ॥
जो सो इत्तरियतरो, सो समासेण उविहो । सेटितवो पयरतरो, घणो य तह होइ वग्गो य ॥ १० ॥
वचो य उग्गउग्गो, पचमो छट्ठओ पट्ठणतवो । मण्डात्थयचित्तवो, नायवो होइइत्तरिओ ॥ ११ ॥
जा सा अणमणा मग्गे, दुविहा मा वि त्रियाहिया । सवियारमवियारा, कायचिट्ठपइ भवे ॥ १२ ॥
अह्वा सपरिकम्मा, अपरिकम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारी, आहारउओ दोसु नि ॥ १३ ॥
ओमोवरणं पचहा, ममासेण त्रियाहिय । दण्णओ सेत्तमालेण, भावेण पज्जवेहि य ॥ १४ ॥
जो जस्स उ जाहरो, ततो ओम तु जो करे । जह्णेणोसिवाई, एव दवेण उ भवे ॥ १५ ॥
गाम नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पट्ठी । खेहे वव्यहदोणमुहपट्ठणमडम्भसपाहे ॥ १६ ॥
आममए विहारं, सन्नियेसे समायघोसे य । थल्लिसेणाएधारे, सत्थे संघट्ठकोट्ठे य ॥ १७ ॥
वाहेसु य रच्छासु व, घरेसु वा एममित्थिय सेत्त । रूप्पइ उ एवमाई, एव सेत्तेण ऊ भवे ॥ १८ ॥
पडा य अट्ठपेडा, गोमुत्तिपयगवीहिया चेत्त । सम्पुक्कानट्ठाययगन्तुपचागया छट्ठा ॥ १९ ॥
दिवसम्म पोहसीण, चउण्हपि उ जत्तिओ भवे कालो । एव चरमाणो उल्लु कालोमाण सुणेयव ॥ २० ॥
अह्वा तथाए पोरिस्सिए उणाइ घाममेसन्तो । चउभागुणाए चा, एव कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥
इत्थो वा सुरित्तो वा, अलक्खिओ वा नलक्खिओ वावि । अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरं व वत्थेण ॥ २२ ॥
अन्नेण विसेसेण, घण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ । एव चरमाणो उल्लु, भाजोमाण सुणेयव ॥ २३ ॥
दवे सेत्ते काले, भावम्मि य आहिया उ जे भावा । एएहि ओमचरओ, पज्जवचरओ भजे मिक्खु ॥ २४ ॥
अट्ठविद्दगोयरग्ग तु, तथा सत्थेव एमणा । अभिग्गहा य जे अन्ने, मिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥
खीददहिसप्पिमाई, पणीय पाणमोयण । परिवज्जण रसाण तु, भणियं रसविवज्जण ॥ २६ ॥
ठाणा वीरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जन्ति, कायक्खिलेस तमाहियं ॥ २७ ॥
एगन्तमणाराए, इत्थीपसुविचज्जिए । सयणाणमणसेवणया, विविचमयणासण ॥ २८ ॥
एणो बाहिरगतयो, समासेण वियाहिओ । अन्निमन्तर तव एत्तो, बुष्सा मि अणुपुष्सो ॥ २९ ॥
पापच्छिव विणओ, वेयावच्चं तदेव सज्जाओ । ज्ञाण च निवसग्गो, एणो अभिन्तरो तरो ॥ ३० ॥

आलोयणारिहादय, पायच्छित्त तु दसविह । ज भिक्खू चहई मम्म, पायच्छित्त तमाहिय ॥ ३१ ॥
 अन्मुद्धान्णअजलिकरण, तदेवासणत्तायण । गुरुभत्तिभात्रसुस्समा, विणओ एम वियाहियो ॥ ३२ ॥
 आयरियमाईए, वेयात्तच्चम्मि दसविह । आसेरण जहागाम, वेयात्तच्च तमाहिय ॥ ३३ ॥
 वायणा पुच्छणा चेत्त, तदेत्त परियट्ठणा । अणुप्पेहा वम्मकहा, अज्झाओ पच्चहा भवे ॥ ३४ ॥
 अट्ठरुत्तणि वज्जित्ता, ज्ञाएज्जा सुममाहिय । धम्मसुक्काड ज्ञाणाद, ज्ञाण त तु बुद्धाए ॥ ३५ ॥
 सयणावणठाणे वा, जे उ भिक्खू न त्तारे । कायस्स विउस्सगो, उट्ठो सो परिक्खित्तियो ॥ ३६ ॥
 एत्त तत्त तु दुविह, जे मम्म आयत्त मूणी । सो त्तिप्प सब्बसागा, विप्पमुच्चड पण्डियो ॥ ३७ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ तत्तमग्ग ममत्त ॥ ३० ॥

॥ अह चरणविही एगतीसइम अज्झयण ॥

चरणविहि पक्कसाभि, जीरस्स उ सुहावह । ज चरित्ता चहू जीवा, तिण्णा ससारसागर ॥ १ ॥
 एगओ विरह कुज्जा, एगओ य पत्तण । असत्तमे नियत्ति च, सजमे य पत्तण ॥ २ ॥
 रागदोसे य दो पावे, पायक्कम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रुहई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ३ ॥
 दण्डण गाग्गण च, मह्हाण च तिय तिय । जे भिक्खू चयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ४ ॥
 दिव्व य जे उवमग्गे, तहा वेरिच्छमाणुसे । जे भिक्खू महई जयई, से न अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥
 विग्गहाऋमायसन्नाण, ज्ञाणाण च दूय तहा । जे उज्झई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥
 वण्णसु इन्दियत्थेसु, समिदंसु किरियासु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ७ ॥
 लेमासु छसु काएसु, उक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥
 पिण्डोग्गडपडिमासु, भयट्ठानेसु गत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ९ ॥
 मदसु वम्मगुत्तीसु, भिक्खुधम्ममि दमविह । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १० ॥
 उतासगाण पडिमासु, भिक्खुण पडिमासु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ ११ ॥
 किरियासु भूयगामेसु, परमाहम्मिणसु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १२ ॥
 गाहासोलमण्हि, तहा असजम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १३ ॥
 वम्मम्मि नायज्झणेषु, ठाणेषु य समाहिए । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १४ ॥
 एगवीसाए सवत्ते, वावीमत्त परीमहे । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १५ ॥
 तेवीसाइ छयगडे, स्साहिणसु सुरसु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १६ ॥
 पणुवीमभात्रणासु, उद्वेससु दयाडण । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १७ ॥
 मणगारसुणेहि च, पणप्पम्मि तदेव य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १८ ॥
 पावसुयपसगेषु, मोहठाणेषु वेव य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ १९ ॥
 सिद्धाग्गुणजोगेषु, तेवीसासायणासु य । जे भिक्खू जयई निच्च, से न अच्छइ मण्डले ॥ २० ॥
 इय णसु ठाणेषु, जे भिक्खू जयई मया । त्तिप्प सो सब्बसारा, विप्पमुच्चड पण्डियो ॥ २१ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ चरणविही ममत्ता ॥ ३१ ॥

॥ अहं पमायट्टाणं वत्तीसडम अञ्जयणं ॥

अचन्तकालम् ममलगास्म मवम् दुक्खम् उजो पमोक्खो ।
 त ममओ मे पडिपुण्णाचित्ता, सुणेह ण्णतहिय हियत्थ ॥ १ ॥
 नाणम्मं मवस्स पमासंणाण, जज्जाणमोदम्मं विज्जणाण ।
 रागम्मं दोमम्मं य सरणण, एगन्तमोक्खं मव्वेहं मोक्ख ॥ २ ॥
 तस्सेमं मग्गो सुव्विद्धसेना, विज्जणा वालजणस्स दुग्गं ।
 मज्जायएगन्तनिसेवणा य, सुत्तथसचित्तणया विद्दं य ॥ ३ ॥
 आहारमिच्छे मियममणिज्जं महायमिच्छे निउणत्थमुद्धि ।
 निकेयमिच्छेज्जं विवगाचोग्गं, ममाहिकामे ममणे तपस्सी ॥ ४ ॥
 न य लमेज्जा निउणं महय, सुणाणियं ता गुणो मम ता ।
 एक्को वि पपाहं विज्जपन्ततो, विहरज्जं रामेभु अस्सज्जमाणो ॥ ५ ॥
 जहा य अण्हणभया जलागा, अण्हं जालागप्पमयं जहा य ।
 एमेव मोहाययणं गु तण्हा, पोहं च तण्हाययणं ययन्ति ॥ ६ ॥
 रागो य दोमो वियं कम्मणीयं, कम्मं च मोहण्यमयं ययन्ति ।
 कम्मं च जाटमरणम्मं मलं दुक्खं च जाडमरणं ययन्ति ॥ ७ ॥
 दुक्खं हयं जस्सं न होहं मोहो, मोहो हओ जस्सं न होहं तण्हा ।
 तण्हाहया जस्सं न होहं लोहो, लोहो हओ जस्सं न किचणाहं ॥ ८ ॥
 रागं च दोमं च तदेव मोहं, उद्धत्तुं कामेणं ममलजालं ।
 जे जे उपाया पडिवज्जियत्था, ते कित्तहम्मामि अहाणुपुत्ति ॥ ९ ॥
 रमा पमासं न निसेवियत्था, पायं रमा दित्तिकरं नराणं ।
 दित्तं च रामा ममभिह्वयन्ति, दुमं जहा माउफलं य पक्खो ॥ १० ॥
 जहा दग्गी पउरिन्धणे वणे, ममारुओ नोरसमं उवेहं ।
 एविन्द्रियग्गी वि पमासंभोउणो, न वम्मयारिस्सं हियायि कम्महं ॥ ११ ॥
 विविचिसेज्जामणजन्तिपाणं, ओमामणाणं दमिट्ठिदयाणं ।
 न गगमत्तुं धरिसेहं चित्तं, पराओ वाहिरिवोमहोहं ॥ १२ ॥
 जहा विरालागमहस्सं मूले, न ममगाणं वमही पमथा ।
 एमेव इन्धीनिलयस्सं मज्जे, न वम्मयारिस्सं स्वमो निवामो ॥ १३ ॥
 न म्बलागणविलासहासं, न जपियइगियपेहियं वा ।
 इन्धीणं चित्तं निवेसहत्ता, दट्टुं वरस्से ममणे तपस्सी ॥ १४ ॥
 अदमणं चेत्तं अपत्थणं च, अचिन्तणं चेत्तं अकित्तणं च ।
 इन्धीणं स्मारियज्जाणजुग्गा, हियं मया वम्मणं रयाणं ॥ १५ ॥

काम तु दयीहि विभूमियाहि, न चाह्या खोभइउं तिगुत्ता ।
 तहा वि एग-तहिय ति नचा, विपित्तचासो मुणिय पमरयो ॥ १६ ॥
 मोक्खाभिन्खिरस उमाणरस, ससारभीहरस ठियरस धम्मे ।
 नेयारिस दुत्तरमरिय लोण, जहिरिथो बालमणोहरगो ॥ १७ ॥
 एए य सगे समइकमिचा, सुइत्तरा चेव भवन्ति सेमा ।
 जहा महासागरमुत्तरिचा, नई भवे अवि गङ्गाममाणा ॥ १८ ॥
 कामाणुगिद्विप्पभन खु दुक्कम, मवस्म लोगस्म मदेनगस्म ।
 जे काइय माणसिय च किचि, तस्सन्तग गच्छइ वीयरगो ॥ १९ ॥
 जहा य किम्पागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
 ते सुइए जीविय पच्चमाणा, एओउमा कामगुणा विरगो ॥ २० ॥
 जे इन्दियाण विसया मणुत्ता, न तेसु भाव निसिरे कयाइ ।
 न यामणुत्तेसु मण पि कुज्जा, ममाहिकामे समणे तनस्सी ॥ २१ ॥
 चक्खुस्स चक्खु गहण वयन्ति, त रागहेउ तु मणुत्तमाहु ।
 त दोमहेउ अमणुत्तमाहु, समो य जो तेसु स वीयरगो ॥ २२ ॥
 रूउस्स चक्खु गहण वयन्ति, चक्खुरस रूउ गहण वयन्ति ।
 रागस्म हेउ समणुत्तमाहु, दोसस्म हेउ अमणुत्तमाहु ॥ २३ ॥
 रूवेसु जो गेहिमुवेइ तिथ, अकालिय पाउइ से विणाम ।
 रागाउरे से जह वा पयगे, आलोयलोले समुवेइ मच्छु ॥ २४ ॥
 जे यावि दोस समुवेइ तिथ, तसिक्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुक्खतदोसेण सएण जन्तू, न किञ्चि रूव अवरज्जइ से ॥ २५ ॥
 एगन्तरचे रदरसि रूवे, अतालसे से कुणई पओस ।
 दुक्खस्स सम्पीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागा ॥ २६ ॥
 रूवाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ तेणरूवे ।
 चिचेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्टगुरू किलिहे ॥ २७ ॥
 रूवाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कह सुह से, वए सम्भोगकाले य अत्तिलामे ॥ २८ ॥
 रूवे अत्तिचे य परिग्गहम्मि, सत्तीउसत्तो न उवेइ वुट्ठि ।
 अत्तुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोमाविले आयपई अदत्त ॥ २९ ॥
 तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणी, रूवे अत्तितस्स परिग्गहे य ।
 मायायुम वड्डइ लोभदोसा, त यावि दुक्खा निमुचई से ॥ ३० ॥
 भोसस्म पच्छा य पुरत्थओ य, पयोगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समापयन्तो, रूवे अत्तिचो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥
 रूवाणुत्तस्स नरस्स एवं, कचो सुह होअ कयाइ किञ्चि ।

तत्थोऽभोगे वि किलेसदुक्त्वा, निवृत्तई जस्म कएण दुक्त्वा ॥ ३२ ॥
 एमेव रूग्मि गओ पओस, उवेद दुक्त्तोहपरपराओ ।
 पदुद्धचित्तो य चिणाड कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ३३ ॥
 रूवे विग्त्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्त्तोहपरपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे विसत्तो, जलेण वा पोक्त्तरिणीपलास ॥ ३४ ॥
 सोयस्स मह गहण वयन्ति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरगो ॥ ३५ ॥
 सहस्म मोय गहण वयन्ति, सोयस्स मह गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोसस्म हउ अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥
 सहेसु जो गेहिमुवेड तिष्ठ, अकालिय पाण्ड से विणास ।
 रागाउरे हरिणमिगे व सुद्धे सदे अतिचे समुवेड मच्चु ॥ ३७ ॥
 जे यावि दोस ममुवेइ तिष्ठ, तसि करणे से उ उवेड दुक्त्वा ।
 दुइन्तदोसेण सएण जत्तु, न किञ्चि सह अवरूद्धई से ॥ ३८ ॥
 एगन्तग्गे रुइरसि सदे, अतालसे से कुणई पओम ।
 दुक्त्वासम सम्पीण्णुवड बाले, न लिप्पई तेण म्पणी विरागो ॥ ३९ ॥
 सदाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइणोगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेड याळे, पीलेइ अतद्धुगुरू किलिद्धे ॥ ४० ॥
 महाणुनाणण परिग्गहेण, वप्पायणे रक्त्तगसन्निओगे ।
 वए विओगे य कह सुह से, समोगकाले य अतिचलामे ॥ ४१ ॥
 सदे अतिचे य परिग्गहम्मि, सचोपमत्तो न उवइ तुट्ठि ।
 अत्तुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविळे आययई अदत्त ॥ ४२ ॥
 तण्हामिभूयस्स अदत्तहारिणो, सदे अतिचम्म परिग्गहे य ।
 मायामुस वहुड लोभदोसा, तत्तावि दुक्त्वा न विम्वचट्ठे से ॥ ४३ ॥
 मोमस्स पच्छा य पुग्गथओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एअ अदत्ताणि समापयन्तो, सदे अतित्तो दुहिओ अणिस्तो ॥ ४४ ॥
 महाणुत्तस्स नरस्म एव, कचो सुह होज कयाइ किञ्चि ।
 तत्थोऽभोगे वि किलेसदुक्त्वा, निवृत्तई जस्म कएण दुक्त्वा ॥ ४५ ॥
 एमेव सहम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्त्तोहपरपराओ ।
 पदुद्धचित्तो य चिणाड कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥ ४६ ॥
 सदे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्त्तोहपरपरेण ।
 न लिप्पए भवमज्जे विसत्तो, जलेण वा पोक्त्तरिणीपलास ॥ ४७ ॥
 घाणस्स गन्ध गहण वयन्ति, त राअहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीयरगो ॥ ४८ ॥

गन्धस्स घाण गहण ऱयन्ति, घाणम्म गन्ध गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोमस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥ ४९ ॥
 गन्धेसु जो गेहिमुवेइ तिव्व, अकालिय पाण्ड से विणाम ।
 रागाउरे जीमहगन्धगिद्धे, सप्पे विलाओ विउ नक्कयमते ॥ ५० ॥
 जे यावि दोस ममुवेइ तिव्व, तसिस्सण्णे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुहन्तदोसेण सपण जन्तू, न किचि गन्ध अवरुज्झाई से ॥ ५१ ॥
 एगन्तरचे रुहरसि गन्धे, अतालिसे से कुणई पओस ।
 दुक्खस्स मंपीलमुवेइ चाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥
 गन्धाणुगासाणुगण य जीवे, चराचरे हिमइऽणेगळ्वे ।
 चित्तेहि ते परित्तावेइ चाले, पीलेइ अत्तइगुरू किलिद्धे ॥ ५३ ॥
 गन्धाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे न्कयणसन्निओगे ।
 वए विओगे य कह सुह मे, समोगकाळे य अतिचलाभे ॥ ५४ ॥
 गन्धे अतिचे य परिग्गहम्मि, सत्तोउसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अत्तुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविळे आययई अदत्त ॥ ५५ ॥
 तण्णाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, गन्धे अतिचस्स परिग्गह य ।
 मायासुत्त वड्ढइ लोभदोसा, तथावि दुक्कमा न विमुक्कई मे ॥ ५६ ॥
 मोसस्स पण्णाय पुरत्थजो य, पओगकाले य दुही दुन्ते ।
 एव अदत्ताणि समाययतो, गन्धे अत्तित्तो दुहिओ अणिसो ॥ ५७ ॥
 गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होज्ज कयाइ किचि ।
 उत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खस्स, निव्वतई जस्स कएण दुक्कय ॥ ५८ ॥
 एमेव गन्धम्मि भओ पओस, उवेइ दुक्खसोहपरपराओ ।
 पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्म, ज से पुणो हीइ दूह विवागे ॥ ५९ ॥
 गन्धे विरत्तो मणुजो विसोगो, एएण दुक्खसोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भउमज्जेवि सन्तो जळेण ना पोउररिणीपलास ॥ ६० ॥
 जिन्भाए रस गहण वयन्ति, त रागहेउ नु मणुन्नमाहु ।
 त दोमहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेषु स वीयरगो ॥ ६१ ॥
 रसम्म चिन्म गहण ऱयति, जिन्भाए रस गहण वयन्ति ।
 रागस्स इउ ममणुन्नमाहु, दोमस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥ ६२ ॥
 रसेसु जो गेहिमुवेइ तिव्व, अकालिय पावइ से विणाम ।
 रागाउरे वड्डिसत्रिभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिमभोगसिद्धे ॥ ६३ ॥
 जे यापि दोस सल्लुवेइ तिव्व, तसिस्सण्णे से उ उवेइ दुक्कय ।
 दुहन्तदोसेण सण्ण जन्तू, न किचि रस अवरुज्झाई से ॥ ६४ ॥
 एगन्तरचे रुहरसि रसे अतालिसे से कुणई पओस ।

दुक्कम्म मपीलमुवेड चाले, न लिप्पई तेण सुणी विरागो ॥ ६५ ॥
 रमाणुगामाणुगण य जीवे, चराचरं हिंसइज्जेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेड चाले, पीलेड अत्तट्टगुरू किल्ले ॥ ६६ ॥
 रसाणुवाणण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वण विओगे य कह सुह से, मंभोगकाले य अतिचलामे ॥ ६७ ॥
 रसे अतिचे य परिग्गहम्मि, सत्तोमत्तो न उवेड तुट्ठि ।
 अत्तट्ठिदोसेण दुही परम्म, लोभाविले आययई अदत्त ॥ ६८ ॥
 तण्हाभिभूयम्म अदत्तहारिणो, रसे अदत्तस्म परिग्गहे य ।
 मायामुस वड्डइ लोभदोमा, तत्थावि दुक्खा न निमुच्चई से ॥ ६९ ॥
 सोमस्म पञ्चा य पुरत्थओ य, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 ण्ण अदत्ताणि ममाययन्तो, रसे अतिचो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥
 रमाणुरत्तस्म नरस्स ण्ण, ऋत्तो सुह होज्ज कयाड किंचि ।
 तत्थोपमोगे वि किल्लेमदुक्कय, निव्वतई जस्म कएण दुक्कय ॥ ७१ ॥
 एमेव रसम्म गओ पओम, उवेइ दुक्खोदपरपराओ ।
 पट्टच्चित्तो य चिणाड कम्म, ज मे पुणो होइ दुह विरागे ॥ ७२ ॥
 रसे विरत्तो मणुओ विमोगो, एएण दुक्खोदपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि मन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥ ७३ ॥
 पायस्म फास गहण वयन्ति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोमहेउ अमणुन्नमाहु, ममो य जो तेसु स वीयरगो ॥ ७४ ॥
 फासस्स काय गहण वयन्ति, कायस्म फास गहण वयति ।
 गगस्म हेउ समणुन्नमाहु दोसस्म हेउ अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥
 फासेसु जो गेहिमुवेइ तिथ, अकालिय पाण्ड से विणास ।
 रागाउरे सीयजलायसन्ने, गाहग्गहीए महिसे निवन्ने ॥ ७६ ॥
 जे यात्रि दोस समुवेइ तिथ, तसि करणे से उ उवेइ दुक्कय ।
 दुदन्तदोसेण मपण जत्तु, न किंचि फास अवरुज्झई से ॥ ७७ ॥
 ण्णान्तरत्त रुहरसि फासे, आतालिसे से कुणई पओस ।
 दुक्खस्म मपीलमुवेड चाले, न लिप्पई तेण सुणी विरागो ॥ ७८ ॥
 फामाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरं हिंसइज्जेगरूवे ।
 चित्तेहि ते परितावेड चाले, पीलेइ अत्तट्टगुरूकिल्लि ॥ ७९ ॥
 फासाणुवाणण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
 वण विओगे य कह सुह से, मंभोगकाले य अतिचलामे ॥ ८० ॥
 फासे अतिचे य, परिग्गहम्मि, सत्तोमत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अत्तट्ठिदोसेण दुही परम्म, आययई अदत्त ॥ ८१ ॥

तण्हाभिभूयस्म अदत्तहारिणो, फासे अतिचस्म परिग्गहे य ।
 मायागुस वहुइ लोभदोमा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई मे ॥ ८० ॥
 भोसस्स पच्छाय पुरत्थओय, पओगकाले य दुही दुरत्ते ।
 एव अदत्ताणि ममापयन्तो, फासे अतिचो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥
 फासाणुरत्तस्म नरस्स एव, कत्तो सुह होत्त कयाइ किंचि ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निवत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥
 एमेव फासम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
 पदुट्ठचिचो य चिणाइ कम्म, जंसे पुणो होइ दुहं चिवागे ॥ ८५ ॥
 फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे वि सन्तो, जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥ ८६ ॥
 मणस्स भावं गहण वयन्ति, त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
 त दोसहेउ अमणुन्नमाहु, समो य जो तेसु स वीपरागो ॥ ८७ ॥
 भावस्स मण गहण वयन्ति, मणस्स भान गहण वयन्ति ।
 रागस्स हेउ समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥
 भावेसु जो गेहिमुवेइ तिष्ठ, अकालिय पाणइ से विणाम ।
 रागाउरे कामगुणेषु गिद्धे, करेणुमग्गावहिण गणे वा ॥ ८९ ॥
 जे यावि दोस समुनेइ तिष्ठ, तस्सिस्सणे से उ उवेइ दुक्ख ।
 दुदन्तदोसेण सएण जत्त, न किंचि भाव अवरुज्जई से ॥ ९० ॥
 एगन्तरत्ते रुइरसि भावे, अतालसे से गुणई पओम ।
 दुक्खस्स सपीलमुवेइ चाले, न लिप्पई तेण सुणी विरागो ॥ ९१ ॥
 भावाणुमासाणुमाए य जीवे, चराचर हिंसइस्सणेमस्सुवे ।
 चित्तेहि ते परितावेइ चाले, पीछेइ अत्तट्ठयुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥
 भावाणुबाणण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणमच्चिओगे ।
 वए विओगे य कह सुह से, सभोगकाले य अतिचलामे ॥ ९३ ॥
 भावे अतिचे य परिग्गहम्मि, सत्तोयसत्तो न उवेइ तुट्ठि ।
 अत्तट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोमाभिले आययई अदत्त ॥ ९४ ॥
 तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, भावे अनित्तस्स परिग्गहे य ।
 मायागुस वहुइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥
 भोसस्स पच्छाय पुरत्थओय, पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
 एव अदत्ताणि समापयन्तो, भावे अतिचो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥
 भावाणुरत्तस्स नरस्स एव, कत्तो सुह होत्त कयाइ किंचि ।
 तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निवत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥ ९७ ॥
 एमेव भावम्मि गओ पओस, उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।

पदुद्धचित्तो य चिणाह कम्म, ज से पुणो होइ दुह विवामे ॥ ९८ ॥
 भावे विरचो मणुओ विसीगो, एएण दुक्खोहपरपरेण ।
 न लिप्पई भवमज्जे विसत्तो, जलेण वा पीक्खरिणी पलास ॥ ९९ ॥
 एविन्दियत्था य मणस्म अत्था दुक्खस्म हेउ मणुयस्म रागिणो ।
 ते चेन थोम पि रुयाइ दुक्ख, न वीयरगस्म करेन्ति किंचि ॥ १०० ॥
 न कामभोगा ससय उवेन्ति, न यावि भोगा विगइ उवेन्ति ।
 जे तप्पओसी य परिगही य, सो तेसु मोहा विगइ जवेइ ॥ १०१ ॥
 कोह च माण च तहैव माय, लोह दुगुच्छ अगइ रइ च ।
 हास भय सोमपुमित्थिवेष, नपुसषेय विविहे य भावे ॥ १०२ ॥
 आवज्जई एवमपेणरूरे, एवविहे कामगुणेषु मत्तो ।
 अन्ने य एयप्पभवे विसैसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥
 कण न इच्छिज्ज सहायलिच्छ, पञ्चाणुतावे न तवप्पभाव ।
 एव वियारे अमियप्पयारे, आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥ १०४ ॥
 तओ से जायन्ति पओयणाइ, निमिज्जिउ मोहमहण्णम्मि ।
 सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा, तप्पचय उज्जमए य रागी ॥ १०५ ॥
 विरज्जमाणस्म य इन्दियत्था, सहाइया तात्रइयप्पगारा ।
 न तस्स सधे वि मणुन्नय वा, निवत्तयन्ती अमणुन्नय वा ॥ १०६ ॥
 एव ससकप्पविरुप्पणासु, संजापई समयसुत्रद्वियस्स ।
 अत्थे असकप्पयओ तओ से, पहीयए कामगुणेषु तण्हा ॥ १०७ ॥
 स वीयरगो कयसधक्खिचो, खवेड नाणावरण रणेण ।
 तहैव ज दसणमात्रेइ, ज च तराय परुरेड कम्म ॥ १०८ ॥
 सध तओ जाणइ पासए य, अमोहणे होइ निरन्तराए ।
 अणातमषे ज्ञाणसमाहिसुत्ते, आउक्खए मोक्खसुवेइ सुडे ॥ १०९ ॥
 सो तस्स सधस्म दुहस्स सुक्को, ज वाहई सययं जन्तुमेय ।
 दीहामर्यं विप्पसुक्को पसत्थी, तो होइ अचन्तसुही कयत्थो ॥ ११० ॥
 अणाइकालप्पभवस्स एसो, सबस्स दुक्खस्म पमोक्खमग्गो ।
 विपाहिओ ज समुविच सत्ता, कमेण अचन्तसुही भवन्ति ॥ १११ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ पमायट्ठाण समत्त ॥ ३२ ॥

॥ अहं कम्मप्पयद्दी तेत्तीसडम अज्जयण ॥

अहं कम्माइ बोञ्जामि, आणुपुंदि जहाकम । जेहि बद्धो अय जीरो, ससारे परिवट्ठई ॥ १ ॥
 नाणस्सारणिज्ज, दसणारण तहा । पेयणिज्ज त्ता मोह, आउकम्म तहेव य ॥ २ ॥
 नामकम्म च गोय च, अन्तराय तहेव य । एवमेयाइ कम्माइ, अट्टेव उ समामओ ॥ ३ ॥
 नाणाणरण पञ्चविह, सुय आमिणिबोहिय । ओहिनाण च तह्य, मणनाण च केणल ॥ ४ ॥
 निदा तहेव पयला, निगनिदा पयलपयला य । ततो ययीणगिद्धी उ, पचमा होइ नायवा ॥ ५ ॥
 चत्तुमचक्खुओहिस्स, दसणे केणले य आरणे । एत्तु नवविगप्प, नायव दसणारण ॥ ६ ॥
 वेयणीयपि य दुविह, सायममाहिय च अहिय । सायस्स उ न्हू मेया, एमेव अमायस्स वि ॥ ७ ॥
 मोहणिज्जपि च दुविह, दसणे चरणे तहा । दसणे तिविह वुत्त, चरणे दुविह भये ॥ ८ ॥
 सम्मत्त चेव मिच्छत्त, सम्मामिच्छत्तमेव य । एयाओ तिन्नि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दसणे ॥ ९ ॥
 चरित्तमोहण कम्म, दुविह त रियाहिय क्कमायमोहणिज्ज तु, नोक्कसाग तहेव य ॥ १० ॥
 सोलमविहभेएण, कम्म तु पसायज । सत्तविह नवविह वा, कम्म च नोक्कसायज ॥ ११ ॥
 नेरहयतिरिक्खाउ, मणुस्साउ तहेव य । ट्ठाउय चउत्थ तु, आउ कम्म चउत्थिह ॥ १२ ॥
 नाम कम्म तु दुविह, सुहमसुह च आहिय । सुमस्स उ न्हू मेया, एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥
 गोय कम्म दुविह, उच्च नीय च जाहिय । उच्च अट्टविह होइ, एव नीय पि आहिय ॥ १४ ॥
 दाणे लामे य भोगे य, उच्चभोगे धीरिए तहा । पञ्चविहमन्तराय, समासेण वियाहिय ॥ १५ ॥
 एयाओ मूलपयडीओ, उत्तमओ य आहिया । पएसग्ग खेत्तकाले य, भाय च उत्तर सुण ॥ १६ ॥
 भवेसि चेव कम्माण, पएसग्गमणत्तं । गणित्तयत्तत्ताईय, अन्तो सिद्धाण आहिय ॥ १७ ॥
 सब्बजीवाण कम्म तु, मगइ छदिमागय । मवेसु वि पणसेसु, सब्ब सब्बेण बद्धम ॥ १८ ॥
 उदहीपरिसनामाण, तीसई फोडिकोडिओ । उक्कोसिय टिई होइ, अन्तोमुट्टुत्त जहन्निया ॥ १९ ॥
 आरणिज्जाण दुण्हंपि, वेयाणिज्जे तह्य य । अन्तराय य कम्मम्मि, टिई एमा वियाहिया ॥ २० ॥
 उदहोपरिसनामाण, सत्तारि कोडिकोडीओ । मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अ तोमुट्टुत्त जहन्निया ॥ २१ ॥
 तत्तीम सागरोरभा, उक्कोसेण वियाहिया । टिई उ आउकम्मस्स, अन्तोमुट्टुत्त जहन्निया ॥ २२ ॥
 उदहीपरिसनामाण, वीसई कोडिकोडीओ । नाममोत्ताण उक्कोसा, अट्ट मुट्टुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥
 सिद्धाणान्तपामो य, अणुभागा हरन्ति उ । मच्चेसु वि पएसग्ग, सब्बजीवे अइच्छिय ॥ २४ ॥
 तम्हा एएसि कम्माण, अणुभागा वियाणिया । एएमि सउरे चेव, सब्बणे य जए उहो ॥ २५ ॥

स्ति चेमि ॥ इअ कम्मप्पयद्दी समत्ता ॥ ३३ ॥

॥ अह लेसज्झयण चोत्तीसडम अज्झयण ॥

लेसज्झयणं पक्कत्तामि, आणुपुंदि जहकम । छण्हपि कम्म लेमाण, अणुमावे सुहेण मे ॥ १ ॥
नामाइ वण्णरसग धकासपरिणामत्त्वरुण । टाण टिह गह चाउ, लेमाण तु सुणेह मे ॥ २ ॥
किण्हा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेय य । मुक्कलेमा य उट्ठा य, नामाड तु जहकम ॥ ३ ॥
जीय्वनिदमफासा, गलरुलिट्ठमन्निमा । रज्जणनयणनिमा, णिण्हेलेमा उ रण्णओ ॥ ४ ॥
नीलामोगमफामा, चामपिच्छमप्पभा । वेरुलियनिदमफामा, नीललेमा उ रण्णओ ॥ ५ ॥
अपमोपुप्फमफामा, मोहलच्छदमन्निमा । सुयतुण्डपर्दनिमा, काउत्रेमा उ रण्णओ ॥ ६ ॥
हिंसुराउसफामा, तण्णाइच्चमन्निमा । सुयतुण्डपर्दनिमा, तेऊलेमा उ रण्णओ ॥ ७ ॥
हरियालमेयसफामा, हलिदामेयमप्पभा । मणासणकुसुमनिमा पम्हलेमा उ रण्णओ ॥ ८ ॥
संस्वरुन्दमङ्कामा, रगीरपूरमप्पभा । रयणहारमफासा, सुक्कलेमा उ रण्णओ ॥ ९ ॥

जह कडुयतुम्बगरमो, निम्बरमो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो य किण्हाण नायवो ॥ १० ॥
जह तिगडयस्स य रसो, तिक्खो जह रियपिपलीण वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ नीलाए नायवो ॥ ११ ॥
जह परिणअम्भगरमो, तुम्भकविट्ठम्म यापि जारिमओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ काऊण नायवो ॥ १२ ॥
जह परिणयम्बगरमो, पक्कविट्ठम्म यापि जारिमओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो, रसो उ तेऊण नायवो ॥ १३ ॥
वरवारुणीण वारसो, विविहाण व आमवाण जारिमओ ।
महुमेरयस्स व रसो, एत्तो पम्हाण परण्ण ॥ १४ ॥

रज्जुमुद्दियस्सो, रगीरमो गडमकमो वा । एत्तो वि अणतगुणो, रसो उ सुक्कण नायवो ॥ १५ ॥
जह गोमडस्स गघो सुणगमडम्म व जहा अहिमडस्साएत्तो वि अणतगुणो, लेमाण जप्पवत्थाण ॥ १६ ॥
जह गुरहिकुसुमगघो, गघमाणाण पिम्ममाणणाण । एत्तो वि अणतगुणो, पमत्तलेमाण तिण्ह पि ॥ १७ ॥
जह ररगयस्स फासो, गोजिन्माए य मागपत्ताण । एत्तो वि अणतगुणो, लेमाण अप्पहन्थाण ॥ १८ ॥
जह वुरस्स व फासो, नरणीयस्स व मिरीमकुसुमाणा । एत्तो वि अणतगुणो, पसन्थलेमाण तिण्हपि ॥ १९ ॥
तिविहो न नरविहो वा, सत्तावीसहविदेक्खीओ वा । दुसओ तेयालो वा, लेमाण होड परिणामो ॥ २० ॥
पचामवप्पवत्तो, तीहिं अणुत्तो छसु अनिरओ य । तिक्खारभगरिणओ, सुट्ठो साहस्सिओ नरो ॥ २१ ॥
निद्वन्धमपरिणामो, निस्समो अनिहन्दिओ । एयजोगममाउत्तो, किण्हलेम तु परिणमे ॥ २२ ॥
इस्सा अमरिम चत्तो, अनिज्जमाया अहीरिय । गेही पओमे य सट्ठे, पमत्त रसलोत्तए ॥ २३ ॥
सायग्गवेमए य आरम्भाओ अविरओ, सुट्ठो साहस्सिओ नरो । एयजोगममाउत्तो, नीललेम तु परिणमे २४ ॥
क्के वकममायारे, नियड्ढिओ अणुज्जुण । पल्लिउत्तमओरहिण, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥
उप्फासगदुट्ठवाडं य, तेणे यापि य मच्छगी । एयजोगममाउत्तो, काऊत्रेम तु परिणमे ॥ २६ ॥

तीयात्रची अचबले, अमाई अकुऊहले । विणीयणिणए दन्ते, जोगव उग्रहाणव ॥ २७ ॥
 पेयधम्मे दढधम्मेऽनज्जभीरू हिणए । एयजोगसमाउत्तो, तेउलेस तु परिणमे ॥ २८ ॥
 पयणुकोहमाणे य, मायालोभे य पयणुए । पमन्तचिचे दत्तप्पा, जोगव उग्रहाणव ॥ २९ ॥
 हा पयणुवाई य, उपसन्ते जिइन्दिए । एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेस तु परिणमे ॥ ३० ॥
 षट्ठरूदाणि वज्जिता, धम्मसुक्काणि ज्ञायए । पसन्तचिचे दत्तप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१ ॥
 रामे वीयरामे वा, उवसन्ते जिइन्दिए । एयजोगसमाउत्तो, सुवलेस तु परिणमे ॥ ३२ ॥
 ससखिजाणोमप्पिणीण, उस्मप्पिणीण जे समया । सराईया लोमा, लेसाण हनन्ति ठाणाइ ॥ ३३ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना, तेचीसा सागरा गृहुचहिया । उकोसा होइ ठिई, नायवा किण्हलेसाए ॥ ३४ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना, दस उदही पलियमसखभागमभहिया । उकोसा होइ ठिई, नायवा नीललेमाए ॥ ३५ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना, तिण्णुदही पलियमसखभागमभहिया । उकोसा होइ ठिई, नायवा काउलेसाए ॥ ३६ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना, दीण्णुदही पलियमसखभागमभहिया । उकोसा होइ ठिई, नायवा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना, दस होत्तिय सागरा गृहुचहिय । उकोसा होइ ठिई, नायवा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना, तेचीस सागरा गृहुचहिया । उकोसा होइ ठिई, नायवा सुवलेसाए ॥ ३९ ॥
 रसा खल्लेसाण, ओरेण ठिई वणिया होइ । चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिई तु वोच्छामि ॥ ४० ॥
 दस वाससहस्साइ, काऊए ठिई जहन्निया होइ । तिण्णुदही पलिओवम, असखभाग च उकोसा ॥ ४१ ॥
 तेण्णुदही पलिओवमसखभागो जहन्नेण नीलठिई । दस उदही पलिओवम असखभाग च उकोसा ॥ ४२ ॥
 दस उदही पलिओवम असखभाग जहन्निया होइ । तेचीससागराइ उकोसा, होइ किण्हाए छेसए ॥ ४३ ॥
 रसा नेरइयाण, लेसाण ठिई उ वणिणा होइ । तेण पर वोच्छामि, तिरियमणुस्माण देवाण ॥ ४४ ॥
 अन्तोमुट्टुचमद्द, छेलाण जहिं जहि जाउ । तिरियाण नराण वा, वज्जिता केवल लेस ॥ ४५ ॥
 गृहुचद्ध तु जहन्ना उकोसा होइ पुवकोडीओ । नवहि वरिसेहि ऊणा, नायवा वसुलेसाए ॥ ४६ ॥
 एसा तिरियनराण, लेसाण ठिई उ वणिया होइ ।
 तेण पर वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाण । ४७ ॥
 दस वामसहस्साइ, किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
 पलियमसरिज्ज इमो, उकोसो होइ किण्हाए ॥ ४८ ॥
 जा किण्हाए ठिई खल्ल, उकोसा सा उ समयमभहिया ।
 जहन्नेण नीलाए, पलियमसख च उकोसो ॥ ४९ ॥
 जा नीसाण ठिई खल्ल, उकोसा सा उ समयमभहिया ।
 जहन्नेण काऊए, पलियमसख च उकोसा ॥ ५० ॥
 तेण पर वोच्छामि, तेउलेसा जहा सुरगाण । भणणइवाणमन्तरजोइसरेमाणियाण च ॥ ५१ ॥
 पलिओवम जहन्न, उकोसा सागरा उ दुन्नहिया । पलियमसखेज्जेण, होइ भाणेण तेऊए ॥ ५२ ॥
 दस वाससहस्साइ, तेऊए ठिई जहन्निया होइ । दुन्नुदही पलिओवम असखभाग च उकोसा ॥ ५३ ॥
 जा तेऊण ठिई खल्ल, उकोसा सा उ समयमभहिया ।
 जहन्नेण पम्हाए, दस उ गृहुचाहियाइ उकोसा ॥ ५४ ॥

जा पम्हाए ठिई खलु, उक्कोमा सा उ ममयमम्भहिया । जहनेण सुक्काए, तेत्तीम मुहुत्तमम्भहिया ॥ ५५ ॥
 किण्हा नीला ऋऊ, तिन्नि वि एयाओ अहमलेमाओ । ण्याहि तिहिवि जीरो, दुग्गइ उउउजई ॥ ५६ ॥
 तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्निवि एयाओ धम्मलेमाओ । ण्याहि तिहिवि जीरो, सुग्गइ उउउजई ॥ ५७ ॥
 लेसाहिं सवाहिं, षट्ठे समयमि परिणया हिं तु । न हू रुम्मइ उउउओ, परे भव अत्थि जीउस्स ॥ ५८ ॥
 लेसाहिं मवाहिं, चरिमे समयमि परिणयाहिं तु । न हू रुस्सइ उउउओ परं भवे होइ जीउस्स ॥ ५९ ॥
 अन्तमुहुत्तम्मि गण अ नमुहुत्तम्मि मेमण चेव । लेसाहिं परिणयाहिं, जीउा गच्छन्ति परलोय ॥ ६० ॥
 तम्हा ण्यामि लेमाण, आणुभावे वियाणिया । अप्पसत्थाओ उज्झित्ता, पमत्थाओ षड्हिट्ठिए मुणि ॥ ६१ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ लेमज्झयण समत्त ॥ ३४ ॥

॥ अह अणगारज्झयण णाम पचतीसइम अज्झयण ॥

सुद्वेण मे णगग्गमणा, मग्ग उद्वेहि ढसिय । जमापरन्तो भिक्खु, दुक्कणान्त ऊरे भवे ॥ १ ॥
 गिहवास पविचज्ज, पउज्जामस्सिण मुणी । इम मणे वियाणिज्ज, जेहिं सज्जन्ति माणसा ॥ २ ॥
 तद्वेव हिंस अलिय, चोच्च अरम्मसेरण । उच्छाक्काम च लोभ च, मज्जओ परिवज्जए ॥ ३ ॥
 मणोहर चित्तधर, मह्ठवृवेण णसिय । सकण्णड पण्णरुहोच, मणसावि न पथए ॥ ४ ॥
 इन्दियाणि उ भिक्खुस्स, तारिमम्मि उउउम्मण । दुक्कराड निगारेउ, णामरागविवट्ठणे ॥ ५ ॥
 सुमाणे सुउगारे वा, रुक्कमूले उ इक्कओ । पडग्गिके पररुटे वा, णास तत्थाभिगेयए ॥ ६ ॥
 फासुपम्मि अणावाड, इत्थीहिं अणभिद्दुए । तथ सउप्पण णाम भिक्खु परममज्जए ॥ ७ ॥
 न मय गिहाड वुत्थित्ता, णेर अन्नेहिं काण । गिहउम्मममारम्भे भूयाण दिस्सण वट्ठो ॥ ८ ॥
 तमाण धाउरण च, सुहुमाण वादराण य । तम्हा गिहउम्ममारम्भ, मज्जओ परिवज्जए ॥ ९ ॥
 तद्वेव भत्तपाणेषु, पयणे पयाउणेषु य । पाणभूयदयट्ठाए, न पण न पयाउण ॥ १० ॥
 जलपन्ननिस्सिया जीउा, पुट्टीरुट्ठनिस्सिया । हमन्ति भत्तपाणेषु तम्हा भिक्खु न पयाउण ॥ ११ ॥
 विमपे मवओ धारं, षट्ठपाणिणिणामणे । नदिय जोडसम मत्थे, तम्हा जोड न दीवए ॥ १२ ॥
 हिण्ण जायन्त च, मणमा वि न पदवण । ममठेदुउरुणे भिक्खु, णिण्ण णयविवण ॥ १३ ॥
 णिणन्तो रुडओ होइ, विक्किणन्तो य णणिणो । णयविवक्कवम्मि वट्टन्तो, भिक्खु न भउउ तारिसो ॥ १४ ॥
 भिक्खियवव न केयव, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा । णयविकओ महादोसो भिक्खपत्ती सुहाउहा ॥ १५ ॥
 समुयाण उउमेसिज्जा, जहामुत्तमणिन्दिय । लामालाभम्मि सत्तुट्टे पिण्णट्ठाय चरं मुणी ॥ १६ ॥
 अलोले न रसे गिद्वे, तिमादन्ने अमुत्ठिण । न रमट्ठाए भुजित्ता, जउणट्ठाण महामुणी ॥ १७ ॥
 अच्चण रयण चेव, व दण पूयण तहा । उद्वीमवारसम्माण, मणमा वि न पथए ॥ १८ ॥
 सुउज्झाण णियाणज्जा, अणियाणे अक्किंचणे । उोमट्टकाण विहरज्जा, उअ कालम्प पज्जओ ॥ १९ ॥
 निज्जुहिंऊण जाहार, मालधम्म उउउट्टिए । जहिंऊण माणुम उोन्दि, पट्ट दुम्भे विमुच्चट्ट ॥ २० ॥
 निम्मम निरहकारे, उीयरगो अणामणो । मपत्तो केउल नाण, सामय परिणिउुए ॥ २१ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ अणगारज्झयण समत्त ॥ ३५ ॥

॥ अह जीवाजीवविभत्ती णाम छत्तीसइम अज्जयण ॥

जीवाजीवविभत्ति, सुणो मे एगमणा इओ । ज जाणिज्जण भिक्खू, मम्म जयइ सज्जे ॥ १ ॥
 जीवा चेव अजीवा य, एस लोण विवाहिण । अजीवटेममागासे, अलोगे से विवाहिण ॥ २ ॥
 दच्चओ सेत्तओ चेव, षालओ भाओ तहा । परूणा तेमि भवे, जीराणमजीराण य ॥ ३ ॥
 रुविणो चेवरूनी य, अजीवा द्विहा भवे । अरूनी दसहा पुजा, रुविणो य चउविहा ॥ ४ ॥
 धम्मरिचण तद्देसे, तप्पएसे य आहिण । अहम्मे तस्म दसे य तप्पएसे य आहिण ॥ ५ ॥
 आगासे तस्म देसे य, तप्पएसे य आहिण । अट्टाममण चेव, अरूनी दसहा भवे ॥ ६ ॥
 धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमिता विवाहिया । लोगालोगे य आगामे, ममए ममयग्गेविण ॥ ७ ॥
 धम्माधम्मागासा, तिन्निवि णए अणाहया । अपज्जमिया चेव, मच्चट्ट तु विवाहिया ॥ ८ ॥
 ममएवि मत्तह पप्प, एवमेव विवाहिण । आणस पप्प माइण, मप्पज्जमियावि य ॥ ९ ॥
 खन्धा य खन्धेदेसा य, तप्पएसा तहव य । परमाणुणो य घोघत्ता, रुविणो य चउविहा ॥ १० ॥
 एगत्तेण पुत्तेण, राधा य परमाणुणो । लोगग्गेसे लोण य, भइयवा ते उ गेत्तओ ॥ ११ ॥

इत्तो षालविभाग तु, तेमि बुच्छ चउविह ॥ १२ ॥

सतइ पप्प नेज्जाइ, अप्पज्जमियावि य । ठिइ पट्ट माइया, मपज्जमिया वि य ॥ १३ ॥
 अससकालमुक्कोस, एको ममओ जहन्नय । अजीराण य रूनीण, ठिई णमा विवाहिया ॥ १४ ॥
 अणत्तकालमुक्कोसमेको, ममओ जहन्नय । अजीराण य रूवीण, अन्तरग्गे विवाहिया ॥ १५ ॥
 उण्णओ गन्धओ चेव, रमओ फासओ तहा । सठाणओ य विक्केओ, परिणामो तमि पचहा ॥ १६ ॥
 उण्णओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्किच्या । जिह्वा नीला य लोहिया, धम्मिहा सुक्खिहा तहा ॥ १७ ॥
 गन्धओ परिणया जे उ, दुविहा ते विवाहिया । सुन्निमग-घपरिणामा, दुन्निमगन्धा तहव य ॥ १८ ॥
 रमओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्किच्या । तिचकडुपकमाया, अम्बिला महुरा तहा ॥ १९ ॥
 फासओ परिणया जे उ, अट्टहा ते पक्किच्या । ककगहा मउआ चेव, गरुया लहुना तहा ॥ २० ॥
 सोया उण्हा य निद्धा य, तहा लुक्खा य आहिया । इय फासपरिणया ण, पुग्गला मद्दुदाहिया ॥ २१ ॥
 सठाणओ परिणया जे उ, पञ्चहा ते पक्किच्या । परिमएडला य चट्टा य, तमा चट्टरममायया ॥ २२ ॥
 उण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २३ ॥
 उण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ । रमओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २४ ॥
 उण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गन्धओ । रमओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २५ ॥
 उण्णओ पीपए जे उ, भइए से उ गन्धओ । रमओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २६ ॥
 उण्णओ सुक्खिले जे उ, भइए से उ गन्धओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २७ ॥
 गन्धओ जे भवे सुक्की, भइए से उ उण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २८ ॥
 गन्धओ जे भवे दुक्की, भइए से उ उण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ २९ ॥
 रसओ तिचण जे उ, भइए से उ उण्णओ । ग-घओ रमओ चेव, भइए सठाणओवि य ॥ ३० ॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३१ ॥
 रसओ कसाण जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फामओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३२ ॥
 रसओ अम्बिले जे उ भए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३३ ॥
 रसओ महुरए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ फासओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३४ ॥
 फामओ कक्करुडे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३५ ॥
 फामओ भइए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३६ ॥
 फासण गुरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३७ ॥
 फामओ लहुण जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३८ ॥
 फासण सीयए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ३९ ॥
 फामओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ४० ॥
 फामओ निट्टए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ४१ ॥
 फामओ लुक्करए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए मठाणओवि य ॥ ४२ ॥
 परिमण्डलमठाणे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए से फामओवि य ॥ ४३ ॥
 सठाणओ भवे उट्टे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए से फामओवि य ॥ ४४ ॥
 सठाणओ भवे तसे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए से फामओवि य ॥ ४५ ॥
 सठाणओ जे चउरसे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए से फामओवि य ॥ ४६ ॥
 जे आययसठाणे, भइए से उ वण्णओ । गन्धओ रसओ चेर, भइए से फामओवि य ॥ ४७ ॥
 एसा अजीवनिभत्ती, समासेण विद्याहिया । इत्तो जीवनिभत्तिं, उच्छामि अणुपुष्पमो । ४८ ॥
 मसारत्था य सिद्धा य, दुचिहा जीवा विद्याहिया । सिद्धाणेगविहा उत्ता, त मे क्रियतओ गुण ॥ ४९ ॥
 इत्थो पुरिससद्धा य, तहेव य नपुसगा । सल्लिगे अन्नल्लिगे य, गिहिल्लिगे तहेव य ॥ ५० ॥
 उक्कोसोगाहणाए य, जहन्नमज्झिमाड य । उद्ध अह तिरिय च, समुत्तम्मि जलम्मि य ॥ ५१ ॥
 दस य नपुमएसु वीस इत्थियासु य । पुरिसेसु य अट्टसय, समएणेणेण सिज्झई ॥ ५२ ॥
 चत्तारि य गिहिल्लिगे, अन्नल्लिगे दसेव य । सल्लिगण अट्टमय, समएणेण सिज्झई ॥ ५३ ॥
 उक्कोमोगाहणाए य, सिज्झन्ते जुगव दुवे । चत्तारि जहन्नाए, मज्जे अट्टुत्तर मय ॥ ५४ ॥
 चउरुद्धलोए य दुवे समुहे, तओ जठे वीसमह तहेव य ।
 मय च अट्टुत्तर तिरियलोए, समएणेण सिज्झई धुर ॥ ५५ ॥
 कहि पडिहया सिद्धा, कहि सिद्धा पडिट्ठिया । कहि पोन्दि, चइत्ताण, कृत्य गन्तूण सिज्झई ॥ ५६ ॥
 आलोए पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्ठिया । इह पोन्दि चइत्ताण, तव ग तूण सिज्झई ॥ ५७ ॥
 बारसहि जोयणेहिं, मवट्टस्सुत्तरिं भवे । ईसिपम्भारनामा, पुट्टरी छत्तसठिया ॥ ५८ ॥
 पणयालसयसडस्सा, जोयणाण तु आयया । ताणइय चैव वित्थिण्णा, तिग्गुणो तस्सेव परिमणो ॥ ५९ ॥
 अट्टोजोयणवाहुला, मा मज्झम्मि विद्याहिया । परिहायन्ती चरिम ते, मन्डिपत्ताउ तणुयरी ॥ ६० ॥
 अज्जुणसुवण्णममई, सा पुट्टरी निम्मला सहणेण ।
 उत्ताणगन्ठत्तमसठिया य, मणिया विणमरेहि ॥ ६१ ॥

सरकबुद्धमक्रामा, पण्डुरा निम्मला सुहा । सीयाणे जोयणे तत्तो, लोयन्तो उ वियाहियो ॥ ६२ ॥
 जोयणस्म उ जोतत्थ, मोमो चरिमो भवे । तस्स कोसस्म सन्भाण, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६३ ॥
 तथ सिद्धा महाभागा, लोगगम्मि पड्डिया । भणपपचओ मुक्का, सिद्धि वरगड गया ॥ ६४ ॥
 उम्सेहो जेसिं जो होइ, भणम्मि चरिमम्मि उ । तिभाणहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६५ ॥
 एगत्तेण साईया, अपज्जसियावि य । पुहत्तेण अणाइया, अपज्जसियावि य ॥ ६६ ॥
 अरुविणो जीयणणा, नाणदसणमन्निया । अउल सुह सपन्ना, उम्मा जस्स नत्थि उ ॥ ६७ ॥
 लोगगत्से त भवे, नाणदसणमन्निया । ममारपारनित्थिणणा, सिद्धि वरगड गया ॥ ६८ ॥
 ममारथा उ जे जीना, दुविहा ते वियाहिया । तमा य थापरा चेर, थापरा तिपिहा तहिं ॥ ६९ ॥
 पुट्ठी आउजीना य, तट्ट य वणस्मई । इधेण थापरा तिपिहा, तेसिं भेण सुणेह मे ॥ ७० ॥
 दविह पुट्ठीजीना य, सुहुमा थापरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेण दुहा पुणो ॥ ७१ ॥
 थापरा जे उ पत्तत्ता, दुविहा ते वियाहिया । सण्हा राग य बोधवा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥ ७२ ॥
 जिहा नीला य रुहिगा य, हलिहा मुक्किला तहा । पण्णुपणगमट्टिया, राग छत्तीसइनिहा ॥ ७३ ॥
 पुट्ठी य सवरा गालुया य, उगले सिला य लोणूसे ।
 अय-तम्भ तउय-सीमग-रूप-सुणणे य उररे य ॥ ७४ ॥
 हरियाले हिंगुलुए, मणोसिला सामगजण-पराळे ।
 अभण्डल-भगालुय, थापराकाण मणिपिहाले ॥ ७५ ॥
 गोमज्जण य रूपगे, अके फलिहे य लोहियक्खे य । मरगय मसारगच्छे, भुयमोयग इन्दनीले य ॥ ७६ ॥
 चन्दण गेरुय हमगन्धे, पुलए सोगन्धिए य बोधवे । चन्दणपट्टवेरुलिण, जलन्ते खन्ते य ॥ ७७ ॥
 एण सरपुट्ठीए, भेया छत्तीसमाहीया । एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ ७८ ॥
 सुहुमा सबलोगम्मि, लोगदेसे य थापरा । इत्तो कालविभाग तु, उच्छ तेमिं चउबिह ॥ ७९ ॥
 सनइ पण्णाइया, अपज्जसियावि य । तिई पड्ड च साईया, मपज्जासियावि य ॥ ८० ॥
 वाणीसमहस्माड, रामाणुसिया भवे । आउठिई पुट्ठीण, अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥ ८१ ॥
 अमरपण्णुमुक्कोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । कायठिई पुट्ठीण, त काय त अमुचओ ॥ ८२ ॥
 अणन्तकालमुक्कोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । विजडम्मि मए काए पुट्ठिजीनाण अन्तर ॥ ८३ ॥
 एणमि वण्णओ चेर, गन्धओ रमफमओ । सठाणदेसओ वावि, विहाणाड सहस्सओ ॥ ८४ ॥
 दुविहा आऊजीना उ, सुहुमा थापरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेण दुहा पुणो ॥ ८५ ॥
 थापरा जे उ पज्जत्ता, पचहा ते पक्कित्थिया । सुद्धोदण य उम्से, हरतणू महिया हिमे ॥ ८६ ॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तथ वियाहिया । मुहुमा सबलोगम्मि, लोगदेसे य थापरा ॥ ८७ ॥
 मत्तए पण्णणाइया, अपज्जवमियावि । तिड पट्ट च साईया, सपज्जवमियावि य ॥ ८८ ॥
 मत्तए सहस्माड, वासाणुक्कोमिया भवे । आउठिई आऊग, अ तोमुहुत्त जहन्निया ॥ ८९ ॥
 अमरपण्णुमुक्कोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । कायठिई आऊग, त काय तु अमुचओ ॥ ९० ॥
 आण्वरालमुक्कोम, अ तोमुहुत्त जहन्नय । विजडम्मि सए काए, आऊजीनाण अन्तर ॥ ९१ ॥
 एणमि वण्णओ चेर, गन्धओ रमफमओ । सठाणदसओ वावि, विहाणाड सहस्सओ ॥ ९२ ॥

दुविहा वणस्मईजीवा, सुहुमा बायरा तहा । पञ्चमपञ्चता, एममेव दुहा पुणो ॥ ९३ ॥
 बायरा जे उ पञ्चता, दुविहा ते वियाहिया । साहारणसरीरा य, पचेगा य तहेव य ॥ ९४ ॥
 पचेगसरीराओऽणोगहा ते पकित्तिया । रुम्सा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥ ९५ ॥
 चलया पबगा कुट्टणा, जलरुहा ओमही तहा । हरियकाया बोधवा, पचेगाह वियाहिया ॥ ९६ ॥
 साहारणसरीराओऽणोगहा ते पकित्तिया । आलुए मूलए चैव, मिगवरे तहेव य ॥ ९७ ॥
 हरिली सिरिली सस्मिरिली, जावई केयकन्दली । पलण्डुलमणरुन्दे य, कन्दली य कुट्टए ॥ ९८ ॥
 लोढिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य । रुन्दे य उज्जकन्दे य, रुन्दे घरणए तहा ॥ ९९ ॥
 सस्मरुणी य बोधवा, सीहकण्णी तहेव य । मुसुण्डी य हलिदा, य णेगहा एवमायओ ॥ १०० ॥
 एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया सुहुमा सबलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा ॥ १०१ ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपञ्चवसियावि य । ठिड पडुच साईया, मपञ्चवसियावि य ॥ १०२ ॥
 दस चैव सहस्माइ, बासाणुकोसिया पणगाण । णणफईण आउ, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १०३ ॥
 अणन्तकालमुकोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । कायटिई पणगाण, त काय तु अमुचओ ॥ १०४ ॥
 असखकालमुकोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । विजदम्मि सए काए, पणगनीवाण अन्तर ॥ १०५ ॥
 एएसिं वण्णओ चैव, गन्धओ रमफामओ । सठाणदसओ वावि, विहाणाइ महस्ससो ॥ १०६ ॥
 इचेए बायरा तिनिहा, समामेण वियाहिया । इत्तो उ तसे तिनिहे, बुच्छामि अणुपुबमो ॥ १०७ ॥
 तेऊ वाऊ य बोधवा, उराला य तमा तहा । इचेए तसा तिनिहा, तेमिं मेए सुणेह मे ॥ १०८ ॥
 दुविहा तेऊजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पञ्चमपञ्चता, एममेए दुहा पुणो ॥ १०९ ॥
 बायरा जे उ पञ्चताणेगहा ते वियाहिया । इगाले मुम्भुरे अगणी. अचिजाला तहेव य ॥ ११० ॥
 उका निज्जू य बोधवा णेगहा एवमायओ । एगविहमणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥ १११ ॥
 सुहुमा सबलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविभाग तु तेमिं पुच्छ चउबिह ॥ ११२ ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपञ्चवसियावि य । ठिई पडुच साईया, मपञ्चवसियावि य ॥ ११३ ॥
 तिण्णेव जहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया । आउटिई तेऊण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ ११४ ॥
 असखकालमुकोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । कायटिई तेऊण, त काय तु अमुचओ ॥ ११५ ॥
 अणन्तकालमुकोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । निजदम्मि सए काए, तेऊजीवाण अन्तर ॥ ११६ ॥
 एणसिं वण्णओ चैव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ वावि, विहाणाइ महस्ससो ॥ ११७ ॥
 दुविहा ताउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पञ्चमपञ्चता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११८ ॥
 बायरा जे उ पञ्चता, पञ्चहा ते पकित्तिया । उवलिया मण्डलिया, घणगुजा सुद्धनाया य ॥ ११९ ॥
 सबद्धनाया यणेगहा एवमायओ । एगविहमणाणत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ १२० ॥
 सुहुमा सबलोगम्मि, एगदेसे य बायरा । इत्तो कालविभाग तु, तेमिं पुच्छ चउबिह ॥ १२१ ॥
 सन्तइ पप्पणाईया, अपञ्चवसियावि य । ठिइ पडुच साईया, मपञ्चवसियावि य ॥ १२२ ॥
 तिण्णेव महस्माइ, बासाणुकोमिया भवे । आउटिई काऊण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १२३ ॥
 असखकालमुकोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । कायटिई वाऊण, त काय तु अमुचओ ॥ १२४ ॥
 अणन्तकालमुकोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । निजदम्मि सए काए, काऊजीवाण अन्तर ॥ १२५ ॥

- एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ चावि, विहाणाइ महस्ससो ॥ १२६ ॥
 उराला तसा जे उ, चउहा ते पकित्तिया । वेइन्दिय-तेइन्दिय-चवरो पचिन्दिया चेव ॥ १२७ ॥
 वेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्तमपज्जत्ता, तेमिं मेए सुणेह मे ॥ १२८ ॥
 किमिणो सोममला चेव, अलसा माइवाहया । वासीमूहा य सिप्पिया, सख सखणगा तथा ॥ १२९ ॥
 घट्ठीयाणुल्लया चेव, तहेव य वगडगा । जलगा जालगा चेव, चन्दणा य तहेव य ॥ १३० ॥
 इइ वेइन्दिया एएऽणोगहा एयमायओ । लोमगदेसे ते मधे, न सबत्थ वियाहिया ॥ १३१ ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिइ पडुच साईया, मपज्जवसियावि य ॥ १३२ ॥
 चासाइ वारसा चेव, उक्कोसेण वियाहिया । वेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १३३ ॥
 सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । वेइन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १३४ ॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । वेइन्दियजीवाण, अन्तर च वियाहिय ॥ १३५ ॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ चावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १३६ ॥
 तेइन्दिया उ जे जीवा, दुविहा त पकित्तिया । पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं मेए सुणेह मे ॥ १३७ ॥
 इ-धुपिवीलिउडुसा, उक्कलेइहिया तथा । तणहारकडुहारा य, मालुरा पत्तहारगा ॥ १३८ ॥
 कप्पामट्टिमि जायन्ति, दुगा तवममिजगा । मदानरी य सुम्भी य, बोधवा इन्दमाइया ॥ १३९ ॥
 इन्दमोवगमाईयाणोगहा एवमायओ । लोमगदसे ते सब्बे, न सबत्थ वियाहिया ॥ १४० ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसियावि य । ठिइ पडुच साईया, सपज्जवसियावि य ॥ १४१ ॥
 एग्गूणपण्होरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया । तेइन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १४२ ॥
 सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । तेइन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १४३ ॥
 अण तत्रालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । तेइन्दियजीवाण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १४४ ॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ चावि, विहाणाइ महस्ससो ॥ १४५ ॥
 चउरिन्दिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिया । पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं मेए सुणेह मे ॥ १४६ ॥
 अन्निया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तथा । भमरे कीडपयगे य, टिकुणे करुणे तथा ॥ १४७ ॥
 इन्डुडे भिरीडी य, नन्दावंचे य विच्छुए । टोले भिंगारी य, वियडी अच्छिवेयए ॥ १४८ ॥
 अच्छिले माहए अच्छिरोडए, विचित्ते चित्तपत्तए ।
 उहिजलिया जलकारी य, नीया तन्तययाइया ॥ १४९ ॥
 इय चउरिन्दिया, एएऽणोगहा एवमायओ । लोमगदेसे ते सब्बे, न सबत्थ वियाहिया ॥ १५० ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य । ठिइ पडुच साईया, मपज्जवसिया वि य ॥ १५१ ॥
 छचेव मामाउ, उक्कोसेण वियाहिया । चउरिन्दियआउठिई, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १५२ ॥
 सखिज्जकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । चउरिन्दियकायठिई, त काय तु अमुचओ ॥ १५३ ॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । चउरिन्दियजीवाण, अन्तर च वियाहिय ॥ १५४ ॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ चावि, विहाणाइ सहस्ससो ॥ १५५ ॥
 पचिन्दिया उ जे जीवा, चउविहा ते वियाहिया । नेरइयतिरिक्खा य, मणुया द्वा य आहिया ॥ १५६ ॥
 नेहया सत्तविहा, पुडवीसु सतव भवे । गयणाभमवराभा, राहुयाभा य आहिया ॥ १५७ ॥

पंक्रामा धूमाभा, तमा तमतमा तथा । इह नेरइया एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥ १५८ ॥
 लोएगदेसे ते सधे उ वियाहिया । एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेमिं चउत्तिह ॥ १५९ ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य । टिइ पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य ॥ १६० ॥
 सामगेवममेग तु, उकोसेण वियाहिया । पट्टमाए जहन्नेण, दसवासमहम्मिसया ॥ १६१ ॥
 तिण्णेर सागरा ऊ, उकोसेण वियाहिया । दोचाण जहन्नेण, एग तु मागरोरमा ॥ १६२ ॥
 सत्तेर सागरा ऊ, उकोसेण विगाहिया । चउत्थीए जहन्नेण, तिण्णेर मागरोरमा ॥ १६३ ॥
 दस सागरोरमा ऊ, उकोसेण वियाहिया । चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेर मागरोरमा ॥ १६४ ॥
 मत्तरम सागरा ऊ, उकोसेण वियाहिया । चउत्थीए जहन्नेण, सत्तेर मागरोरमा ॥ १६५ ॥
 चागीम सागरा ऊ, उकोसेण वियाहिया । उट्ठीए जहन्नेण, मत्तरम मागरोरमा ॥ १६६ ॥
 तेधीम सागरा ऊ, उकोसेण वियाहिया । सत्तमाए जहन्नेण, चागीस मागरोरमा ॥ १६७ ॥
 जा चेय य आयटिई, नेरइयाण वियाहिया । सा तेसिं कायटिई, जहन्नुवोसिया भवे ॥ १६८ ॥
 अणन्तकालमुक्कोम, अतोमुहुत्त जहन्नय । निजठम्मि सए काए, नेरइयाण अन्तर ॥ १६९ ॥
 एएसिं वण्णओ चेय, गन्धओ रसकासओ । सट्टाणदेमओ वावि, विहाणाइ सहम्मसो ॥ १७० ॥

पचिन्दिपत्तिरिक्खाओ, द्दुविहा ते वियाहिया ।

ममुच्छिमत्तिरिक्खाओ, गन्भवक्कन्तिया तथा ॥ १७१ ॥

दुविहा ते भवे विविहा, जलयरा थलयरा तथा । नयरा य बोधवा, तेसिं मेए सुणेए मे ॥ १७२ ॥
 मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तथा । सुसुमाराय बोधवा, पचहा जलहराहिया ॥ १७३ ॥
 लोएगदेसे ते सधे, न मबन्ध वियाहिया । एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेमिं चउत्तिह ॥ १७४ ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य । टिइ पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य ॥ १७५ ॥
 एगा य शुवणोडी, उकोसेण वियाहिया । आउटिई जलयराण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥ १७६ ॥
 पुव्वकोडिपुहच तु, उकोसेण वियाहिया । कायटिई जलयराण, अतोमुहुत्त जहन्नय ॥ १७७ ॥
 अणन्तकालमुक्कोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । निजठम्मि सए काए, जमयराण अन्तर ॥ १७८ ॥
 चउत्पया य परिमप्पा, दुविहा थलयरा भवे । चउत्पया चउत्तिहा, ते मे कियनओ सुण ॥ १७९ ॥
 गगसुग दुसुरा चेय, गण्टीपयसणहप्पया । हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाटणो ॥ १८० ॥
 भुओरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे । गोहाई गहिमाई य, एवेक्काणेगहा भवे ॥ १८१ ॥
 लोएगदेसे ते मव्वे, न सबन्ध वियाहिया । एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेमिं चउत्तिह ॥ १८२ ॥
 सतइ पप्पणाईया, अपज्जवसिया वि य । टिई पडुच्च साइया, सपज्जवसिया वि य ॥ १८३ ॥
 पलिओरमाइ तिण्णि उ, उकोसेण वियाहिया । आउटिई थलयराण, अतोमुहुत्त जहन्निया ॥ १८४ ॥
 शुवणोडिपुहचण, अन्तोमुहुत्त जहन्निया । कायटिई थलयराण, अन्तर तेसिम भवे ॥ १८५ ॥
 कालमणन्तमुक्कोम, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । निजठम्मि गण काए, थलयराण तु अन्तर ॥ १८६ ॥

चम्मे उ लोमपक्खी य, तइया ममुग्गपक्खिया ।

विययपक्खी य बोधवा, पक्खिणो य चउत्तिहा ॥ १८७ ॥

लोएगदेसे ते सधे, न मबन्ध वियाहिया । एत्तो कालविभाग तु, वोच्छं तेमिं चउत्तिह ॥ १८८ ॥

सतद्दृष्ट्या पपणाईया, अपञ्जवसियावि य । ठिई पडुच साईया, सपञ्जवसियावि य ॥ १८९ ॥
 पलिओवमस्त भागो, असखेज्जहो भवे । जाउठिई राह्यराण, अन्तोमुहुच जहन्निया ॥ १९० ॥
 असराभाग पलियस्स, उक्कोसेण उ साहिया । पुबकोडीपुहत्तेण, अन्तोमुहुच जहन्निया ॥ १९१ ॥
 ठिई राह्यराण, अन्तरे तेसिमे भवे । काल अणन्तकोम, मुक्कोस, अन्तोमुहुच, जहन्नय ॥ १९२ ॥
 एएसिं वण्णओ चेव, गन्धओ रसफासओ । सठाणदेसओ दावि, विहाणाइ महम्मसो ॥ १९३ ॥
 मणुया दुविहमेया उ, ते मे कित्तयओ सुण । समुच्छिमा य मणुया, गम्भवन्तिया तथा ॥ १९४ ॥
 गम्भवन्तिया जे उ, तिनिहा ते वियाहिया । कम्मअरुम्मभूमा य, अन्तरदीवया तथा ॥ १९५ ॥
 पन्नरम तीमविहा, मेया अट्टवीमड । मरुता उ कम्मसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥ १९६ ॥
 समुच्छिमाण एसेव, मेओ होइ वियाहियो । लोगस्स पगदेमम्मि, ते सव्णे वि वियाहिया ॥ १९७ ॥
 सतद्दृष्ट्या पपणाईया, अपञ्जवसियावि य । ठिई पडुच साईया, सपञ्जवसियावि य ॥ १९८ ॥
 पलिओवमाउ तिण्णवि, अमरोज्जहो भवे । जाउठिई मणुयण, अन्तोमुहुच जहन्निया ॥ १९९ ॥
 पलिओवमाइ तिण्ण उ, उक्कोसेण उ साहिया । पुबकोटिपुहत्तेण, अन्तोमुहुच जहन्निया ॥ २०० ॥
 कायठिई मणुयाण, अन्तर तसिम भवे । अणन्तकालमुवोम, अन्तोमुहुच जहन्नय ॥ २०१ ॥
 एएसिं, वण्णओ चेव, ग धओ रसफामओ । सठाणदेमओ दावि, विहाणाइ सहम्मसो ॥ २०२ ॥
 देवा चउव्विहा बुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण । भोमिज्जवाणमन्तरजोउसवेमाणिया तथा ॥ २०३ ॥
 दसहा उ भवणगसी, अट्टहा वणचारिणो । पचविहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तथा ॥ २०४ ॥
 असुरा नागमुवण्णा, विज्जू अग्गी वियाहिया ।
 दीवोदहिदिसा वाया, धणिया भरणवासिणो ॥ २०५ ॥
 पिसायभूया जक्करा य, खरुसा किन्नरा किंपुरिसा ।
 महोरगा य गन्धवा, अट्टविहा वाणमन्तरा ॥ २०६ ॥
 चन्दा सरा य नक्खत्ता, गहा ताराणा तथा ।
 टिया विचारिणो चेव, पचहा जोइसालया ॥ २०७ ॥
 वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । कप्पोवगा य वोधरा, कप्पाईया तदेव य ॥ २०८ ॥
 कप्पोवगा धारसहा, सोइम्मीसाणा तथा । सणक्कमारमाहिन्दबम्भलोगा य सन्तगा ॥ २०९ ॥
 महासुक्का सहस्सारा, आणया पाणया तथा । आरणा अञ्जुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥ २१० ॥
 कप्पाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया । गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥ २११ ॥
 हेट्ठिमा हेट्ठिमा चेव, हेट्ठिमा मज्झिमा तथा । हेट्ठिमा उवरिमा चेव, मज्झिमा हेट्ठिमा तथा ॥ २१२ ॥
 मज्झिमा मज्झिमा चेव, मज्झिमा उवरिमा तथा ।
 उवरिमा हेट्ठिमा चेव, उवरिमा मज्झिमा तथा ॥ २१३ ॥
 उवरिमा उवरिमा चेव, इय गेविज्जागा सुरा । विजया वेजयन्ता य, जयन्ता अपराजिया ॥ २१४ ॥
 सब्बसिद्धगा चेव, पचहाणुत्तरा सुरा । इय वेमाणिया एएण्णेगहा एवमायओ ॥ २१५ ॥
 लोगस्स एण्णदेसम्मि, ते सब्बे वियाहिया । इत्तो कालविभाग तु, बुच्छ तेसिं चउव्विहं ॥ २१६ ॥
 सतद्दृष्ट्या पपणाईया, अपञ्जवसियावि य । ठिई पडुच साईया, सपञ्जवसियावि य ॥ २१७ ॥

- साहीय सागर एक, उक्कोसेण ठिई भवे । भोमेजाणं जहन्नेण, दमवाससहस्मिया ॥ २१८ ॥
 पलिओममेग तु, उक्कोसेण ठिई भवे । पन्तराण जहन्नेण, दमवाससहस्मिया ॥ २१९ ॥
 पलिओवममेग तु, घासलक्खेण साहिय । पन्तिओममट्टमागो, जोइसेसु जहन्निया ॥ २२० ॥
 दो चैय सागरउड, उक्कोसेण नियाहिया । सोहम्मम्मि जहन्नेण, एग च पलिओम ॥ २२१ ॥
 सागर साहिया दुन्नि, उक्कोसेण नियाहिया । ईसाणम्मि जहन्नेण, साहिय पलिओम ॥ २२२ ॥
 सागराणि य सत्तेय, उक्कोसेण ठिई भवे । सणकुमार जहन्नेण, दुन्नि उ मागरोवमा ॥ २२३ ॥
 साहिया सागरा मत्त, उक्कोसेण ठिई भवे । माहिन्दम्मि जहन्नेण, साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२४ ॥
 टस चैय मागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । उम्मलोण जहन्नेण, गत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥
 चउदस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । लन्तगम्मि जहन्नेण, टय उ सागरोवमा ॥ २२६ ॥
 सत्तरस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । महागुके जहन्नेण, चोदस सागरोवमा ॥ २२७ ॥
 अट्टारस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । सहस्मारम्मि जहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा ॥ २२८ ॥
 सागर अउणतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । आणयम्मि जहन्नेण, अट्टारस सागरोवमा ॥ २२९ ॥
 वीम तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । पाणयम्मि जहन्नेण, सागरा अणतीसई ॥ २३० ॥
 सागरा इक्कीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । आरणम्मि जहन्नेण, वीसई सागरोवमा ॥ २३१ ॥
 चावीम सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । अञ्चुयम्मि जहन्नेण, सागरा इक्कीसई ॥ २३२ ॥
 तेवीम सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । पठमम्मि जहन्नेण, चातीस सागरोवमा ॥ २३३ ॥
 चउवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । विइयम्मि जहन्नेण, तेवीस सागरोवमा ॥ २३४ ॥
 पणवीम सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । तह्य जहन्नेण, चउवीस सागरोवमा ॥ २३५ ॥
 छवीस सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । चउत्यम्मि जहन्नेण, सागरा पणुवीसई ॥ २३६ ॥
 सागरा मचवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । पञ्चमम्मि जहन्नेण, सागरा उ उवीसई ॥ २३७ ॥
 सागरा अट्टवीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । छट्ठम्मि जहन्नेण, सागरा सत्तवीसई ॥ २३८ ॥
 सागरा अउणतीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । सत्तमम्मि जहन्नेण, सागरा अट्टवीसई ॥ २३९ ॥
 तीम तु सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । अट्टमम्मि जहन्नेण, सागरा अउणतीसई ॥ २४० ॥
 सागरा इक्कीस तु, उक्कोसेण ठिई भवे । नवमम्मि जहन्नेण, तीसई सागरोवमा ॥ २४१ ॥
 तेत्तीसा सागराइ, उक्कोसेण ठिई भवे । चउसुपि विजयाईसु, जहन्नेणेक्कीसई ॥ २४२ ॥
 अजहन्नमणुक्कोमा, तेत्तीस सागरोवमा । महाविभाणे सब्बेट्ठे, ठिई एसा नियाहिया ॥ २४३ ॥
 जा चैय उ आउठिई, देवाण तु वियाहिया । सा तेसि कायठिई, जहन्नेणेक्कीसिया भवे ॥ २४४ ॥
 अणन्तकालमुक्कोस, अन्तोमुहुत्त जहन्नय । त्रिजट्टम्मि सए काए, देवाण हुज्ज अन्तर ॥ २४५ ॥
 एएमि वण्णओ चैय, गन्धओ रमफायओ । सठाणदेसओ चावि, विहाणाइ सहम्मसो ॥ २४६ ॥
 समारत्थाय सिद्धा य, इय जीवा नियाहिया । रुविणो चैयन्त्री य, अजीवा दुदिहायि य ॥ २४७ ॥
 इय जीमजीने य, मोच्चा सइदिउण य । सव्वनपाणमणुमए, रमेज्ज सजमे मुणी ॥ २४८ ॥
 तओ बह्णि वासाणि, सामण्णमणुपालिय । इमेण कम्मजोगेण, अप्पाण मलिदे मुणी ॥ २४९ ॥
 नारसेण उ वासाइ, सलेहुक्कोसिया भवे । उम्मासा य जहन्निया ॥ २५० ॥

पठम नामचउक्कम्मि, त्रिगई-निज्जहण करे । विईए नामचउक्कम्मि, त्रिवित्त तु तव चरे ॥ २५१ ॥
 एगन्तरमायाम, कइइ सवच्छरे दवे । तओ सवच्छरइ तु, नाइविगइ तव चरे ॥ २५२ ॥
 तओ मअउइइ तु, त्रिगिइ तु तव चरे । परिमिय चेव आयाम, तम्मि मवच्छरे करे ॥ २५३ ॥
 कोडी सहियमायाम, कइइ, सवच्छरे म्णणी । मासइमासिणण तु, आहारेण तव चरे ॥ २५४ ॥
 इन्दप्पमामिओग च, किञ्चित्तिय मोहमासुरुत्त च ।

एयाउ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥ २५५ ॥

मिउाटमणरत्ता, सनियाणा उ हिमगा । इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुइहा बोही ॥ २५६ ॥
 मम्मइसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा । इय जे मरन्ति जीवा, तेसिं सुलहा भव बोही ॥ २५७ ॥

मिउाटसणरत्ता, सनियाणारुण्हेसमोगाढा ।

इय ज मरन्ति जीवा, तेसिं पुण दुइहा बोही ॥ २५८ ॥

जिणवयणे अपुगत्ता, जिणवयण करेन्ति भावेणा । अमला अमद्धि लिट्ठा, ते होन्ति परिचसमारी ॥ २५९ ॥

चालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य वट्ठणि ।

मरिहन्ति ते पराया जिणवयण जे न जाणन्ति ॥ २६० ॥

एव आगमविज्जाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही । एणणारणेण, अरिहा गालोयण सोउ ॥ २६१ ॥

इन्दप्पवुकुयाड, तह सीलमहाउहमणचिगहाड । विमहावेन्तोचि पर, इन्दप्प भावण कुणइ ॥ २६२ ॥

मन्ताओग काउ, भूईकम्म च जे पउजन्ति । माय-रम-इद्धिइउ अभिओम भावण कुणइ ॥ २६३ ॥

नाणस्म कउलीण, धम्मायरियस्स सइसाहण । माइ अरण्णरई, किञ्चित्तिय भावण कुणइ ॥ २६४ ॥

अणुवदुगेमपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसवी।एणहि वारणेहि, आसुरिय भावण कुणइ ॥ २६५ ॥

सत्थगहण विसभक्कवण च जलण च जलपवेसो य ।

अणायारमण्डसेवा, जम्मणमरणाणि वधन्ति ॥ २६६ ॥

इय पाणर कुद्रे, नायए परिनि पुए । छत्तीस उत्तरज्जाए, भवसिद्धीयसवुडे ॥ २६७ ॥

त्ति वेमि ॥ जीवाजीवविभक्ती ममत्ता ॥ ३६ ॥

॥ इअ उत्तरज्जयण मुत्त समत्त ॥



॥ णमो समणस्स भगवओ महावीरम्म ॥

॥ सिरि-दसवेआलियं-सुत्तं ॥

॥ दुमपुप्फिया पढम अज्झयण ॥

पम्मो भगलमुक्किट्ठ, अहिंसा सजमो तवो । देवा वि त नममत्ति, जस्म धम्मे मया मणो ॥ १ ॥
जहा दुमम्म पुप्फेसु, भमरो आवियड रस । ण य पुप्फ किलामेड, मो अ पीणेड अप्पय ॥ २ ॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोण सति साहुणो । विहगमा र पुप्फेसु, दाणमत्तेसणे ग्या ॥ ३ ॥
वय च विचिं लामामो, ण य कोड उवहम्मड । जहागडेसु रीयते, पुप्फेसु ममरा जहा ॥ ४ ॥
महुगा (३) रसमा बुद्धा, जे भवति जणिस्मिया । नाणपिटरया दत्ता, नेण उच्चति माहुणो ॥ ५ ॥
त्ति वेमि ॥ दुमपुप्फिया पढममज्झयण ममत्त ॥

॥ अह नामणणपुत्तय दुडअ अज्झयण ॥

कह नु बुद्धा सामण्ण, जो कामे न निरागए । पए पण तिसीअतो, सप्पस्स वस गओ ॥ १ ॥
पत्थगधमलकार, इत्थीओ मयणाणि य । अछटा जे न भुजति, न से चाट ति उच्चड ॥ २ ॥
जे य न्ते पिए भोए, लद्धे वि पिट्ठि वुद्ध । माहीणे चयड भोण, मे ह्नु चाड ति उच्चड ॥ ३ ॥
ममाइ पहाड परिब्वयतो, सिया मणो निम्मरई वरिद्धा ।
न मा महं नोवि अह वि तीसे, इच्चेय ताओ विणज्ज राग ॥ ४ ॥
आयाययाही चय भोगमल्ल, कामे कमाहि कमिय सु दृक्कर ।
डिंदाहिं दोस विणएज्ज रागं, एर सुही होहिसि सपराण ॥ ५ ॥
पक्करट जलिय जीड, धूमकंड दुरासय । नेउति उतय भोत्तु, इले जाया अधगणे ॥ ६ ॥
धिरत्थु तेज्जमोसामी, जो त जीवियकारणा । वत्त इच्छसि आवेउ, सेय ते मण भवे ॥ ७ ॥
अह च भोगरायस्स त चउसि अधगविण्हणो । मा वुले गधणा होमो, सजम निहुओ चर ॥ ८ ॥
जइ त काहिसि भाव, जा जा दिच्छसि नारिओ । वायाविट्ठो व ह्नुओ, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥
तीमे मो वयण सोधा, सजयाइ सुभासिय । अट्ठसेण जहा नागो, धम्मे सपटिवाड्यो ॥ १० ॥
एव करति सबुद्धा, पटिया पवियक्कणा । विणियट्ठति भोगेसु, जहा से परिमुत्तमो ॥ ११ ॥
त्ति वेमि ॥ इअ नामणणपुत्तय नाम अज्झयण ममत्त ॥

॥ अह खुड्ढयायारकहा तइम अज्झयण ॥

संजमे सुद्धिअप्पाण, विप्पसुवाण ताइण । तेसिमेयमणाइण्ण, निग्गथाण्ण महेसिण्ण ॥ १ ॥
उहेसिय कीयगट, नियागमभिहडाणिय । राइभत्ते सिणाणे य, गधमछे य वीयणे ॥ २ ॥
सनिही गिहिमत्ते य, रायपिंडे किमिच्छए । सवाहणा दतपद्दोयणा य, सपुच्छणा देइपलोयणा य ॥ ३ ॥
अट्टानए य नालीए, छत्तस्म य वारणट्टाए । तेगिच्छ पाइणापाण, समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥
सिज्जायारपिट च, आसदीपलियकए । गिहतरनिसिज्जा य, गायस्सुवट्टणाणि य ॥ ५ ॥
गिहिणो वेआउडिय, जा य आजीउत्तिया । तच्चानिच्छुडभोइत्त, आउरम्सरणाणि य ॥ ६ ॥
मूलण सिंगवेरे य, उच्छुखडे अनिच्छुडे । कदे मूले य सच्चित्ते, फले धीए य आमए ॥ ७ ॥
सोवघळे सिंघवे लोणे, रोमालोणे य आमए । समुद्दे पसुत्तारे य, कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धुवणे त्ति उमणे य, वत्तीरुम्भविरेयणे । अजणे दत्तणे य, गायम्भगविभूसणे ॥ ९ ॥
सवमेयमणाइअ, निग्गथाण महेसिण्ण । सजमम्मि अ जुत्ताण, लहुभूयविहारिण ॥ १० ॥
पचासउपरिण्णाया, तिगुत्ता छसु सजया । पचनिग्गहणा धीरा, निग्गथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
आथावयत्ति गिन्हेसु, हेमतेसु अवाउडा । चासासु पडिसलीणा, सज्जया सुममाहिया ॥ १२ ॥
परीमहरिउदता, धूमोहा जिइदिया । सब्बदुक्खपहीणट्टा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥
दुक्काइ करित्ताण, दुस्महाइ सहित्तु य । केइत्थ देवलोएसु, केइ सिज्जन्ति नीरया ॥ १४ ॥
उवित्ता पुवकम्माइ, सज्जमेण तवेण य । सिद्धिभग्गमणुत्पत्ता, ताइणो परिणिउडे ॥ १५ ॥
त्ति वेमि ॥ इअ खुड्ढयायारकहा नाम तट्ठयमज्जयण ॥

॥ अह छज्जीवणियानाम चउत्थ अज्झयण ॥

सुअ मे आउसत्तेण भगवया एवमक्खाय, इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ १ ॥ कयरा खलु साछज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ २ ॥ इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कामवेण पवेइया सुअक्खाया सुपन्नत्ता सेअ मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपण्णत्ती ॥ तज्जहा—पुढविकाइया १, आउकाइया २, तेउकाइया ३, वाउकाइया ४, वणस्सइकाइया ५, तसकाइया ६ । पुढवी चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण । आऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण । वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण । वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण । वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण । तज्जहा—अग्गणीया, मूलणीया, पोरणीया, खघवीया, वीयरुहा, समुच्छिमा, तणलया, वणस्सइकाइया, सपीया चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएण । से जे पुण इमे

अणोमे बहवे तसा पाणा, तजहा-अडया, पोयया, जराउया, रसया, ससेइमा, समुच्छिमा उन्मिया उत्राडया, जेर्मि केर्सिचि पाणाण, अभिक्कत, पडिक्कत, सक्कुचिय, पसारिय, रुय, भत, तसिय, पलाइय आमडगइविन्नाया, जे अ कीडपयद्दा, जा य कुधुपिपीलिया, सवे वेइदिया, सवे तेइदिया, सवे चउरिंदिया, सवे पचिंदिया, मवे तिरिक्कजोणिया, सवे नेरइया, मवे मणुआ, सवे टेना, मवे पाणा, परमाहम्मिया, एमो खलु उट्टो जीवनिआओ तमकाओ चि पमुच्चइ । इचेमिं छण्ह जीवनि कायाण चेय सय दड समारभिज्जा, नेवन्नेहिं दड समारभाविज्जा, दट ममारभन्ते वि अक्षे न समणुजाणामि, जावज्जीराण तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भते पडिक्कमामि निन्दांमि गरिहामि अप्पाण गोमरामि ॥

पट्टमे भन्ते ! महव्वए पाणाइयायाओ वेरमण । सबं भन्ते ! पाणाइयाय पच्चक्खामि । से सुट्टम वा, चापर वा, तस वा, थार वा, नेय सय पाणे अइवाइज्जा, नेयन्नेहिं पाणे अइयायाविज्जा, पाणे अइवायन्तेऽपि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीराण तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते ! पडिक्कमामि निन्दांमि गरिहामि अप्पाण गोमरामि । पट्टमे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइयायाओ वेरमण ॥ १ ॥

अहाउरे दुचे भन्ते ! महव्वए म्मसायायाओ वेरमण । सबं भन्ते ! मुसावाय पच्चक्खामि । से कोदा वा, लोदा वा, मया वा, हासा वा, नेय सय मुस वइज्जा, नेयन्नेहिं मुम यायाविज्जा, मुस वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीराण तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दांमि गरिहामि अप्पाण गोमरामि । दुचे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण ॥ २ ॥

अहाउरे तचे भन्ते ! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण । सबं भन्ते ! अदिन्नादाण पच्चक्खामि । से गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, अप्प वा, वहु वा, अणु वा, धूल वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा, नेय सय अदिन्न गिण्हिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्न गिण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीराण तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दांमि गरिहामि अप्पाण गोमरामि । तचे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥ ३ ॥

अहावरे चउरथे भन्ते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमण । सबं भन्ते ! पच्चक्खामि । से दिव वा, माणुस वा, तिरिक्कजोणिय वा, नेय सय मेहुण सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुण सेयाविज्जा, मेहुण सेयन्ते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवरण तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दांमि गरिहामि अप्पाण गोमरामि । चउरथे भन्ते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण ॥ ४ ॥

अहावरे पञ्चमे भन्ते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमण । सबं भन्ते ! परिग्गह पच्चक्खामि । से अप्प वा, बहु वा, अणु वा, धूलं वा, चित्तमत वा, अचित्तमत वा । नेय सय परिग्गह परिगिण्हिज्जा,

नेवन्नेहि परिग्गह परिगिण्हन्ते वि अन्ने न समणुज्जाणिज्जा जावज्जीनाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न समणुजाणामि, तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । पञ्चमे भन्ते ! महन्नाए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥ ८ ॥

अहाररे छट्ठे भन्ते ! वए राइभोअणाओ वेरमण ! मच्च भन्ते ! राइभोयण पच्चक्खामि । से अमण वा, पाण वा, खाइम वा, साइमं वा । नेव सय राइ भुजिज्जा, नेव राइ भुजिज्जा, नेवन्नेहि राइ भुवाविज्जा, तइ भुजतेऽवि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीनाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणावि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि । छट्ठे भन्ते ! वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राइभोअणाओ वेरमण ॥६॥ इच्चेयाइ पच्चमहवयाइ राइभोअणवेरमणछट्ठाइ अत्तिहियाट्ठियाए उवसपज्जिच्चा ण विहरामि ॥

से भिकवू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुचे वा, जागरमाणे वा, से पुट्ठिं वा, भिच्चिं वा, सिल वा, लेट वा, समरक्ख वा काय, ससरक्ख वा वत्थ, हत्थेण वा, पाएण वा, कट्ठेण किलिच्चेण वा, अगुलियाए वा, सिलागाए वा, सिलागहत्थेण वा न आलिहिज्जा, न विलिहिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिदिज्जा, अन्न न आलिहाविज्जा, न विलिहाविज्जा, न घटाविज्जा, न भिदाविज्जा, अन्न आलिहत्त वा, विलिहत्त वा, घट्टत्त वा, भिदत्त वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीनाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण होमरामि ॥ १ ॥

से भिकवू वा, भिक्खुणी वा सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुचे वा, जागरमाणे वा, से उदग वा, ओम वा, हिम वा, महिय वा, करण वा, हरिगणुग वा, सुद्धोदग वा, उदउल्ल वा वत्थ, ससिणिद्ध वा काय, ससिणिद्ध वा वत्थ न आमुसिज्जा, न सफुसिज्जा, न आवील्लिज्जा, न परील्लिज्जा, न अक्खोडिज्जा, न पक्खोडिज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्न न आमुसाविज्जा, न सफुसाविज्जा, न आवीलाविज्जा, न परीला विज्जा, न अक्खोविज्जा, न पक्खोडाविज्जा, न आयाविज्जा, न पयाविज्जा, अन्न आमुसत्त वा, सफुसत्त वा, आवीलत्त वा, परीलत्त वा, अक्खोडत्त वा, पक्खोडत्त वा, आयावन्त्त वा, पयावन्त्त वा न समणुजाणिज्जा, जावज्जीनाए, तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥२॥

से भक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुचे वा, जागरमाणे वा, से अगणि वा, इगाल वा, सुम्मुर वा, अच्चि वा, जाल वा, अलाय वा, सुद्धागणि वा, उक्क वा, न उज्जिज्जा, न घट्टिज्जा, न भिदिज्जा, न उज्जा- निज्जा, न पज्जालिज्जा, न निवाविज्जा, अन्न न उज्जाविज्जा, न घटाविज्जा, न भिदाविज्जा, न

उज्जालाविज्जा, न पज्जालाविज्जा, न निव्वाविज्जा, अन्न उज्जन्त वा, घटत वा, भिदत वा, उज्जालत वा, पज्जालत वा, नि वावत वा, न समणुजाणिज्जा जावज्जीराए त्तिविह त्तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ३ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, मज्जयविरयपडिहयपच्चक्रायपायकम्म, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, ने सिएण वा, विट्ठुयणेण वा, तालियदेण वा, पत्तेण वा, पत्तभणेण वा, साहाए वा, साहाभणेण वा, पिट्ठुणेण वा, पिट्ठुणलत्थेण वा, चेलेण वा, चेलरुत्थेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा, अप्पणो वा काय, बाहिर वा वि पुग्गल न फुमिज्जा, न वीएज्जा, अन्न न फूमाविज्जा, न वीजाविज्जा, अन्न फूमत वा, वीअत वा न समणुजाणिज्जा जावज्जीराए त्तिविह त्तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतपि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ४ ॥

ने भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, सजयविरयपडिहयपच्चक्रायपायकम्म, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से वीएसु वा, वीयपइट्ठेसु वा, रुदेसु वा, रुदपइट्ठेसु वा, जाएसु वा, जायपइट्ठेसु वा, हरिएसु हरियपइट्ठेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नेसु वा, छिन्नपइट्ठेसु वा, मच्चिसेसु वा, सच्चिक्कोलपडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा, न चिट्ठेज्जा, न निसीइज्जा, न तुअट्ठिज्जा, अन्न न गच्छाविज्जा, न चिट्ठाविज्जा, न निसीआविज्जा, न तुअट्ठाविज्जा, अन्न गच्छत वा, चिट्ठत वा, निसीअत वा, तुयइत वा न समणुजामि जावज्जीराए त्तिविह त्तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि । तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाण वोसरामि ॥ ५ ॥

से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, मज्जयविरयपडिहयपच्चक्रायपायकम्म, दिआ वा, राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा, जागरमाणे वा, से कीड वा, पयग वा, कुटु वा, पिपीलिय वा, हत्थसि वा, पायसि वा, नहुसि वा, उरुसि वा, उदरसि वा, सीससि वा, वत्थसि वा, पडिग्गहसि वा, अबलसि वा, पायपुच्छणसि वा, रयहरणसि वा, गुच्छमसि वा, उडगसि वा दडगसि वा, पीडगसि वा, फलगसि वा, सवारगसि वा, अन्नयरसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ सजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमडिज्जअ एगतभरणिज्जा, नो ण मघायमावज्जिज्जा ॥ ६ ॥

अजय चरमाणो अ, पाणभूयाड हिंसइ । बन्धइ पायय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ १ ॥
 अजय चिट्ठमाणो अ, पाणभूयाड हिंसइ । बधइ पायय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ २ ॥
 अजय आसमाणो अ, पाणभूयाड हिंसइ । बन्धइ पायय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ३ ॥
 अजय सयमाणो अ, पाणभूयाड हिंसइ । उधइ पायय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ४ ॥
 अजय भुजमाणो अ, पाणभूयाड हिंसइ । बधइ पायय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ५ ॥
 अजय भाममाणो अ, पाणभूयाड हिंसइ । पायय कम्म, त से होइ कडुअ फल ॥ ६ ॥

कह चरे कह चिट्ठे, रुहमाण कह सण । कह भुजन्तो भामतो, पायकम्म न बघइ ॥ ७ ॥
 जय चर जय चिट्ठे, जयमास जय सण । जय भुजन्तो भासतो, पायकम्म न बघइ ॥ ८ ॥
 सबभूयप्पभूयस्स, सम्म भूयाइ पासओ । पिहिआसवस्स दतस्स, पायकम्म न बघइ ॥ ९ ॥
 पढम नाण तओ दया, एव चिट्ठइ सबमजए । अन्नाणी कि काही, किं वा नाही सेयपायग ॥ १० ॥
 सोचा जाणइ कछाण, सोचा जाणइ पावग । उभय पि जाणइ सोचा, ज सेय त समायरे ॥ ११ ॥
 जो जीवे वि न याणइ, अजीवे वि न याणइ । जीवाजीवे अयाणतो, कह मो नाहीइ सजम ॥ १२ ॥
 जो जीवे वियाणइ, अजीवे वि रियाणइ । जीवाजीवे वियाणतो, तो हु नाहीइ सजम ॥ १३ ॥
 जय जीवमजीवे य, दोवि एण रियाणइ । तथा गइ बहुविह, सब जीयाण जाणइ ॥ १४ ॥
 जया गइ बहुविह सबजीयाण जाणइ । तथा पुण्ण च पाय च, बंध मुक्क च जाणइ । १५ ॥
 जया पुण्ण च पाय च, नध मुक्क च जाणइ । तथा निर्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
 जया निर्विदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे । तथा चयइ सजोग, गन्मिन्तर चाहिर ॥ १७ ॥
 जया चयइ सजोग, सन्मिन्तर चाहिर । तथा मुड भविचाण, पवइए अणगारिय ॥ १८ ॥
 जया मुडे भविचारण, पवइए अणगारिय । तथा मरमुक्किट्ट, कम्म फासे अणुत्तर ॥ १९ ॥
 जया मरमुक्किट्ट, कम्म फासे अणुत्तर । तथा धुगइ कम्मगय, अवोहिक्कलुम कड ॥ २० ॥
 जया धुणइ कम्मरय, अवोहिक्कलुस ऱड । तथा मरत्तग नाण, दमण चाभिगच्छइ ॥ २१ ॥
 जया सच्चत्तग नाण, दसण चाभिगच्छइ । तथा लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥
 जया लोगमलोग च, जिणो जाणइ केवली । तथा जोगे निरुभित्ता, सेलेसि पडियअइ ॥ २३ ॥
 जया जोगे निरुभित्ता, सेलेसि पडियअइ । तथा कम्म राविचाण, सिद्धि गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥
 जया कम्म राविचाण, सिद्धि गच्छइ नीरओ । तथा लोगमत्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासओ ॥ २५ ॥

गृह सायगस्स समणस्स, मायाउलगस्स निगामसाइस्स ।

उच्छोलणापहोअस्स, दुल्लहा सुगई तारिसगस्स ॥ २६ ॥

तनेगुणपहाणस्स, उज्जुमइ ग्वन्तिमजमरयस्स ।

परीमहे जिणतस्स, सुलहा सुगई तारिसगस्स ॥ २७ ॥

पन्हा वि ते पयाया, सिप्प गच्छति अमरभवणाइ ।

जेसि पिओ तगे सजमो अ, खती अ वमचर च ॥ २८ ॥

हचेय छज्जीणअ, मम्मदिट्ठी सया जए ।

दुल्लह लहित्तु सामण्ण, कम्म्युणा न विराहिजासि ॥ २९ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ छज्जीवणिआ णाम चउत्थ अज्जप्रयण समत्त ॥ ४ ॥

॥ अह पिंडेसणा णाम पचमज्झयण ॥

सपत्ते भिक्खुक्कालम्मि, अमंभतो अमुच्छिओ । इमेण कमजोगेण, भत्तपाण भवेम ॥ १ ॥
 से गामे वा नगरे वा, गोअरग्गमओ मुणी । चरे मदमणुविग्गो, अब्बिउत्तेण वेअसा ॥ २ ॥
 पुरओ जुगमायाए, पेइमाणो महि चरे । वज्जतो सीअहरियाइ, पाणे अग्गमट्टिअ ॥ ३ ॥
 ओनाय विसम खाण, विज्जल परिउज्जण । सरुमेण न गच्छिजा, विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥
 पण्डिते व से तत्थ, पण्डिते न मज्जए । हिंसेज्ज पाणभूयाइ, तसे अट्टुअ धारर ॥ ५ ॥
 तम्हा तेण न गच्छिजा, मज्जण सुममाहिए । सह अप्पेण भग्गेण, जयमेव परक्कमे ॥ ६ ॥
 इमाणे उरिय रणिं, तुमरासिं च गोमय । समरक्खेहिं पाएहिं, संजओ त नइक्कमे ॥ ७ ॥
 न चरेज्ज वासे वामते, महियाए पटणिण । महाणाए व वायते, तिरीच्छमपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
 न चरंज्ज वेससामते, चमचेरवमाणुए । चमयारिस्स दतस्स, होज्जा तत्थ विमोहिआ ॥ ९ ॥
 अणाययणे चरतस्स, समग्गीए अमिक्खए । होज्ज वयाणं पीला, सामणम्मि अ समओ ॥ १० ॥
 तम्हा पथ विआणित्ता, दोस दग्गइउट्टण । वज्जण वेमसामन्त, मुणी एगतमम्मिण ॥ ११ ॥
 माण वइअ गार्णि, टिच गोण ह्य गय । मडिभ ऋतेह जुद्ध, दूओ परिउज्जए ॥ १२ ॥
 अणुत्तण नात्रणए, अप्पट्टिहे अणाउले । इट्टिआइं जहाभाग, दमइत्ता मुणी चरे ॥ १३ ॥
 ददवस्स न गच्छेज्जा, भाममाणो अगोचर । हमन्तो नाभिगच्छेज्जा, कुल उच्चारय मया ॥ १४ ॥
 आलोअ थिग्गल ढार, सधिं दगभन्नणाणि अ । चरन्तो न विणिज्जाण, सण्डण विउज्जए ॥ १५ ॥
 रतो गिहमईण च, रहम्मारविस्सयाण य । सत्तिमेमर ठाण, दूओ परिउज्जए ॥ १६ ॥
 पडिउट्ट कुठ न पविसे, माभग परिउज्जए । अचियत्त कुल न पविसे, चियत्त पविसे कुल ॥ १७ ॥
 सार्णापाजारपिहिअ, अप्पणा नात्रपगुर । क्काड नो पणुत्तिज्जा, उग्गाहसि अणाइआ ॥ १८ ॥
 गोअरग्गपविट्ठो अ, उच्चमुत्त न धाग्ग । जोगाम फामुअ नद्या, अणुत्तविय वोसिरे ॥ १९ ॥
 पीय दुवार तमस, कुट्टग परिवज्जण । अचक्खुत्तिमओ जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥ २० ॥
 जत्थ पुप्फाड वीआइ, निप्पट्टाट्ट रोट्टण । अहुणोत्तित्त उल्ल, ददट्टण परिवज्जण ॥ २१ ॥
 एरग दाग्ग साण, वच्छग वा नि कुट्टण । उल्लधिआ न पविसे, निउत्तिचाण व सज्जण ॥ २२ ॥
 अससत्त पलोइज्जा, नाइदूगलओअए । उप्फुल्ल न विणिज्जाण, निपट्टिअ अयपिरो ॥ २३ ॥
 अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोअरग्गमओ मुणी । कुलम्म भूमिं जाणिना, मिअ भूमिं परक्कमे ॥ २४ ॥
 तत्थ पडिलेहिज्जा, भूमिभागविअरुत्तो । सिणाणस्स य वच्चस्स, सलोग परिवज्जए ॥ २५ ॥
 दगमट्टिअआयाणे, वीआणि हरिआणि अ । परिउज्जतो चिट्ठिजा, सविदिअसमाहिए ॥ २६ ॥
 तत्थ मे चिट्ठमाणस्स, आहाणे पाणभोअण । अक्खिअ न इच्छिज्जा, पटिगाहिज्ज ऋप्पिअ ॥ २७ ॥
 आणाग्गन्ती सिआ तत्थ, परिसाडिज्ज भोअण । दिंतिअ पडिआक्कमे, न मे उप्पड तारिस्स ॥ २८ ॥
 समइमाणो पाणाणि, वीआणि हरिआणि अ । अमज्जमरिं नच्चा, तारिस्सिं परिवज्जए ॥ २९ ॥
 साहडु निक्खिउत्तिचा ण, मच्चिच घट्टियाणि य । तहेव ममणुत्ताए, उदग सपणुत्तिलया ॥ ३० ॥

- ओगाहृत्ता चलङ्ता, आहारे पाणभोजण । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ३१ ॥
 पुररुम्मेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ३२ ॥
 एव ञ्दउल्ले मसिणिद्धे, ससरक्खे मड्डिआओसे । हरिआले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे ॥ ३३ ॥
 गेरुअवन्निअसेदिअ, सोरट्टिअपिट्टुकुकुसकए अ । उक्किट्टमससट्टे, ससट्टे चैव बोद्धन्वे ॥ ३४ ॥
 अससट्टेण हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा । दिज्जमाण न इच्छिज्जा, पच्छाकम्म जहिं भवे ॥ ३५ ॥
 समट्टेण य हत्थेण, दब्बीए भायणेण वा । दिज्जमाण पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥ ३६ ॥
 दुण्ह तु भुजमाणण, एमी तत्थ निमतए । दिज्जमाण न इच्छिज्जा, छद से पडिलेहए ॥ ३७ ॥
 दुण्ह भुजमाणण, दो वि तत्थ निमतए । दिज्जमाण पडिच्छिज्जा, ज तत्थेसणिय भवे ॥ ३८ ॥
 गुच्छिणीए उरण्णत्थ, विविह पाणभोजण । भुजमाण विवज्जिज्जा, भुत्तसेस पडिच्छए ॥ ३९ ॥
 सिआ य समणट्टाए, युच्चिणी कालमासिणी । उट्टिआ वा निसीइज्जा, निसन्ना वा पुणुट्टए ॥ ४० ॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४१ ॥
 थणग पिज्जमाणी, दाग वा हुमारिअ । त निक्खिवित्तु रोअत, आहारे पाणभोजण ॥ ४२ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४३ ॥
 ज भवे भत्तपाण तु, कप्परुप्पम्मि मक्किंय । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ४४ ॥
 दगवारण पिहिअ, नीमाए पीढएण वा । लोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण वा केणइ ॥ ४५ ॥
 त च उट्ठिअदिआ दिज्जा, ममणट्टा एव दावए । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ४६ ॥
 अमण पाणग वावि, खाइम माइम तथा । ज जाणिज्जा सुणिज्ज वा, दाणट्टा पगड इम ॥ ४७ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ४८ ॥
 अमण पाणग वावि, खाइम साइम तथा । ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, पुण्णट्टा पगड इम ॥ ४९ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ५० ॥
 अमण पाणग वावि, खाइम साइम तथा । ज जाणिज्जा सुणिज्जा वा, वणिमट्टा पगड इम ॥ ५१ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिस ॥ ५२ ॥
 असण पाणग वावि, खाइम माइम तथा । ज जाणिज्ज सुणिज्जा वा, समणट्टा पगड इम ॥ ५३ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ५४ ॥
 उदेसिय कीयगड, पूइरुम्म च आहड । अज्झोअरपामिच्च, मीमजाय विवज्जण ॥ ५५ ॥
 उगम से अ पुच्छिज्जा, कम्मट्टा वण वा ऱ्हा । सुचा निस्सकिय सुद्ध, पडिगाहिज्ज सजए ॥ ५६ ॥
 असण पाणग वावि, खाइम माइम तथा । पुप्फेसु हुज्ज उम्मीम, चीएसु हरिणसु वा ॥ ५७ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, सजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ५८ ॥
 अमण पाणग वावि, खाइम साइम तथा । उदगम्मि हुज्ज निक्खिअत्त, उच्छिगणण्येसु वा ॥ ५९ ॥
 त भवे भत्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिम ॥ ६० ॥

अमण पाणग वावि, खाइम साइम तथा ।

उम्मि (अगणिग्मि) होज निक्खिअत्त, त च सगट्टिआ दण ॥

॥ ६१ ॥

त भवे भक्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआउक्खे, न मे रूपइ तारिम ॥ ६२ ॥
 एण उम्मिकिया ओमकिया, उज्जालिआ पज्जालिआ निवाविया ।
 उरिंसचिया निरिंसचिया, उववत्तिया (उवत्तिया)ओमारिया दण ॥ ६३ ॥
 त भवे भक्तपाण तु, मजयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआउक्खे, न मे रूपइ तारिम ॥ ६४ ॥
 हुज्ज वट्ट सिल वावि, इट्ठाल वावि एगया । ठत्तिअ मरुमट्ठाए, त च हुज्ज चलाचल ॥ ६५ ॥
 न तेण भिक्खु गच्छिज्जा, दिट्ठो तत्थ अमजमो । गमीर भुत्तिर चेव, मत्तिअदिअ ममाहिय ॥ ६६ ॥
 निस्सेणि फलग पीढ, उम्मवित्ता ण मारहे । मच कील च पामाय, समणट्ठा एव दावए ॥ ६७ ॥
 दुरूहमाणी पनाडज्जा, (पडिचज्जा) इत्थ पाय व लूमण ।
 पुढवीजीवे नि हिंसेज्जा, जे अ तन्निम्मिआ जगे ॥ ६८ ॥
 एआरिसे महादोसे, जाणिउण महेसिणो । तम्हा मालोहड भिम्प न पडिगिण्हसिसजया ॥ ६९ ॥
 कट मूल पलव वा, आम छिन्न च मन्निर । तुवागं मिंगवेर च, आमग परिउज्जण ॥ ७० ॥
 तहेव मत्तुचुआड, कोलतुआड आरणे । मक्कुलिं फालिअ पूअ, अन्न वा नि तहाविह ॥ ७१ ॥
 विक्कायमाण पमढ, रएण परिफासिअ । दित्तिअ पडिआउक्खे, न मे रूपइ तारिस ॥ ७२ ॥
 बहुअट्ठिअ पुणाल, अणमिम वा बहुकटथ । अत्थिय तिंदुय विद्ध, उट्टएउड व मिचलिं ॥ ७३ ॥
 अप्पे सिआ भोजणजाण, बहुउज्जय धम्मिए (य) ।
 दित्तिअ पडिआउक्खे, न मे रूपइ तारिम ॥ ७४ ॥
 तहेपुच्चावय पाण, अदुवा तारघोअण । मसेरम चाउलोदग, अट्टणापोअ विउज्जए ॥ ७५ ॥
 जालाणेज्जा चिरावाआ, मइए दमणण वा, पडिपुत्तिउत्तण सुच्चा वा, ज च निम्सकिय भवे ॥ ७६ ॥
 अजीव पडिणय नच्चा, पडिगाहिज्ज मजए । अह मक्किय मजिज्जा, आमाइत्ताण रोअए ॥ ७७ ॥
 थोवमासायणट्ठाए, इत्थगम्मि दलाहि मे । मामे अच्चरिल पूअ, नाण तिण्ह विणित्तए ॥ ७८ ॥
 त च अच्चरिल पूअ, नाण तिण्हविणित्तए । दित्तिअ पडिआउक्खे, न मे रूपइ तारिम ॥ ७९ ॥
 त च हुज्जा अच्चाणेण, विमणेण पडिच्छिअ । त अप्पणा न पिदे । नो नि अन्नम्म दावए ॥ ८० ॥
 एगतमवक्कमिच्चा, अचित्त पडिलेहिआ । जय पडिट्टविज्जा, परिट्टप्प पडिक्केमे ॥ ८१ ॥
 सिया अ गोअरग्गओ इच्छिज्जा परिभुत्तुअ । इट्ठग मित्तिमूल वा, पडिलेहिच्चाण फासुअ ॥ ८२ ॥
 अणुअपित्तु मेहावी, पडिच्छिन्नाम्मि सयुदे । इत्थयां सपमज्जित्ता, तत्थ भुज्जिअ मजए ॥ ८३ ॥
 तत्थ से भुज्जमाणस्स, अट्ठिअ कटओ सिआ । तणमट्टगकर वावि, अन्न वावि तहाविह ॥ ८४ ॥
 त उक्खिउवेत्तु न निक्खिउवे, आसण्ण न छट्टए । इत्थेण त गहेउण, एगतमवक्कमे ॥ ८५ ॥
 एगतमवक्कमिच्चा अचित्त पडिलेहिआ । जय परिट्टविज्जा, परिट्टप्प पडिक्केमे ॥ ८६ ॥
 सिआ आभिकम्भूइत्तिज्जा, सिज्जमागम्म भुत्तुअ । मपिंडपायमागम्म, उट्टअ पडिलेहिआ ॥ ८७ ॥
 विणएण पतिमिच्चा, सगासे गुरूणो मुणी । इरियाअहियमाययाय, आगओ अ पडिक्केमे ॥ ८८ ॥
 आमोइत्ताण नीसेस, अइआर च जहक्कम । गमणागमणे चेव, मत्ते पाणे च सज्जण ॥ ८९ ॥
 उज्जुप्पओ अणुविग्गो, अउक्खिउत्तेण चेअमा । आलोण गुरूमगासे, ज जहा गहिय मवे ॥ ९० ॥
 न मम्ममालोइअ इट्ठा, पुढिय पच्छा व ज कट । पुणो पडिक्केमे तस्स, गोमट्टो चित्तण इमं ॥ ९१ ॥

अहो जिणेहिं असावज्जा, विची साहण देसिआ । मुम्पसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥ ९७ ॥
 णमुकारेण पारिचा, करिचा जिणसथय । सज्जाय पड्विचाणं, वीसमेज्ज खण सुणी ॥ ९३ ॥
 वीससतो इम चिंते हियमद्दु लाममट्ठिओ । मे अणुगह कुज्जा, साहू हुज्जामि तारिओ ॥ ९४ ॥
 साहणे तो चिअत्तेण, निमतिज्ज जहकम । जइ तत्थ वेइ इच्छिज्जा, तेहिं सद्धिं तु भुजए ॥ ९५ ॥
 अह कोइ न इच्छिज्जा, तओ भुजिज्ज ण्वओ । आलोए भायणे साहू जय अपरिसाडिअ ॥ ९६ ॥

तित्तम च रुडुअ च, कमार्यं अविल च महुर लरण वा ।

ण्यलद्धमन्नत्थपउत्त महु घय व भुजिज्ज मजए ॥ ९७ ॥

अरस विरस चावि, छइअ वा अछइअ । उल्ल वा जइ वा सुक्क, मधुकुम्मासमोअण ॥ ९८ ॥
 उप्पण्ण नाइहीलिज्जा, अप्प वा बहु फासुअ । मुहालद्ध मुहाजीवी, भुजिज्जा दोसवज्जिअ ॥ ९९ ॥
 दुल्लहाओ मुहादाई, मुहाजीवी, वि दुल्लहा । मुहादाई मुहाजीवी, दो वि गच्छति सुग्गइ ॥ १०० ॥

॥ इअ पिंटेमणाण पढमो उहेमो समत्तो ॥

पटिग्गह सलिहित्ताण, लेउमायाइ सजण । दुग्घ वा, सब्भ भुजे न छट्ठए ॥ १ ॥
 सेज्जा निसीहियाए, अमाउओ अगोचरे । अयाउयट्ठा भुचाण, जइ तेण न सथरे ॥ २ ॥
 तओ कारणमुप्पण्णे, भत्तपाण गचेसए । विहिणा पुवउत्तेग, इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥

कालेण निकल्लमे भिक्खू, कालेण य पडिक्कमे ।

अकाल च विउज्जित्ता (ज्जा), काले कालं ममापरे ॥ ४ ॥

अकाले चरिस्सि भिक्खू, काल न पडिलेहिसि ।

अप्पाण च किलामेस्सि, सन्निवसे च गरिहासि ॥ ५ ॥

सट्ठ काले चरं भिक्खू कुज्जा पुरिसकारिअ । अलामोचि न सोइज्जा, तणे चि अहियासए ॥ ६ ॥

तइवुच्चानया पाणा, भत्तट्ठाए ममागया । त उज्जुअ न गच्छिज्जा, जयमेउ परकमे ॥ ७ ॥

गोअरग्गपविट्ठो अ, न निसीइज्ज वत्थइ । कह च न पवधिज्जा, चिट्ठित्ताण व सजए ॥ ८ ॥

अग्गल फलिह दार, कवाड वा वि मजए । अग्रलविआ न चिट्ठिज्जा, गोअरग्गओ सुणो ॥ ९ ॥

समण माहण चावि, किविण वा वणीमम । उउसउमत्त भत्तट्ठा, पाणट्ठाण व सजए ॥ १० ॥

तमइकमित्तु न पविसे, न चिट्ठे चक्खुगोअरे । एगतमउकमित्ता, तत्थ चिट्ठिज्ज सजए ॥ ११ ॥

वणीमगस्म वा तस्स, दायवस्सुभयस्म वा । अप्पत्तिअ सिआ हुज्जा, लहुत्त परयणम्म वा ॥ १२ ॥

पडिसेहिए व दिन्हे वा, तओ तम्मि नियत्तिए । उउसकमिअ भत्तट्ठा, पाणट्ठाण व सजए ॥ १३ ॥

उप्पल पउम चावि, कुमुअ या मगदतिअ । अन्न वा पुक्कपच्चित्त, त उ सल्लुच्चिआ दए ॥ १४ ॥

त भवे भत्तपाण तु मज्जयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआडक्के, न मे कप्पइ तारिस्स ॥ १५ ॥

उप्पल पउम चावि, कुमुअ या मगदतिअ । अन्न वा पुक्कपच्चित्त, त च सम्मदिआ दए ॥ १६ ॥

त भवे भत्तपाण तु, मज्जयाण अकप्पिअ । दित्तिअ पडिआइक्कए, न मे कप्पइ तारिस्स ॥ १७ ॥

सालुअ वा विरालिअ, कुमुअ उप्पलनालिय । मुणालिअ सामवनाअिअ, उच्छुत्तड अनिउड ॥ १८ ॥

वत्तणग वा पयाल, रक्खस्स तणगस्स वा । अन्नस्स वा वि हरिअस्स, आमग परिवज्जए ॥ १९ ॥

तुरुणिश्च वा छिन्नादि, आमिअ भञ्जिय मय । दिंतिअं पडिआइस्से, न मे कप्पइ तारिम २० ॥
 तदा कोलमणुस्मिन्न वेंलुअ रासयनालिअ । तिलपप्पइग नीम, आमग परिवज्जए ॥ २१ ॥
 तदेव चाउल पिट्ठ, विअड तत्तनिच्चुड । तिलपिट्ठुपुइपिन्नाग, आमग परिवज्जए ॥ २२ ॥
 क्विड्ड माउलिं गं च, मूलग मूलगतिअ, आम अमत्थपरिणय मणमा वि न पत्थए ॥ २३ ॥
 तदेव फलमथूणि, धीचमथूणि जाणिआ । तिठ्ठरा पियाल च, आमग परिवज्जए ॥ २४ ॥
 समुआण चरे मिकम्बु कुलमुच्चवय मया । नीय कुलमहकम्म, ऊसठ नामिधारए ॥ २५ ॥
 अदीणो विचिमेसिआ, न तिसीएज्ज पडिए । अमुणम्मि भोजणम्मि, मायण्णे एमणारण ॥ २६ ॥
 बहु परवग अत्थि विविह खांमसाठम । न तत्थ पडिओ कुप्पे इच्छा दिअ परो नरा ॥ २७ ॥
 मयणामणवत्थ या, मत्त पाण च मजए । अदिंत्तस्म न कप्पिज्जा, पच्चस्से वि अ दीमओ ॥ २८ ॥
 इत्थिअ पुरिस भावि, डहरं वा महएग । वटमाण न जाइआ, नो अण फस्स यण ॥ २९ ॥
 जे न वद न से कुप्पे, वदिओ न समुक्खसे । एवमन्नेसमाणम्म, मामण्णमणुचिड्डइ ॥ ३० ॥
 सिआ एगइओ लधु लोमेण विणिगूहइ । मामेय टाइय सत्त, दग्गुण मयमायए ॥ ३१ ॥
 अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो, बहु पाप पडुवड । दुत्तोमओ अ से (सो) होइ, निवाण च न गच्छट ॥ ३२ ॥
 सिआ एगइओ लधु, विविह पाणमोअणं । भग्ग भद्दग भुच्चा, विअन्न विरममाहर ॥ ३३ ॥
 जाणतु ता इमे समणा, आययट्ठी अय सुणी । सत्तट्ठो मेवए पत्त, त्ठहविची सुतोमओ ॥ ३४ ॥
 पूयणट्ठा जमोअमी, माणसमाणकामए । बहु पमउटं पाय, मायासल च कुंठइ ॥ ३५ ॥
 सुर या मेरग चापि, अन्न या मज्जग रम । ममक्ख न पिअ मिकम्बु जम मारक्खमपणो ॥ ३६ ॥
 पियण एगओ तेणो, न मे कोटं विआणइ । तस्म पस्मह दोमाइ, नियदिं च सुणेह मे ॥ ३७ ॥
 वट्टइ सुडिआ तम्म, मायामोस च मिअण्णो । अयमो अनिवाण, मयय च जमाहुआ ॥ ३८ ॥
 निच्चुद्धिगो जहा तेणो, अत्तम्ममेदिं टम्मट । तारिमो मरणते वि न आराहेइ मवर ॥ ३९ ॥
 आयरिण नाराहेइ, समणे आपी तारिसो । गिहत्था वि ण गरिहति, जेण जाणति तारिम ॥ ४० ॥
 एव तु अणुपेही, गुणाण च विअज्जए । तारिमो मरणते वि, ण आराहेइ मवर ॥ ४१ ॥
 तव कुवड मेहावी, पणीअ वज्जए रम । मज्जप्पमायविरओ, तस्सी अउक्कमो ॥ ४२ ॥
 तस्म पस्मह कट्ठाण, अपेगमाहुपुअ । विअल अत्थसजुत्त, किअइम्म सुणेह मे ॥ ४३ ॥
 एव तु गुणपेही, अगुणाण च विअज्जए (ओ) । तारिमो मरणते वि, आराहेइ मवर ॥ ४४ ॥
 आयरिण आराहेइ, मपणे आपि चागिसो । गिहत्था वि ण पूयति, जेम जाणति तारिम ॥ ४५ ॥
 तयत्तेणे वयत्तेणे, रुयत्तेणे अ जे नरे । आयाणमारत्तेणे अ, बुवड देवकिअिम ॥ ४६ ॥
 लधुग पि देवत्त, उययओ देवकिअिम । तत्थापि से न याणाइ किं मे किच्चा इम फल ॥ ४७ ॥
 ततो पि से चउत्ताण, लमइ एलमूअग । नरग तिग्गिअनोणि वा, चोही जत्थ सुदुल्लहा । ४८ ॥
 एअ च दोस दग्गुण, नायपुत्तेण मासिअ । अणुमाय पि मेहावी, मायामोम निअज्जए ॥ ४९ ॥
 सिक्खिअण मिकग्गेमणसोदिं, मजयाण बुद्धाण सगासे । तत्थ मिअम्बु सुप्पणिहिंदिए, तिअलज्जगुणय
 विहरिज्जासि ॥५०॥ तिं वेमि ॥ इअ पिंडेमणाण धीओ उडेमो ॥ पचमज्जयण समत्त ॥

॥ अह छट्टं धम्मत्थकामज्झयण ॥

नाणदसणसपन्न, सजमे अ तवे रय । गणिमागमसपन्न, उज्जाणम्मि समोमट्ठ ॥ १ ॥
 रायाओ रायमच्चा य, माहणा अदुव रात्तिआ । पुच्छति निट्ठुअप्पाणो, कह मे आयारगोयरो ॥ २ ॥
 तेमि मो निहुओ दतो, सबभूअसुहारदो, सिक्खाएसु समाउत्तो, आयक्खण्ड त्रिअक्खणो ॥ ३ ॥
 इदि धम्मत्थकामाण, निग्गथाण सुणेह मे । आयारगोअर मीम, सयल दुरहिट्ठिअ ॥ ४ ॥
 नन्नत्थ एरिम बुत्त, ज लोए परमदुच्चर । विण्लट्ठाणभाइस्म, न भूअ न भविस्सइ ॥ ५ ॥
 मरुड्ढगविअत्ताण, वाहिआण च जे गुणा । अक्खण्डफुडिआ कायवा, त सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥
 दस अट्ठ य ठाणाइ, जाड चालोअरज्झइ । तत्थ अन्नयरे ठाणे, निग्गताओ भस्मइ ॥ ७ ॥
 वयल्लक कायल्लक, अक्खणो गिहिभायण । पलियफुनिम [सि] ज्जा य, सिणाण मोहरज्जण ॥ ८ ॥
 तत्थिम पढम ठाण, महावीरेण देसिअ । अहिंसा निउणा दिट्ठा, सबभूयसु सजमो ॥ ९ ॥
 जावति लोए पाणा, तसा अदुव थाररा । ते जाणमजाण वा, न हणे णो त्रिघाएए ॥ १० ॥
 मवे जीया वि इच्छति, जीविउ न मरिज्जिउ । तम्हा पाणिअह घोर, निग्गथा वज्जयति ण ॥ ११ ॥
 अप्पणट्ठा पण्डा वा, फोहा वा जड वा भया । हिंसण न म्ममं चूआ, नोनि अन्न वपावए ॥ १२ ॥
 मुमायाओ य लोगम्मि, सबमाहूहि गरिहो । भविस्साओ य भूआण, तम्हा मोम विवज्जए ॥ १३ ॥
 चित्तमतमचित्त वा, अप्प वा जइ वा वट्ठ । दतसोहणमित्त पि, उग्गहसि अजाडया ॥ १४ ॥
 त अप्पणा न गिण्हति, नो वि गिण्हारए पर । अन्न वा गिण्हमाण पि, नाणुजाणनि सजया ॥ १५ ॥
 अमचरिअ घोर, पमाय दुरहिट्ठिअ । नायरति मुणी लोए भेआयणज्जिणो ॥ १६ ॥
 मूलमेयमहम्मस्म, महादोमसमुस्मय । तम्हा मेहुणसगग्ग, निग्गथा वज्जयति ण ॥ १७ ॥
 विडमुग्गभेइम लोण, तिच्छ सर्पि फाणिअ । न ते सन्निहिमिच्छति, नायपुत्तवओरया ॥ १८ ॥
 लोहस्सेसणुफासे, मन्ने अन्नयरामवि । जे सिया सन्निहिं रामे, गिही पवइए न से ॥ १९ ॥
 ज पि वत्थ च पाय गा, कवल पायपुच्छण । त पि सजमलज्झट्ठा, धारति परिहरति अ ॥ २० ॥
 न सो परिग्गहो बुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा । मुच्छा परिग्गहो बुत्तो, इइ बुत्त महेसिणा ॥ २१ ॥
 सबट्ठुवहिणा उट्ठा, सरक्खणपरिग्गहे अवि अप्पणोऽवि देहम्मि, नायरति ममाइय ॥ २२ ॥
 अदो निच ततो यम्म, सबदुद्धेहि वन्निअ । जा य लज्जाममा वित्ती, एगभत्त च भोअण ॥ २३ ॥
 सति मे मुट्ठमा पाणा, तसा अदुव थाररा । जाइ राओ उपासतो, कहमेसणिअ चरे ॥ २४ ॥
 उदउल्ल वीअसत्तच, पाणा निवडिया महिं । दिआ ताइ विज्जिजा, राओ एत्थ कह चरे । २५ ॥
 एअ च दोस दट्ठण, नायपुत्तेण भासिय । सवाहार न भुजति, निग्गथा राइमोअण ॥ २६ ॥
 पुट्टविकाय न हिंसति, मणसावयसा कायसा । तिविहेण करणजोएण, सजया सुसमाहिआ ॥ २७ ॥
 पुट्टविकाय विहिसतो, हिंसईउ तयस्मिए । तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ २८ ॥
 तम्हा एअ विअणिता, दोस दुग्गहवट्ठण । पुट्टविकायसमारभ, जावजीवाए वज्जए ॥ २९ ॥
 आउकाय न हिंसति, मणसा वयसा कायसा । तिविहेण करणजोएण, सजया सुसमाहिआ ॥ ३० ॥

आउकाय विहिंसतो, हिंसई तयस्मिण । तसे अ विविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ३१ ॥
 तम्हा एअ विआणिता, दोस दुग्गइवट्ठण । आउकायममारम, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३२ ॥
 जायतेअ न इच्छति पायग जलइत्थण । तिक्कमन्नपर मत्थ, मवओ वि दुरासय ॥ ३३ ॥
 पाईण पडिण वापि, उट्ट अणुदिमामपि । अहे दाहिणिओ मा पि दहे वत्तरओ वि अ ॥ ३४ ॥
 भूआणमेममाघाओ हवनाहो न ससओ । त पईवपयाउट्ठा, मजया किंचि नारमे ॥ ३५ ॥
 तम्हा एयत्रिपाणिता, दोम दुग्गइवट्ठण । तेउकायसमारम, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ३६ ॥
 अणिलरम ममारम, वुद्धा मज्जति तारिस । माउच्चवहुल चेअ, नेअ ताईहिं सेविअ ॥ ३७ ॥
 तालिअरेण पत्तेण, साहाविट्ठअणेण वा । न ते पीडउमिच्छति, वीआवेज्जण वा पर ॥ ३८ ॥
 ज पि व व (च) पाय मा, कवल पायपुउण न न वापमुईरति, जय परिहरति अ ॥ ३९ ॥
 तम्हा एअ विआणिता, दोम दुग्गइवट्ठण । माउकायसमारम, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४० ॥
 वणम्मइ न हिंसति, मणमा वयमा कायसा । तिविहेण करणजोएण, मजया सुमग्गाहिआ ॥ ४१ ॥
 वणस्सइ विहिंसतो, हिंसइ उ तयस्मिण । तसे अ त्रिविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४२ ॥
 तम्हा एय विआणिता, दोस दुग्गइवट्ठण । वणम्मइ समारम, जावज्जीवाए वज्जए ॥ ४३ ॥
 तमजाय न हिंसति, मणसा जयसा जयमा । त्रिविहेण करणजोएण, मजया सुमग्गाहिआ ॥ ४४ ॥
 तसकाय विहिंसतो, हिंसई उ तयस्मिण । तसे अ त्रिविहे पाणे, चक्खुसे अ अचक्खुसे ॥ ४५ ॥
 तम्हा एअ विआणिता, दोम दुग्गइवट्ठण । तमकायममारम, जावज्जीवाए [इ] वज्जए ॥ ४६ ॥
 जाड चचारि भुज्जाइ, इसिणा हारमाइणि । ताड तु त्रिवज्जतो, मज्जम अणुपालए ॥ ४७ ॥
 पिंड सिज्ज च तथ च, चउत्थपायमेव य । अमप्पिअ न इच्छिज्जा, पडिगाहिज्ज कप्पिअ ॥ ४८ ॥
 जे नियाग ममायति, कीअमुद्दोसिआहड । वट्ठ ते ममणुजाणति, इअ उ (उ)त्त महेसिणा ॥ ४९ ॥
 तम्हा अमणपाणाइ, कीअमुद्दोसियाहड । वज्जयति ठिअप्पाणो, निग्गया वम्मजीणिओ ॥ ५० ॥
 कसेसु क्कमयाण्णमु इडभोएसु वा पुणो । भुजतो असणपाणाइ, आपरा परिमम्सइ ॥ ५१ ॥
 सीओदग ममारमे, मत्तघोअणलइत्थणे जाड उनति भूआइ, विट्ठो तथ असजमो ॥ ५२ ॥
 पच्छावम्म पुरेक्कम्म, मिया तथ न कप्पइ । एअमट्ट न भुजति, निग्गया गिहिमायणे ॥ ५३ ॥
 आसदीपलिअक्कमु, मचमामालएसु वा । अणायरिअमज्जाण, जासदत्तु सइत्तु वा ॥ ५४ ॥
 नासदीपलिअक्कमु, न निसिज्जा न पीढण । निग्गया पडिलेहाए, वुद्धउत्तमहिट्ठगा ॥ ५५ ॥
 गमीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा । आसदी पलिअओ अ, एयमट्ट विपज्जिआ ॥ ५६ ॥
 गोअरगवविट्ठस्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ । इमेणिसमणायार, आउच्चइ अयोहिअ ॥ ५७ ॥
 विउत्ती वमचेरस्स, पाणाण च वहे वहो । उणीमगपडिग्गाओ, पडिकोहो अणगारिण ॥ ५८ ॥
 अगुत्ती वमचेरस्स, इत्थीओ वा वि सक्कण । वुमीलवट्ठण, ठाण, दुग्गओ परिउज्जए ॥ ५९ ॥
 तिण्हमन्नयरागास्स, निसिज्जा जस्स कप्पइ । जराए अमिभूअस्स, वाहिअम्म तवस्मिणो ॥ ६० ॥
 चाहिओ वा अरोगी वा, सिणाण जो उ पत्थए । बुक्को होइ आयारो, जट्ठो हउइ मजमो ॥ ६१ ॥
 सतिमे सुट्ठमा पाणा, वमासु मिलगासु अ । जे अ मिक्खु सिणायतो, विअडेणुप्पिलावए ॥ ६२ ॥
 तम्हा ते न सिणायति, सीपण उसिणेण मा । जावज्जीव वयं घोर, असिणाणमहिट्ठगा ॥ ६३ ॥

सिषाण अहुवा पक्क, छुद्ध पउमगाणि अ । गापस्सुद्धट्टणट्ठाए, नापरति कयाइ वि ॥ ६४ ॥
 नग्गिणस्स वावि मुडम्म, दीहरोमत्तहसिणो । मेहुणाओ उरसतस्स, किं विभूसाय कारिअ ॥ ६५ ॥
 विभूसायत्तिअ भिम्भू, कम्म वधइ चिण । ससारमायरे घोरे, जेण पढइ दुरुत्तरे ॥ ६६ ॥
 विभूसायत्तिअ वेअ, उद्धा मत्तवि तारिअ । सायज्ज बहुल चेअ, नेय ताईहि सेविअ ॥ ६७ ॥
 ग्वरति अप्पाणममोहदसिणो, तवे रया सजम अज्जवे गुणे ।
 धुणति पावाइ पुणेकडाइ नराइ पायाइ न ते करति ॥ ६८ ॥
 सओवसता अममा अक्किचणा, मविज्जविजाणुगया जससिणो ।
 उउप्पसत्ते विमले व चदिमा । सिद्धिं विमाणाइ उवेंति (व्यति) ताइणो ॥ ६९ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ उट्ठ धम्मन्थकामज्जयण समत्त ॥ ६ ॥

॥ अह सुवक्कसुद्धी णाम सत्तम अज्जयण ॥

चउण्ह सद्ध भासाण, परिसत्ताय पन्नर । दुण्ह तु विणय सिम्भे, दा न भासिज्ज सव्वमो ॥ १ ॥
 जा अ सच्चा अरत्तवा, मच्चाभोमा अजा मुसा । जा अ चुट्ठेहिं नाइत्ता, न त भासिज्ज पन्नर ॥ २ ॥
 असच्चमोस सच्च च, अणवज्जमरक्कस । समुप्पेहमसादिद्ध गिर भासिज्ज पन्नर ॥ ३ ॥
 एय च अट्टमन्नवा, जत्तु नामेइ सासय । स भास सच्चमोम च पि त (पि) धीरो विरज्जए ॥ ४ ॥
 पित्ह पि त्तामुत्ति, ज गिर भासओ नरो । वग्हा सो पुट्ठो पावेण, किं पुण जो मुस वण ॥ ५ ॥
 तग्हा गच्छामो उक्कामो, अमुग वा णे भविस्सइ ।
 अह वा ण करिस्सामि, एसो वा ण करिस्सइ ॥ ६ ॥
 एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि सक्किआ । सपयाइअमट्ठे वा, त पि धीरो विरज्जए ॥ ७ ॥
 अईअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पणमणागए । जमट्ठ तु न जाणिज्जा, एवमेअ ति नो वए ॥ ८ ॥
 अइअम्मि अ कालम्मि, पच्चुप्पणमणागए । जत्थ सका भवे त तु, एवमेअ तु नो वए ॥ ९ ॥
 अईअम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पणमणागए । निस्समकिअ भवे ज तु, एवमेअ तु निदिसे ॥ १० ॥
 त्थेव फरुमा भासा, गुरुभूओवचाइणी । सच्चा वि सा न वत्तवा, जओ पायस्स आगमो ॥ ११ ॥
 त्थेव काण काणत्ति, पढग पढग ति वा । वाहिअ ना वि रोगि ति, तेण चोरे ति नो वए ॥ १२ ॥
 एएणत्तेण अट्ठेण, परो जेशुअहम्मइ । आयारमावदोस्सन्वू, न त भासिज्ज पण्णव ॥ १३ ॥
 तहन होले गोलि ति, साणेवा वसुलि ति अ । दमण दुहए वा वि, नेव भासिज्ज पण्णव ॥ १४ ॥
 अज्जिणए पज्जिणए वा वि, अम्मो भाउस्सिअ ति अ ।
 पिउस्सिए भायणिज्ज ति, धूए णत्तुणिअ ति अ ॥ १५ ॥
 हले हलित्ति अग्नि ति, भट्ठे सामिणि गोमिणि ।
 होले गोळे वसुलि ति, इत्थिअ नेवमालवे ॥ १६ ॥
 णामधिज्जेण ण वूआ, इत्थीधुत्तेण वा पुणो । जहारिहमभिगिज्ज, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ १७ ॥

अज्जए पज्जए वा वि, वण्णो खुल्लपिउत्ति अ। माउलो भाइणिज्ज त्ति, पुत्ते णनुणिअ त्ति अ ॥ १८ ॥
हे भो ! हलित्ति अन्नित्ति, भट्टा सामिअ गोमिअ। होला गोल वसुलित्ति, पुमिअ नेवमालवे ॥ १९ ॥
नामधिज्जेण ण वूआ, परिपुत्तेण वा पुणो । जहारिअभमिगिज्ज, आलविज्ज लविज्ज वा ॥ २० ॥
पविदिआण पाणाण, एम इत्थी अय पुम। जाण ण नो विजाणिज्जा, ताण जाइ त्ति आलवे ॥ २१ ॥
तहेव मणुस एसु, पक्खिअ ण वि सरीसिअ । धूले पमेइले वज्जे, पाइमि त्ति अ नो वण ॥ २२ ॥
परिपुट्ठे त्ति ण वूआ, वूआ उवविण त्ति अ। सजाए पीणिए वावि भहाणाय त्ति आलवे ॥ २३ ॥
तहेव गाओ दुज्जाओ, दम्मा गोरहग त्ति अ। वाहिमा रहजोगि त्ति, नेअ भासिज्ज पण्णव ॥ २४ ॥
सुअ गवि त्ति ण वूआ, धेणु रसदय त्ति अ। रहस्से महल्लए वा वि, वए सपहाणि त्ति अ ॥ २५ ॥
तहेव गतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ। रक्खा महल पेहाए, नेअ भासिज्ज पण्णव ॥ २६ ॥
अल पामायसमाण, तोरणाणि गिहाणि अ। फलिहग्गलनाण, अल उदगदोणिण ॥ २७ ॥
पीढए चगवेरे अ, नगले मइय मिआ। जतलट्ठी न नाभी वा, गडिआ व अल सिआ ॥ २८ ॥
आमण सयण जाण, हुज्जा ण किंचुवस्सण । भूओवघाणिं भाम, नेव भासिज्ज पण्णव ॥ २९ ॥
तहेव गतुमुज्जाण, पव्वयाणि वणाणि अ। रक्खा महल्ल पेहाए, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ३० ॥
जाइमता इमे रुक्खा, दीहपट्टा महालया। पयायसाला विडिमा, वए टरिमणि त्ति अ ॥ ३१ ॥
तहा फलाइ पकाइ, पायगजाइ नो वए। वेलोइयाइ टालाइ, वेहिमाइ त्ति नो वण ॥ ३२ ॥
अमथडा इमे अवा, वहुनिव्वडिमा फला। उज्ज वहुमभूआ, भूअरूअ त्ति वा पुणो ॥ ३३ ॥
तहेवोसहीओ पकाओ, नीलिआओ छवीइअ। लाइमा भज्जिमाउ त्ति, पिहुग्गज्ज त्ति नो वए ॥ ३४ ॥
रूडा बहुसभूआ, थिरा ओमटा वि अ। गन्धिआओ पय्थाओ, समाराउ त्ति आलवे ॥ ३५ ॥

तहेव सराडिं नच्चा, किच्च कज्ज ति नो वए ।

सेणग वावि वज्जि त्ति, सुत्तिथि त्ति अ आपगा ॥ ३६ ॥

सराडिं सराडिं वूआ, पणिअट्ट त्ति तेणग ।

बहुसमानि तित्थाणि, आवमाण विआगरे ॥ ३७ ॥

तहा नईओ पुण्णाओ, कायतिज्ज त्ति नो वए ।

नावहिं तारिमाउ त्ति, पाणिपिज्ज त्ति नो वए ॥ ३८ ॥

वहुवाहडा अगाहा, बहुसल्लिलुप्पिलोदगा । वहुवित्थडोदगा आवि, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ३९ ॥

तहेव सापज्ज जोग, परस्सट्ठा अ निट्ठिअ। कीरमाण ति वा नच्चा, सापज्ज न लवे मुणी ॥ ४० ॥

सुराडि त्ति सुपकि त्ति, सुच्छिन्ने सुहडे मडे । सुनिट्ठिण सुल्लिट्ठित्ति, माअज्ज वज्जए मुणी । ४१ ॥

पयत्तपकि त्ति व पक्कमालवे, पयत्तच्छिन्न त्ति न छिन्नमालवे ।

पयत्तलट्ठित्ति व कम्महेउअ, पद्दारगाडि त्ति व गाढमालवे ॥ ४२ ॥

सच्चुकस परगघ वा, अउल नरिथ एरिम। अत्रिकिअमत्तव, अत्रिअत्त चेअ नो वए ॥ ४३ ॥

मव्वमेअ वइस्सामि, मव्वमेअ त्ति नो वए । अणुजीइ सव्व सव्वत्थ, एव भासिज्ज पण्णव ॥ ४४ ॥

सुक्कीअ वा सुविक्कीअ, अक्किअ त्तिजेअ वा। इम गिण्ह इम मुत्त, पणिण नो विआगरे ॥ ४५ ॥

अप्पग्घे वा गहग्घे वा, ऋण वा विक्कणं वि वा । पडिअट्ठे समुप्पत्ते, अणवज्ज विआगरे ॥ ४६ ॥
 तहेवासजय धीरो, आस एहि करहि वा । मयचिट्ठे षयाहित्ति, नेव मासिज्ज पण्णय ॥ ४७ ॥
 चहवे इमे असाहू, लोणं वुचति साहूणो । न लने अमाहू साहूत्ति, माहू माहूत्ति आलवे ॥ ४८ ॥
 नाणदसणसपन्न, सजम अ तव रयं । एव गुणसमाउत्त, सजय माहूमालवे ॥ ४९ ॥
 देवाण मणुआण च, तिरिभाण च बुग्गह । अमुमाण जओ होउ, मा वा होउत्ति नो वण ॥ ५० ॥

राओ बुद्ध व सीउण्ह, गेम धाय मित्र ति वा ।

कया णु हुळ्ळ ण्याणि, मा वा होउत्ति नो वण ॥ ५१ ॥

तहेव मेह व नह न मणय, न देवदेवत्ति गिर वट्ठजा ।

ममुच्छिण उन्नण वा पओए, वड्ठज्ज वा पुट्ठ बलाहयत्ति ॥ ५२ ॥

अवलक्खत्ति ण रूआ, गज्जाणुचरिअत्ति अ ।

रिद्धिमत्त नर दिस्स, रिद्धिमत्त ति आलवे ॥ ५३ ॥

तदे मानज्जणुमोअणी गिरा, जा य परोवघायणी ।

मे ऋोहलोह भय हाम माणवो, न हाममाणो विगिर वट्ठजा ॥ ५४ ॥

सुनकसुद्धिं ममुपेहिआ मुणी, गिर च दुट्ठ परिवज्जण मया ।

मिअ अदुट्ठे अणुवीड भासण, सयाण मज्जे लहई पसमण ॥ ५५ ॥

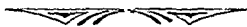
मामाइ दोसे अ गुणे अ जाणिआ, तीसेअ दूहे परिवज्जण सया ।

उमु सनण मामणिअ मया जए, वड्ठज्ज नुद्धे हिअमाणुलोअ ॥ ५६ ॥

परिकरमासी सुममाहिइदिए, चउक्कमायावगए अणिस्सिए ।

म निद्धुणे धुत्तमल पुरक्कड, आराहए लोगमणिं तहा पर ॥ ५७ ॥

त्ति चेमि ॥ इअ म्नुनक्कसुद्धीनाम मत्तम अज्जयण ममत्त ॥ ७ ॥



॥ अह आचारयणिही अष्टममञ्जयण ॥

आयागपणिहिं लद्दु, नहा रायव भिररुणा । त मे उदाहरिस्तामि, आणुपुर्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
 पुदविदगग्रगणिमारुअ, तणरुत्तस्म वीयगा । तमा अ पाणा जीर चि, इइ तुत्त महेसिणा ॥ २ ॥
 तेमि अञ्चणनोएण, निच होअञ्चय मिआ । मणमा फायवकेण, एर हवड सजए ॥ ३ ॥
 पुदवि मिचि सिल लेउ, नेर मिडे न मलिहे । तिविहेण करणजोएण, मण सुममाहिए ॥ ४ ॥
 सुद्वपुद्वी न निमीए, समरक्वम्मि अ आमणे । पमञ्जिहु निसीडजा, जाडत्ता जम्म उग्गह ॥ ५ ॥
 सीओदगं न सेविजा, सिलातुड हिमाणि अ । उसिणोदघ तवफामुअ, पटिगाहिञ्ज मजए ॥ ६ ॥
 उदवह्ण अप्पणो वाय, नेर पुठे न मलिहे । समुप्पेह तहाभूअ, नो ण मघट्टए सुणी ॥ ७ ॥
 इगाल अगणि अचि, अलाय वा सजोडअ । न उजिज्जा न घडिज्जा, नो ण निव्वारए सुणी ॥ ८ ॥
 तालिअट्टेण पत्तेण, साहाण विहुयणेण वा । न वीडज्ज अप्पणो वाय, वाटिर ता वि पुग्गल ॥ ९ ॥
 तणरुत्त न उडिज्जा, फल मूल च कस्सइ । आमग विविह वीअ, मणमा वि ण पत्यए ॥ १० ॥
 गहणेसु न चिट्ठिज्जा, वीणसु हरिएसु वा । उदगम्मि तहा निच, उच्चिगणणेसु वा ॥ ११ ॥
 रुसे पाणे न हिंसिज्जा, वाया अदुव म्मुणा । उतरओ सवभूएसु, पासंजच विविह जग ॥ १२ ॥
 अट्ट सुहुमाड पहाए जाइ जाणिणु मजए । दयाहिगारी भूएसु, आस चिट्ट सएहि वा ॥ १३ ॥
 अयगइ अट्ट सुहुमाड, जाइ पुच्छिज्ज मजए । इमाड ताड मेहावी, आहविग्गज्ज विअकवणो ॥ १४ ॥
 सिणेह पुक्कसुहुम च, पाणुत्तिग एहेर य । पणग वीअ हरिअ च, अटसुहुम च अट्टम ॥ १५ ॥
 एवमेआणि जाणित्ता, सवभावेण सजए । अप्पमत्तो जए निच, मडिदिअममाहिए ॥ १६ ॥
 धुव च पडिठेहिज्जा, जोगवा पायक्कल । सिज्जमुच्चारभूमि च, मधार अदुवामण ॥ १७ ॥
 उच्चार पामरण, रेल मिंवाणजहिअ । फामुअ पडिलेहिता, परिट्टाविज्ज मजए ॥ १८ ॥
 परिमिचु परागार, पाणट्टा भोजणस्स वा । जय चिट्टे मिअ भासे, न य रुवेसु मण रुं ॥ १९ ॥
 चहु सुणेह ऋणेहिं, चहु अञ्छीहिं पिण्डइ । न य दिट्ट सुअ मच्च भिकग्ग अकमाउमरिहइ ॥ २० ॥
 सुअ या जड वा दिट्ट, न लविञ्जोरपाइअ । न य ऋण उवाण्ण, मिहिज्जोम ममायरे ॥ २१ ॥
 निट्टाण रसनीज्जद, भदग पायग ति वा । पुट्टो वापि अपुट्टो वा, लामालाम न निदिसे ॥ २२ ॥
 न य भोजणम्मि गिदो, चर उल अयपिरो । अफामुअ न मुजीज्जा, ऋअमुं मिआहइ ॥ २३ ॥
 मनिर्हा च न कुट्टिज्जा, अणुमाय पि मजए । मुहाजोयी अमपट्टे, हरिज्ज जगनिस्सिए ॥ २४ ॥
 लहविचि सुमतुट्टे, अपिण्ठे सुहं मिआ । आमूरच न मण्ठिज्जा, सुचा ण त्तिणमामण ॥ २५ ॥
 ऋणमुक्खेहिं सदेहिं, प्रेम नामिनि वेमए । दारुण म्भम फाम, कारण अहिआमए ॥ २६ ॥
 सुह पिपास दुस्सिज्ज, मीउण्ह अरड भय । आहिआसे अच्चहिओ दहदु म महारुअ ॥ २७ ॥
 अत्थ गयम्मि आहन्चे, पुरत्या अ अणुगए । आहारभाडअ मच्च, मणमा वि ण पत्यए ॥ २८ ॥
 अतिंतिणे अचरले, अप्पमामी, मिआमणे । हविज्ज उअरे दते, थोच लद्दु न म्मिमण ॥ २९ ॥
 न पाहिर पग्गिमे अत्ताण न ममुक्खसे । सुअलामे न मज्जिज्जा, नचा तवम्मि मुट्टिए ॥ ३० ॥

से जाणमजाण वा, ऋद्ध आहम्मिभ पप । सत्तरे त्तिप्पमप्पाण, चीअ त न समायरे ॥ ३१ ॥
 अणायार परक्कम्म, नेव गूहे न निण्हवे । सुई सया नियडभावे, असत्ते जिइदिए ॥ ३२ ॥
 अमोह वयण कुज्जा, आयरीअस्स महप्पणो । त परिगिज्ज वायाए, ऋम्मणा उव्वायए ॥ ३३ ॥
 अधुव जीविअ नच्चा, सिद्धिमग्ग विआणिआ । पिणिअट्टिज्ज मोगेसु, आउ परिमिअमप्पणो ॥ ३४ ॥
 बल थाम च पेहाए, मद्दामारुममप्पणो । खित्त काल च विन्नाय, तहप्पाण निजुजए ॥ ३५ ॥
 जरा जाव न पीडेड, चाही जाव न वड्डइ । जाविदिआ न हायति, ताव धम्म समायरे ॥ ३६ ॥
 कोह माण च माय च, लोभ च पाउउट्ठण । उमे चत्तारि दोसे उ, इच्छतो द्विअमप्पणो ॥ ३७ ॥
 कोहो पीइ पणासेड, माणो विणयनासणो । माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सब्बणिणामणो ॥ ३८ ॥
 उवसमेण इणे क्रोह, माण महवया जिणे । मायमच्चनभावेण, लोभ सतोसओ जिणे ॥ ३९ ॥

कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ, माया अ लोभो अ पवड्डमाणा ।

चत्तारि एए कसिणा कसाया, सिंचति मूलाइ पुण भवस्स ॥ ४० ॥

रायणिएसु विणय पउजे, धुउसीलय मयय न हाउइच्चा ।

कुम्मउ अट्ठीणपलीणगुत्तो, परक्कमिच्चा तउसउन्निमि ॥ ४१ ॥

निद च न बहु मन्निज्जा, मप्पहास विवज्जए । मिहो कहाहिं न रमे, मज्जायम्मि रओसया ॥ ४२ ॥

जोग च समणधम्मम्मि, जुजे अनलसो धुउ । जुत्तो अ समणधम्मम्मि, अट्ट लहइ णणुत्तर ॥ ४३ ॥

इहलोगपारत्तिअ, जेण गच्छइ सुग्गइ । चहुस्सुअ पज्जुउसिज्जा, पुच्छिउज्जत्थविणिच्छउ ॥ ४४ ॥

इत्थ पाय च कय्य च, पणिहाय जिइदिए । अट्ठीणगुत्तो निसिए, मगासे गुरुणो मुणी ॥ ४५ ॥

न पउसओ न पुरओ, नेउ किच्चाण पिट्ठओ । न य ऊरु समासिज्ज, चिद्धिज्जा गुरुणतिए ॥ ४६ ॥

अपुच्छिओ न भासिज्जा, भासमाणस्स अवर । पिट्ठिमस न राइज्जा, मायामोस विवज्जए ॥ ४७ ॥

अप्पत्तिअ जेण सिआ, आउ कुप्पिज्ज वा परो ।

सच्चसो त न भासिज्जा, भास अहिअगामिणिं ॥ ४८ ॥

दिट्ठ मिअ उमेदिद्व, पडिपुत्त विअ जिअ । अयपिरमणुच्छिग्ग, भास निसिर अत्तर ॥ ४९ ॥

आयारपद्मत्तिधर, दिट्ठिवायमहिज्जग । वापविकरल्लिअ नच्चा, न त उवहसे मुणी ॥ ५० ॥

नकउत्त सुमिण जोग, निमित्त मतभेसज । गिहिणो त न आइक्खे, भूआहिगरण पय ॥ ५१ ॥

अनद्ध पगड लयण, भइज्जा सयणामण । उच्चारभूमिमपन्न, इत्थीपसुविवज्जिअ ॥ ५२ ॥

विवित्ता अ भवे सिज्जा, नारीण न लवे कह । गिहिमथव न कुज्जा, कुज्जा माहूहि सथव ॥ ५३ ॥

जहा पुक्कुइपोअस्स, निच कुललओ भय । पव सु उभयारिस्स, इत्थीविग्गहओ नय ॥ ५४ ॥

चित्तमिच्छि न निज्जाए, नारिं वा सअलकिअ । भक्खर पिव ददूण, दिट्ठि पडिमसमाहरे ॥ ५५ ॥

इत्थपायपडिच्छिन्न, कन्ननासविगप्पिअ । अवि वासमय नारिं, धमयारि विउज्जए ॥ ५६ ॥

निभूमा इत्थिममग्गी, पणीअ रसभोअण । नरम्मत्तगवेमिस्स, मिम तालउड जहा ॥ ५७ ॥

अगपचगमठाण, चारुविअप्पहिअ । इत्थीण त न गिज्जाए, कामरागविउट्ठण ॥ ५८ ॥

निमएसु मशुण्णेषु, पेम नामिनिवेगए । अणिच तेसि विण्णाय, परिणाम पुग्गलाण उ ॥ ५९ ॥

पोग्गलाण परिणाम, तेसिं नचा जहा तहा । विणीअतिण्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥ ६० ॥
जाइ सदाइ निक्खतो, परिआयट्ठाणमुत्तम । तमेअ अणुपालिज्जा, गुणे आयरियसमए ॥ ६१ ॥
तव चिम सजमजोगय च, सज्जायजोग च सया अहिट्ट ए ।
सूरे व सेणाइ सम्मत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अल परमिं ॥ ६२ ॥
सज्जायसुज्जाणरयस्म ताइणो, अपानभाअस्म तवे ग्यस्स ।
विसुज्जई ज सि मल पुरेरुड, समीरिअ र्प्पमल व जोइणा ॥ ६३ ॥
से तारिसे दुक्खमहे जिहदिण, सुएण जुचे अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि अत्रगण, कसिणमपुडानगमे व चदिम ॥ ६४ ॥
त्ति वेमि ॥ इअ आचारपणिही णाम अट्टममज्झयण ममत्त ॥ ८ ॥

॥ अह विणयसमाही णाम नअममज्झयण ॥

थमा व कोडा व मयप्पमाया, गुरुमगासे विणय न सिन्हे ।
सो चैव उ तस्स अभूडभानो, फल व कीअस्स उहाय होइ ॥ १ ॥
जे आवि मदि त्ति गुं विइत्ता, डहरे इमे अप्पसुए त्ति नचा ।
हीलति मिच्छ पडिअपाणा, करति आसायण ते गुरूण ॥ २ ॥
पगईए मटा वि भवति प्पगे, डहरा पि अ जे सुअनुदोववेआ ।
आचारमता गुणसुट्ठिअप्पा, जे हीलिआ सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥
जे आवि नाग टहर ति नचा, आमायण से अहिआय होट ।
एवारियअ पि ह् हीलयतो, निअच्छई आइपह सु मटो (दे) ॥ ४ ॥
आसीनिसो णावि पर सुरट्ठो, किं जीअनामाउ पर न इज्जा ।
आपरिआया पुण अप्पसन्ना, जवोहिआमायण नरिय मुक्खो ॥ ५ ॥
जो पाअग जलिअमअकमिज्जा, आसीविम वा पि ह् कोउज्जा ।
जो वा विस रायअ जीअिअट्ठी, एमोअमायायणमा गुरूण ॥ ६ ॥
सिआ ह् से पाअय नो डहिला, आमीविमो वा कुअिओ न भक्खे ।
सिआ विम हालहल न माअ, न आवि मुअयो गुरुहीलपाण ॥ ७ ॥
जो पवय सिरसा भित्तिमिच्छे, सुत्त व सीह पडिओहइज्जा ।
जो ना टण सत्तिअग्गे पहार, एमोअमायायणया गुरूण ॥ ८ ॥
सिआ ह् सीसेण गिरिं पि भिंद, सिआ ह् सीहो कुअिओ न भक्खे ।
सिआ न भिदिअ व सत्तिअग्ग, न आवि मुअयो गुरुहीलमाए ॥ ९ ॥
आपरिआया पुण अणमन्ना, अजोहिआमायण नरिय मुक्खो ।
तम्हा अणानाहसुहाभिरुत्ती, गुरुप्पमायाभिमुहो रमिज्जा ॥ १० ॥
जहाहिअग्गी जलण नमसे, नाणाहुईमतपयाभिसिच ।

एवायरिअ उवचिद्वइज्जा, अणतनाणोउगओ वि सतो ॥ ११ ॥
 जस्सतिए धम्मपयाइ सिक्खे, तस्सतिए वेणइय पउजे ।
 सकारए सिरसा पजलीओ, कायग्गिरा भो मणसा अ निच ॥ १२ ॥
 लज्जा दया सजमवभचेरं, कल्लणभागिस्स विसोहिठ्ठाण ।
 जे मे गुरू सययमणुसासयति, तेहिं गुरू सयय पूजयामि ॥ १३ ॥
 जहा निसते तवणच्चिमाली, पभासई केउलमारह तु ।
 एवायरिओ सुअसीलवुद्धिए, विरायई सुरमज्जे व इदो ॥ १४ ॥
 जहा ससी कौमुद्वजोगजुत्तो, नक्खत्तारागणपरिवुडप्पा ।
 खे सोहई निमले अब्भमुक्के, एव गणी सोहइ भिक्खुसुज्जे ॥ १५ ॥
 महागरा आयरिआ महेसी, ममाहिजोगे सुअसीलवुद्धिए ।
 सपाविउकामे अणुत्तराड, आराहए तोसइ धम्मकामी ॥ १६ ॥
 मुत्ता ण मेहानी सुभासिआइ, सुस्समए आयरिअप्पमत्तो ।
 आराहइत्ताण गुणे अणेगे, से पावई सिद्धिमणुत्तर चि वेमि ॥ १७ ॥
 ॥ इअ विणयसमाहिज्जयणे पढमो उद्वेसो भमत्तो ॥

मूलाउ रावप्पभरो दुमस्म, राधाउ पच्छा समुर्विति साहा ।

साहप्पसाहा विह्वति पचा, तओ सि (से) पुप्फ च फल रसो अ ॥ १ ॥

एव धम्मस्स विणओ, मूल परमो अ से सुकपो, जेण किंचिं सुअ सिद्ध, नीसेस चाभिगच्छ ॥ २ ॥

जे अ चडे मिए थद्वे, दुवाई नियडी सट्टे । पुज्जइ से अविणीअप्पा, कट्ट सोअगय जहा ॥ ३ ॥

विणयम्मि जो उवाएण, चोडओ कुप्पइ नरो । दिव्व मो सिरिमिज्जति, दडेण पडिसेहिए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीअप्पा, उउउज्जा हया गया । दीसति दुहमेहता, आभिओगमुवट्ठिआ ॥ ५ ॥

तहेव सुविणीअप्पा, उउउज्जा हया गया । दीसति सुहमेहता, इट्ठिं पचा महायसा ॥ ६ ॥

तहेव अविणीअप्पा, लोगम्मि नरनारिओ । दीसति दुहमेहता, छाया तं विगलिंदिआ ॥ ७ ॥

दडसत्थपरिज्जुत्ता, अमवभयणेहि अ । ऋत्तुणा विवन्नउदा, सुप्पिवामपरिग्गया ॥ ८ ॥

तहेव सुविणीअप्पा, लोगसि नरनारिओ । दामति सुहमेहता, इट्ठिं पचा महायसा ॥ ९ ॥

तहेव अविणीअप्पा, देवा जक्का अ गुज्जगा । दीसति दुहमेहता, आभिओगमुवट्ठिआ ॥ १० ॥

तहेव सुविणीअप्पा, देवा जक्का अ गुज्जगा । दीसति सुहमेहता, इट्ठिं पचा महायसा ॥ ११ ॥

जे आयरिअउउउज्जायाण, सुस्समानयण रुरे । तेसिं सिक्कया पवइद्वति, जलसित्ता इव पायया ॥ १२ ॥

अप्पणट्ठा परट्ठा वा, सिप्पा षोउणिआणि अ । गिहिणो उउउभोगट्ठा, इह्लोगस्म कारणा ॥ १३ ॥

जेण वध वह धोर, परिआउ च दास्स । सिक्कयाणा निअउत्ति, जुत्ता ते लल्लिदिआ ॥ १४ ॥

ते वि त गुरू पूअति, तस्स सिप्पस्म कारणा । मकारति नममति, तुट्ठा निर्देसनचिणो ॥ १५ ॥

किं पुण जे सुअग्गाही, अणतहिअरामण । आयरिआ ज उउ भिक्खु तम्हा त नाइवत्तए ॥ १६ ॥

नीअ सिज्ज गइ टाण, नीअ च आमणाणि अ । नीअ च पाए वदिज्जा, नीअ वुज्जा अ अजर्णि ॥ १७ ॥
 सयट्टइत्ता काएण, तहा ज्ञप्पिणामवि । रामेह अवराह मे, वडज्ज न पुणु त्ति अ ॥ १८ ॥
 दुग्गओ वा पओएण, चोइओ बहइ रह । एव दुवुद्धि किच्चाण, वुत्तो वुत्तो पवुवइ ॥ १९ ॥
 आलवत्ते लभते वा, न निसिज्जाए पडिस्सुणे । मुत्तूण आसण धीरो, सुस्समाए पडिस्सुणे ॥ २० ॥
 काल छंदोवयार च, पडिलेहिच्चाण हेउहिं । तेण तेण उवाएण, त त सपडिवायए ॥ २१ ॥
 विवति अविणीअम्म, सपत्ती विणिअस्म य । जस्सेय दुइओ नाय, सिक्ख से अमिगच्छइ ॥ २२ ॥
 जे आवि चडे मइइद्धिगारवे, पिप्पुणे नरे साहसडीणपेसणे ।
 अदिट्ठधम्मे विणए अओनिए, अमनिभागी न हु तस्स मुक्खरो ॥ २३ ॥
 निईसवित्ती पुण जे गुरूणं, सुअत्थधम्मा विणयम्मि कोविआ ।
 तरिच्चु तं ओधमिण दुरुत्तरं, रावित्तु धम्म गइमृत्तम गया ॥ २४ ॥
 त्ति वेमि इअ विणयस्समाप्पिणामज्जप्पणे वीओ उदेमो समत्तो ॥

आपरिअ(अ) अग्गिमिवाहिअग्गी, सुस्सममाणो पडिजागरिज्जा ।
 आलोअ इग्गिअमेव नच्चा, जो छदमाराहयई म पुज्जो ॥ १ ॥
 आपारभट्टा विणय पउजे, सुस्सममाणो परिगिज्ज वरु ।
 जहोवइट्ट अमिक्खमाणो, गुरु च नासायइ जे म पुज्जो ॥ २ ॥
 रायणिएसु विणय पउजे डहरा वि अ जे परिआयजिद्धा ।
 नीअचणे वट्टइ सच्चवई, ओसायव वक्खुरे म पुज्जो ॥ ३ ॥
 अन्नायउल्ल चरई विसुद्ध, जवणट्टया ममुआण च निच्च ।
 अल्लवुपुअ नो परिदेव इज्जा, लद्धु न विक्खयई स पुज्जो ॥ ४ ॥
 सथारसिज्जामणभत्तपाणे, अपिच्छया अइलामे वि मने ।
 जो एवमप्पाणभितीसइज्जा, सतोसपाहन्नए स पुज्जो ॥ ५ ॥
 मक्का सहउ आमाइ कटया, अओमया उच्छहया नरेण ।
 अणासए जो उ सहिज्ज कटए, उईमए कन्नसर स पुज्जो ॥ ६ ॥
 इहत्तदुक्खवा उ हरति कटया, अओमया ते नि तओ सुउद्धरा ।
 चायादुरुत्ताणि दुरद्धराणि, वेराणुवधीणि मयुब्भयाणि ॥ ७ ॥
 ममावयता ययणाभिधाया, कन्नगया दुम्मणिअ जाणति ।
 धम्मु त्ति निच्चा परमगासुरे, निददिए जो महई स पुज्जो ॥ ८ ॥
 अवण्णवाय च परम्मइस्स, पच्चक्खओ पडिणीअ च भाम ।
 जोहारणि अप्पिअरारणि च, भाम न भासिज्ज मया स पुज्जो ॥ ९ ॥
 अलोलए अक्खुइए अमाई, अपिसुणे आवि अदीणवित्ती ।
 नो भावएनो नि अ भाविअप्पा, अओउइल्ले अ सया म पुज्जो ॥ १० ॥

गुणेहि साह अगुणेहिस्ताह, गिण्हादि नाह गुण सुचञ्जाह ।
 विआणिआ अप्यगमप्यण्ण, जो रामदोसेहिं समो स पुञ्जो ॥ ११ ॥
 तहेन डर च महल्लग था, इत्यो शुभ पवटअ गिहिं या ।
 नो हीलण नो वि अरिमटञ्जा धंम च कोहं च चण पुञ्जो ॥ १२ ॥
 जे माणिआ मययय माणयति जत्तेण फन्न न निरेमपति ।
 ते माणण माणरिहे तवस्ती, निहदिण सचरण म पुञ्जो ॥ १३ ॥
 तेमिं गुण्ण गणगायगण, सुचाण मेहावि सुमासिआइ ।
 चरे मूणी पचरण निगुत्तो, चउत्तमायागण स पुञ्जो ॥ १४ ॥
 गुरुमिह मयय पटिगरिअ मूणी, विणमयनिउणे अभिगमगुण्णे ।
 धुणिअ रयमल पुरफड, मागुग्मउल गइ पइ (गय) ॥ १५ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ विणयममाहीण तटओ उहेमो ममत्तो ॥

सुअ मे आउन-तेण भगवथा एवमकमाय । इह गलु धेरेहिं भगवतहि चचारि विणयसमा
 हिटाणा पन्नत्ता । क्यरे गलु ने धेरेहिं भगवतहि चचारि विणयसमाहिट्टाणा पन्नत्ता । इमे गलु ते
 धेरेहिं भगवतहि चचारि विणयसमाहिट्टाणा पन्नत्ता । तगहा-विणयसमाही, सुअसमाही, तवम-
 माही, आयारसमाही । “विणणे सुए अ तवे, आयार निच पडिआ । अमिगमपति अप्पाण, जे
 भवति जिइदिआ” चउबिहा गलु विणयसमाही भवइ । तनहा-अणुमासिउत्तो, सुस्यमइ । मम्म
 पडिउत्तइ । उयसाराहइ । न य भवइ अत्तसपगहिणं चउत्थ पय भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो ॥
 “पहेइ हिसाणुमागण, सुम्यमइ त च पुणो अदिट्टिए । न य माणमण्ण मजइ, विणयसमाहिआ-
 ययट्टिए” ॥ २ ॥ चउबिहा गलु सुअसमाही भवइ । तनहा-सुअ मे मरिम्मइ चि अज्जाइअच्च
 भवइ । एगग्गचित्तो भविस्सामि चि अज्जाइअच्च भवइ । अप्पाण ठाउत्तसामि चि अज्जाइअच्च
 भवइ । ठिओ पर ठाउत्तसामि चि अज्जाइअच्च भवइ । उउत्थ पय भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो ॥
 “नाणमेग्गचित्तो अ, ठिओ अ ठावइ पर । सुआणि अ अदिच्चिआ, गओ सुअमाहिण” ॥ ३ ॥
 चउबिहा गलु तनसमाही भवइ । तज्जहा-नो इहलोगट्टयाए तनमहिट्टिआ, नो परलोगट्टयाए तव-
 महिट्टिआ, नो कित्तिवन्नमइसिलोगट्टयाए तनमहिट्टिआ, नअत्थ निअरट्टयाए तनमहिट्टिआ ।
 चउत्थ पय भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो ॥ “त्रिउहगुणतरोए, निच भवइ विगसए निअर-
 ट्टिए । तवसा धुणइ पुराणपात्रम, जुवो गया तनसमाहिण” ॥ ४ ॥ चउबिहा गलु आयारसमाही
 भवइ । तज्जहा-नो इहलोगट्टयाए आयारमहिट्टिआ, नो नो परलोगट्टयाए आयारमहिट्टिआ, नो
 कित्तिवन्नमइसिलोगट्टयाए आयारमहिट्टिआ, नअत्थ आरहतेहिं हेउहिं आयारमहिट्टिआ । चउत्थ
 पय भवइ । भवइ अ इत्थ सिलोगो ॥ “जिणयणरण अरित्तणे, पडिपुत्तायपमागपट्टिए । आया-
 समाहिसवुडे, भवइ अ दत्ते भावसए ॥ ४ ॥ अभिगम चउरो समाहिओ, सुविमुद्धो सुममाहिअ
 प्पणो । निउलाहिय सुद्धावह पुणो, कुवइ अ सो पपखेममप्यणो ॥ ६ ॥ जाइमरणाओ मुक्खइ इत्थत्थ

च चण्ड सवतो । सिद्धे वा हनइ सासए, देवे वा अप्परए महिद्धिए ॥ ७ ॥

त्ति वेमि ॥ इअ विणयममाही नाम चउत्थो उद्देमो नउममज्झयण समत्ता ॥ ९ ॥

॥ अह भिक्खू नाम दसममज्झयण ॥

तिक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे, निच चित्तसमाहिओ हनिज्जा ।
 इत्थीण वस न आरि गच्छे, वत नो पडिआउइ जे म भिक्खू ॥ १ ॥
 पुढवि न रणे न रणाए, सीओदग न पिण न पिआए ।
 अगणि सत्यजहा मुनिसिअ, त न जले न जलाए जे म भिक्खू ॥ २ ॥
 अनिलेण न वीए न वीयाए, हरियाणि न छिंदे न छिंटाए ।
 मीशाणि मया विउज्जपतो, सच्चि नाहारए जे स भिक्खू ॥ ३ ॥
 वहण तसथाएगण होइ, पुढमितणःडुनिस्मिआण ।
 तम्हा उण्णसिअ न भुजे नो रि, पए न पयावण जे स भिक्खू ॥ ४ ॥
 रोइअ नायपुत्तयणे, अत्तममे मन्निज्ज उप्पि ऋण ।
 पच य फासे महइयाइ, पचामवसररे जे स भिक्खू ॥ ५ ॥
 चत्तारि वमे मया कमाए, धुनजोगी हनिज्ज बुद्धवयणे ।
 अहणे निज्जायरयण, गिहिजोग परिउज्जाए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥
 सम्मदिट्ठी सया अमूढे, अरिय ह्नु नाणे तवे सजमे अ ।
 तउसा धुणइ पुराणपाउग, मणययःकायमुसउडे जे म भिक्खू ॥ ७ ॥
 तहेय असण पाणग वा, विविह ग्गाडममाडम लभित्ता ।
 होही अट्ठो सुए पणे वा, त न निहे न निहाए जे म भिक्खू ॥ ८ ॥
 तहेय अमण पाणग ग, विविह ग्गाडममाडम लभित्ता ।
 छदिअ साहम्मिआण भुजे, भुचा मज्जायरए जे म भिक्खू ॥ ९ ॥
 न य युग्गारिअ कह कहिआ, न य कुप्पे निट्ठुइदिण पसते ।
 सजमधुनजोगजुत्ते, उउसते उउहेइए जे स भिक्खू ॥ १० ॥
 जो गहइ ह्नु गामकटए, अक्कोमपहारतज्जणाओ अ ।
 भयमेरवसइसप्पहासे, समसुहइउउसहे अ जे स भिक्खू ॥ ११ ॥
 पडिम पडिवज्जिआ समाणे, नो भायए भयमेरगाइ दिम्म ।
 विविहएणतवोरए अ निच, न सरीर चाभिक्खूए जे स भिक्खू ॥ १२ ॥
 अमइ वोसिद्धचत्तदेहे, अउट्ठे व हए ल्हसिए वा ।
 पुढविममे सुणीइविआ अनिआणे अक्कोउहछे जे म भिक्खू ॥ १३ ॥
 अमिभूअ ऋएण परीमहाइ, समुद्धरे जाइपहाउ अप्पय ।
 विउत्तु जाईमरण महवभय, तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥ १४ ॥

हत्थसजए पायसजए, वायसजए सजइदिए ।
 अज्झपरए सुसमाहिअप्पा, सुत्तत्थ च विआणइ जे स भिक्खू ॥ १५ ॥
 उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे, अन्नायउछ पुलनिप्पुलाए ।
 कयविकयसन्निहिओ विरए, सव्वसगागए अ जे स भिक्खू ॥ १६ ॥
 अलोल(ल)भिक्खू न रसेसु गिज्जे, उछ चरे जीविअनाभिक्खी ।
 इद्धि च सक्कारण पूअण च, चए ठिअप्पा अणिहे जे स भिक्खू ॥ १७ ॥
 न पर वइज्जासि अय कुसीले, जेण च कुप्पिअ न त वइज्जा ।
 जाणिअ पत्तेअ पुत्रपाव' अत्ताण न समुक्खसे जे स भिक्खू ॥ १८ ॥
 न जाइमत्ते न य रूममत्ते, न लाभमत्ते न सुण्ण मत्ते ।
 मयाणि सवाणि विवज्जइत्ता, धम्मज्झाणरए जे स भिक्खू ॥ १९ ॥
 पवेअए अज्जपय महामुणी, धम्मे ठिओ ठावयइ पर पि ।
 निकरम्म वज्जिअ कुसीललिंग, न आवि हास कुहए जे स भिक्खू ॥ २० ॥
 त देहनास अमुइ असासय, सया चए निच्चहिअट्ठिअप्पा ।
 छिंदित्तु जाइमरणस्स वधण, उवेइ भिक्खू अणुणागम गइ ॥ २१ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ भिरखु नाम दम्मज्झयण ममत्त ॥

॥ अह रइवका पढमा चूलिआ ॥

इह खलु भो पवइएण उप्पण्णदुक्खेण सजमे अरइममानन्नचित्तेण जोहाणुप्पेहिणा अणोहाइएण
 चेव हयरस्सिगयइसपोयपडागाभूआइ इमाइ अट्टारस टाणाइ सम्मसपडिलेहिअवाइ भवति । तजहा
 इ भो! दुस्समाइ दुप्पजीयी ॥ १ ॥ लहुसगा इत्तरिआ गिहीण कामभोगा ॥ २ ॥ भुज्जे अ साय
 बइला मणुम्सा ॥ ३ ॥ इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोउट्ठाइ नविस्सइ ॥ ४ ॥ ओमजणपुरकारे
 ॥५॥ वतस्स य पडिआपण ॥ ६ ॥ अहरगइवासोवसपया ॥ ७ ॥ दुल्लहे खलु भो! गिहीण धम्मे
 गिहिनासमज्जे वसताण ॥८॥ आयक से वहाय होइ ॥९॥ सकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥ सोपकेसे
 गिहवासे, निरुक्खेसे परिआण ॥ ११ ॥ बधे गिहवासे, मुक्खे परिआए ॥१२॥ सावज्जे गिहवासे,
 अणउजे परिआए ॥ १३ ॥ बउसाहारणा गिहोण कामभोगा ॥ १४ ॥ पत्तेअ पुत्रभाव ॥ १५ ॥
 अणिचे खलु भो! मणुआण जीविए कुसग्गजलविट्ठुचउले ॥१६॥ नइ च खलु भो! पाव कम्म पगड
 ॥ १७ ॥ पायाण च खलु भो! कडाण न्ममाण पुवि दुच्चिन्नाण टुप्पडिकताण वेइत्ता मुक्खो नत्थि
 अवेइत्ता तनमा वा ज्ञोसइत्ता ॥ १८ ॥ अट्टारमम पय भवइ, भवइ अ इत्थ सिलोगो—
 जया य चयई धम्म, अणज्जो भोगकारणा । से तत्थ मुच्छिए बाळे, आयइ नावबुज्जइ ॥ १ ॥
 जया ओहाविओ होइ, इदो वा पडिओ छम । सव्वधम्मपरिअभट्ठो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥
 जया अ वदिमो होइ, पच्छा होइ अनदिमो । देनया व लुआ टाणा, स पन्था परितप्पइ ॥ ३ ॥
 जया अ पइमो होइ, पन्था हो' अप्प'मो, राया न रज्जपग्गट्ठो, स पन्था परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया अ माणिमो होइ, पञ्चाहोइ अमाणिमो । सिद्धि कबडे छूटो, स पञ्चा परितप्पइ ॥ ५ ॥
जया अ घेरओ होइ, समकतसुवणो । मच्छुव गलि गलिचा, स पञ्चा परितप्पइ ॥ ६ ॥
जया अ कुकुडबस्म, वृत्ततीहिं विहम्मइ । हत्थो न वघणे बद्धो, स पञ्चा परितप्पइ ॥ ७ ॥
पुत्तदारपरिक्रियो, मोइमताणमतओ । पजोमओ जहा नागो, स पञ्चा परितप्पइ ॥ ८ ॥
अज्ज आइ गणी हुतो, भाविअथा बहुसुओ । जइ हरमतो परिआए, सामन्ने जिणदेसिए ॥ ९ ॥
देवलोमसमाणो अ, परिआओ महसिण । रयाण, अरयाण च, मन्नारयसारिमो ॥ १० ॥

अमरोवम जाणिअ सुक्खमुत्तम, रयाण परिआए तहारयाण ।
निरओउम जाणिअ दुक्खमुत्तम, रमिज्ज तम्हा परिआयपडिए ॥ ११ ॥
धम्माउ मट्ट सिरिओववेय, जल्लगिग विज्जापमिअपत्तेअ ।
हीलत्ति ण दुब्बिहिअ कुसीला, दाहुद्धिअ घोरविस व नाग ॥ १२ ॥
इहेअ धम्मो अयसो अकित्ती, दुन्नामविज्ज च पिहुज्जणम्मि ।
सुअस्म वम्माउ अहम्मसेविणो, मभिन्नचित्तस्म य द्विट्ठओ गई ॥ १३ ॥
भुजित्तु भोगाड पमज्ज चेअसा, तहाविह कद्दु अमज्ज बहु ।
गइ च गच्छे अणहिज्जअ दूह, बोही अ से नो सुलहा पुणो पुणो ॥ १४ ॥
इमस्म ता नेरइअस्म जतुणो, दुद्धोवणीअस्म किलेसत्तविणो ।
पलिओवम झिज्जड सागरोउम, किमग पुण मज्ज इम मणोदुह ॥ १५ ॥
न मे चिर दुक्खमिण मविस्म, अमामया भोगपिणाम जतुणो ।
न चे सरीरेण इमेण निस्मइ, अविम्मटं जीविअपल्लवेण मे ॥ १६ ॥
जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ, चडल देह न दू धम्ममामण ।
त तारिम नो पडलित्ति इदिआ, उविति वाया न सुदमण गिरिं ॥ १७ ॥
इच्छेअ मपस्सिअ बुद्धिम नरो, आय उयाय विविह विआणिआ ।
कापण वाया अट्ट माणसेण तिगुत्तिमुत्तो जिणयणमहिद्धिआसि ॥ १८ ॥
त्ति वेमि ॥ इअ गडउक्का पदमा चूला ममत्ता ॥ १ ॥

॥ अह विवित्तचरिया वीआ चूलिआ ॥

चूलिअ तु पक्कामि, सुअ केवलिसिअ । ज सुणित्तु सुपुण्णाण, धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥
अणुसोअपडिए बहुजणम्मि परिसोअलद्धलक्खेण । पडिभोअमेअ जप्पा, दायवो होउकामेण ॥ २ ॥
अणुसोअसुटो लोओ, पडिसोओ आसवो सुविहिआणाअणुमोओ ससारो, पडिसोओ तस्म उचारे ॥ ३ ॥
तम्हा आयापरकमेण सररसमाहिवहुलेण । चरिआ गुणा अ नियमा अ, हुति भाहूण दडुवा ॥ ४ ॥
अणिअअनासो ममुआणचरिआ, अन्नायउल्ल पपरिक्या अ ।
अप्पोवही फलहविवज्जणा अ, विहारचरिआ इसिण पमत्था ॥ ५ ॥
आइन्नओ माणविज्जणा अ, जेमन्नदिट्ठाइटभत्तपाणे ।

ससद्भक्त्येण चरिञ्ज मिक्खु तज्जायससद्भ जई जइजा ॥ ६ ॥
 अमज्जमसासि अमच्छरीआ, अभिक्खण निविग्गइ गया अ ।
 अभिक्खण काउस्सग्गकारी, सज्जायजोगे पयओ हरिञ्जा ॥ ७ ॥
 न पडिन्नविज्जा सयणासणाइ, सिअ निसिञ्ज तह मत्तपाण ।
 गामे कुले ना नगर व देसे, ममत्तभाव न कहिं पि बुज्जा ॥ ८ ॥
 गिहिणो वेआवडिअ न बुज्जा, अभिजायण वदणपूअण वा ।
 असकिलिट्ठेहिं सम वसिञ्जा, गुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥
 न या लमेज्जा निवण मढाय, गुणाहिअ वा गुणओ सम वा ।
 इक्को वि पावाइ निवज्जयतो, त्रिहरिञ्ज कामेसु अमज्जमाणो ॥ १० ॥
 सबच्छर वा वि पर पमाण, धीअ च वास न तहिं वसिञ्जा ।
 सुत्तस्स मग्गेण चरिञ्जमिक्खु, सुतस्म अत्यो जह आणवेइ ॥ ११ ॥
 जो पुव्वरत्तापररत्तकाले, सपिक्खण अप्पगमप्पण ।
 किं मे कड किं च मे किच्चसेम, किं सक्खणिअ न समायरामि ॥ १२ ॥
 कि म परा पामइ किच्च अप्पा, कि वाह रालिअ न विवज्जयामि ।
 इच्चर सम्म अणुपाममाणो, अणागय नो पडिअध बुज्जा ॥ १३ ॥
 जत्थेन पासे कड दुप्पउत्त, काण्ण वाया अदु माणसेण ।
 तत्थेन धीरो पडिसाहारिञ्जा, आडन्नओ सिप्पमिव क्खलीण ॥ १४ ॥
 जस्सेरिसा जोग जिइदिअस्म, धिइमओ सप्पुरिमस्म निच ।
 तमाहु लोण पडियुद्धजीवी, सो जीअइ सजमजीविण्ण ॥ १५ ॥
 अप्पा खलु सयय रक्खिअओ, सन्निदिण्णिं सुसमाहिएहिं ।
 अरक्खिअओ जाइपह उवेइ, सुरक्खिअओ सच्चदूहाण मुचइ ॥ १६ ॥
 त्ति वेमि ॥ इअ विवित्तचरिआ धीआ चूला समत्ता ॥

॥ इअ दसवेआलिअ सुत्त समत्त ॥





॥ श्रीमद्देवशक्तिगणितमाश्रमप्रणीत ॥

श्री नन्दीसूत्र मूलपाठः ।

जयइ जग जीव जोणी नियाणओ । जगगुरु जगणदो ॥ जगणाहो जगनभ्र, जयइ जगप्पि-
यामहोभयन ॥ १ ॥ जयइ सुआण पमवो । तित्थथराण अपन्डित्तमो जयइ ॥ जयइ गुरूलोगाण ।
जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥ भइ सव्व जगुज्जोयगस्स । भइ जिणम्म वीरस्स ॥ भइ सुरासुरनम-
सियस्स । भइ धुयरयस्स ॥ ३ ॥ गुणभरणगहण । सुयरयण भरियदसणनिसुद्धरत्थागा सव्व नगर
भइ ते । अरुड चारित्तपागारा ॥ ४ ॥ सजम तन तुवाग्यस्स । नमो मम्मत्त पारियहस्स ॥
अप्पट्टिचकस्स जओ होउ सया मघचकस्स ॥ ५ ॥ भइ सील पढागूसियस्स । तन नियम तुरय
जुत्तम्म ॥ सघरहस्स भगरओ । मज्झाय सुनदिघोसस्स ॥ ६ ॥ कम्मरय जलोइ विणिग्गयस्स ।
सुयरयण दीइनालस्स । पच महव्वय थिग्गन्नियस्स । गुणकेपरालम्म ॥ ७ ॥ माग जण महुअरि
परिउडम्म । जिण छर तेय बुद्धस्स ॥ सघपउमस्स भइ । समण गण सहस्स पत्तस्स ॥ ८ ॥ तन
सजम मयलउण । अकिरिय राट्टुमुह दुट्टगिसनिच । जय सघ च । निम्मल मम्मत्त निसुद्ध जो-
ण्हागा ॥ ९ ॥ पर तित्थिय गइ पइ नामगस्स । तततेय दिच लेमस्स ॥ नाणु ज्जोयम्म जए भइ
दम सव्व छरस्स ॥ १० ॥ भइ पिइ वेला परिगयस्स । मज्झाय जोग मगरस्स ॥ अक्खोहस्स भग-
वओ । मघ समुहस्स रुद्धस्स ॥ ११ ॥ सम्म दमण उर उइर दइ रूढ गाढानगाट पेढस्स ॥ धम्म
वररयण मडिय चामीयर पेहलागस्स ॥ १२ ॥ निय मूसिय ऋणय सिलायलुज्जल जलत चित्तक-
डस्स ॥ नदण वण मणहर सुरभि सील गधुदुपुमायम्म ॥ १३ ॥ जीउट्टया सुदर रुद रुदरिय
मुणिरर भइइ उअस्स ॥ हेउ सय घाउ पगलत रयणटित्तोसहि गुहस्स ॥ १४ ॥ सउर उर जल पग
लिय उज्झर पविराय माणहारस्स ॥ माग जण पउर उरत मोर नचउ हुहरस्स ॥ १५ ॥ विणय
नय पउर मुणिवर फुरत निज्जुअलत मिहरस्स । निविह गुण रूप रूपम फलभर वुसुमाउल
वणस्स ॥ १६ ॥ नाण वर रयण दिप्पत्त उत त्रेरुलिय तिमल चूलस्स ॥ वढामि विणय पणओ
सघ महामदर गिरिम्म ॥ १७ ॥ गुण रयणुज्जउ कडय सील सुगधि तन मडिउट्टेस ॥ सुयउरम-
गसिहर सघ महामदर वडे ॥ १८ ॥ नगर गइ चक पउमे चदे खरे समुह मेरुम्म ॥ जो उरमि-
अउ सयय त मघगुणायरं वडे ॥ १९ ॥ उंढे उमभ अजिय सभन मभिनदण सुमउ सुप्पभ सुपाव ॥

ससि पुष्पदत्त सीपल सिञ्जस वासुपुञ्ज च ॥ २० ॥ विमल मणत य धम्म मन्ति कुपु अर च मल्लि
 च ॥ मुनिमुष्य नमिनेमिं पास तह वद्धमाण च ॥ २१ ॥ पढमत्थि इदभूइ धीए पुणहोइ अग्गिभू-
 इत्ति ॥ तईए य वाडभूई तओ वियत्ते सुहम्मेष ॥ २२ ॥ मडिअ मोरिय पुत्ते अकपिऐ चेय अयल
 भायाय ॥ भे यज्जेय पहासेय गणहरा हुत्ति वीरस्म ॥ २३ ॥ निच्चुइ पद्द मामणय जयइ सया सब
 भाव देसणया ॥ कु समय मय नासणय जिण्णिंदवर वीर सासणय ॥ २४ ॥ सुहम्म अग्गिवेमाण जव
 नाम च कासन पभव ॥ कच्चायण वदे वच्छ सिञ्जभव तहा ॥ २५ ॥ जसभद्द तुगिय वदे सभूय
 चेव मादर ॥ भद्दवाहु च पाइअ थूलभद्द च गोयम ॥ २६ ॥ ऐलावच्चसगोत्त वढामि महागिरिं
 सुहर्त्थि च ॥ तत्तो कोसियगोत्त बहुलस्म सरिइय वन्दे ॥ २७ ॥ हारिय गुत्त माइ च वदिमो
 हारिय च सामञ्ज ॥ वन्दे कोसिय गोत्त सडिल्ल अज्ज जीयधर ॥ २८ ॥ तिसमुह्दयायकित्ति दीव
 समुह्देषु गहिय पेयाल ॥ वदे अज्ज समुह्द अकरुमिय समुह्दगमीर ॥ २९ ॥ भणग करग इरग
 पभावग णाणदमण गुणाण ॥ वढामि अज्ज मगु सुय सागर पारग धीर ॥ ३० ॥ वढामि अज्ज धम्म
 तत्तो वदे य भद्द गुत्त च ॥ तत्तोय अज्ज वहर तत्र नियम गुणेहिं वहर मम ॥ ३१ ॥ वढामि अज्ज
 रक्खिय खमणे रक्खिय चारित्त सबस्से ॥ रयण मरडग भूओ अणुओगो जेहिं ॥ ३२ ॥ नाणम्मि
 दमण म्मिय तत्र विणए णिच्च काल मुज्जुत्त ॥ अज्ज नदिलसमण सिग्गा वदे पमन्नमण ॥ ३३ ॥
 वहुउ त्रायगममो नलवमो अज्ज नागहत्थीण ॥ त्रागरण मरण भगिय कम्मपयडी पहाणाण ॥ ३४ ॥
 जच्चजण धाउ समप्पहाण मुहिय कुललय निहाण ॥ वहुउ वायगममो रउन्नकवत्त नामाण ॥ ३५ ॥
 अपलपुरा णिकस्सते कालियसुय आणुओगिए धीरे ॥ वमहीउगमीहे त्रायगपय सुत्तम पत्ते ॥ ३६ ॥
 जेमि इमो अणु ओगो पयरइ अज्जाविअहुदभरहम्मि ॥ बहु नयर निग्गय जसे ते वद सडिलाय
 रिए ॥ ३७ ॥ तत्तो हिमन्त महत्त विक्रमे थिड परकम मणते ॥ सज्झाय मणतधरे हिमवत्त वदि
 मो सिरसा ॥ ३८ ॥ कालिय सुय अणु ओगम्प धारण धारण य पुञ्जाण ॥ हिमवत्त खमा समणे
 वदे णागज्जुणायरिये ॥ ३९ ॥ मिउमहउ सपन्ने आणुपुत्ति वायगतत्त पत्ते ॥ ओहसुय समायारे
 नाज्जुण त्रायण वदे ॥ ४० ॥ गोर्निदाण पि नमो अणुओगे विउल धारिणिं दाण ॥ णिच्च सति
 दयाण पस्वणे दुल्लभिं दाण ॥ ४१ ॥ तत्तो य भूयदिन्न निच्च तत्र सज्जे अनिब्बिण्ण ॥ पडिय
 जण मामण्य वढामो सज्जम विहिण्णु ॥ ४२ ॥ करकणगतविय चपग विमउलवर कमल गन्म
 सरिवत्ते ॥ भविय जणहिययदइए दयागुण विमाए धीरे ॥ ४३ ॥ अहु भरहप्पहाणे बह्विह सज्झाय
 सुमुणिय पहाणे ॥ अणुओगिय उर वमभे नाइल कुल वमनदिकरे ॥ ४४ ॥ भूयहियअपगग्गे वदइह
 भूयदिन्न मायरिए ॥ मउमय उ-उये करे सीस नागज्जुण रिमीण ॥ ४५ ॥ सुमुणिय निच्चा निच्च
 सुसुणिय सुत्तत्थ धारय वदे ॥ म-माउन्नाभावणया तत्थ लोहिच्चणामाण ॥ ४६ ॥ अत्थ मत्थ
 कस्सणिं सुसमण वस्सण कइण निव्वाणि ॥ पयईए महुरवाणि पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४७ ॥
 तत्र नियम मच्च मच्च विणयज्जव सति महरयाण ॥ मील गुणमदियाण अणुओग जुगप्पहाणाण
 ॥ ४८ ॥ सुकुमाल कोमल तले तेमिं पणमामि लक्कण पमत्थे पाण पावयणीण पडिच्च सय एहि
 पणि वइए ॥ ४९ ॥ जे अन्न भगवत्ते कालिय सुय आणु ओगिण धीरे ॥ ते पणमिउण सिरसा
 नाणस्स परूवण वोच्छा ॥ ५० ॥

इति ।

सेल-पण, वृद्धा, चालणि, परिपूणम, ह्रम. महिम, मेसे य, ममग, जन्म, विराली जाहग, गो,
मेरी आर्मीगि ॥ ५१ ॥

“मा ममामश्रो तिविहा पञ्चत्वा तजहा जाणिया, अजाणिया, दुवियट्टा” जाणिया तहा खीर-
मिन्, जहा हमा जे पुट्टन्ति इह गुरुण समिद्धा दोसे य विरजति त जाणमृ जाणिय परिस ॥५२॥
अजाणिया जहा-जा होइ पगइमहुरा मियछावय मीह वृत्तुडप भूआ । २यणमिव असठविया ।
अजाणिया मामवे परिसा ॥ ५३ ॥ दुवियट्टा जह-नय नयइ निम्माओ न य पुत्तइ परिमवस्म
दोमेण । वदियवनायपुण्णो फुट्टइ मामिल्लयवियट्टो दुवियट्टो ॥ ५४ ॥ (सूत्र) नाण पञ्चविहं पन्नत,
तनहा-आमिणि वोदियनाण सुयनाण, ओहिनाण, मणपञ्चवनाण, केवलनाण ॥ १ ॥ त ममामओ
दुविह पण्णत्त, तनहा-पचकस्स च परोकम च ॥ सू० २ ॥ से किं त पचकस्स ? पचकस्स दुविहप-
ण्णत्त, तनहा इदियपचकस्स । नोइदियपचकस्स च ॥ सू० ३ ॥ से किं त इदिय पचकस्स ? इदिय-
पचकस्स पञ्चविह पण्णत्त, तनहा-सो इदियपचकस्स । चविंदिय पचकस्स । धाणंदिय पचकस्स ।
त्रिदंमनिय पचकस्स । फाणंदिय पचकस्स । सेत इदियपचकस्स ॥ सू० ४ ॥ से किं त नोइदियप-
चकस्स ? नोइदियपचकस्स तिविह पण्णत्त तनहा-ओहिनाण पचकस्स । मणपञ्चवनाण पचकस्स ।
केवलनाण पचकस्स ॥ ५ ॥ से किं त ओहिनाण पचकस्स ? ओहिनाण पचकस्स दुरिह पण्णत्त,
तजहा-भरपचइयच मा ओरममिय च ॥ ६ ॥ से किं त भरपचइय ? भरपचइय दूण्ड, तजहा-
देवाणय नेरइयाणय ॥ ७ ॥ मे किं त सा ओरममिय ? सा ओरममय दूण्ड, तजहा-मणूमाण
य पचेदिय तिरिकस्स जोगियाण य । को इउ साओरममिय ? साओरममिय तपावरणि ज्ञाण
रम्माण उदिण्णाण सण्ण अणुदिण्णाण उवसमेण ओहिनाण समुप्पजइ ॥ सू० ८ ॥ अहमा गुण-

पट्टिवन्नस्स अणगारम्म ओहिनाण समुप्पजइ त समासओ छविह पण्णत्त, तनहा-आणुगामिय,
अणुगामिय, उहुमाणय, हीयमाणय, पट्टिवाइग, अपट्टिवाइग ॥ ६ ॥ से किं त आणुगामिगं
आणुगामिय ओहिनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-अतगय च मज्झगग च । मे किं त अंतगग ?
अतगय तिविह पण्णत्त तनहा पुरओ अतगय ? मग्गओ अतगय । पामओ अतगय मे किं त पुरओ
अतगय ? पुरओ अतगय-से जहा नामण नइ पुरिसे उक्खा चट्टलिय ना अलाय ना
मणि वा पईर ना जोइ वा पुरओ काउ पणुल्लेमाणे २ गच्छिज्जा, मे त पुरओ अतगय । मे किं त
मग्गओ अतगय ? मग्गओ अतगय से जहानामए कइ पुरिसे उक्खा वा चट्टलिय ना अलाय ना
मणि वा पईर वा जोइ वा मग्गओ काउ अणुल्लेमाणे २ गच्छिज्जा, मे त अतगय । मे किं त
पामओ अतगय ? पामओ अतगय मेजहानामए कइ पुरिसे उक्खा वा चट्टलिय ना अलाय वा मणि
वा पईर वा जोइ वा पामओ काउ परिकरइे भाणे २ गच्छिज्जा, मे त पामओ अतगय मे त अत-
गय । से किं त मज्झगग ? मज्झगग इउ पुरमे उक्खा वा चट्टलिय वा अलाय वा

मणिं वा पर्ईं वा जोइ वा मत्थए काउ समुबह माणे २ गच्छिज्जा सेत मज्झगय । अतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो । पुरओ अतगएण ओहि नाणेण पुरओ चेव सखिज्जाणि वा असखे-
ज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पासइ मग्गओ अतगएण ओहिनाणेण मग्गओ चेव सखिज्जाणि वा अस-
खिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पामइ । पामओ अतगएण ओहिनाणेण पासओ चेव सखिज्जाणि वा
असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पामइ । मज्झगएण ओहिनाणेण सबओ समता सखिज्जाणि वा
असखिज्जाणि वा जोयणाइ जाणइ पामइ । से त आणुगामिय ओहिनाण ॥ १० ॥ से किं त अणा-
णुगामिय ओहिनाण अणाणु गामियं ओहिनाण से जहानामए केइ पुरिसे एग महत्त जोइट्ठाण काउं
तस्सेर जोइट्ठाणस्स परिपेर तेहिं परिपेरतेहिं, परिघोले माणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाण पासइ,
अन्नत्थगए न जाणइ न पासइ एवामेय अणाणुगामिय ओहिनाण जत्थेय समुप्पज्जइ तत्थेय सखे
ज्जाणि वा असखेज्जाणि वा सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा जोयणाइ जाणइ पामइ, अन्नत्थगएण
पामइ, से च अणाणुगामिय ओहिनाण ॥ ११ ॥ से किं त षड्ढमाणय ओहिनाण ? षड्ढमाणय
ओहिनाण पमत्थेसु अज्झपसायट्ठाणेसु षड्ढमाणस्स षड्ढमाण चरित्तस्स । विसुज्झमाणस्स विसुज्झ-
माण चरित्तस्स । सबओ समता ओहि वड्ढइ—

जावइजा तिसमयाहारगम्म सुहुमस्स पणगजीरस्स ॥ ओगाहणा जहन्ना ओहीरित्त जहन्तं
तु ॥ ५५ ॥ सब षड्ढ अगणि जीवा निरतर जत्तिय भरिज्जसु ॥ रित्त सबदिनाग परमोही सेचनि-
हिट्ठो । ५६ ॥ अगुलमावलियाण भाग मसपिज्ज दोसु सखिज्जा ॥ अगुलमावलियतो आवलिया
अगुल पुहुत्त ॥ ५७ ॥ हत्थम्मि सुहुत्ततो, दिवसतो गाउयम्मि बोद्धवो ॥ जोयण दिनमपुहुत्त,
पमत्ततो पन्नवीमाओ ॥ ५८ ॥ भरहम्मि अद्धमासो, जम्मुदीगम्मि साहिआ मामा ॥ वास च
मणुय लोप, चामपुहुत्त च रुयगम्मि ॥ ५९ ॥ सखिज्जम्मि उ काले, दीरममुदावि हुति सखिज्जा ॥
कालम्मि असखिज्जे, दीरसमुदा उ भइयव्वा ॥ ६० ॥ काले चउणहुट्ठी, कालो भइयव्चु रित्त
वुट्ठीए ॥ वुट्ठीए पव्वपज्जन, भइयवा रित्तकाला उ ॥ ६१ ॥ सुट्ठो य होइ कालो, ततो सुहुम-
यर हउइ रित्त अगुल सेढी मिचे, ओमप्पिणिओ असखिज्जा ॥ ६२ ॥ से च षड्ढमाणय ओहिनाण
इ ॥ १२ ॥ से किं त हीयमाणय ओहिनाण ? हीयमाणय ओहिनाण अप्पमत्थेदिं अज्झपसायट्ठा
णेहिं षड्ढमाणस्स षड्ढमाणचरित्तस्स सक्किलिस्स माणस्स सक्किलिस्समाणचरित्तस्स सबओ समन्ता
ओही परिहायइ से च हीयमाणय ओहिनाण ॥ १३ ॥ से किं त पडिवाइ ओहिनाण ? पडिवाइ
ओहिनाण जइण्णेण अगुलम्म असखिज्जय भाग वा सखिज्जय भाग वा बालग्ग वा बालग्ग पुहुत्त
वा लिस्स वा लिस्सपुहुत्त वा, जूय वा जूयपुहुत्त वा, जय वा जय पुहुत्त वा । अगुल वा अगुल
पुहुत्त वा । पाय वा पायपुहुत्त वा । विइरिथ वा विइरिथ पुहुत्त वा । रयणि वा रयणि पुहुत्त वा
कुच्छि कुच्छिपुहुत्त वा, घणु वा घणुपहुत्त वा । गाउअ वा गाउयपुहुत्त वा । जोयण वा जोयण
पुहुत्त वा । जोअणमय वा जोयणमय पुहुत्त वा जोयण महस्स वा जो यणसहम्म पुहुत्त वा । जो
यणलक्ख वा जोयणलक्ख पुहुत्त वा । जोयणकोडिं वा जोयणकोडाकोडिं पुहुत्त वा । जोयणकोडा-
कोडिं वा जोयणकोडाकोडिं पुहुत्त वा । [जो अणमखिज्ज वा जो अणसखिज्ज पुहुत्त वा जो अण

अमवेज्जना जो अणअसवेज्जपुत्तवा ।] उक्कोसेण लोम वा पासि चाण पडिवइत्ता । मे त पडिनाड ओहिनाण ॥ १४ ॥ से किं त अपडिनाड ओहिनाण । अपडिनाड ओहिनाणजेण अलोमस्म पग-
मवि आगामपपम जाणड पामड तेण पर अपडिनाड ओहिनाण । से च अपडिनाड ओहिनाण ॥ १५ ॥
त समामओ चउविह पण्णत्त, तज्जहा दव्वओ, रिचओ, कालओ, भाजओ । तन्थ दन ओ ण ओहि-
नाणी जहन्नेण अणताड रुविदव्वाइ जाणड पामड उक्कोसेण सब्बाइ रुविदव्वाइ जाणइ पामड रिच-
ओण ओहिनाणी जहन्नेण अगुलम्भ अमखिज्जय भाग जाणड पामड, उक्कोसेण अमग्गि ज्जाइ अलोमे
लोगप्पमाण मित्ताइ सट्ठाइ जाणड पामड, जालओ ण ओहिनाणी जहन्नेण आरलियाए अमसिज्जय
भाग जाणड पामड, उक्कोसेण असरिज्जाओ उस्मप्पिणीओ अवमप्पिणीओ अईय मणागय च जाल
जाणड, पामड भाजओ ण ओहिनाणी जहन्नेण अणत भावे जाणड पामड, उक्कोसेणवि अणत भावे
जाणड पामड । मज्ज मायाण मणत भाग भावे जाणड पामड ॥ १६ ॥ ओही मज्जचडओ गणपव-
इओ य ण्णिओ दुविदो । तस्म य ब्रह्म विगप्पा दये मित्ते य जालेय । नग्गयदरनित्थरा य
ओहिम्मज्जाहिग कृति । पामति मज्जओ गल्ल सेमा देसेण पामति । से च ओहिनाणपवकय से कि
त मणपज्जवनाण ? मणपज्जवनाणे ण भते ! किं मणुस्माण उप्पज्जड अमणुस्माण ? गोयमा !
मणुस्माण नो अमणुस्माण ० ? जडमणुस्माण किं समुच्छिडमणुस्माण गन्मज्जकतिय मणुस्माण ?
गोयमा ! नोसमुच्छिडमणुस्माण उज्जटं गन्मज्जकतियमणुस्माण । जडगन्मज्जकतियमणुस्माण किं
कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, अकम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, अन्तरदीग्गगन्मज्ज-
कतिय मणुस्माण, गोयमा ? कम्मभूमिय गन्मज्जकतियमणुस्माण नो अकम्मभूमिय गन्मज्जकतिय-
मणुस्माण, नो अन्तरदीग्ग गन्मज्जकतियमणुस्माण जड कम्मभूमियगन्मज्जकतियमणुस्माण, किं
सरिज्जनामाउयकम्मभूमिय गन्मज्जकतियमणुस्माण अमग्गिज्जनामाउयकम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणु-
स्माण ? गोयमा ! सरिज्जनामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, नो जमयेज्ज नामाउय
कम्मभूमिय मणुस्माण । जड मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, किं पज्जत्तग मये-
ज्जनामाउयकम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, अपज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय
मणुस्माण ? गोयमा ! पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, नो अपज्जत्तग
मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण । जड पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभू-
मिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण ० किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्ज-
कतिय मणुस्माण, मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, स-
म्माभिच्छदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण ? गोयमा ! सम्म-
दिट्ठि पज्जत्तग मयेज्जनामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण नो मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग
मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण ०, नो सम्माभिच्छदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज
नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण, जड सम्मदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभू-
मिय गन्मज्जकतिय मणुस्माण किं मज्जय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्म-
ज्जकतिय मणुस्माण, असज्जय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय
मणुस्माण । सज्जया सज्जय सम्मदिट्ठि पज्जत्तग मयेज्ज नामाउय कम्मभूमिय गन्मज्जकतिय मणु-

स्साण ? गोयमा । सजय सम्महिद्धि पञ्जत्तग मयेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणु-
 स्साण, नो अमजय सम्महिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण ।
 नो सजयासजय सम्महिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण । जइ
 सजय सम्महिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण किं पमत्त सजय
 सम्महिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण, अपमत्त सजय सम्महिद्धि
 पञ्जत्तग सखेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण ? गोयमा ! अपमत्तमजय सम्महिद्धि
 पञ्जत्तग सखेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण, नो पमत्त सजय सम्महिद्धि
 पञ्जत्तग सखेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण । जइ अपमत्त सजय सम्महिद्धि
 पञ्जत्तग मयेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण, किं इड्डीपत्त अपमत्त सजय सम्महिद्धि
 पञ्जत्तग सखेज्ज वामाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण अणिड्डीपत्त अपमत्त सजय सम्म-
 हिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण ? गोयमा ! इड्डीपत्त अपमत्त
 सजय सम्महिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय गम्भयकतिय मणुस्साण, नो अणिड्डीपत्त
 अपमत्तमजयसम्महिद्धि पञ्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमिय मणुस्साण । मणपञ्जजनानां समु-
 प्पज्जइ ॥ सू० ॥ १७ ॥ त च दुविह उप्पज्जइ तजहा उज्जुमई य विउलमई य त समासओ
 चउत्तिवह पन्नत्त तजहा-दवओ, त्तिओ, कालओ, भाओ । तत्थ दवओण उज्जुमई अणते अणत्त
 पएसिए मधे जाण पामइ, त चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वित्तिमिर-
 तराए जाणइ पासइ । त्तिओण उज्जुमई यजहणेण अंगुलस्स अमगेज्जय भाग उक्कोमेण अहे
 जान इमीसे रयणप्पभाण पुढरीए उअरिमहट्टिल्ले खुड्डम पयरे उट्टु जाण जोइमस्स उअरिमत्ते,
 तिरिय जाव अन्तोमणुस्सुम्मस्सिणे अट्टाहज्जेसु दीअमसुद्धेसु पञ्चरस्ससु कम्मभूमिसु तीसाए अक्क-
 भूमिसु छपन्नाण अन्तरदीअगेसु सन्नियेदिआण पञ्चत्तयाण मणोगए भावे जाणइ पामइ त चेव
 विउलमइ अट्टाहज्जेस्सिमगुलेहि अब्भहियत्तर विउलतर विसुद्धतर वित्तिमिरतराग रेत्त जाणइ पामइ ।
 कालओ ण उज्जुमई नहणेण पल्लिओवमस्स असत्तिज्जयभाग उक्कोसेणवि पल्लिओवमस्स असत्ति-
 ज्जयभाग अतीयमणागम वा काल जाणइ पामइ । त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग
 विसुद्धतराग वित्तिमिरतराग जाणइ पामइ । भाओ ण उज्जुमई अणते भावे जाणइ पासइ, सब-
 भायाण अणत्तभाग जाणइ पामइ । त चेव विउलमई अब्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतराग वि-
 त्तिमिरतराग जाणइ पामइ । मणपञ्जजनानां पुण जणमणपरिचित्तिरथपागडण । माशुमस्सिचनिचद्ध
 गुणपच्चइय चरिचवओ ॥ ६० ॥ से त मणपञ्जजनानां सू० ॥ १८ ॥ से किं त कवलनाण ?
 केवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा-भवत्थकेवलनाण च सिद्धकेवलनाण च । से किं त भवत्थकेवल-
 नाण ? भवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-सजोगिभवत्थकेवलनाण च असजोगिभवत्थकेवलनाण
 च । से किं त असजोगिभवत्थकेवलनाण ? असजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पण्णत्त, तजहा-पढम-
 समयसजोगिभवत्थ, केवलनाण च अपढम समय सजोगिभवत्थकेवलनाण च, अहवा, चरमसमयस-
 जोगिभवत्थकेवलनाण च अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाण च, से त्त सजोगिभवत्थकेवलनाण ।
 से किं त असजोगिभवत्थकेवलनाण ? असजोगिभवत्थकेवलनाण दुविह पन्नत्त, तजहा-पढमसयसजोगि-

भवत्यकेवलनाण च अपढममयअजोगिभवत्यकेवलनाण च अहदा चरमममयअजोगिमन्त्यकेवल
नाण च अचरमममयअजोगिमन्त्यकेवलनाण च, से च अजोगिभवत्यकेवलनाण, से च भन्त्यके-
वलनाण ॥ सू० ॥ १९ ॥ से किं त सिद्धकेवलनाण? सिद्धकेवलनाण द्विविह पण्णत्त, तजहा—अण-
तरसिद्धकेवलनाण च परपरसिद्धकेवलनाण च ॥ सू० ॥ २० ॥ से किं त अणतरसिद्धकेवलनाण ?
अणतरसिद्धकेवलनाण पन्नरसविह पण्णत्त, तजहा—तित्थसिद्धा १, अतित्थसिद्धा २, तित्थपरसिद्धा
३, अतित्थपरसिद्धा ४, मयबुद्धसिद्धा ५, पचोयबुद्धसिद्धा ६, बुद्धबोहियसिद्धा, ७ इत्थिलिंगसिद्धा
८, पुरिमलिंगसिद्धा ९, नपुसगलिंगमिद्धा १०, सलिंगसिद्धा ११, अनलिंगसिद्धा १२, गिहिलिंग
सिद्धा १३, एगसिद्धा १४, अणेगसिद्धा १५, से च अणतरसिद्धकेवलनाण ॥ सू० ॥ २१ ॥ म किं
त परपरसिद्धकेवलनाण? परपरसिद्धकेवलनाण अणेगविह पण्णत्त, तजहा—अपढमममयमिद्धा, दुस-
मयसिद्धा, तिममयसिद्धा, चउममयसिद्धा, जाव दसममयसिद्धा, सरियज्जममयसिद्धा, असरियज्जम
मयसिद्धा, अणतसमयसिद्धा, से च परपरसिद्धकेवलनाण, मे च सिद्धकेवलनाण ॥ त ममामओ
चउव्विह पण्णत्त, तजहा—दव्वओ, रिउओ, कालओ, भावओ । त य दव्वओ ण केवलनाणी मव्वद-
व्वइ जाणइ पामइ । रिउओ ण केवलनाणी सव्व रिउ जाणइ पासइ । कालओ ण केवलनाणी सव्व
काल जाणइ पासइ । भावओ ण केवलनाणी सव्वे भाव जाणइ पासइ । अह मन्वदव्वपरिणाम,
भावपिण्णत्तिवारणमणत्त । सासय मप्पड्डिआइ, पगविह केवल नाण ॥ २२ ॥ सू० ॥ २२ ॥ केव-
लनाणेणउत्थे. नाउ ज तत्थ पण्णत्तजोगे । ते भामउ ति थयरो, उउजोगसुय हवइ मेम ॥ २३ ॥
से च केवलनाण, से च नोउदियपचरत्त से च पचकपनाण ॥ सू० ॥ २३ ॥ से किं त परोक्कप-
नाण ? परोक्कपनाण द्विविह पन्नत्त, तजहा—आभिणिबोहियनाणपरोक्कत्त च, सुयनाण परोक्कत्त च,
जत्थ आभिणिबोहियनाण तत्थ सुयनाण, जत्थ सुयनाण तत्थाभिणिबोहियनाण, दोउवि पयाइ
अण्णमण्णमण्णयाइ, तहवि पुण इत्थ आयरिया नाणत्तपण्णत्तपति—अभिनिउज्जइति आभिणिबोहि-
यनाण, सुणेउत्ति सुय, महपुव्व जेण सुय, न मई सुयपुव्विया ॥ सू० ॥ २४ ॥ अविसेसिया मई,
मइनाण च मउअन्नाण च । विसेसिया मम्मदिट्ठिस्स मई मइनाण मिउद्विट्ठिस्स मई मइण्णाण ।
अविसेसिय सुप सुयनाण च सुयअन्नाण च । विसेसिय सुय मम्मदिट्ठिस्स सुय सुयनाण, मिउ-
द्विट्ठिस्स सुय सुयअन्नाण ॥ सू० २५ ॥ से किं त आभिणिबोहियनाण ? आभिणिबोहियनाण
द्विविह पण्णत्त, तजहा—सुयनिस्सिय च, अस्सुयनिस्सिय च । से किं त अस्सुयनिस्सिय ? अस्सुयनि-
स्सिय चउव्विह पण्णत्त, तजहा—उत्पत्तिया १ वेणइया २, रुमया ३, परिणामिया ४ । बुद्धि
चउव्विहवा बुत्ता, पचमा नोवलमइ ॥ २६ ॥ सू० ॥ २६ ॥ पुच्चमदिट्ठमस्सुयमणेइय, तक्कणवि-
सुद्धगदियत्था । अवाहयफलजोगा, बुद्धि उत्पत्तिया नाम ॥ २७ ॥ मरइसिल १ पणिय २ रुक्खे
३ सुइग ४ पइ ५ सरइ ६ काय ७ उच्चारे ८ । गय ९ थयण १० गोल ११ खमे १२, सुइग
१३ मगि १४ तिथ १५ पइ १६ पुत्ते १७ ॥ ७० ॥ मरइ १ सिल २ मिद ३ वुक्कइ ४, तिल
५ वाहुय ६ हयि ७ अगइ ८ वणसडे ९ । पायम १० अइया ११ पत्ते १२, राउहिला १३
पच पिअरो य १४ ॥ ७१ ॥ महुमित्थ १८ सुदि १९ अके २०, य नाणए २१ भिक्खु २२
चेडगनिगाणे २३ सिक्खा २४ य अत्थमत्थे २५, इत्थी य मह २६ मयसहम्मे २७ ॥ ७२ ॥

भरनिस्वरणसमत्था, त्रिवर्गसुचत्थगहियपेयाला । उभओलोगफलवई, विणयममुत्था हवइ बुद्धी
 ॥ ७३ ॥ निमित्ते १ अत्यसत्थे य २ लेहे ३ गणिए य कूज ५ अस्से ६ य । गहम ७ लक्खण
 ८ गठी ९, अगए १० रहिए ११ य गणिया १२ य ॥ ७४ ॥ सीया साटी दीह, च तण अवम-
 व्वय च कुचस्म १३ निव्वोदए १४ य गोणे, घोडगपडण च रुत्ताओ १५ ॥ ७५ ॥ चउओग-
 दिट्टमारा, कम्मपसगपरिवोलणपरिसाला । साहुकारफलवई, कम्मममुत्था हवइ बुद्धी ॥ ७६ ॥ हे-
 णिए १ करिमए २, कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पण ७ तुवाए ८ वट्टइय ९ पूयइ
 १० णइ ११ चित्तकार १२ य ॥ ७७ ॥ अणुमाणहेउदिट्टतमाहिया वपविणायपरिणामा । हिय-
 निस्सेयमफलवई, बुद्धी परिणानिया नाम ॥ ७८ ॥ जभए १ मिट्ठि इमाए ३, देवी ४ उदोदए
 हवइ राया ५ माहू य नदिसेणे ६, धणट्ठे ७ साउग ८ अमचे ९ ॥ ७९ ॥ गमए १० अमच-
 पुत्ते ११, चाणके १२ चेर थूलभहे १३ य । नासिक्खसुदरिनइ १४ वहर परिणामिया बुद्धी ॥ ८० ॥
 चउणाहण १६ आभडे १७, मणी १८ य सप्प १९ य खग्गि २० बुभिइ २१ । परिणामियवु-
 द्धिण, एवमाई उदाहरणा ॥ ८१ ॥ सेत्त अम्भुयनिस्सिमय । से किं त सुयनिस्सिमय ? सुयनिस्सिमय
 चउत्तिह पण्णत्त, तजहा—उग्गहे १ ईहा २ अउओ ३ धारणा ४ ॥ सू० ॥ २६ ॥ से किं त
 उग्गह ? दुविहे पण्णत्त, तजहा—अत्थुग्गह य उज्जुग्गह य, ॥ सू० ॥ २७ ॥ मे किं त
 वज्जुग्गह ? उज्जुग्गह चउत्तिह पण्णत्त, तजहा—सोडदियवज्जुग्गह, घाणिदियवज्जुग्गह
 जिम्भिनियउज्जुग्गह फासिदियउज्जुग्गह, से च वज्जुग्गह ॥ सू० ॥ २८ ॥ से किं
 त अत्थुग्गह ? अत्थुग्गहे छविह पण्णत्त, तजहा—सोडदियअत्थुग्गहे, चकिणदियअत्थुग्गह,
 घाणिदियअत्थुग्गहे, जिम्भिनियअत्थुग्गहे, फासिदियअत्थुग्गहे, नोडदियअत्थुग्गह ॥ सू० ॥
 ॥ २९ ॥ तस्म ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणाउज्जणा पच नामधिज्जा भवति, तजहा—
 ओगेणया, उवभारणया, मणया, अवलवणया, मेहा, से च उग्गहे ॥ सू० ॥ ३० ॥ से किं त
 ईहा ? छविहा पण्णत्ता, तजहा—सोडदियईहा, चकिणदियईहा, घाणिदियईहा, जिम्भिनियईहा, फा-
 सिदियईहा, नोडदियईहा, तीसेण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणा उज्जणा पच नामधिज्जा भवति,
 तजहा—आभोगणया, मगणया, गवेसणया, चिता, वीममा, से च ईहा ॥ सू० ॥ ३१ ॥ से किं
 त अवाए ? अवाए छविहे पण्णत्त, तजहा—सोडदियअवाए, चकिणदियअवाए, घाणिदियमवाए
 जिम्भिनियअवाए, फासिदियअवाए, नोडदियअवाए, तस्म ण इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणाउज्जणा
 पच नामधिज्जा भवन्ति, तजहा—आउट्टणया, पचाउट्टणया, अवाए, बुद्धी, विण्णाणे, से च
 अवाए ॥ सू० ॥ ३२ ॥ से किं त धारणा ? धारणा छविहा पण्णत्ता, तजहा—सोडदियधारणा, च-
 किणदियधारणा, घाणिदियधारणा, जिम्भिनियधारणा, फासिदियधारणा, नोडदियधारणा, तीसे ण
 इमे एगट्ठिया नाणाघोसा नाणाउज्जणा पच नामधिज्जा भवति, तजहा धारणा, धारणा, ठणया, पट्ठा,
 कोट्टे, से च धारणा ॥ सू० ॥ ३३ ॥ उग्गहे इक्कसमइए, अतोमुहुत्तिया ईहा, अतोमुहुत्तिए अवा-
 ए, धारणा सत्थेज्ज वा काठ असत्थेज्ज वा काल ॥ सू० ॥ ३४ ॥ एव अट्ठावीसइविहस्स आभि-
 णियोहियनाणस्स वज्जुग्गहस्स परुरण करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठतेण मल्लपदिट्ठतेण । मे किं त
 पडिबोहगदिट्ठण ? पडिबोहगदिट्ठतेणसे जहानामए कंइ पुरिसे कचि पुरिस सुच पडिबोहज्जा,

अमुगा अमुगति तस्य चोयगो पन्नवय एव वयासी-किं एगसमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति ? दुसमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति? जाव दससमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति ? संविज्ज-समयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति ?, अससिळ समयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति ?, एव वयत चोयग पण्णवए एव वयासी-नो एगसमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति, नो दुसमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति, जाव नो दससमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति, नो ससिज्जसमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति, अससिज्जसमयपविट्टा पुग्गला गहणमागच्छति, से च पडिघोहगदिट्ठतेण । से किं त मल्लगदिट्ठतेण ? मल्लगदिट्ठतेण से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीताओ मल्लग गहाप तन्थेग उदगविंदु पक्खेविज्जा, मे नट्ठे, अण्णेअधि पक्खिपत्ते सेअग्नि नट्ठे, एव पक्खिखप्पमाणेसु पक्खिखप्पमाणेसु होही से उदगविंदु जे ण त मल्लग रावेहिइत्ति, होही से उदगविंदु, जे ण तसि मल्लगसि ठाहिति, होही से उदगविंदु जे ण त मल्लग भरिहित, होही से उदगविंदु, जे ण त मल्लग पनाहेहिति, एवामेव पक्खिखप्पमाणेहिं पक्खिखप्पमाणेहिं अणत्तेहिं पुग्गतेहिं जाइ त वज्जण पूरिय होइ; ताहेट्ठुत्ति करेइ नो चेव ण जाणइ के वेम सदाइ ? तओ ईह पविसइ, तओजाणइ अमुगे एस सद्दइ, तओ अवाय पविसइ तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओण धारइ ससिज्ज वा काल, अससिज्ज वा काल, से जहानामए केइ पुरिसे अब्ब सदमुणिसिजा, तेण सहोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेम सदाइ, तओ ईह पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस मद्द, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अब्ब रूप पासिज्जा तेण रूवति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस रूपत्ति; तओ ईहपविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रूवे, तओ अवाय पविमइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अन्नत्त रम आसाइजा तेण रमोत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेम रमेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवाय पविसइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ ससिज्ज वा काल अससिज्ज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अन्नत्त फास पडिसवेइजा तेण फासेत्ति उग्गहिए, नो चेव ण जाणइ के वेस फासोत्ति, तओ ईह पविमइ, तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवाय पविमइ, तओ से उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल असखेज्ज वा काल । से जहानामए केइ पुरिसे अन्नत्त सुमिण पामिजा तेण सुमिणेत्ति उग्गहिए नो चेव ण जाणइ के वेस सुमिणेत्ति, तओ ईह पविसइ, तओ जाणइ अमुगे एस सुमिणे; तओ अवाय पविमइ, तओ मे उवगय हवइ, तओ धारण पविसइ, तओ ण धारेइ सखेज्ज वा काल, असखेज्ज वा काल, से च मल्लगदिट्ठतेण ॥ ७० ३५ ॥ त ममामओ चउच्चिह पण्णत्त, तजहा दव्वओ, सित्तओ, कालओ, भावओ, तस्य दव्वओ ण आभिणिचोहियनाणी आएसेण सव्वाइ दव्वाइ, न पामइ । खेत्तओण आभिणिचोहियनाणी

आण्सेण सच्च खेत्त जाणइ न पामइ । कालओ ण आभिणिबोहियनाणी आण्सेण सच्च काल जाणइ न पामइ । भावओ ण आभिणिबोहियनाणी आण्सेण सच्चे भावे जाणइ, न पासइ ।

उग्गह ईहाओ, य धारणा एव हृति चत्तारि । आभिणिबोहियनाणस्म भेयवत्त्वं समासेण ॥८०॥ * अत्थाण उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा । ववमायम्मि अजाओ, धरण पुण धारण विंति ॥ ८३ ॥ उग्गह इक्क समय, ईहावाया सुहुत्तमद्ध तु । कालमसत्त सत्त, च धारणा होई नायत्ता ॥ ८४ ॥ पुट्ट सुणेइ सह, रूव पुण पासइ अपुट्ट तु । गध रस च फास च, बद्धपुट्ट विया गर ॥ ८५ ॥ भासासमसेदीओ, सह ज सुणइ मीसिय सुणइ । वीसेदी पुण सह, सुणेइ नियमा परात्ताए ॥ ८६ ॥ ईहा अपोह वीमसा, मग्गणा य गवेसणा । मन्ना सई मई पत्ता, मच्च आभि णिवोहिय ॥ ८७ ॥

से च आभिणिबोहियनाणपरोस्स, से च यइनाण ॥ सू० ॥ ३६ ॥ से कि त सुयनाणपरो- क्खं ? सुयनाणपरोस्स चोदसविह पण्णत्त तजहा-अक्खरसुय १ अणक्खरसुय २ सण्णिसुय ३ असण्णिसुय ४ सम्मसुय ५ मिच्छसुय ६ साइय ७ अणाइय ८ मपज्जवसिय ९ अपज्जवसिय १० गमिय ११ अगमिय १२ जगपविट्ठ १३ अणगपविट्ठ १४ ॥ सू० ३७ ॥ मे कि त अक्खरसुय ? अक्खर- सुय तिविह पण्णत्त तजहा-सन्नक्खर वज्जणक्खर, लद्धिअक्खर । से किं त सन्नक्खर ? सन्नक्खर अक्खरस्स मटाणागिई, से च सन्नक्खर । से कि त वज्जणलक्खर ? वज्जणक्खरअक्खरस्स वज्जणा भिलाओ, से च वज्जणक्खर । से किं त लद्धिअक्खर ? लद्धिअक्खर अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खर समुपजइ, तजहा-सोइदिय सद्धिअक्खर, चन्दिदिय लद्धिअक्खर, घाणिदिय लद्धिअक्खर, रस णिदिय लद्धिअक्खर, फासिदिय लद्धिअक्खर, नोइदिय लद्धिअक्खर, से च लद्धिअक्खर, से च अक्खरसुय ॥ से किं त अणक्खरसुय ? अणक्खरसुय अणेगविह पण्णत्त, तजहा-ऊससिय नीमसिय, मिच्छट्ठ ग्वासिय च छीय च । निस्सिधियमणुमार, अणक्खर छेलियाईय ॥ ८८ ॥

से च अणक्खरसुय ॥ सू० ३८ ॥ से कि त सण्णिसुय ? सण्णिसुय तिविह पण्णत्त, तजहा- कालिओण्सेण, हेउण्सेण, दिट्ठिजाओण्सेण । से किं त कालिओवण्सेण ? कालिओवण्सेण ण अत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा गवेसणा, चिंता, वीमसा, से ण सण्णीति लब्भइ । जस्सेण नत्थि ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमसा, से ण असण्णीति लब्भइ, से च कालिओ वण्सेण । से किं त हेउण्सेण ? हेउण्सेण जस्सेण अत्थि अभिसधारणपुट्ठिया करणमत्ती से ण सण्णीति लब्भइ । जस्से ण नत्थि अभिसधारणपुट्ठिया करणमत्ती से ण असण्णीति लब्भइ, से च हेउण्सेण । से किं त दिट्ठिजाओवण्सेण ? दिट्ठिजाओवण्सेण सण्णिसुयस्स सओणसमेण सण्णी लब्भइ, असण्णिसुयस्स सओणसमेण असण्णी लब्भइ, से च दिट्ठिजाओवण्सेण, से च सण्णिसुय, से च असण्णिसुय ॥ सू० ॥ ३९ ॥ मे किं त सम्मसुय ? सम्मसुय ज इम अरहत्तेहिं भगवत्तेहिं उप्पण्णनाणदमणधरेहिं तेलुकनिरिक्खत्तयमहियपुग्गईहिं तीयपट्ठप्पणमणागयजाणएहिं सब्बणूहिं सब्बदरिसीहिं पणीय दुवालमग गणिपिडग, तजहा-आयारो १ सुयगडो २ ठाण ३ समवाओ

* अथाण उग्गहण, च उग्गह तह वियालणे ईहा । ववमाय च अजाय चरण पुण धारण विंति ॥ १ ॥ इति पात्रांतराथा ।

४ विराहपण्णती ५ ज्ञायाधम्मरूहाओ ६ उतासगदसाओ ७ अतगडदसाओ अतगडदमाओ ८ अ
 पुत्तरोरवाह्यदमाओ ९ पण्हागारणाड १० विनागसुय ११ दिट्ठिमाओ १२, इच्चैय दुनालमग
 गणिपिडग चोहसपुच्चिम्म सम्मसुय, अभिण्णदमपुच्चिम्म सम्मसुय, तेण पर भिण्णेसु भयणा, से
 च सम्मसुय ॥ सू० ॥ ४० ॥ से किं त मिच्छासुग ? मिच्छासुग ज इम अण्णाणिण्हिं मिच्छादि-
 ट्ठिएहिं मच्छदद्युद्धिमटविगप्पिय, तजहा—भारह, रामायण, भीमामुरुकर, कौडिल्लग, सगड-
 भद्वियाओ, गोड (घोडग) मुह, कप्पासिय, नागसुहूम, रणगमत्तरी, बहमेरिग, वृद्धजयण,
 तेरामिय, काविलिय, लोगायय, मद्धितत, माडर, पुराण, वागग्ण, भागवग, पागजली पुस्सदे-
 वय, लेह, गणिग, मज्जरुय नाडयाड, अहना वात्तरिण्णलाओ, चत्तारि य वैया सगोरगा,
 एयाड मिच्छदिट्ठिस्म मिच्छत्तपरिगहियाड मिच्छासुय एयाड चेव सम्मदिट्ठिम्म सम्मत्त-
 परिगहियाड सम्मसुय, अहना मिच्छदिट्ठिस्सवि ण्याड चेव सम्मसुय, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ
 जम्हा ते मिच्छदिट्ठिया तेहिं चेव समण्हिं चोइया समाणा केड सपक्कविट्ठीओ चयति, से त मिच्छा
 सुय ॥ सू० ॥ ४१ ॥ से किं त माडय मपज्जरसिय, अणाइय अपज्जरमिय च ? इच्चैय दुवालसग
 गणि पिडग वुच्चित्तिनपट्टयाए साडय सपज्जरसिय अबुच्चित्तिनपट्टयाए अणाइय अपज्जरसिय, त
 समामओ चउद्धिह पण्णत्त, तजहा—दवओ, वित्तओ, कालओ, भागओ, तत्थ दवओ ण सम्मसुय
 एग पुरिस पट्टुच माइय सपज्जरसिय, वदवे पुरिमे य पट्टुच अणाइय अपज्जरसिय, खेत्तओ ण पच
 भरहाड पचेरवयाइ पट्टुच साडय सपज्जरसिय, पच महानिदेहाइ पट्टुच अणाइय अपज्जरसिय,
 कालओ ण उस्मप्पिणिं ओमप्पिणिं च पट्टुच माडय सपज्जरसिय, नो उस्मप्पिणिं नो ओसप्पिणिं
 च पट्टुच अणाइय अपज्जरसिय, भावओ ण जे जया णिणपत्तत्ता भावा आघनिज्जति, पण्णविज्जति,
 परविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, ते तथा भावे पट्टुच साडय सपज्जरसिय ग्या
 ओवसमिय पुण भाव पट्टुच अणाइय अपज्जरसिय, अहना भागिद्वियस्स सुय साडय मपज्जरमिय
 च, अमघसिद्वियस्स सुय अणाइय अपज्जरसिय च, मव्वगामपएम्मग सव्वगामपएमेहिं अणत्तगुणिय
 पज्जरक्खर निप्पज्जइ, सव्वजीराणपिय ण अक्खरस्म अणत्तभागो, निच्चुग्गाडियो जइ पुण सोडवि
 आगरिजा तेण जीरो अजीरच पाविज्जा,— “सुट्टुवि मेहसमुदए, होइ पमा चदसुगण” मे च
 साडय मपज्जरसिय, से च अणाइय अपज्जरमिय ॥ सू० ॥ ४२ ॥ से किं त गमिय ? गमिग
 दिट्ठिमाओ, से किं त अगमिय अगमिय कालिय सुय, से च गमिय, से च अगमिग । अहना त
 समासओ दुविह पण्णत्त, तजहा—अगपविट्ठ, अग वाहिर च । से किं त अगवाहिर ? अगवाहिर
 दुविह पण्णत्त, तजहा—आरस्सय च, आरस्सयवडरित्त च । से किं त आरस्सय ? आरस्सय
 छव्विह पण्णत्त, तजहा—सामाडय, चउवीसवओ, वदणय, पटिकमण, णउस्सगो, पच्चकराण,
 से च आरस्सय । से किं त आरस्सयवडरित्त ? आवम्मयवडरित्त इविह पण्णत्त, तजहा—कालिग
 च, उक्कालिय च । से किं त उक्कालिय ? अणोगविह पण्णत्त, तजहा—ठमवेयालिग, कप्पियाकप्पिग,
 चुल्लकप्पसुग, महाकप्पसुग, उववाइय, रायपसेणिग, जीराभिगमो, पण्णयणा, महापण्णवणा,
 पमायप्पमाय, नदी, अणुओगदाराड, देविदवओ, तदुल्लेयालिय, चदानिज्जय, सरण्णती, पो-
 सिमण्डक, मण्डपवेमो, रिजाअण्णनिण्णिच्छओ, गणिविज्जा, ज्ञाणविमत्ती, मरणविमत्ती, आपनि

सोही, वीयरामसुय, सखेहणासुय, विहारकप्पो, चरणविही, आउरपचक्काण, महापचक्काण, एवमाइ, से चं उक्कालिया । से किं त कालिग ? कालिगं अणेगविह पण्णत्त, तजहा-उत्तुरज्जयणाइ, दसाओ, कप्पो, वनहारो, निसीइ, मढानिसीइ, इसिभासियाइ, अम्बूदीउपन्नत्ती, दीउसा गरपन्नत्ती, चदप-पन्नत्ती, सुट्टिया विमाणपविभत्तोमहत्थिया विमाणपविभत्तो, अगचूलिया, वग्गचूलिया, विवाइचु-लिया, अरणोउवाए, नरुणोउवाए, गरुलोववाए, धरणोववाए, वेममणोउवाए, वेलधरोउवाए, देविं, दोववाए, णट्ठाणसुए, ममुट्ठाणसुए, नागपरियाउलियाओ, निरयाउलियाओ कप्पियाओ, कप्पवाड-सियाओ, पुप्फियाओ, पुप्फचूलियाओ, वण्णीदसाओ, आसीनिसभाउणाण. दिट्ठिविसभाउणाणं, सुमिण भावणण महासुमिणभाउणाण, तेयग्गिनिसग्गाण, एवमाइयाइ चउरासीइ पडन्नगमहस्साइ भगउओ अरहओ उसहमामिस्स आइतित्थपरस्स, तहा सखिज्जाइ पइन्नगसहस्साइ मज्झिमगाण जिणवराण, चोइस पइन्नगमहस्साइ भगउओ वट्ठमाणसामिस्स, अवहा जस्स जत्तिया सीसा उप्पत्तियाए, वेणइयाए कम्मयाए, पारिणाभियाए, चउन्विहाए दुट्ठीए उउवेया तस्म तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइ, पत्तोयदुट्ठावि तत्तिया चैव, मे चं कालिय, से चं आउमम्यउइरिचं, से चं अण-गपविट्ठ ॥ ४३ ॥ से किं त अगपविट्ठ ? अगपविट्ठ दुवालसर्वि पण्णत्त, तजहा-आयारो १ छयगडे २ ठाण ३ समवाओ ४ विनाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासदसाओ ७ अतग उदसाओ ८ अणुत्तोववाइयदमाओ ९ पण्ढानगरणाइ १० विवागसुय ११ दिट्ठियाओ १२ ॥ ४४ ॥ से किं त आयारे ? आयारे ण समणाण निग्गयाण आयारगोयरविणयवेणइयसिक्खाभासा-अभासाचरणकरणजायामायाविचीओ आघविज्जति, से समा सओ पचविहे पण्णत्तो, तजहा-नाणा यारे दसणायारे, चरिच्चायारे, तयायारे, नीरियायारे, आयारे ण परिच्चा वायणा, सखेज्जा, अणुओग-दारा, सखिज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिबत्तीओ, से ण अगट्ठयाए पट्ठे अगे, दो सुयक्कधा, पणवीम अज्जयणा, पचासीइ उदेमण-काला, पचासीइ ममुदेसणकाला, अट्टारस पयसहस्साइ पयग्गेण, सखिज्जा अक्करा, अणता गमा,

पज्जवा, परिच्चा तमा, अणता थावरा, सामयकडनिउद्वनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आउ-
 १३३३३ पन्नविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति. उवदसिज्जति से एव आया, एव
 नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरुवणा आघविज्जइ, से च आयारे ? ॥ ४५ ॥ से
 किं त छयगडे ? छयगडे ण लोए छइज्जइ, अलोए छइज्जइ, लोयालोए छइज्जइ, जीवा छइज्जति,
 अजीवा छइज्जति, नीजाजीवा छइज्जति, ससमए छइज्जइ, परसमए छइज्जइ, मसमयपरममए छइज्जइ,
 छयगडे ण असीयस्स किरियावाइमयस्स, चउरासीइए अकिरियावाइंणं, सत्तट्ठीए अण्णाणीयवा-
 ईणं, बचीसाए वेणइयगईणं, तिण्ह तेसट्ठाण पासडियसयाण वूह किच्चा सममए ठाउज्जइ, छय
 गडे ण परिच्चा वायणा, सखिज्जा, अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ
 निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिबत्तीओ, से ण अगट्ठयाए विट्टए अगे, दो
 सुयक्कधा, तेवीस अज्जयणा, तिचीस उदेमणकाला, तिचीस ममुदेमणकाला, छत्तीस पयसहस्साइ
 पयग्गेण, सखिज्जा, अक्करा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिच्चा तमा, अणता थावरा, सामय-
 कडनिउद्वनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निद-

सिञ्जति, उदसिञ्जति, से एव आया, एव नाया, एव विष्णाया, एव चरणकरणपरूपा आ-
 विञ्जद्, से च सूयगडे २ ॥ सू० ॥ ७६ ॥ से किं त ठाणे ? ठाणे ण जीवा ठाविञ्जति, अजीवा
 ठाविञ्जति, जीवाजीवा ठाविञ्जति, सममण ठाविञ्जद्, परसमए ठाविञ्जद्, ससमयपरसमएठाविञ्जद्,
 लोएठाविञ्जद्, अलोए ठाविञ्जद्, लोयालोए ठाविञ्जद् । ठाणे ण टका, ङडा, मेला, सिंहरिणे,
 पमाग, कुडाइ, गहाओ, आगरा, दहा, नईओ, आघविञ्जति । ठाणे ण एगायाए एगुत्तरियाए
 वुट्टीए दमट्टाणमनिवट्टियाण भावाण परूपा आप्रिञ्जद् । ठाणे ण परिचा वायणा, सखेज्जा अणु
 ओगदारा, मखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ,
 सखेज्जाओ पडिपत्तीओ से ण अगट्टयाए तडण अगे, एगे सुयकपये, दमअज्जयणा एगगीस उद्देम
 णकाला, एकगीस समुद्देमणकाला, नाचरि पयमहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अमपग, अणता गमा,
 अणता पज्जवा, परिचा तमा, अणता धावरा, मासयकडनिपट्टनिफाइया जिणपणत्ता भावा आघ-
 विञ्जति, पप्रिञ्जति, पप्रिञ्जति दसिञ्जति, निदसिञ्जति उवदसिञ्जति । मे एव आया, एव नाया,
 एव विष्णाया एव चरणरणपरूपा आघविञ्जद्, से च ठाणे ३ ॥ सू० ॥ ४७ ॥ मे किं त मम-
 वाण ? समवाण ण जीवा ममासिञ्जति, अजीवा ममासिञ्जति, जीवाजीवा ममासिञ्जति, सममए
 समासिञ्जद्, परममए ममासिञ्जद्, मसमयपरममए समासिञ्जद् लोए समासिञ्जद्, अलोए ममासिञ्जद्
 लोयालोए ममामिञ्जद् । ममवाण ण एगाट्टयाण एगुत्तरियाण ठाणमयप्रिञ्जियाण भावाण परूपा
 आघविञ्जद्; दुवालमनिहस्म य गणिपिदगम्म पल्लवगे ममामिञ्जद्, समवायस्स ण परिचा वायणा,
 सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा मिलोगा, सखिज्जाओ, निज्जुत्तीओ, मखिज्जाओ
 सगहणीओ, मखिज्जाओ पडिपत्तीओ, से ण अगट्टयाणचउय अगे, एगे सुयकपये, एगे अज्ज
 यणे, एगे उद्देमणकाले, एगे समुद्देमणकाले, एगे चोयाये मयमहस्से पयग्गेण, मखेज्जा अमपरा
 अणता गमा, अणता पज्जवा, परिचा तसा, अणता धावरा, मासयकडनिपट्टनिफाइया जिणपणत्त
 भावा आघविञ्जति, पणविञ्जति, परुविञ्जति, दमिञ्जति, निपसिञ्जति, उवदसिञ्जति से एव
 आया, एव नाया, एव विष्णाया, एव चरणरणपरूपा आघविञ्जद् । से च ममवाए ४ सू० । ४८ ।
 से किं त विवाहे ? विवाहे ण जीवा विआहिञ्जति, अजीवा विआहिञ्जति, जीवाजीवा विआहिञ्जति
 ससमए विआहिञ्जति, परममए विआहिञ्जति, सममएपरममए विआहिञ्जति, लोए विआहिञ्जति
 अलोए विआहिञ्जति, लोयालोए विआहिञ्जति, विवाहस्सग परिचा वायणा, सखिज्जा अणुओम
 दारा सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखि-
 ज्जाओ पडिपत्तीओ, से ण अगट्टयाए पचमे अगे, एगे सुयकपये, एगे साइरगे अज्जयणसए, दम
 उद्देमणकाले, समुद्देमणकाले, उत्तीम वागरणपहस्साइ, दो लकवा अट्टासीइ पयमहस्सा
 पयग्गेण, सखिज्जा अमपरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिचा तमा, अणता धावरा सामय
 कडनिपट्टनिफाइया जिणपणत्ता भावा आप्रिञ्जति, पणविञ्जति, परुविञ्जति, दमिञ्जति
 निपसिञ्जति, उवदसिञ्जति, से एव आया, एव नाया, एव विष्णाया, एव चरणरणपरूपा
 आघविञ्जद्, से च विवाह ५ ॥ सू०

नायाण नगराइ, उज्जाणारइ, चेइयाइ,

किं त नायाधम्मइहाओ ? नाया
 रायाणो, अम्मापिपणे

धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिओपा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपचायाईओ, पुणवोहिलाभा, अत्तकिरियाओ य आघविज्जति, दस धम्मकहाण वग्गा, तत्थ ण एगमेगाए धम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ, एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवाक्खाइया सयाइ एगमेगाए उवक्खाइयाए पच पच अक्खाइयउवक्खाइयासयाइ एवामेव सपुव्वावरणं अद्दुद्धाओ क्खाणगकोडीओ हवतित्ति समक्खाय । नायाधम्मकहाण परिचा वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखिज्जा वेढा, सखिज्जा सिलोगा, सखिज्जाओ निज्जुत्तीओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगट्टयाए छट्ठे अगे, दो सुयक्खधा, एगूणवीस अज्झणणा, एगूणवीस समुद्देसणकाला, सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा अणता गमा, अणता पज्जवा, परिचा तमा, अणता थावरा, सासयकडनिचद्वनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परुविज्जति दसिज्जति निदसिज्जति उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरूणणा आघविज्जइ, से च नायाधम्मकहाओ ६ ॥ सू० ॥ ५० ॥ से किं त उवालगदसाओ ? उवासगदसा सुण समणोवामयाण नगरइ उज्जाणाइ, चेइयाइ वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ सीलवयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया, पडिमाओ, उवासग्गा, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलोगगमणाइ, सुकुलपचायाईओ, पुणवोहिलाभा, अत्तकिरियाओ आघविज्जति, उवासगदसाण परिचा वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अगट्टयाए सत्तमे अगे, पगे, एगे सुयक्खधे, दस अज्झणणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिचा तसा अणता थावरा, सासयकडनिचद्वनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति परुविज्जति दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, विन्नाया, एव चरणकरणपरूणणा आघविज्जइ, से च उवासगदसाओ ७ ॥ सू० ॥ ५१ ॥ से त अतगडदसाओ ? अतगडदसासु ण अतगडाण नगराह उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइ, समोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइयपरलोइया इड्ढिविसेसा, भोगपरिचागा, पव्वज्जाओ परिआगा, सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइ, पाओवगमणाइ, अत्तकिरियाओ, आघविज्जति, अतगडदसासु ण परिचा वायणा, सखिज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, सखेज्जाओ सगहणी, सखेज्जाओ पडिवत्तीओ से ण अगट्टयाए अट्ठमे अगे, एगे सुयक्खधे, अट्ठवग्गा अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला सखेज्जा पयसहस्सा पयग्गेण, सखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणता पज्जवा, परिचा तसा, अणता थावरा, सासयकडनिचद्वनिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विन्नाया, एव चरणकरणपरूणणा आघविज्जइ; से च अतगडदसाओ ८ ॥ सू० ॥ ५२ ॥ से किं त अणुचरोववाइयदमाओ ?

अणुचरोववाइयदमासु ण अणुचरोववाइयाण नगराइ, उज्जाणाइ, चेइयाइ, वणसडाइ, ममोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकडाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेमा, भोगपरिचागा, पव्वजाओ, परिआगा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, पडिमाओ, उउसग्गा, सलेहणाओ, मत्तपच्चनखाणाइ पाओवगमणाइ, अणुचरोववाइय चि उववची, सुकूलपचायाईओ, पुणवोहिलाभा, अत्तकिरियाओ, आघविज्जति, अणुचरोववाइयदमासु ण परिचा वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, मयेज्जा सिलोगा, मखेज्जाओ पिज्जुचीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, सखेज्जाओ पडिवचीओ, से ण अगट्टयाए नममे अगे, एगे सुयक्खवे, तिन्नि चग्गा, तिन्नि उहेसणकाला, तिन्नि समुहेसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण सखेज्जा अक्खवा, अणता गमा, अणता पच्चना, परिचा तसा, अणता वावरा, मामयकडनिबद्धनिहाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विण्णाया, एव चरणकरणपरुण्णा आघविज्जइ से च अणुचरोववाइयदमाओ ९ ॥ ५० ॥ ५३ ॥ से किं त पण्हावागरणाइ ? पण्हावागरणेषु ण अट्टुत्तर पसिणय, अट्टुत्तर अपमिणमय अट्टुत्तर पसिणापसिणसय, तन्हा—अणुपसिणाइ वाहुपसिणाइ, अदागपसिणाइ, अन्नैरिविचित्ता विज्जाइमया, नागसुउण्णेहिं सद्धिं दिवा सत्राया आघविज्जति, पण्हावागरणाण परिचा वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा, सखेज्जा सिलोगा, मयेज्जाओ निज्जुचीओ, सखेज्जाओ सगहणीओ, मखेज्जाओ पडिवचीओ, से ण अगट्टयाए दसमे अगे एगे सुयक्खवे, पणयालीस अज्जयणा, पणयालीस उहेसणकाला, पणयालीस समुहेसणकाला, सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खवा, अणतागमा, अणता पच्चवा, परिचा तसा, अणता थाररा, सासयकडनिबद्धनिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जति, पणविज्जति, परुविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उउदमिज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विरणाया, एव चरणकरणपरुण्णा आघविज्जइ, से च पण्हावागरणाइ १० ॥ ५० ॥ ५४ ॥ से किं त विनागसुय ? विनागसुए ण सुकडदुक्कटाण कम्माण फलविवागे आघविज्जइ, तस्य ण दम दुहविवागा दस सुहविवागा । से किं त दुहविवागा ? दुहविवागेषु ण दुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ, चेइयाइ, ममोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकडाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेमा, निरयमणाइ, ससारभवपत्रा दुहपरपराओ, दुहुलपचायाईओ, दुह्खपोहियत्त, आघविज्जइ, से च दुहविवागा । से किं त सुहविवागा ? सुहविवागेषु ण सुहविवागाण नगराइ, उज्जाणाइ, वणसडाइ चेइयाइ, ममोसरणाइ, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकडाओ, इहलोइयपरलोइया इड्डिविसेमा, भोगपरिचागा, पव्वजाओ, परिचागा, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइ, सलेहणाओ, मत्तपच्चनखाणाइ, पाओवगमणाइ, देवलीगगमणाइ, सुहपरपराओ, सुहुलपचायाईओ, पुणवोहिलाभा, अत्तकिरियाओ, आघविज्जति । विनागसुयस्य ण परिचा वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेढा सखेज्जा सिलोगा, मखेज्जाओ निज्जुचीओ, सखिज्जाओ सगहणीओ, सखिज्जाओ पडिवचीओ । से ण अगट्टयाए इकारममे अगे, दो सुयक्खवा, वीस अज्जयणा, वीस उहेसणकाला, वीस समुहेसणकाला, सखिज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेण, सखेज्जा अक्खवा, अणता पच्चना, परिचा तसा, अणता थाररा, सासयक-

दनिचद्दनिकाइया जिणपण्णाचा भावा आघविज्जति, पन्नविज्जति, परुनिज्जति, दसिज्जति, निदसि-
 ज्जति, से एव आया, एव नाया, एव विआया, एव चण्णररणपरुणणा आघविज्जड, से च विना-
 मसुय ११ ॥ छ० ॥ ५५ ॥ से कि तं दिट्ठिणाए ? दिट्ठिणाएण सव्वमाउपत्त्वणा आघविज्जड, से
 समासओ पचविहे पण्णत्ते, तजहा-परिकम्मे १ सुत्ताड २ पुव्वणए ३ अणुओमे ४ चूलिया ५ । से
 कि त परिकम्मे ? परिकम्मे मत्तविहे पण्णत्ते, तजहा-सिद्धसेणिया परिकम्मे १ मणुस्तसेणियापरि-
 कम्मे २ पुट्टसेणिया-परिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसपज्जसेणियापरिकम्मे ५ विप्प-
 जहणसेणियापरिकम्मे ६ चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७ । से कि त सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणि-
 यापरिकम्मे चउदमविह पण्णत्ते, तजहा-मउगापयाड १ एगट्ठियपयाइ २ अट्टपयाड ३ पाढोआगा-
 सपयाइ ४ केउभूय ५ रासिबद्ध ६ एगगुण ७ दुगुण ८ तिगुण ९ केइभूय १० पडिग्गहो ११
 समारपडिग्गहो १२ नदाउच १३ सिद्धाउच १४, से च सिद्धसेणियापरिकम्मे १ । से कि त मणु-
 स्तसेणियापरिकम्मे ? मणुस्तसेणियापरिकम्मे चउदमविह पण्णत्ते, तजहा-माउयापयाइ १ एगट्ठिय-
 पयाइ २ अट्टपयाइ ३ पाढोआगामपयाइ ४ केउभूय ५ रासिबद्ध ६ एगगुण ७ दुगुण ८ तिगुण
 ९ केउभूय १० पडिग्गहो ११ समारपडिग्गहो १२ वताउच १३ मणुस्तानच १४ से च मणुस्त-
 सेणियापरिकम्मे २ । से कि त पुट्टसेणियापरिकम्मे ? पुट्टसेणियापरिकम्मे इकारसविहे पण्णत्ते, तजहा
 पाढोआगामपयाइ १ केउभूय २ रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो
 समारपडिग्गहो ९ नदाउच १० पुट्टाउच ११, से च पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ । से कि त ओगाढ-
 सेणियापरिकम्मे ? ओगाढसेणियापरिकम्मे इकारसविहे पण्णत्ते तजहा-पाढोआगामपयाइ १ केउ
 भूय रामउद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केउभूय ७ पडिग्गहो ८ समारपडिग्गहो ९ नदा
 उच १० ओगाढाउच ११, से च ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ । से कि त उवसपज्जणसेणियापरिक-
 म्मे ? उवसपज्जणसेणिया परिकम्मे इकारसविहे पण्णत्ते, तजहा-पाढोआगामपयाइ १ केउभूय २
 रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केइभूय ७ पडिग्गहो ८ समारपडिग्गहो ९ नदाउच
 १० उवसपज्जणउच ११, से च उवसपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ । से कि त विप्पजहणसेणियापरि-
 कम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे इकारसविहे पण्णत्ते, तजहा-पाढोआगामपयाइ १ केउभूय २
 रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केइभूय ७ पडिग्गहो ८ समारपडिग्गहो ९ नदाउच
 १० विप्पजहणाउच ११, से च विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ । से कि त चुयाचुयसेणियापरिक-
 म्मे ? चुयाचुयसेणियापरिकम्मे इकारसविहे पण्णत्ते, तजहा-पाढोआगामपयाइ १ केइभूय २
 रासिबद्ध ३ एगगुण ४ दुगुण ५ तिगुण ६ केइभूय ७ पडिग्गहो ८ समारपडिग्गहो ९ नदाउच
 १० चुयाचुयउच ११, से च चुयाचुयसेणियापरिकम्मे ७ । छ चउकनइयाड मत्त तेरासियाइ, से
 च परिकम्मे १ । से कि त सुत्ताइ बावीस पन्नत्ताड, तजहा-उज्जुसुय १ परिणयापरिणय २
 चहुभगिय ३ विजयचरिय ४ अणतर ५ परपर ६ मामाण ७ सज्जह ८ सम्भिण ९ आहवाय १०
 सोरविधाय ११ नदाउच १२ चहुल १३ पुट्टापुट्ट १४ वियाउच १५ ष्वभूय १६ दुयाउच १७
 वचमाण पय १८ मममिरूढ १९ मधओमद २० पस्सास २१ दुप्पडिग्गह २२, इवेइयाड बानीस
 सुत्ताइ छिन्न-उयेनइयाणि ससमयसुत्तपरिवाडीय; इवेइयाड बानीस सुत्ताइ अच्छिन्न-उयेनइयाणि

आत्मीवियसुत्तपरिवादीए, उच्चैःयाद् बारीस सुत्ताड तिगणइयाणि तेरासिय सुत्तपरिवादीए, उच्चैः-
याद् बारीस सुत्ताड चउक्कनइयाणि मममयसुत्तपरिवादीए; एवामेव सपुच्चारण अट्टासीई सुत्ताइ
भवतिंति मक्कवाय, से च सुत्ताड २ । से किं त पुच्चगए? पुच्चगए चउदसविहे पण्णत्ते, तजहा—
उप्पायपुच्च १ अग्गाणीय २ वीरिय ३ अत्थिनत्थिप्पत्राय ४ नाणप्पत्राय ५ मच्चप्पात्राय ६ आय-
प्पत्राय ७ कम्मप्पत्राय ८ पच्चक्कवाणप्पत्राय (पच्चक्कवाण) ९ विज्जाणुप्पत्राय १० अर्वन्न ११
पाणाऊ १२ निरियाविसाल १३ लोक्किंदुमार १४ । उप्पायपुच्चम ण दम वत्थु, चत्तारि चूलि
यावत्थु पण्णत्ता । अग्गाणीयपुच्चम ण चोदम वत्थु, दुवालम चूलियावत्थु पण्णत्ता । वीरियपुच्चम
ण अट्ट वत्थु अट्ट चूलियावत्थु पण्णत्ता । अत्थिनत्थिप्पत्रायपुच्चम ण अट्टारम वत्थु, दस चूलिया-
वत्थु पण्णत्ता । नाणप्पत्रायपुच्चम ण वारम वत्थु पण्णत्ता । सच्चप्पत्रायपुच्चम ण दोग्गिणवत्थुपण्ण-
त्ता । आयप्पत्रायपुच्चम ण मोत्तम वत्थु पण्णत्ता । कम्मप्पत्रायपुच्चम ण तीस वत्थु पण्णत्ता । पच्च-
क्कवाणपुच्चम ण वीस वत्थु पण्णत्ता । विज्जाणुप्पत्रायपुच्चम ण पन्नरम वत्थु पण्णत्ता अवल्लपुच्चम
ण वारम वत्थु पण्णत्ता । पाणाउपुच्चम ण तेरस वत्थु पण्णत्ता । निरियाविसाउ पुच्चम ण तीस
वत्थु पण्णत्ता । लोक्किंदुमारपुच्चम ण पण्णीस वत्थु पण्णत्ता, गाहा—

दम १ चोदम २ अट्ट ३ ऽट्टारसेउ ४ वारम ५ दुवे ६ य वत्थुणि । सोलम ७ तीम ८ वीमा
९, पन्नरम १० अणुप्पवायम्मि ॥ ८९ ॥

वारम इकारसमे, वारममे तेरसेउ वत्थुणि । तीसा पुण तेरसमे, चोदसमे पण्णवीसाओ ॥९०॥

चत्तारि १ दुवालम २ अट्ट ३ चैउदम ४ चैव चुल्लवत्थुणि । आट्टण चउण्ह, चूलिया नत्थि ॥९१॥
से च पुच्चगण । से किं त अणुओगे? अणुओगे दुविह पण्णत्ते, तजहा—मूलपट्टमाणुओगे, गडिया-
णुओगे य । से किं त मूलपट्टमाणुओगे? मूलपट्टमाणुओगे ण अरहताण भगवताण पुच्चमरा, दउ
गमणाउ, आउ, चउणाइ, जम्मणाणि अभिमेया रापउसिरीओ, पच्चजाओ, तना य उग्गा, केउलना
णुप्पयाओ, तित्थपवचणाणि य, सीमा, गणहरा, अजपउत्तिणीओ सयम्म चउविहम्म ज च परिमाण,
जिणमणपच्चवओहिनाणी, मम्मत्तसुयनाणिणो य उई अणुत्तरगईय, उत्तरवेउ, चिणो य मुणिणो,
जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपद्दो ज उ देसिओ, जच्चिउ च माल, पोआवगया जे जहिं जत्तियाइ भत्ताइ अणस
णाए उइत्ता अउगडे मुणिवरुत्तमे, तिम्मिओव त्रिप्पमुक्के मुक्कउमउदमणुत्तर च पत्ते, एउमत्ते य एवमाइ
माना मूलपट्टमाणुओगे कहिया, से च मूलपट्टमाणुओगे से किं त गडियाणुओगे? गडियाणुओगे
कुलगरगडियाओ, तित्थयरगडियाओ चक्कउट्टिगडियाओ, दमारगडियाओ, बलदेउगडियाओ,
वासुदवगडियाओ, गणउगडियाओ, महपाहुगडियाओ, तउकम्मगडियाओ, हरिवसगडियाओ
उस्मत्पिणीगडियाओ, ओमत्पिणीगडियाओ, चिचतरगडियाओ अमरनरतिरियनिरयगइगमणवि-
विहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गडियाओ आषविज्जति, पण्णविज्जति मे च गडियाणुओगे, से च
अणुओगे ४ । से किं त चूलियाओ? आइछाण चउण्ह पुच्चण, चूलिया सेमाइ पुच्चाइ अचूलियाइ,
से च चूलियाओ । दिट्ठियायस्स ण परिचा वायणा, सखेज्जा अणुओगदारा, सखेज्जा वेत्ता, सखेज्जा

सिलोमा सखेज्जाओ पडिबचीओ सरिजाओ निज्जुचीओ, सखेजाओ सगहणीओ से ण अगट्टयाए वारसमे अणे, एणे सुयक्खणे, चोदस पुवाइ, सखेज्जा बत्थू, सखेज्जा चूलवत्थू, सखेज्जा पाहुडा, सखेज्जापहुडपाहुडा, सखेजाओ पाहुडियाओ, सखेजाओ पाहुडपाहुडियाओ, सखेजाइ पयसद स्ताइ पयग्गण, सखेजा अक्खण, अणता गमा, अणता पज्जवा परिचा तसा अणता धानरा, सां सयकडनिबद्धनिकाइया जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जति, पण्णविज्जति, परूविज्जति, दसिज्जति, निदसिज्जति, उवदसिज्जति । मे एव आया, एव नाया एव विण्णया, एव चरणकरणपरूणणा आघविज्जति, से च दिट्ठिवाए १२ ॥ सू० ५६ ॥ इच्चेइयमि दुवालसगे गणिपिडगे अणता भावा अणता अभावा, अणता हेऊ, अणता अहेऊ, अणता कारणा, अणता अकारणा, अणता जीवा अणत्ता अजीवा अणता भवसिद्धिया अणता अभसिद्धिया अणता सिद्धा, अणता असिद्धा पण्णत्ता-

भावाभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे च्चैव । जीवाजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ९२ ॥

इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए काले अणता जीवा आणाए विराहिचा चाउरत ससारक-
तार अणुपरियट्ठिंमू इच्चेइय दुवालसग गाणपिडग पडुप्पण्णकाले परिचा जीवा आणाए विराहिचा
चाउरत ससारकतार अणुपरियट्ठति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग अणागण काले अणता जीवा
आणाए विराहिचा चाउरत ससारकतार अणुपरियट्ठिस्मति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडग तीए
काठे अणता जीवा आणाए आराहिचा चाउरत ससारकतार वीईवइसु । इच्चेइय दुवालसग गणि-
पिडग पडुप्पण्णकाले परिचा जीवा आणाए आराहिचा चाउरत ससारकतार वीईवयति । इच्चेइय
दुवालसग गणिपिडग अणामए काले अणता जीवा आणाए आराहिचा चाउरत ससारकतार वीईव
इस्मति । इच्चेइय दुवालसग गणिपिडिग न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भवि-
१२, भुवि च, भवइ य, भविस्मइ य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए अक्खण, अवट्ठिए निच्चे । से

पचत्थियाए न कयाइनासी न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुवि च, भवइ
य, भविस्मइ, य, धुवे, नियए, सामए, अक्खए, अव्वए, अउट्ठिए, निच्चे, एवामेव दुवालसग
गणिपिडग न कयाइ नासी, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ, भुवि च, भवइ य, भविस्सइ
य, धुवे, नियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, निच्चे । से समासओ चउत्विहं पण्णणे,
तनहा-दब्बओ, सिचाओ, कालओ, भावओ । तत्थ दब्बओ ण सुयनाणी उवउचे सब्बदब्बाइ जाणइ
पासइ, सिचाओ ण सुयनाणी उउउचे सब्ब खेत्त जाणइ पासइ, कालओ ण सुयनाणी उवउचे सब्ब
खेत्त जाणइ पामह, भावओ ण सुयनाणी उवउचे सब्बे भावे जाणइ पासइ ॥ सू० ५७ ॥

अक्खर सक्खी सम्म, साइय खलु सपज्जसिय च । गमिय अगपविट्ठ, सचवि एए सपडिब-
क्खला ॥ ९३ ॥ आगममत्थगहण, ज धुद्धिगुणेहि अट्ठहिं दिट्ठ । विंति सुयनाणलभ, त पुव्वविसा
रया धीरा ॥ ९४ ॥

सुस्समइ १ पडिपुत्ठइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहएयावि ५ । तत्तो अपोहए ६ वा,
घारेइ ७ क्खेइ जा मम्म ८ ॥ ९५ ॥

मूअ हुकार वा, वाढक्कार पडिपुच्छ वीमसा । ततो पसगपारायण च परिणिद्ध सत्तमप
॥ ९६ ॥

सुत्तयो सल्ल पडमो, वीओ निञ्जुत्तिमीसिओ भणिओ । तद्दओ य निरवसेसो, एस विही होइ
अशुओमे ॥ ९७ ॥

से च अगपविद्ध, से ण सुयनाण से च परोक्खनाण, से णं नदी ॥ नदी समत्ता ॥

इअ नन्दीसुत्तं समत्तम्

ॐ उववाइ सूतं ॐ

(बावीस गाथा)

कर्हि पडिहया सिद्धा ? कर्हि सिद्धा पइट्टिया ? । कर्हि वोंदि चइत्ता ण, तत्थ गतूण सिज्झई ॥ १ ॥
 अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पडिट्टिया । इहवोंदि चइत्ता ण, तत्थ गतूण सिज्झई ? ॥ २ ॥
 ज सठाण तु इह भव चय तस्स चरिभममयमि । आसीं य पएमघण त सठाण तर्हि तस्स ॥ ३ ॥
 दीह वा हस्स वा ज चरिभभवे हवेज्ज सठाण । तत्तो तिभागहीण सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥ ४ ॥
 तिण्णि सया तेत्तीसा घणुत्तिभागो य होइ बोधवा । एसा खलु सिद्धाण उक्कीमोगाहणा भणिया ॥ ५ ॥
 चत्तारि य रयणीओ रयणिति भागणिया य बोधवा । एसा खलु सिद्धाण मज्झिमओगाहणा भणिया ॥ ६ ॥
 एका य होइ रयणी साहीया अगुलाइ ऋद्ध भवे । एसा खलु सिद्धाण जहण्णओगाहणा भणिया ॥ ७ ॥
 ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण होइ परिहीणा । सठाणमणित्थय जरामरणविप्पमुक्काण ॥ ८ ॥
 जत्थ य एगोसिद्धो तत्थ अणता भक्खयविमुक्का । अण्णोण्णसमीगाढा पुट्ठा सव्वे य लोग्गते ॥ ९ ॥
 फुसइ अणते सिद्धे सव्वपएसेहि णियमसा सिद्धो । ते वि असखेज्जागुणा देसपएसेहि जे पुट्ठा ॥ १० ॥
 असरीरा जीवघणा उवउत्ता दसणे य णाणे य । सागारमणागारं लक्खणमेय तु सिद्धाण ॥ ११ ॥
 केवलणाणुवउत्ता जाणहि सव्वभावगुणभावे । पासति सव्वओ खलु केवलदिट्ठीअणताहि ॥ १२ ॥
 णवि अदिथ माणुसाण त सोक्ख णविय सव्वदेवाण । ज मिद्धाण सोक्ख अवावाह उवगयाण ॥ १३ ॥
 ज देवाण सोक्ख सव्वद्वारंपिडिअ अणतगुण । ण य पाउइ मुत्तिसुह णताहि वग्गवग्गूहि ॥ १४ ॥
 सिद्धस्स सुहो रासो सव्वद्वारंपिडिओ जइ हवेज्जा । सोणतवग्गभइओ वग्गागासे ण माएज्जा ॥ १५ ॥
 जह णाम कोइ मिच्छो णगरगुणे वहुविहे वियाणतो । ण खएइ परिकुहेउ उवमाण तर्हि असतीए ॥ १६ ॥
 इय सिद्धाण सोक्ख अणोवम णत्थि तस्स ओवम्म । किंचि विसेसेणेत्तो ओरम्ममि ग सुणह वोच्छ ॥ १७ ॥
 जह सव्वकामगुणिय पुरिसो भोचूण भोगण कोई । तण्हाउहाविमुक्को अच्छेज्ज जहा अमियत्तित्तो ॥ १८ ॥
 इय सव्वकालत्तित्ता अतुल निव्वाणमुवगया सिद्धा । सासयमव्वावाह चिट्ठति सुही सुह पत्ता ॥ १९ ॥
 सिद्धत्ति य बुद्धत्ति य पारगयत्ति य परपरगयत्ति । उम्मव्वकम्मकरया भजरा अमरा असया यो ॥ २० ॥
 णिच्छिण्णमव्वदुक्का जाइजरामरणववणविमुक्का । अवावाह सुक्ख अणुहोती सामय सिद्धा ॥ २१ ॥
 अतुलसुहभागवया अवावाह अणोवम पत्ता । सव्वमणागयमद्व चिट्ठति सुह पत्ता ॥ २२ ॥

॥ उववाइ उवग समत्त ॥

॥ श्री सुखविपाक-सूत्रम् ॥

तेण कालेण तेण समएण रायमिहे णयर गुणसिलण चेइए सोइग्मे समोसडे जवू जाव पवजु वासमाणे एव वयासी-जइ ण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण दुहविवामाण अयमट्टे पणत्ते सुहविवामाण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्टे पणत्ते ? तते ण से सुहम्मै अणगारे जवू अणगार एव वयासी-एव खलु जजू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सुहविवामाण दस अज्झयणा पणत्ता । तज्जहा-सुवाहू १ भद्वनदी य २, सुजाए य ३, सुवासवे ४ । तहं वज्जिणदासे ५, धणपती य ६ महच्चले ७ ॥ १ ॥ भद्वनदी ८ महच्चदे ९ वरदत्ते १० ॥

जइण भते ! समणेण जात्र सपत्तेण सुहविवामाण दस अज्झयणा पणत्ता पढमस्म ण भते ! अज्झयणस्स सुहविवामाण जाव के अट्टे पणत्ते ? तते ण से सुहम्मै अणगार जजू अणगार एव वयासी-एव खलु जजू ! तेण कालेण तण समएण हत्थिसीसे णाम णयरे हो था रिद्धित्थिमियसमिद्धे तस्स ण हत्थिसीसस्स णगरस्स महिया उच्चरपुरत्थिमे दिसीमाण एव ण पुप्फकरइए णाम उज्जाणे होत्था सञ्चोउय० त थण कयवणमालपियस्स जक्खम्म जक्खाययणे होत्था दिन्ने०, तत्थ ण हत्थिसीसे णयरे अदीणसच्चू णाम राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स ण अदीणसच्चुस्स रणो धारिणीपाम्भुर देवीसहम्म ओरोहे यावि होत्था । तते ण मा धारिणी देवी अण्णया कयाइ तस्सि वारिसगमि वामघरसि जात्र सीह सुमिण पामइ जहा मेहस्स जम्मण तहा भाणियच्च । सुवाहुकुमारं जात्र अल भोगस्समत्थे यात्रि जाणत्ति, जाणित्ता अम्मापियरो पच पामायवडिसगसयाइ करोवत्ति, अन्धुग्गय० भवण एव जहा महाचलस्स रणो, णय पुप्फचूलापामोत्तराण पचण्ह रायत्रकण्णय मयाण धग्गदिवसेण यात्रि गिण्हारत्ति तहं व पचमइओ दाओ जाव उट्ठि पासायत्रगए कुट्टमाणोहिं सुइगमत्थएहिं जाव विहरइ । तेण कालेण तेण समएण ममणे भगव महावीरे समोसडे, परिसा निग्गया, अदीणमच्चू जहा कूणिओ तहन निग्गओ सुवाहू विजहा जमाली तहा रहेण निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिमा पडिगया । तण्ण से सुवाहुकुमारं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिण धम्म सोच्चा णिसम्म इट्ट इट्ट० उट्टाए उट्टेत्ति जात्र एव वयासी—सहहामि ण भते ! णिग्गय पावयण० जहा ण दयाणुप्पियाण अतिए वहनं गइसरं जाव सत्थवाहप्पमिइओ मुडे भविच्चा अगा राओ अणगारिय पवइथा नो खलु अगहण तहा सचाएमि मुडे भविच्चा अगाराओ अणगारिय पवच्चए अहण देयाणुप्पियाण अतिए पचाणुवडय मत्तसिक्खावडय दुवालसविह गिहिधम्म पडिवज्जिस्समि, अहासुह देयाणुप्पिया ! मा पडिवध करेह । ततेण स सुवाहुकुमारं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए पचाणुवडय मत्तसिक्खावडय दुवालमविह गिहिधम्म पडिवज्जति पडिनज्जित्ता तमेव चाउग्गट आसरह दुरुहत्ति जाभेव दिम पाउब्भूणं ताम्भुदिस पडिगए । तेण कालेण तण ममएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेहे अतेवासी इदभूट नाम अणगारे जाव एव वयासी—अहो ण भते ! सुवाहुकुमारं इहे इड्डरूवे कते २ पिए २ मणुणे २ मणामे २ सोमे सुमगे पियदसणे सुरूवे

बहुजणस्सवि य ण भते ! सुवाहुकुमारं इत्थं ५ मोमे ४ साहुजणस्सवि य णं भते ! सुवाहुकुमारं
 इत्थं ६ जाव सुखे । सुवाहुणा भते ! कुमारेण इमा एयारूपा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ?
 किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? के वा पम आसी पुत्रभवे ? एव खलु गोयमा ! तेण
 कालेण तेण समएण इदेव जुदीवे दीवे भारह वासे हत्थिणाउरं णाम णगरे होत्था रिद्धं तत्थ ण
 हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नाम गाहावई परिवसइ इत्थं तेण कालेण तेण समएण धम्मघोमा णाम
 येरा जातिसपन्ना जाव पचहिं ममणसएहिं सार्द्धं सपरियुद्धा पुव्वाणुपुविं चरमाणा गामाणुगाम दूह
 ज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव महसवण्णे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अहा
 पडिरूव उग्गह उग्गिण्हिता सज्जमेण तत्रमा अप्पाण भावेमाणा विहरति । तेण कालेण तेण समएण
 धम्मघोसाण येराण अतेवासी सुदत्ते णाम अणगारे उराले जान लेस्से मास मासेण सममाणे विह
 रति तए ण से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगसि पढमाण पोरिसीए मज्झाय करेति जहा
 गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (भुग्ग्म) धेर आपुत्तति जान अडमाणे सुमुहरस गाहावत्तिसस गेहे
 अणुपविट्ठे तए ण से सुमुहे गाहावती सुदत्त अणगार एज्जमाण पासति २ चा हट्ठुत्थे आमणातो
 अणुत्थेति २ चा पायपीढाओ पचोरुहति २ चा पाउयाओ ओमुयति २ चा एगासाडिय उत्तरासग
 करेति २ चा सुदत्त अणगार सत्तइ पयाइ अणुगच्छति २ चा तिकरुचो आयाहिणपयाहिण करेइ
 २ चा वदति णमसति २ चा जेणेव भत्तघरं तेणेव उतागच्छति २ चा सयहत्थेण विउत्थेण अमण
 पाणखाइमसाइमेण पडिलाभेस्सामीति तुत्थे पडिलाभेमाणि तुत्थे पडिलाभिणि तुत्थे । तते ण तस्स
 सुमुहस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुत्थेण दायगसुत्थेण पडिगाहगसुत्थेण तिग्गिहण तिकरणसुत्थेण सुदत्ते
 अणगारे पडिलाभिण समाणे ससार परित्तीकए मणुस्साउए निवद्धे गेहसि य से इमाइ पच दिवाइ
 पाउम्भ्याइ तजहा—

नमृदारा बुद्धा १ दसद्धयन्ने कुसुमे निवातिते २ चेतुक्खेने कए आहयाओ देवदुदुहीओ ४
 अतराणि य ण आगाससि अहो दाणमहो दाण पुट्ट य ५ । हत्थिणाउरे नयरे सिघाडमा जान पइसु
 बहुजणो अन्नमक्कम्म एवमाडक्खइ ४-धण्णेण दवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई सुखयपुत्ते कयलक्खणे
 सुलद्धे ण मणुस्सज्जम्मे सुखयरिद्धी य जाव त धन्ने ण देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तते ण से
 सुमुहे गाहावई बहुइ वाससयाइ आउय पालइत्ता कालमासे काल किच्चा इइव हत्थिमीसे एगरं
 अदीणमत्तम्म रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उत्रन्ने । तते ण मा धारिणी देवी सय
 णिज्जसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ सीह पामति सेस न चेव जान उप्पि पामाए विहरति त एव
 खलु गोयमा ! सुवाहुणा इमा एयारूपा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया पभू ण भते !
 सुवाहुकुमारं देवाणुप्पियाण अतिण मुडे भ्रित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तण ? हता पभू । तते
 ण से भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नममति २ चा सज्जमेण तत्रमा अप्पाण भावेमाणे
 विहरति । तते ण से समणे भगव महावीरे अन्नया कयाइ हत्थिसीमाओ णगराओ पुप्फकरडाओ
 उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खापयणाओ पडिणिक्खमति २ चा चहिया जणय

विहार विहरति । तते ण से सुवाहुकुमारं समणोत्तमं जाते अभिगयजीवाजीने जाण पडिलामेमाणे
 निहरेति । तत्त ण से सुवाहुकुमारं अन्नया क्याइ चाउइसद्धुद्धिद्वपुण्णमासिणीसु जेणेण पोमहसाला
 तेणेण उतागच्छति २ चा पोमहसाल पमञ्जति २ चा उच्चारपासवणभूमि पडिलेहति २ चा दब्भ
 सथार मथरेइ २ चा दब्भमथार दुरुहइ २ चा अट्टमभत्त पगिण्हइ २ चा पोमहसालाण पोमहिण
 अट्टमभत्तिण पोसइ पडिजागरमाणे निहरति । तए ण तस्स सुगाहुस्स कुमारस्स पुच्चरत्तावत्तकाल-
 ममयसि वम्मजागरिय जागरमाणस्स म्मे एयारूवे अज्झत्थियए ७ समुप्पन्ने घण्णा ण ते गामागरणगर
 जाण सन्निवसा जन्म ण समणे भगव महावीरे जाण विहरति, घन्ना ण तेराईसरतलवर० जे ण
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिण म्मुडा जाण पच्चयति, घन्ना ण ते राईसरतलवर० जे ण
 समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिण पत्ताणुत्तइय जाण गिहिधम्म पडिवज्जति, घन्ना ण ते राइसर
 जाण जे ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिण धम्म सुणेति, त जति ण समणे भगव महावीरे
 पुत्ताणुपुत्ति चरमाण गामाणुगाम द्दुल्लमाणे इहमागग्निउज्जा जाव निहरजा तते ण अह समणस्स
 भगवओ महावीरस्स अतिण म्मुडे भत्तिचा जाव पच्चज्जा । तते ण समणे भगव महावीरे सुवाहुस्स
 कुमारस्स इम इयारूवे अज्झत्थिय जाव वियाणिच्चा पुच्चाणुपुत्ति जाव द्दुल्लमाणे जेणेण इत्थिय
 सीसे णगरे जणप पुप्फन्नरडे उज्जाणे जेणेण त्रयत्रणमालापियस्स जक्कपस्स जक्कत्ताययणे तेणेव
 उवागच्छइ २ चा अहापडिस्स रग्गह उगिगित्ता मज्जेण तत्रमा अप्पाण भावेमाणे विहरति
 परिमा राया निग्गया । तत्त ण तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स त महया जहा पढम तहा निग्गओ धम्मो
 क्कहिओ परिमा राया पडिग्गया । तत्त ण से सुवाहुकुमारं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिण
 धम्म बोचा निसम्म इद्ध तुद्ध जहा मत्ते तहा अम्मपियगे आपुत्तति, निक्खमणाभिसंओ तद्व
 जाव अणमार जाते इरियाममिण जाव वभयारी, ततेण मे सुवाहु अणगारे समणस्स भगवओ
 महावीरस्स तहारूपाण थेराण अतिण सामाड्यमाडयाइ एकारस अणाइ अदिज्जति २ चा बहूहिं
 चउत्थच्छुद्धम० तथोविहाणेहिं अप्पाण भाविच्चा बहूइ वामाइ सामन्नपरियाग पाउणिच्चा मासियाए
 मत्तेहणाए अप्पाण झूसिच्चा मट्ठि भत्ताइ अन्नणाए उदिच्चा आलोड्यपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे
 णाल क्किच्चा सोहम्मं कप्पे देवत्ताए उवत्तरे, से ण ततो देवलोगाओ आउक्कएण भक्कएण ठिड
 कयण्ण अणतर चय चउत्ता माणुस्स त्रिण्णह लभिहिति २ चा केवल बोहिं शुज्झिहिति २ चा
 तहारूपाण थेराण अतिण म्मुडे जाण पच्चइस्सति, से ण तत्थ बहूइ वामाइ सामण्ण परियाग पाउ-
 णिहिति आलोड्यपडिक्कते समाहिपत्ते णाल क्किहिति सण्हमारं कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति, मे
 ण तओ देवलोगाओ माणुस्स पच्चज्जा वभलोए ततो माणुस्स महासुक्के ततो माणुस्स आणते देवे
 ततो माणुस्स ततो आरण देवे ततो माणुस्स मच्चइसिद्धे, से ण ततो अणतर उववत्तिच्चा महाविदेह
 रासे जाव अट्टाइ जहा दटपड्ढे सिज्झिहिति ७ जाण एव खलु जन् ! समणेण जाव मपत्तेण
 सुहनिवागाण पढमस्स अज्झयणस्स अयमद्ध पन्नत्ते अज्झभयण समत्त ॥ १ ॥

वितियस्स ण उक्खेवो-एव गल्ल जम्भू ! तेण कालेण तेण समएण उसभपुरे णगर धूमक्कंड-

उज्जाणे धन्नो जक्खो धणाउहो राया सरस्सई देवी सुमिणदसण क्हण जम्मण बालत्तण कालाओ य जुच्चणे पाणिग्गहण दाओ पासाद० भोगा य जहा सुवाहुस्स, नवर भद्दनी कुमारे सिरिदेवीपा मोक्खा ण पचसया सामी समोसरण साउगधम्म पुच्चभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुडरीकिणी णगरी विजयते कुमार जुगवाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निवद्धे इह उप्पन्ने, सेस जहा सुवाहुस्स जाव महाविदहे वासे सिञ्झिहिति बुञ्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सच्चदुक्खाणमत करेहिति ॥ वितिय अज्झयण समत्त ॥ २ ॥

तच्चस्म उक्खेवो—वीरपुर णगर मणोरम उज्जाण वीरक्खे जक्खे मिचे राया सिरि देवी सुजाए कुमारे बलमिरिपामोक्खा पचसयक्खा मामी समोसरण पुच्चभवपुच्छा उसुयार नयरे उसभदत्ते गाहाउई पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभिए मणुस्साउए निवद्धे इह उप्पन्ने जाव महाविदहे वासे सिञ्झिहिति ५ ॥ तइय अज्झयण समत्त ॥ ३ ॥

चोत्थस्स उक्खेवो—विजयपुर णगर णदणवण [मणोरम] उज्जाण असोगो जक्खो वासवदत्ते राया कण्हा देवी सुवासवे कुमारे भदापामोक्खा ण पचमया जाव पुच्चभवे कोसवी णगरी धणपाले राया वेसणभदे अणगारे पडिलाभिए इह जाव सिद्धे । चोत्थ अज्झयण समत्त ॥ ४ ॥

पचमस्म उक्खेवो—सोगधिया णगरी नीलासोण उज्जाणे सुकालो जक्खो अप्पडिहओ गया मुक्खा देवी महचदे कुमारे तस्म अरहदत्ता भारिया जिणदासो पुत्तो तित्थयरागमण जिण दामपुच्चभवो मज्झमिया णगरी मेहरहो राया सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ ॥ पचम अज्झयण समत्त ॥ ५ ॥

छट्ठस्म उक्खेवो—कणगपुर णगर सेयामोय उज्जाण वीरभदो जक्खो पियचदो राया सुभदा देवी वममणे कुमारे जुवराया सिरिदेवी पामोक्खा पचमया कन्ना पाणिग्गहण तित्थयरागमण धनवती यत्रायपुत्ते जाव पुच्चभवो मणियया नगरी मिच्चो राया सभूतिविजए अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ छट्ठ अज्झयण समत्त ॥ ६ ॥

सत्तमस्म उक्खेवो—महापुर णगर रत्तासोग उज्जाण रत्तपाओ जक्खो बळे राया सुभदा देवी मइम्मळे कुमार रत्तवईपामोक्खाओ पचमयाउत्ता पाणिग्गहण तित्थयरागमण जाव पुच्चभवो मणियपुर णगर णागदत्ते गाहावती इन्ददत्ते अणगार पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥ सत्तम अज्झयण समत्त ॥ ७ ॥

अट्ठमस उक्खेवो—सुघोस नगर देवरमण उज्जाण वीरसेणो जक्खो अज्जुण्णो राया तत्तवती देवी भद्दनी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खा पचसया जाव पुच्चभवे महाघोसे णगर धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगार पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥ अट्ठम अज्झयण समत्त ॥ ८ ॥

णवमस्म उक्खेवो—चपा णगरी पुत्तभदे उज्जाणे पुत्तभदो जक्खो दत्ते राया रत्तवई देवी महचदे कुमारे जुवराया सिरिकत्तापामोक्खा ण पच सया कन्ना जाव पुच्चभवो तिमिच्छी णगरी

विपारु स्या घम्भवीरिण अणगारे पडिलाभिए जाय सिद्धे ॥ नवम अज्जणण समत्त ॥ ९ ॥

अत्रि ण दसमस्म उकरेवो— एव खलु जम्भू ! तेण कालेण तेण समण्ण साएय नाम नयर होत्था
 उरुत्तुज्जाणे पापमिओ जकतो मित्तनदी राया सिरिकता देवी वरदत्ते कुमारे वरसेणापामोक्ता
 वरदेवीयथा तिन्धयरागमणं सावग्गधम पुत्रमवो पुच्छा सत्तदुवारं नगरं विमलराहणे राया
 वमर्हं अणगारे पडिलाभिए ससार परित्तीकए मणुस्माउण निघद्धे इहं उप्पन्ने सेस जहा सुवाहुस्म
 हुस्म चिता जाव पच्चज्जा कप्पतरिओ जाय सच्चट्टसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दट्टपइओ जाव
 तिन्धित्ति मुज्झिहिति मुच्चिहिति परि निव्वाहिति सच्चदुसाणमन करेहिति ॥ एव खलु जम्भू !
 भगवण भगवथा महावीरण जाय नपत्तेण सुहविवागाण दममस्म अज्जणणस्म अयमद्धे पन्नत्ते,
 प्र भवे ! सर भन ! सुहविवागा ॥ दसम अज्जणण ममत्त ॥ १० ॥

नमो सुयदेवाए-विवागसुयस्म दो सुयवरुधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागो
 ण्णया दम एकसरंगा दससुचेय दिवसेसु उहिसिञ्जति, एव सुहविवागो वि सेसं जहा आपारस्स ॥
 त एकारमम अग समत्त ॥

॥ इअ सुखविपारुसुत्त सम्मत्तम् ॥



॥ सूत्रद्वलांगसूत्रे चीरस्तुत्यारय पष्टमध्ययन ॥

पुच्छिस्सुणुण समणा माहणा य, अगारिणो या परतिस्थिआ य ।
 से इह णेगत्तहिय धम्माहु, अणेलित्त साहु मभिकरयाए ॥ १ ॥
 इह च णाण इह दमण से, सील इह नायसुतस्म आसी ! ।
 जाणासि णे भिकरु जहातइण, अहासुत वुहि जहा णित्त ॥ २ ॥
 खेयन्न से कुमलापन्ने (ले मइसी) अणतनाणीय अण तदसी ।
 जसमिणो चकसुपइे ठिपस्स, जाणाहि धम्म च धिइ च पेहि ॥ ३ ॥
 उहु अहेय निरिय दिसाहु, तमा य जे थार जे य पाणा ।
 से णिच्चणिचेहि समिख्ख पन्न, दीने व धम्म समिय उदाहु ॥ ४ ॥
 से सइदसी अभिभूयनापी, णिगमगधे धिइम ठितप्पा ।
 अणुत्तर मव्वजगसि विज्ज, गथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥
 से भूइपण्णे अणिअचारी, ओहतर धीरे अणत्तचक्क ।
 अणुत्तर तप्पति घरिए मा, वइरोयण्दि व तम पगासे ॥ ६ ॥
 अणुत्तर धम्ममिण जिणाण, णेया सुणी कामव आसुपन्ने ।
 इदय दवाण महाणुभाव, महस्मणेता दिवि ण विसिद्धे ॥ ७ ॥
 से पन्नथा अकरुयसागरे वा, महोदही वावि अणत्तपारे ।
 अणाइले मा अकसाइ सुक्के, सधेव देवाहिवई जुह्मि ॥ ८ ॥

से वीरिण पडिपुन्नवीरिए, सुदसणे वा णमसन्सेट्ठे ।
 सुगलए वासिमुदागर से, विरायए णेगमुणोववेए ॥ ० ॥
 सय सहस्माण उ जोयणाण, तिकडणे पडमवेजयते ।
 ने जोयणे णवणपते सहस्से उध्धुस्मितो हेट्ठ महस्ममेग ॥ १० ॥
 पुट्ठे णमे चिट्ठह भूमिवट्ठिए, ज सूरिया अणुपरिन्दयति ।
 से हेमपन्ने बहूनदणे य, जसी रतिं वेदयती महिदा ॥ ११ ॥
 स पच्चए सहमहप्पगासे, विरायती कच्चणमट्टपन्ने ।
 अणुत्तरे गिरिसु य पच्चदुग्गे, गिरीरर से जलिएन भोमे ॥ १२ ॥
 महीड मज्झमि ठिते णग्गिदे, पच्चायते सूरिय सुद्वल्लेसे ।
 एव सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयड अच्चिमाली ॥ १३ ॥
 सुदसणस्मेव जसो गिरिस्म, पवुच्चई महतो पच्चयस्म ।
 पतोवमे समणे नायपुत्ते, जातीजसोदमणनाणसीले ॥ १४ ॥
 गिरीररे वा निसहाऽऽययाण, रुयए व सेट्ठे बलयायताण ।
 तओपमे से जगभूइपन्ने, मुणीण मज्जे तमुदाह पन्ने ॥ १५ ॥
 अणुत्तर धम्ममुईरइत्ता, अणुत्तर ज्ञाणरर त्रियाह ।
 सुसुक्कसुक्क अपगडसुक्क, सरिन्दुएगतपदातसुक्क ॥ १६ ॥
 अणुत्तरग्ग परम महेसी, अमेमकम्म स विसोहइत्ता ।
 सिद्धिं गते साइमणतपत्ते, नाणेण सीलेण य दमणेण ॥ १७ ॥
 रुक्खेसु णाते जह मामली वा, जसिं रतिं वेययती सुवच्चा ।
 णणसु वा णण्णमाहु सेट्ठ, जाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
 थणिय व महाण अणुत्तर उ, चदो व ताराण महाणुभावे ।
 गयसु वा चदणमाहु सेट्ठ, एव मुणीण अपडिन्नमाहु ॥ १९ ॥
 जहा मयभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिंदमाहु सेट्ठे ।
 सोओदण वा रस वेजपते, तओवहाणे मुणिवेजयते ॥ २० ॥
 हत्थीसु एराणमाहु णाए सीहो मिमाण सलिलाण गगा ।
 पक्खीसु वा गरुल्ले वेणुदवी, निवाणपदीणिह णायपुत्ते ॥ २१ ॥
 जोहेसु णाण जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंदमाहु ।
 गत्तीण सेट्ठे जह दत्तकं, इसीण मट्ठे तह वट्ठमाणे ॥ २२ ॥
 दाणाण सेट्ठ अभयप्पयाण, सच्चेसु वा अणउच्च त्रयति ।
 तणसु वा उत्तम बमचेर, लोणुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥ २३ ॥
 ठिईण सेट्ठा लगमत्तमा वा, सभा सुहम्मा वा सभाण सेट्ठा ।

निवाणसेट्टा जह सव्वधम्मा, ण णायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥
 पुटोममे धुण्णं विगयमेहि, न सण्णिहिं वुच्चति आसुपन्ने ।
 तरिउ समुद्द व महाभवोष, भयकरे वीर अणत्तचक्खू ॥ २५ ॥
 कोह च माण च तहेन माय, लोभ चउत्थ अज्झत्थयोसा ।
 एआणि वता अरहा महसी, ण वुच्चई पावण नारवेड ॥ २६ ॥
 किरियाकिरिय वेणइयाणु वाय, अण्णाणियाण पडियच्च ठाण ।
 से सव्ववाय इति वेयइत्ता, उवट्ठिण सजमदीहराय ॥ २७ ॥
 से चारिया इत्थी सराडभत्त, उवहाणत्त दुक्खरत्तयट्ठयाए ।
 लोम विदित्ता आर पर च, सव्व पभू नारिय सव्वचार ॥ २८ ॥
 सोच्चा य धम्म अरहतमासिय, समाहित अट्ठपदोवसुद्ध ।
 त सहहाणाय जणा अणाऊ, इडा व देवाहिण आगमिस्सति ॥ २९ ॥

॥ इति श्रीचीरस्तुत्याख्य पट्टमध्यायनम् ॥



॥ मोक्षमार्गनामक एकादशाध्ययनम् ॥

त मग्ग पुत्तर सुद्ध, सव्वदुक्खरविमोक्खण । जाणासि ण जहा भिक्खु, त णो वृहि महासुणी ॥ २ ॥
 कयर मग्गे अक्खाए, माहणेण मइमता । ज मग्ग उज्जु पाविच्चा ओह तरति दुक्खर ॥ १ ॥
 नइ णो कइ पुच्छिज्जा, देवा अदुव माणुसा । तेसिं तु कयर मग्ग, आइक्खेज्जा? कदाहियो ॥ ३ ॥
 जइ णो केइ पुच्छिज्जा, देवा मदुव माणुसा । तेसिम पडिसाहिज्जा, मग्गसार सुणेह मे ॥ ४ ॥
 अणुपुच्चेण महाघोर नामणेण पव्वेइय, । जमादाय इओ पुव्व, ममुद्द वगहारिणो ॥ ५ ॥
 अतरिंमु तरत्तेगे, तरिस्सति अणागया । त सोच्चा पडियक्खामि, जतवो त सुणेह मे ॥ ६ ॥
 पुठवीजीवा पुटो सत्ता, आउजीवा तहाऽगणी । वाउजीवा पुटो सत्ता, तणक्खत्ता सवीयगा ॥ ७ ॥
 अदावरा तमा पणा, एव छक्काय आहिया । एताएण जीएण, णावर कोइ विज्जई ॥ ८ ॥
 सव्वार्हि अणुजुत्तीहिं, मत्तिम पडिलेहिया । मच्चे अक्खतदुक्खा य, अतो सव्वे न हिमया ॥ ९ ॥
 एय सु णाणिओ सार, ज न हिंसति कचण । अहिंसा समय च्चव, एतावत् विजाणिया ॥ १० ॥
 उट्ट अइ य तिरिय, जे केइ तसयावरा । सव्वत्थ निरतिं विज्जा, सति निव्वानमाहिय ॥ ११ ॥
 पभू दोमे निराक्खिच्चा, ण विरुज्जेज्जा केणई । मणमा वयसा च्च, कयसा च्च अतसो ॥ १२ ॥
 सउडे मे महापच्च, धीरे दत्तेमण चरे । एसणामणिं णिष्, उज्जयते अणेसण ॥ १३ ॥
 भूयाइ च समारभ, तमुदिमा य ज कइ । तारिं तु ण गिणैज्जा, अन्नपाण सुमजए ॥ १४ ॥
 एईरुम्म न सेविज्जा एस धम्मे उमीमओ । ज किंचि अमिक्खज्जा, सव्वमो त न कप्पए ॥ १५ ॥
 हणत्त णाणुभाणेज्जा, आयगुत्ते जीइदिए । ठाणाउ सति सुत्ता, गामसु नगरेसु वा ॥ १६ ॥
 तहा गिर समारब्भ, अत्थि पुण्णाति एगे वए । अहत्ता णिष् ण्णाति, एव मेय

दाणद्वया य जे पाणा, हम्मति तसथावरा । तेसिं सारकरणद्व्याए, तम्हा अत्थिचि णो वए ॥ १८ ॥
 जेमिं त उररुपति, अन्नपाण, तहानिह । तेसिं लाभतरायति, तम्हा णत्थिचि णो वए ॥ १९ ॥
 जो य दाण पससति, वहमिच्छति पाणिण । जे य ण पडिसहति, गिच्छिच्छेय करति ते ॥ २० ॥
 दुइओवि ते ण भासति, अत्थि वा नत्थि वा पुणो । आय रयस्स देवा ण निव्वाण पाउणति ते ॥ २१ ॥
 निव्वाण परम बुद्धा, णकरचाण व चदिमा । तम्हा मदा जण दत्ते, निव्वाण सधए सुणी ॥ २२ ॥
 बुद्धमाणण पाणाण, किच्चताण सरुम्मणुणा । आघाति माहु त दीव पतिट्ठेसा पवुच्चई ॥ २३ ॥
 आयगुत्ते सया दत्ते, छिन्नमोण अणामणे । जे धम्म सुद्धमकराति, पडिपुन्नमणोलिम ॥ २४ ॥
 तमेव अनिजाणता, अयुद्धा बुद्धमाणिणो । बुद्धा मोत्ति य मन्नता, अत एते समाहिण ॥ २५ ॥
 ते य वीओदग चेव तमुद्दिस्सा य ज ऊढ । भोच्चा ज्ञाण ज्ञियायति, अत्थेयन्ना(अ)समाहिया । २६ ॥
 जहा ढका य कका य, कुलला मग्गुका सिही । मन्नेमण ज्ञियायति ज्ञाण ते कलुनाघम ॥ २७ ॥
 एव तु समणा एगे, मिच्छद्विट्ठी अणारिया । विसएमण ज्ञियायति, ककावा कलुनाहमा ॥ २८ ॥
 सुद्ध मग्ग विराहिच्चा, इहमेगे उ दुम्मती । उम्मग्गता दुकर, धायमेसति त तहा ॥ २९ ॥
 जहा आसाविणिं नाय जाइअधो दुरुहिया । इच्छटं पारमागतु, अतरा य विसीयति ॥ ३० ॥
 एव तु समणा एगे, मिच्छद्विट्ठी जणारिया । सोय नसिणमायन्ना, आगतरो महम्मय ॥ ३१ ॥
 इम च धम्ममादाय, कामणेण परोदित । तरं मोय महाघोर, अत्तचाए परिव्वए ॥ ३२ ॥
 विरए गामधम्मोहिं, जे केई जगई जगा । तेसिं अनुत्तमायाए, थाम कुव्व परिव्वए ॥ ३३ ॥
 अहमाण च माय च, त परिव्वाय पडिए । मव्वमेय णिराकिच्चा, निव्वाण सधए सुणी ॥ ३४ ॥
 सधए साहुधम्म च, पायधम्म णिराकरे । उवहाणरीरिण भिक्खु, कोह माण ण पत्थए ॥ ३५ ॥
 जे य बुद्धा अतिक्रता, जे य बुद्धा अणागया । सति तेसिं पइट्ठण, भूयाणा जगती जहा ॥ ३६ ॥
 अह ण उयमावन्न, फासा उचावयाकुसे । ण तेसु विणिहण्णेज्जा, वाएण व महागिरि ॥ ३७ ॥
 डे से महापत्ते, धीरे दत्तेसण चरे । निव्वुड कालमाकसी, एव (य) ववल्लिणोमय ॥ ३८ ॥

॥ इति मोक्षमार्गनामक एकादशमध्ययनम् ॥



सुभाषित केटलीक गाथानो संग्रह

पचमहव्वयसुव्वमुल, समणामणाडलव्वरा दुसुधीन्न । वेरनिरामणपज्जममाण, सव्वमसुद्धमोन्दधी तित्था ॥
 तित्थकरहिंसु देसियमग्ग, नरगतिरि छविज्झियमग्ग ।

मव्वपत्ति सुनिम्भियमार मिद्विविमाण अवगुयदार ॥ २ ॥

दवनरिंदनमसियपूय, सव्वजगुत्तममगलमग्ग । उधरिमगुणनायगमेश, मोकरपहस्मवडिमग्गभूय ॥ ३ ॥

(प्रश्न-याकरणसूत्रे स्वरकारे)

धम्माराभेचरेभिवए । पिइम धम्मसारही । धम्मा रामेयादत्ते । चभवेरसमाहिए । ४ ॥

देवदान्यगंधर्व, जकखरकपससकिन्नरा । वभयारि नममति दुक्कर जे, करतित ॥ ५ ॥
 एस धम्मं घुरे निचे, सामए जिणदेसिए । सिद्धा सिज्जति चाणेण, सिज्जिस्सति त्हावर ॥ ६ ॥

(उत्तराध्ययन घुरे) षोडशनाध्ययन

अरहत सिद्ध पयणगुरु खेर बहुस्सुरए तपस्सीसु । वच्छल्लया य तेमिं अभिक्खणाणणीओमे य ॥ ७ ॥
 दमण विणए आवस्सए य, सीलव्वए निरइयार । खणलव तव चियाए, वेयात्रचे समाही य ॥ ८ ॥
 अपूव्वणाणगहणे सुयभत्ती, पव्वयणे पमारणया । पएहिं कारणेहिं तित्थयरत्त लहइ लीओ ॥ ९ ॥

(ज्ञाताधर्मकथाए)

जिणवयणेअणुरत्ता जिणपयणजे करति भावेण । अमलाअसकिलिद्धा, तेज्जितियपरित्तसमारि ॥ १० ॥
 एयग्गुनाणीणीमार, ज नहिं सई किचण । अहिंसमय चैन, एताउत्त वियाणि य ॥ ११ ॥
 जात्तिं च बुद्धिं च इह दूपास, भूतेहिं जाणेहिं पडिलेहसाय ।

तमहातिविश्रोपरमतिणच्चा, मम्मत्तटसी न करेई पाव ॥ १२ ॥

उम्मुच्चपास इह मच्चिएहिं, आरभजीवीऊज्जपवाणुपरसी ।

कामेसु गिद्धाणिचयकरति, समिचमाणापुणरेतिगह ॥ १३ ॥
 सावणेनाणेविन्नाणे, पच्चमेक्खाणेयसत्तभो । अणएहएतवेचेव, वोदाणे अकिरियासिद्धि ॥ १४ ॥
 एगोह गरिथ मे कोड, नाह मन्नस्म कम्मइ । एय अदीणमणस्सा, अप्पाणमणु सामइ ॥ १५ ॥
 एगोमे सामओ अप्पा, नाणदसणसजओ । सेसामे बाहिरा भावा, मय्य सजोग लण्णणा ॥ १६ ॥
 जीविओ नाभिगच्छेजा मरण नो विपर्यए । दुहउ विनइत्तेजा, जीविओ मरण त्हा ॥ १७ ॥
 सार दमण नाण, सार तव नियम सजमसील । सार निण वर धम्म सारसलेहणापच्चियमरण ॥ १८ ॥
 क्खणाणोडिकारिणी, दुगइदुग्गिठरणी, ससारजल्तारणी, एगतहोउनीवदया ॥ १९ ॥
 आरभे नरिथ दया, महिलएसगंनामाइवभ । सकापनामइसम्मत्त, एव्वज्जाअत्थगगहण च ॥ २० ॥
 मज्जिमयकसाय, निहाविकहायमच्चमाभणिया । ए ए पचएमाया, जीगपउतिसमा ॥ २१ ॥
 रत्तति निमलाभोए, लज्जति सुरसपया । लज्जति पुत्तमिच च । एगोघम्मो न लज्जई ॥ २२ ॥
 नविसुहीदेवलोए, नविसुहीपुठनीपइयाया । नविसुहीसेठिसेणावडय, एगतसुहीनुणीगीपगणी ॥ २३ ॥
 नगरी सोहति जलमूलबागे, नारीभोहतिपरपुरुषत्यागे ।

राजसोहव सभा पुराणी, साजुमोहवा असृतवाणी ॥ २४ ॥

चलंतिमेरुचलतिमदिर, चलतितारारविचद्रमडल ।

कदापि काले पृथ्वी चलति, सत्पुरुषवाक्यो न चलति धर्म ॥ २५ ॥

अशोक्रुश्लः सुरपुष्पवृष्टि-दिव्यध्वनिश्रामरामान च ।

भामदल दुदुभिरातपत्र, मत्प्रातिहायाणिजिनश्चराणा ॥ २६ ॥

रूप अनोपम त्त्त्य न कोटं, वाणीसुणताश्रयणसुखहोई ।

देहसुगधी हरे पुण्यवान, चउमठइद्ररह प्रभु पाम ॥ २७ ॥

चउदपुरउघारकहियं, ज्ञानाचारवराणीय । जिननहिं पण जिनसरिता, श्रीगुधर्मस्सामी ज्ञाणीए ॥ २८ ॥

रूप अनोपम पराणीए, देवत्वाने वल्लभ लागे । ५४ ॥ १२९ ॥



उत्तगध्यन सूत्र

अ	व	शृ	गा	भा	क	अधु	प्र	अधु	शृ	गा	भा	क	अधु	शु	
१	१	४	दु	स	ल	दु	माल	१४	२३	३५	भि	क	वा	चरि	य
१	२	३०	नि	र	ट	नि	रट्टाइन	१४	२४	५०	ध	म		ण	व
२	३	१९	च	र		च	रे	१५	२४	४	स	य	गा	मा	ण
३	४	२९	सु	भा		से	भा	१६	२५	४	स	ज	म	ब	हू
२	४	३८	अ	भि	त्रा	अ	भि	त्रा							
३	५	४	व	धु	पी	व	धु	पी	१७	२७	३	नि	ह	श्री	ले
४	६	५	वा	स	स	वी	स	१७	२८	१७	उ	दी	रे	ह	
७	६	१	दु	र	र	दु	र	१७	२८	२१	हो	भि	ण		
५	६	४	म	हा	नी	म	हा	१८	२९	१८	सो	ज	ण		
५	६	८	स	मा	र	स	मा	१९	३१	४८	इ	म			
५	७	११	प	मी	भा	प	मी	१९	३१	४१	द	न	त	सो	
५	७	१९	ग	ा	रि	ग	ा	१९	३२	५६	अ	न	से		
५	७	२३	अ	स	त्स	त्स	त्स	१९	३२	८५	स	व	दु	क	ल
५	७	२७	अ	धि	म	अ	धि	२०	३३	६	अ	म	ज	या	
५	७	२८	भि	क	वा	भि	क	२२	३८	२३	शि	त्ता	हि		
६	७	३	वि	या	दु	वि	या	२२	३८	५६	म	त्सी	प्		
७	९	२६	द	व	ति	द	व	२३	३९	१२	म	मु	मु	णी	
७	९	२८	न	र	ण	न	र	२३	४०	५४	रु	स	धो		
८	१०	१०	रा	हो		रा	हो	२३	४१	८६	गो	म	य		
९	११	६	मि	हि	त्रा	मि	हि	२६	४६	५०	स	व	दु	क	ल
९	११	२२	मि	त्त	ण	मि	त्त								
९	१२	५३	का	म		का	म								
९	१२	५६	अ	हो		अ	हो	५९	५०	५	र	दा	भो		
९	१२	६१	र	दा	भो	र	दा	५९	५०	६	न				
१०	१३	१	नि	व	ह	नि	व	३०	५१	७२	आ	ण	पा	णु	
११	१५	६	चो	द	स	चो	द	३१	५३	१७	ए	ध	रि		
१२	१७	५६	म	त	हि	द	त	३१	५४	६	ज				
१२	१८	२७	व	ह		व	ह	३२	५५	५	प	वा	ह		
१३	१९	१९	म	हि	त्रा	म	हि	३२	५५	६	द	मि	ह		
१३	१	३०	क	र	मा	क	र	३२	५५	६	द	मि	ह		
१४	२१	७	अ	का	ठ	अ	का	३४	५५	१२	रु	व			
१४	२१	६	सु	वि	ण	सु	वि	३४	५६	२७	रु	व			
१४	२१	६	दी	प	मा	दी	प	३४	५६	४०	सा	व	म	सा	
१४	२२	२५	स	प	ण	स	प	३३	६२	७	का	ण			
१४	२३	३१	सु	प	मि	सु	प	३४	६३	१२	रु	व			
			सु	प	मि	सु	प	३४	६३	१५	रु	व			

अप्य	वृष्ट	गाथांक	अगुद	गुद
३४	६३	१५	जप्यसंस्थाण	अप्यसंस्थाण
३४	६३	१६	ललाण	ललाण
३४	६४	४५	नायकवाह	नायकवाह
३४	६४	४६	परिमपुडका	परिमपुडका
३४	६६	२२	अहुण	अहुण
३६	६०	३१	सत्तेवना	सत्तेवना
३६	७१	१६५	त्रिगवयणं	त्रिगवयणं

अप्य	वृष्ट	गाथांक	अगुद	गुद
६	८१	११	मभयण	मभयण
७	९०	५३	गह	गह
८	९३	१५	अहुष	अहुष
८	९१	२०	महाकत	महाकत
८	९२	३१	अमप्यणो	अमप्यणो
८	९३	४१	सन्मिम	सन्मिम
८	९२	५	आयदिभाषा	आयदिभाषा
८	९३	९	गुरहालसाण	गुरहालसाण
९	९६	२०७	मुभमादिण	मुभमादिण
९	९६	३१	सुदावह	सुदावह



दशकालिक शुद्धिपत्रकम्



३	७६	८	मिचये	मिचये
४	७६	८	लीटी वाऊ	लीटी वाऊ
४	७८	११	परिगह	परिगह
४	७८	२३	वा,	वा
४	७९	१९	समणुनामि	समणुनामि
४	७९	२५	वा	वा
४	७९	२९	दिसह	दिसह
५	८३	१२	कोलसुवाह	कोलसुवाह
५	८३	७	अमुणमि	अमुणमि
६	८६	२	रायभो	रायभो

नन्दीक्षेत्र शुद्धिपत्रकम्

१०१	७	गुग	उत्तमगुग
१०२	३०	जदि	रसिबभोनदि
१०३	४०	नागुग	नागुग
१११	१	लंगि	अनगदमाभोर
११३	२९	अगु	भोगदारा
११४	७	सग	सरिमाओसग
११६	७	से	उवइममिजतमे
११८	५७	गया	खतकाण



